॥श्री॥

श्रावकस्य

पंचप्रतिक्रमणादिसूत्र.



आ पुस्तक

साधर्मिक भाइने भणवा वांचवाने

माटे यथामति संशोधन करीने

श्रावक शा. भीमसिंह माणकें

श्रीमुंबापुरीमध्यें

निर्णयसागर छापखानामां छपावी प्रसिद्ध कर्युं.

संवत् १९४४.

इसवी सन १८८८.

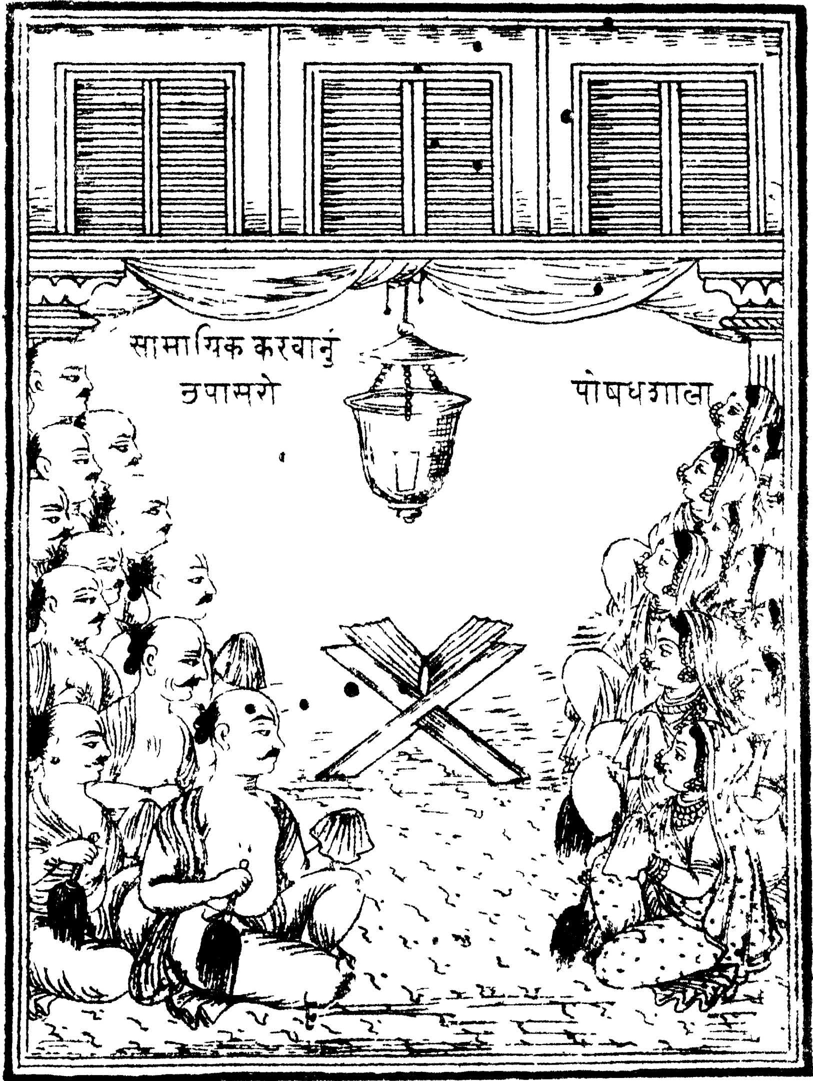
प्रस्तावना.



चैत्यवंदन, थोयो, स्तवन, नवस्मरण अने सज्झायादिकना संग्रहसहित पांचे प्रतिक्रमण संबंधि सर्व सूत्राउने जणी मुख पाठ करनारा साहेबोने अत्यंत अनुकूलता थाय, एवा हेतुथी ए पूर्वोक्त ग्रंथोने मूल पाठ रूपें छापवा माटें केटला एक वर्षो थया घणा सज्जनो हरहमेश मने जलामण करता हता, परंतु अवकाश न मलवाथी महाराथी तेम बनी शक्युं न हतुं. हालमां प्रसंगोपात्त उक्त ग्रंथो अर्थसहित छापवा मांड्या, तेथी ए मूलपाठरूपें पण साथेंज छापी तैयार करी सर्व महारा साधर्मी जाइउनी सेवामां मूकुं छुं. तेमां महारी अल्पमतिना तथा अज्ञानना दोषथी, तेमज प्रुफ वगेरे तपासतां दृष्टि दोषथी जे कांइ अशुद्धता, विद्वज्जनोना दीठामां आवे, ते साहेबोएं महारा उपर सुजनपणानो जाव राखी तेवा पाठोने सुधारी वांचवा, अने जणवा जणाववाना उद्यम करवामां उत्सुक थती वेलायें ग्रंथ छापनारनी अथवा लखनारनी अवगणना न करतां तेउ पोतेंज

सुधारीने पाठनो उच्चार करे छे तथा करावे छे. एवी रीतनी जे पंमित पुरुषोनी स्वाभाविक प्रकृति होय छे, ते आ मह्यारा दोषोने दूर करी नाखशे. तथापि हुं तेमनी साथें मह्यारी भूल संबंधि " मिच्छा डुक्कडं " करुं छुं.

घणुं करीनें श्रावक भाइउने जे प्रतिक्रमणादि क्रिया प्रतिदिवस करवानी आवश्यकता छे,माटे ते वखतें जे जे खपमां आववा योग्य ग्रंथो होय छे, तेवा सर्वे प्रकारना ग्रंथो आ पुस्तकमां दाखल करेला छे. एमां दैवसिकादिक पांचे प्रतिक्रमण संबंधि सूत्रां तथा चैत्यवंदनो, थोयो अने स्तवनादिकनो सारी पेठें समावेश कर्यो छे. तदनंतर श्रीआनंदघनजी महाराज कृत चोवीशी वगेरे केटलाएक ग्रंथोनो वधारो करेलो छे, तथापि बीजा पण श्रीयशोविजयजीकृत चोवीशी तथा वीशी आदिक ग्रंथो वधारे दाखलकरवानी अभिलापा हती; परंतु पुस्तकनुं मूल्य बहु थइ जाय तेथी घणा भाइउने ते पुस्तक खरीदवाने हरकत पडे तथा वली प्रथम पण तेवा ग्रंथो बहुवार छपाइ गयाथी तेनी उपर लक्ष आपी शकायुं नथी. किमतिविलेखनेन ॥ अस्तु ॥


सामायिक करवानुं
उपासरो
पोषधशाला

अनुक्रमणिका ॥

अंक.	ग्रंथोनां नाम.	पृष्ठ.



अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं अः

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण

त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श

ष स ह क्ष ज्ञ

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ०

क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः

ख खा खि खी खु खू खे खै खो खौ खं खः

ग गा गि गी गु गू गे गै गो गौ गं गः

॥ अथ ॥

॥ श्रावकस्य पंचप्रतिक्रमणादि सूत्रम् ॥



१ ॥ प्रथम नवकार पंचमंगलरूप ॥

॥ नमो अरिहंताणं ॥१॥ नमो सिद्धाणं ॥२॥ नमो आयरियाणं ॥३॥ नमो उवज्झायाणं ॥४॥ नमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच नमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पणासणो ॥ ७ ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ ए ॥ इति ॥ १ ॥

२ ॥ अथ पंचिंदिअ ॥

॥ पंचिंदिअ संवरणो ॥ तह नवविह बंभचेर गुत्ति धरो ॥ चउविह कसायं मुक्को ॥ इअ अट्ठारस गुणेहिं संजुत्तो ॥१॥ पंच महव्वय जुत्तो ॥ पंचविहायार पालणसमत्थो ॥ पंच समिउ ति गुत्तो ॥ छत्तीस गुणो गुरु मज्झ ॥२॥ इति ॥२॥

३ ॥ अथ खमासमण ॥

॥ इछामि खमासमणो वंदिउं ॥ जावणिज्जाए निसीहिआए ॥ मछएण वंदामि ॥ इति ॥ ३ ॥

४ ॥ अथ सुगुरुने शाता सुखपृछा ॥

॥ इछकारि सुहराइ सुहदेवसी ॥ सुख तप शरीर निराबाध ॥ सुख संजम जात्रा निर्वहो छोजी ॥ स्वामी शाता छेजी ॥ भात पाणीनो लाभ देजो जी ॥ इति ॥ ४ ॥

५ ॥ अथ इरिया वहियं ॥

॥ इछाकारेण संदिसह भगवन् ॥ इरियावहियं पडिक्कमामि ॥ इछं इछामि पडिक्कमिउं ॥ १ ॥ इरियावहियाए विराहणाए ॥ २ ॥ गमणागमणे ॥ ३ ॥ पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे ॥ उसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे ॥ ४ ॥ जे मे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥ एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया ॥ ६ ॥ अभिहया वत्तिया लेसिया सं

घाइया संघट्टिया परियाविया ॥ किलामिया उ
द्दविया ठाणाउठाणं संकामिया जीवियाउ ववरोविया ॥ तस्स मिछामि डुक्कडं॥७॥ इति ॥ ५ ॥

६ ॥ अथ तस्स उत्तरी ॥

॥ तस्स उत्तरीकरणेणं ॥ पायछित्तकरणेणं ॥ विसोहीकरणेणं ॥ विसल्लीकरणेणं ॥ पावाणं कम्माणं ॥ निग्घायणठाए ॥ ठामि काउस्सग्गं ॥ ८ ॥ इति ॥ ६ ॥

७ ॥ अथ अन्नछ उससिएणं ॥

॥ अन्नछ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुछाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं ॥ सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं ॥ सुहुमेहिं दिठिसंचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिं आगारेहिं ॥ अभग्गो अविराहिउ ॥ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ तावकायं ठाणेणं मोणेणं

झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि॥ ५ ॥ इति ॥ ७ ॥

८ ॥ अथ लोगस्स ॥

॥ लोगस्स उज्जोअगरे ॥ धम्म तित्थयरे जिणे ॥ अरिहंते कित्तइस्सं ॥ चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसन्न मजिअं च वंदे ॥ संभव मभिणंदणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं सुपासं ॥ जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं ॥ सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च ॥ विमल मणंतं च जिणं ॥ धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं ॥ वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च ॥ वंदामि रिठनेमिं ॥ पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ ॥ विहुय रय मला पहीण जरमरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा ॥ तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया ॥ जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा॥ आरुग्ग बोहिलाभं॥ समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा ॥ आइच्चेसु अहियं पयासयरा ॥ सागर

वर गंन्नीरा ॥ सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥ सव्वलोए० ॥ इति ॥ ८ ॥

ए ॥ अथ सामायिकनुं पच्चरकाण ॥

॥ करेमि नंते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चरकामि ॥ जाव नियमं पज्जुवासामि ॥ डुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं॥ न करेमि, न कारवेमि, तस्स नंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥ ए ॥

१० ॥ अथ सामायिक पारवानुं ॥

॥ सामाइयवयजुत्तो ॥ जाव मणे होइ नियम संजुत्तो ॥ छिन्नइ असुहं कम्मं ॥ सामाइअ जत्तिआ वारा ॥ १ ॥ सामाइअंमि उ कए ॥ समणो इव सावउ हवइ जम्हा ॥ एएण कारणेणं ॥ बहुसो सामाइअं कुज्जा ॥ २ ॥ सामायिक विधिं लीधुं विधिं पारिउं ॥ विधि करतां जे कोइ अविधि हुउ होय ते सवि हुं मन वचन कायायें करी ॥ मिछामि डुक्कडं ॥ इति ॥ १० ॥

११ ॥ अथ जगचिंतामणि चैत्यवंदन ॥

॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ॥ चैत्यवंदन करुं ॥ इच्छं ॥ जगचिंतामणि जगहनाह ॥ जग गुरु जगरक्कण ॥ जगबंधव जगसत्थवाह ॥ जग भाव विअक्कण ॥ अठ्ठावय संठविअ ॥ रुव कम्मठ्ठ विणासण ॥ चउवीसंपि जिणवर ॥ जयंतु अप्पडिहयसासण ॥ १ ॥ कम्मभूमि हिं कम्मभूमिहिं ॥ पढम संघयणि ॥ उक्कोसय सत्तरिसय ॥ जिणवराण विहरंत लप्नइ ॥ नव कोडिहिं केवलिण ॥ कोडि सहस्स नव साहु गम्मइ॥संपइ जिणंवर वीसमुणि ॥ बिहुं कोडिहिं वरनाण ॥ समणह कोडि सहस दुअ ॥ थुणि जि अनिच्च विहाणि॥२॥ जयउ सामी जयउ सामी ॥ रिसह सत्तुंजि ॥ उज्जिंत पहु नेमिजिण ॥ जयउ वीर सच्चउरि मंमण ॥ नरुअछहिं मुणिसुव्वय ॥ मुहरिपास दुह दुरिअखंमण ॥ अवर विदेहिं तिछयरा ॥ चिहुं दिसि विदिसि जिं केवि ॥ ती

अणागय संपइअ ॥ वंदु जिण सवेवि ॥ ३ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा ॥ लरका बप्पन्न अठकोडी उ ॥ बत्तीस बासिआंइ ॥ तिअलोए चेइए वंदे॥ ॥ ४ ॥ पनरस कोडि सयाइं ॥ कोडी बायाल लरक अडवन्ना ॥ बत्तीस सहस असिआइं ॥ सासयाबिंबाइ पणमामि ॥ ५ ॥ इति ॥ ११ ॥

१२ ॥ अथ जंकिंचि ॥

॥ जं किंचि नाम तिब्वं ॥ सग्गे पायालि माणुसे लोए ॥ जाइं जिण बिंबाइं ॥ ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ १ ॥ इति ॥ १२ ॥

१३ ॥ अथ नमुत्थुणं वा शाक्रस्तव ॥

॥ नमुत्थुणं अरिहंताणं, नगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सयं संबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंमरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अनयदया

णं, चक्खुदयाणं ॥ मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं ॥ धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहय वर नाण दंसण धराणं, विअट्ट छउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसिणं, सिव मयल मरुअ मणंत मक्कय मव्वाबाह मपुणरावित्ति ॥ सिद्धि गइ नाम धेयं ॥ ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअ भयाणं ॥ ९ ॥ जेअ अईआ सिद्धा ॥ जेअ भविस्संति णागए काले ॥ संपइअ वट्टमाणा ॥ सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥ इति ॥ १३ ॥

१४ ॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

॥ जावंति चेइआइं ॥ उड्ढेअ अहेअतिरिअ लोएअ ॥ सव्वाइं ताइं वंदे ॥ इहसंतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥ इति ॥ १४ ॥

१५ ॥ अथ जावंत केविसाहू ॥

॥ जावंत केवि साहू ॥ नरहेरवय महाविदे हे अ ॥ सवेसिं तेसिं पणउ ॥ तिविहेण तिदंम विरयाणं ॥ १ ॥ इति ॥

१६ ॥ अथ परमेष्ठिनमस्कार ॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुन्यः ॥ इति ॥ १६ ॥

१७ ॥ अथ उपसर्गहरस्तवन ॥

॥ उवसग्गहरं पासं ॥ पासं वंदामि कम्म घणमुक्कं ॥ विसहरविसनिन्नासं ॥ मंगलक ल्लाणआवासं ॥ १ ॥ विसहरफुलिंगमंतं ॥ कंठे धारेइ जो सया मणुउ ॥ तस्स गहरोगमा री ॥ डुठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिठउ दूरे मंतो ॥ तुम्न पणामो वि बहुफलो होइ ॥ नर तिरिएसुवि जीवा ॥ पावंति न डुरक दोगच्चं ॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे ॥ चिंतामणिं कप्पपायवप्नहिए ॥ पावंति अविग्घेणं ॥ जीवा अयरामरं गणं

॥ ४ ॥ इअ संथुर्ड महायस ॥ भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण ॥ ता देव दिज्ज बोहिं ॥ भवे भवे पासजिणचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ १७ ॥

१८ ॥ अथ जयवीअराय ॥

॥ जय वीअराय जगगुरु ॥ होउ ममं तुह पभावउ भयवं ॥ भवनिव्वेउ मग्गा ॥ णु सारिआ इठ्ठ फलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धच्चाउ ॥ गुरुजणपूआ परठ्ठकरणं च ॥ सुहगुरुजोगो तव्वय ॥ ण सेवणा आभव मखंडा ॥ २ ॥ वारिज्जइ जइवि निआ ॥ ण बंधणं वीअराय तुह समए ॥ तहवि मम हुज्ज सेवा ॥ भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥ ३ ॥ दुक्खक्खउ कम्मक्खउ ॥ समाहि मरणं च बोहिलाभो अ ॥ संपज्जउ मह एअं ॥ तुह नाह पणाम करणेणं ॥ ४ ॥ सर्वमंगलमांगल्यं ॥ सर्वकल्याणकारणम् ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां ॥ जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥ इति ॥ १८ ॥

१ए ॥ अथ अरिहंत चेइआणं ॥

॥ अरिहंत चेइआणं ॥ करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥ वंदण वत्तिआए, पूअण वत्तिआए ॥ सक्कार वत्तिआए, सम्माण वत्तिआए ॥ बोहिलाभ वत्तिआए ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए ॥ २ ॥ सद्धाए मेहाए धीइए ॥ धारणाए अणुप्पेहाए ॥ वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥ ३ ॥ अन्न ब० ॥ ॥ इति ॥ १ए ॥

२० ॥ अथ कल्लाणकंदं स्तुति ॥

॥ कल्लाणकंदं पढमं जिणंदं ॥ संतिं तवो नेमिजिणं मुणिंदं ॥ पासं पयासं सुगणिक्कठाणं ॥ भत्तीइ वंदे सिरि वद्धमाणं ॥ १ ॥ अपार संसारसमुद्दपारं ॥ पत्ता सिवं दिंतु सुइक्कसारं ॥ सव्वे जिणंदा सुरविंदवंदा ॥ कल्लाणवल्लीणविसालकंदा ॥ २ ॥ निव्वाणमग्गे वर जाणकप्पं ॥ पणासिया सेस कुवाइदप्पं ॥ मयं जिणाणं सरणं बुहाणं ॥ नमामि निच्चं तिजग

प्पहाणं ॥ ३ ॥ कुंदिंदुगोरकीरतुसारवन्ना ॥ सरोजहत्था कमले निसन्ना ॥ वाएसिरी पुत्थय वग्गहत्था ॥ सुहाय सा अम्ह सया पसत्था ॥४॥

७१ ॥ अथ स्नातस्यानी स्तुति ॥

॥ स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे, शच्या विभोः शैशवे ॥ रूपालोकनविस्मयाहृतरस, भ्रांत्या भ्रमच्चक्षुपा ॥ उन्मृष्टं नयनप्रभाधवलितं, क्षीरोदकाशंकया ॥ वक्त्रं यस्य पुनः पुनः स जयति, श्रीवर्द्धमानो जिनः ॥ १ ॥ हंसांसाहत पद्मरेणुकपिशक्षीरार्णवांभोभृतैः ॥ कुंभैरप्सरसां पयोधरभरप्रस्पर्द्धिभिः कांचनैः ॥ येषां मंदररत्नशैलशिखरे जन्माभिषेकः कृतः ॥ सर्वैः सर्वसुरासुरेश्वरगणैस्तेषां नतोऽहं क्रमात् ॥२॥ अर्हद्वक्त्रप्रसूतं गणधररचितं द्वादशांगं विशालं, चित्रं बह्वर्थयुक्तं मुनिगणवृषभैर्धारितं बुद्धिमद्भिः ॥ मोक्षाग्रद्वारभूतं व्रतचरणफलं ज्ञेयभावप्रदीपं, भक्त्या नित्यं प्रपद्ये श्रुतमहम

खिलं सर्वलोकैकसारम् ॥ ३ ॥ निष्पंकव्योम नीलद्युतिमलसदृशं बालचंद्राभदंष्ट्रं, मत्तं घंटारवेण प्रसृतमदजलं पूरयंतं समंतात् ॥ आरूढो दिव्यनागं विचरति गगने कामदः कामरूपी, यक्षः सर्वानुभूतिर्दिशतु मम सदा सर्वकार्येषु सिद्धिम् ॥ ४ ॥ ॥ इति श्रीमहावीरजिनचतुर्दशीस्तुतिः ॥ ॥ २१ ॥

२२ ॥ अथ संसारदावानी स्तुति ॥

॥ संसारदावानलदाहनीरं ॥ संमोहधूलीहरणे समीरं ॥ मायारसादारणसारसीरं ॥ नमामि वीरं गिरिसारधीरं ॥ १ ॥ भावावनामसुरदानवमानवेन ॥ चूलाविलोलकमलावलिमालितानि ॥ संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि ॥ कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूराभिरामं ॥ जीवाहिंसाविरललहरीसंगमागाहदेहं ॥ चूलावेलं गुरुगममणीसंकुलं दूरपारं ॥ सारं वी

रागमजलनिधिसादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥ आमू लालोलधूलीबहुलपरिमलालीढलोलालिमा ला ॥ ऊंकारारावसारामलदलकमलागार भूमीनिवासे ॥ छायासंभारसारे वरकमल करे तारहाराभिरामे ॥ वाणीसंदोहदेहे भव विरहवरं देहि मे देवि सारम् ॥४॥ इति ॥२२॥

२३ ॥ अथ पुख्करवरदी ॥

॥ पुख्करवरदीवड्ढे ॥ धायइसंडे अ जंबु दीवे अ ॥ भरहे रवय विदेहे ॥ धम्माइगरे न मंसामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपडलविद्धं, सण स्स ॥ सुरगणनरिंदमहिअस्स ॥ सीमाधर स्स वंदे ॥ पप्फोडिअमोहजालस्स ॥ २ ॥ जाई जरामरणसोगपणासणस्स ॥ कल्लाण पुख्कलविसालसुहावहस्स ॥ को देवदाणव नरिंदगणच्चिअस्स ॥ धम्मस्स सार मुवलप्न करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धेभो पयउ णमो जिणम ए, नंदी सया संजमे ॥ देवं नाग सुवन्न कि

न्नर गण, स्सपूत्र्य नावच्चिए ॥ लोगो ज७ पइ ठ्ठि७ जगमिणं, तेलुक्कमच्चासुरं ॥ धम्मो वढ्ढ७ सासउ विजयउ, धम्मुत्तरं वढ्ढ७ ॥ ४ ॥ सुत्र्य स्स नगवउ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआ ए० ॥ इति ॥ २३ ॥

२४ ॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगया णं ॥ लोअग्ग मुवगयाणं, नमो सया सव्वसि द्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति ॥ तं देव देव महिअं, सिरसा वंदे म हावीरं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवस हस्स वद्धमाणस्स ॥ संसारसागराउ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥ उज्जित सेल सिहरे, दिक्का नाणं निसीहिआ जस्स ॥ तं धम्मचक्क वट्टिं, अरिठ्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ्ठ दसदो, य वंदिया जिणवरा चउव्वीसं ॥

परमठ्ठ निठ्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति ॥ २४ ॥

२५ ॥ अथ वेयावच्च गराणं ॥

॥ वेयावच्चगराणं संतिगराणं ॥ सम्मद्दिठ्ठि समाहि गराणं ॥ इति ॥ २५ ॥ करेमि काउ स्सग्गं ॥ अन्नत्थ ॥

२६ ॥ अथ जगवानादि वंदन ॥

॥ जगवान् हं ॥ आचार्य हं ॥ उपाध्याय हं ॥ सर्वसाधु हं ॥ इति ॥ २६ ॥

२७ ॥ अथ देवसिअ पडिक्कमणे ठाउं ॥

॥ इच्छाकारेण संदिसह जगवन् ॥ देवसिअ पडिक्कमणे ठाउं ॥ इछं सव्वस्सवि देवसिअ डुच्चिं तिअ ॥ डुप्नासिअ डुच्चिठ्ठिअ ॥ तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ इति ॥ २७ ॥

२८ ॥ अथ इछामि ठामि ॥

॥ इछामि ठामि काउस्सग्गं ॥ जो मे देव सिउ अइआरो कउ ॥ काइउ वाइउ माणसिउ ॥

उस्सुत्तो उम्मंग्गो अकप्पो ॥ अकरणिज्जो डु ज्झाउ ॥ दुव्विचिंतिउ अणायारो ॥ अणिछिअ व्वो ॥ असावगपाउग्गो ॥ नाणे दंसणे चरित्ता चरित्ते ॥ सुए सामाइए ॥ तिन्हं गुत्तीणं ॥ चउन्ह कसायाणं ॥ पंचन्हमणुव्वयाणं ॥ तिन्हं गुण व्वयाणं ॥ चउन्हं सिरकावयाणं ॥ बारसवि हस्स सावगधम्मस्स ॥ जं खंभिअं जं विरा हिअं ॥ तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ इति ॥ १८ ॥

॥ अथ अतिचारनी आठ गाथा ॥

॥ नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि त हय विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिउ ॥ १ ॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण अछ तदुन्न ए, अठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥ निस्संकि अ निक्कंखिअ, निव्वितिगिछा अमूढ दिठीअ ॥ उववूह थिरीकरणे, वछल्ल पभावणे अठ ॥ ३ ॥ पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं तीहिं

गुत्तीहिं ॥ एस चरित्तायारो, अठविहो होइ नाय
व्वो ॥ ४ ॥ बारसविहंमि वि तवे, सप्भिंतरबा
हिरे कुसलदिठे ॥ अगिलाइ अणाजीवी, ना
यव्वो सो तवायारो ॥ ५ ॥ अणसणमूणोअरि
या. वित्ती संखेवणं रसच्चाउ ॥ कायकिलेसो
संली, ण याय बच्चो तवो होई ॥ ६ ॥ पाय
च्छित्तं विणउ, वेयावच्चं तहेव सच्चाउ ॥ झाणं उ
स्सग्गो विय, अप्भिंतरउ तवो होई ॥ ७ ॥ अण
गूहिअ बल विरिउ, पडिक्कमइ जो जहुत्त माउ
त्तो ॥ जुंजइअ जहाथामं, नायव्वो वीरिआया
रो ॥ ८ ॥ इति ॥ ३०॥

॥ अथ सुगुरुवांदणां ॥

॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं, जावणि
ज्जाए निसीहिआए ॥ अणुजाणह मे मि
उग्गहं निसीहि ॥ अहो कायं काय संफासं,
खमणिज्जो भे किलामो ॥ अप्पकिलंताणं बहु
सुभेण भे; दिवसो वइक्कंतो जत्ता भे ॥ जवणिज्जं

च ने, खामेमि खमासमणो ॥ देवसिअं वइक्क म्मं आवसिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं ॥ देवसिआए, आसायणाए ॥ तत्तीसन्नयराए जं किंचि मिछाए, मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए ॥ कायदुक्कडाए कोहाए, माणाए, मायाए, लोना ए, सव्वकालिआए ॥ सव्व मिछोवयाराए, सव्व धम्माइक्कमणाए ॥ आसायणाए जो मे अइआ रो कउ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि ॥ निं दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ बी जी वारनें वांदणे आवसिआए ए पद न कहेवुं, अने रात्रीयें राइउवइक्कंतो, तथा . चउमासीयें चउमासी वइक्कंतो, पक्खीयें पक्खो वइक्कंतो, संवछरीयें संवछरो वइक्कंतो ॥ एवी रीतें पाठ कहवो, ॥ इति ॥ ३० ॥

॥ अथ देवसिअं आलोउं ॥

॥ इछाकारेण संदिसह नगवंन् देवसिअं आ लोउं इछं ॥ आलोएमि जोमे० ॥ इति ॥ ३१ ॥

॥ अथ सातलाख ॥

॥ सात लाख पृथिवीकाय ॥ सात लाख अप्पकाय ॥ सात लाख तेउकाय ॥ सात लाख वाउकाय ॥ दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय ॥ चउद लाख साधारण वनस्पतिकाय ॥ बे लाख बेइंद्रिय ॥ बे लाख तेंद्रिय ॥ बे लाख चौरिंद्रिय॥ चार लाख देवता ॥ चार लाख नारकी ॥ चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय॥चौद लाख मनुष्य ॥ एवं कारे चौराशी लाख जीवायोनिमांहि, माहारे जीवें जे कोइ जीव हण्यो होय हणाव्यो होय हणतां प्रत्यें अनुमोद्यो होय, ते सवे हुं मन वचन कायायें करी तस्स मिछामि दुक्कडं ॥इति॥३७॥

॥ अथ अढार पापस्थानक ॥

॥ पहेले प्राणातिपात, बीजे मृषावाद, त्रीजे अदत्तादान, चोथे मैथुन, पांचमे परिग्रह, छठे क्रोध, सातमे मान, आठमे माया, नवमे लोभ, दशमे राग, इग्यारमे द्वेष, बारमे कलह

ह, तेरमे अभ्याख्यान, चौदमे पैशुन्य, पन्न रमे रति अरति, शोलमे परपरिवाद, सत्तरमे माया मृषावाद, अढारमे मिथ्यात्वशल्य, ए अढार पापस्थानमांहिं, म्हारे जीवें जे कोइ पाप सेव्युं होय, सेवराव्युं होय, सेवतां प्रत्यें अनुमोद्युं होय, ते सवे हुं मनें, वचनें, कायायें करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥ ३३ ॥

॥ अथ सव्वस्सवि ॥

॥ सव्वस्सवि देवसिअ दुच्चिंतिअ, दुप्भासि अ दुच्चिठिअ ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इच्छं० ॥ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥ ३४ ॥

॥ अथ श्रावक वंदिता सूत्र ॥

॥ वंदित्तु सव्व सिद्धे, धम्मायरिएअ सव्व साहूअ ॥ इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइ आरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ ॥ सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परिग्गहंमि, सा

वज्जे बहुविहे अ आरंभे ॥ कारावणे अ करणे, प
डिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ३ ॥ जं बद्धमिंदिएहिं,
चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं ॥ रागेण व दोसे
ण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे
निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे ॥ अभि
ओगे अ निओगे, पडिक्कमे० ॥५॥ संका कंख वि
गिछा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ॥ सम्मत्त
स्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ ६ ॥ छक्कायसमारंभे,
पयणे अ पयावणे अ जे दोसा ॥ अत्तठा य पर
ठा, उभयठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचण्हमणुव
याणं, गुणव्वयाणं च तिण्ह मइयारे ॥ सिक्खा
णं च चउण्हं, पडिक्कमे० ॥ ८ ॥ पढमे अणुव्वयं
मि, थूलग पाणाइवाय विरईओ ॥ आयरिअ
मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वहबंध
छविछेए, अइ भार भत्त पाण वुछेए ॥ पढम व
यस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ १० ॥ बीए अणुव्वयं
मि, परिथूलगअलिअवयणविरईओ ॥ आ

यरिअमप्पसङ्घे, इञ्च पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥
सहस्सा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे
अ ॥ बीय वयस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ १२ ॥
तइए अणुव्वयंमि, थूलग परदवहरणविरईउ ॥
आयरिअ मप्पसङ्घे, इञ्च पमायप्पसंगेणं ॥
॥ १३ ॥ तेनाहडप्पउगे, तप्पडिरूवे विरुद्ध ग
म णेअ ॥ कूडतुल कूडमाणे, पडिक्कमे० ॥ १४ ॥
चउङ्घे अणुव्वयंमि, निच्चं परदारगमण विरईउ
॥ आयरिअ मप्पसङ्घे, इञ्च पमायप्पसंगेणं
॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंग वीवाह
तिव्व अणुरागे ॥ चउञ्च वयस्स इआरे, पडिक्क
मे० ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वए पंचमंमि आयरि,
अ मप्पसङ्घंमि ॥ परिमाण परिछेए, इञ्च पमाय
प्पसंगेणं ॥ १७ ॥ धण धन्न खित्त वत्थू, रुप्प सु
वन्नेअ कुविअ परिमाणे ॥ दुपए चउप्पयंमि, प
डिक्कमे० ॥ १८ ॥ गमणस्सउ परिमाणे, दिसा
सु उड्ढं अहेअ तिरिअंच ॥ वुड्ढिसइअंतरद्धा,

पढमंमि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जंमिअ मंसं मिअ, पुप्फेअ फलेअ गंधमल्लेअ ॥ उवभोगे परिभोगे, बीयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते पडिबद्धे, अपोल दुप्पोलि अंच आहारे ॥ तुच्छोसहि भरकणाया, पडिक्कमे० ॥ २१ ॥ इंगाली वणसाडी, भाडी फोडी सुवज्जए कम्मं ॥ वाणिज्जं चेवय दं, त लरक रस केस विसविसयं ॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिल्लण, कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं ॥ सरदह तलाय सोस, असइपोसंच वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्थग्गि मुसल जंतग, तणकठ्ठ मंत मूल भेसज्जे ॥ दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे० ॥ २४ ॥ न्हाणु वट्टण वन्नग, विलेवणे सद्दरूव रस गंधे ॥ वत्थासणआभरणे, पडिक्कमे० ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण भोग अइरित्ते ॥ दंडंमि अणठ्ठाए तइअंमि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवठ्ठाणे तहा सइ विहूणे ॥ सामाइअ

वितह कए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे ॥ देसावगासिअंमि, बीए सिक्खावए निंदे ॥ २८ ॥ संथारुच्चारविही, पमाय तह चेव भो यणाभोए ॥ पोसह विहि विवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस मच्छरे चेव ॥ कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहिए सुअ दुहिए सुअ, जामे असंजएसु अणुकंपा ॥ रागे णव दोसेणव, तं निंदे तंच गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु संविभागो, नकओ तव चरणकरणजुत्तेसु ॥ संते फासु अ दाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥३२॥ इह लोए परलोए, जीविअ मरणे अ आसंस पओगे ॥ पंचविहो अइआरो, मा मझ हुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए ॥ मणसा माणसिअस्स, सबस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवय

सिक्खागा, खेसु सन्ना कसाय दंमेसु ॥ गुत्ती सुअ समिईसुअ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्मद्दिठी जीवो, जइ विहुपावं समा यरे किंचि ॥ अप्पोसि होइ बंधो, जेणन निद्ध धमं कुणइ ॥ ३६ ॥ तं पिहुसपडिक्कमणं, सप्प रिआवं सउत्तरगुणं च ॥ खिप्पं उवसामेइ. वाहि व सुसिक्खिउ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विमं कुठ गयं, मंत मूल विसारया ॥ विज्जाहणंति मंते हिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥ एवं अठविहं कम्मं, राग दोस समज्जिअं ॥ आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावउ ॥ ३९ ॥ कय पावोवि मणुस्सो, आलोइअ निंदिअ गुरुस गासे ॥ होइ अइरेग लहुउ, उहरिअ जरुव भारवहो ॥ ४० ॥ आवस्सएण एएण, सावउ जइवि बहुरउ होइ ॥ डुक्खाण मंत किरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा बहुविहा, नयसंभरिआ पडिक्कमणकाले ॥ मूल

गुण उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स ॥ अप्नुठिउमि आरा, हणाए विरउमि विराहणाए ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआइं० ॥ ४४ ॥ जावंत केवि साहू० ॥ ४५ ॥ चिर संचिय पाव पणासणीइ, नवसय सहस्स महणीए ॥ चउवीस जिण विणिग्गय कहाइं, वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगल मरिहंता सिद्धा साहू सुअंच धम्मो अ ॥ सम्म द्दिठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥ ४७ ॥ पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाण मकरणे पडिक्कमणं ॥ असद्दहणे अ तहा, विवरीय परूवणाए अ ॥ ४८ ॥ खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे ॥ मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणइ ॥ ४९ ॥ एव महं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ डुगंछिअं सम्मं ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ५० ॥ ॥ इति ॥ ३५ ॥

॥ अथ अप्नुठित ॥

॥ इञ्छाकारेण संदिसह नगवन्, अप्नुठि
तमि, अप्निंतर देवसिअं खामेउं ॥ इञ्छं खामेमि
देवसिअं, जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं ॥ न
त्तं पाणे विणए वेआवञ्चे, आलावे संलावे उ
ञ्चासणे ॥ समासणे अंतरनासाए, उवरिन्नासा
ए जंकिंचि ॥ मज्झ विणय परिहीणं, सुहुमंवा
बायरंवा ॥ तुप्ने जाणह, अहं न याणामि ॥
तस्स मिञ्छामि डुक्कडं ॥ इति ॥ ३६ ॥

॥ अथ आयरिअ उवन्नाए ॥

॥ आयरिअ उवन्नाए, सीसे साहम्मिए
कुलगणे अ ॥ जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण
खामेमि ॥ १ ॥ सवस्स समण संघस्स, नगव
उ अंजलिं करिअ सीसे ॥ सव्वं खमावइत्ता,
खमामि सवस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सवस्स जीव
रासिस्स, नावउ धम्म निहिअ निअचित्तो ॥
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सवस्स अहयंपि ॥३॥

॥ अथ नमोस्तु वर्द्धमानाय ॥

॥ इच्छामो अणुसहिं, नमो खमासमणाणं ॥ नमोर्हत्० ॥ नमोस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्म्मणा ॥ तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनां ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या, ज्यायः क्रमकमलावलिं दधत्या ॥ सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं, कथितं संतु शिवाय ते जिनेंद्राः ॥ २ ॥ कषायतापार्दितजंतुनिर्वृतिं, करोति यो जैनमुखांबुदोद्गतः ॥ सशुक्रमासोद्भववृष्टिसन्निभो, दधातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिरां ॥३॥

॥ अथ विशाललोचन ॥

॥ विशाललोचनदलं, प्रोद्यद्दंतांशुकेसरं ॥ प्रातर्वीरजिनेंद्रस्य, मुखपद्मं पुनातु वः ॥ १ ॥ येषामभिषेककर्म कृत्वा, मत्ता हर्षभरात् सुखं सुरेंद्राः ॥ तृणमपि गणयंति नैव नाकं, प्रातः संतु शिवाय ते जिनेंद्राः ॥ २ ॥ कलंकनिर्मुक्तममुक्तपूर्णतं, कुतर्कराहुग्रसनं सदोदयं ॥ अ

पूर्वचंडं जिनचंद्रनापितं, दिनागमे नौमि बु
धैर्नमस्कृतं ॥ ३ ॥ ॥ इति ॥ ३९ ॥

॥ अथ सूत्रदेवक्षेत्रदेवस्तुतिः ॥

॥ सुअ देवयाए करेमि काउस्सग्गं० ॥ सुअ
देवया नगवई, नाणा वरणीअ कम्म संघायं ॥
तेसिं खवेउ सययं, जेसिं सुअसायरे नत्ती॥१॥

॥ अथ खित्तदेवयाए करेमि० ॥

॥ जीसे खित्ते साहू, दंसण नाणेहिं चरण
सहिएहिं ॥ साहंति मुक्कमग्गं, सा देवी हरउ
डुरिआइं ॥ १ ॥ ॥ इति ॥ ४१ ॥

॥ अथ कमलदलस्तुतिः ॥

॥ कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी क
मलगर्नसमगौरी ॥ कमले स्थिता नगवती,
ददातु श्रुतदेवता सिद्धिं ॥ १ ॥ ॥ इति ॥ ४२ ॥

॥ अथ नुवणदेवयादिस्तुति ॥

॥ नुवण देवयाए करेमि काउस्सग्गं० ॥
यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुनिः साध्यते क्रि

याः ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, नूयान्नः सुखदा यिनी ॥ १ ॥ ॥ इति ॥ ४३ ॥

॥ अथ ज्ञानादिगुणयुतानां ॥

॥ ज्ञानादिगुणयुतानां, नित्यं स्वाध्याय संयमरतानां ॥ विदधातु नुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥ १ ॥ ॥ इति ॥ ४४ ॥

॥ अथ अड्डाइज्जेसु मुनिवंदन ॥

॥ अड्डाइज्जेसु दीव समुद्देसु, पन्नरससु कम्म नूमीसु ॥ जावंत केविसाहू, रयहरण गुछ पडि ग्गह धारा ॥ पंचमहव्वयधारा, अठारस सहस्स सीलंग धारा ॥ अरकयायारचरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मछएण वंदामि ॥ १ ॥ इति ॥ ४५ ॥

॥ अथ वरकनंक ॥

॥ वरकनकशंखविद्रुम, मरकतघनसन्नि नं विगतमोहं ॥ सप्ततिशतं जिनानां, सर्वाम रपूजितं वंदे ॥ १ ॥ ॥ इति ॥ ४६ ॥

॥ अथ लघुशांतिस्तवः ॥

॥ शांतिं शांतिनिशांतं, शांतं शांतां शिवं नमस्कृत्य ॥ स्तोतुः शांतिनिमित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥ १ ॥ उमिति निश्चितवचसे, नमो नमो नगवतेऽर्हते पूजां ॥ शांतिजिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनां ॥ २ ॥ स कलातिशेषकमहा. संपत्तिसमन्विताय शस्या य ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च, नमो नमः शां तिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह, स्वामिक संपूजिताय · निजिताय ॥ नुवनजनपालनोद्य त, तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वडुरितौ घनाशन कराय सर्वाशिवप्रशमनाय ॥ ऊष्ट ग्रहनूतपिशा च शाकिनीनां प्रमथनाय ॥ ॥ ५ ॥ यस्येति नाम मंत्र, प्रधानवाक्योपयो गकृततोपा ॥ विजया कुरुते जनहित, मिति च नुता नमत तं शांतिं ॥ ६ ॥ नवतु नमस्ते न गवति विजये सुजये परापरैरजिते ॥ अपरा

जिते जगत्यां, जयतीति जयावहे नवति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि च संघस्य, नद्रकल्याणमंगलप्रददे ॥ साधूनां च सदा शिव, सुतुष्टिपुष्टिप्रदे जीयाः ॥ ८ ॥ नव्यानां कृतसिद्धे, निर्वृति निर्वाणजननिं सत्वानाम् ॥ अनयप्रदाननिर ते, नमोस्तु स्वस्तिप्रदे तुन्यं ॥ ९ ॥ नक्तानां जंतूनां, शुनावहे नित्यमुद्यते देवि ॥ सम्यग् दृष्टीनां धृति, रतिमतिबुद्धिप्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशासननिरतानां, शांतिनतानां च जग ति जनतानां ॥ श्रीसंपत्कीर्तियशो, वर्द्धनि जयदेवि विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानलविष विषधर, दुष्टग्रहराजरोगरणनयतः ॥ राक्ष सरिपुगणमारी, चौरेतिश्वापदादिन्यः ॥ १२ ॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शांतिं च कुरु कुरु सदेति ॥ तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्व स्तिं च कुरु कुरु त्वं ॥ १३ ॥ नगवति गुणवति शिवशां,ति तुष्टि पुष्टि स्वस्तीह कुरु कुरु जना

नां ॥ उमिति नमो नमो ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः ॥ यः क्षः ह्रीं फुट् फुट् स्वाहा ॥ १४ ॥ एवं यन्नामाक्षर, पुरस्सरं संस्तुता जया देवी ॥ कुरुते शांतिं नमतां, नमो नमः शांतये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरिदर्शित, मंत्रपदविदर्भितः स्तवः शांतेः ॥ सलिलादिभयविनाशी, शांत्यादिकरश्च भक्तिमतां ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथायोग्यं ॥ स हि शांतिपदं यायात्, सूरिश्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ उपसर्गाः क्षयं यांति, छिद्यंते विघ्नवल्लयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणं ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनं ॥ १९ ॥

॥ इति लघुशांतिस्तवः ॥ ४७ ॥

॥ अथ चउक्कसाय ॥

॥ चउक्कसाय पडिमल्लुल्लूरणु, दुज्जय मयण बाण मुसुमूरणू ॥ सरस पिअंगु वन्नुगयगामि

उ, जयउ पासु नुवणत्तयसामिउ ॥ १ ॥ जसु तणु कंति कडप्पसिणिद्धउ, सोहइ फण मणि किरणालिद्धउ ॥ नं नव जलहर तडिल्लय लंबिउ ॥ सो जिणु पासु पयछउ वंछिउ ॥ २ ॥
॥ इति चउक्कसाय ॥ ४८ ॥

॥ अथ नरहेसरनी सद्याय ॥

॥ नरहेसर बाहुबली, अनयकुमारो अ ढंढण कुमारो ॥ सिरिउ अणियाउत्तो, अइमुत्तो नागदत्तो अ ॥ १ ॥ मेअज्ज थूलिनद्दो, वयररिसि नंदिसेण सीहगिरि ॥ कयवन्नोअ सुकोसल, पुंमरिउ केसि करकंमू ॥ २ ॥ हल्ल विहल्ल सुदंसण, साल महासाल सालिनद्दो अ ॥ नद्दो दसन्ननद्दो, पसन्नचंदो अ जसनद्दो ॥ ३ ॥ जंबुपहु वंकचूलो, गयसुकमालो अवंतिसुकुमालो ॥ धन्नो इलाइपुत्तो, चिलाइपुत्तो अ बाहुमुणी ॥ ४ ॥ अज्जगिरि अज्जरक्खिअ, अज्जसुहत्थी उदायगो मणगो ॥ कालयसूरि संबो, प

जुन्नो मूलदेवो अ ॥ ५ ॥ पभवो विन्हुकुमारो,
अद्दकुमारो दढप्पहारीअ ॥ सिज्जंस कूरगडू अ,
सिज्जंभव मेहकुमारो अ ॥ ६ ॥ एमाइ महा स
त्ता, दिंतु सुहं गुणगणेहिं संजुत्ता ॥ जेसिं नाम
ग्गहणे, पावपबंधा विलय जंति ॥ ७ ॥ सुलसा
चंदन बाला, मणोरमा मयणरेहा दमयंती ॥ न
मयासुंदरी सीया, नंदा भद्दा सुभद्दा य ॥ ८ ॥
रायमई रिसिदत्ता, पउमावइ अंजणा सिरी दे
वी ॥ जिठ सुजिठ मिगावइ, पभावइ चिल्लणा
देवी ॥ ए ॥ बंभी सुंदरी रुप्पिणि, रेवइ कुंती
सिवा जयंतीय ॥ देवइ दोवइ धारणी, कलाव
ई पुप्फचूला य ॥ १० ॥ पउमावइ य गोरी, गं
धारी लरकमणा सुसीमाय ॥ जंबूवइ सच्चभा
मा, रुप्पिणि कन्हठ महिसीउ ॥ ११ ॥ जरका
य जरकदिन्ना, भूआ तह चेव भूअदिन्नाय ॥
सेणा वेणा रेणा, भइणीउ थूलिभद्दस्स ॥ १२ ॥
इच्चाइ महासइउ, जयंति अकलंकसीलकलि

आउ ॥ अज्जवि वज्जइ जासिं, जस पडहो तिहु
अणे सयले ॥ १३ ॥ ॥ इति सत्ता सतीउनी
सद्याय ॥ ४ए ॥

॥ अथ मन्हजिणाणं सद्याय ॥

॥ मन्हजिणाणं आणं, मिछं परिहरह धर सम्मत्तं ॥ छव्विह आवस्सयंमि, उज्जुत्तो होइ पइ दिवसं ॥ १ ॥ पव्वेसु पोसहवयं, दाणं सीलं तवो अ जावो अ ॥ सद्याय नमुक्कारो, परोवयारो अ जयणाअ ॥ २ ॥ जिणपूआ जिणथूणिणं, गुरुथुअ साहम्मिआण वछल्लं ॥ ववहारस्स य सुद्धि, रहजुत्ता तिछजुत्ताय ॥ ३ ॥ उवसम विवेक संवर, जासासमिई छजीव करुणा य ॥ धम्मिअ जण संसग्गो, करणदमो चरिण परिणामो ॥ ४ ॥ संघोवरि बहु माणो, पुछय लिहणं पजावणा तिछे ॥ सढाण किच्च मेअं, निच्चं सुगुरुवएसेणं ॥ ५ ॥ ॥ इति ॥ ५० ॥

॥ अथ तीर्थवंदना ॥

॥ सकल तीर्थ वंदूं करजोड्य, जिनवरना में मंगल कोड्य ॥ पहेलें स्वर्गें लाख बत्रीश, जिनवर चइत्य नमुं निशदीश ॥ १ ॥ बीजे लाख अठाविश कह्यां, त्रीजे बार लाख सदह्यां ॥ चौथे स्वर्गें अड लख धार, पांचमे वंदूं लाख जचार ॥ २ ॥ छठे स्वर्गे सहस पचास, सातमे चालिश सहस प्रासाद ॥ आठमें स्वर्गे छ ह जार, नव दसमे वंदूं शत चार ॥ ३ ॥ अग्यार बारमे त्रणशें सार ॥ नवग्रैवेयंक त्रणशें अढा र ॥ पांच अनुत्तर सर्वे मली, लाख चोराशी अधिका वली ॥ ४ ॥ सहस सत्ताणुं त्रेविश सा र, जिनवर भुवन तणो अधिकार ॥ लांबां शो जोजन विस्तार, पचास उंचां बोहोंतेर धार ॥ ॥ ५ ॥ एकशो एंशी बिंब परिमाण, सभासहि त एक चैत्यें जाण ॥ शो कोड बावन कोड सं भाल, लाख चोराणुं सहस चौंआल ॥ ६ ॥ सा

तशें उपर साठ विशाल, सवि बिंब प्रणमुं त्रण काल ॥ सात कोडनें बोहोतेर ला ख ॥ भुवनपतिमां देवल भांख ॥ ७ ॥ एक शो एंशी बिंब प्रमाण, एक एक चइत्यें संख्या जाण ॥ तेरशें कोड नेव्याशी कोड, साठ ला ख वंदूं करजोड ॥ ८ ॥ बत्रीशेंने उगणसाठ, तिर्गलोकमां चइत्यनो पाठ ॥ त्रण लाख एका णुं हजार, त्रणसें वीश ते बिंब जुहार ॥ ९ ॥ व्यंतर जोतिषिमां वली जेह, शाश्वता जिन वं दूं तेह ॥ रिषभ चंज्ञानन वारिखेणं, वर्द्धमान नामें गुणशेण ॥ १० ॥ समेत शिखर वंदूं जि न वीश, अष्टापद वंदूं चोवीश ॥ विमलाचल ने गढ गिरनार, आबुउपर जिनवर जुहार ॥ ११ ॥ शंखेश्वर केशरियो सार, तारंगे श्री अजित जुहार ॥ अंतरीक वरकाणो पास, जीरा वलोने थंभण पास ॥ १२ ॥ गाम नगर पुर पा टण जेह, जिनवर चैत्य नमुं गुणगेह ॥ विहर

मान वंदूं जिन वीश, सिद्ध अनंत नमुं निश दीश ॥ १३ ॥ अढी द्वीपमां जे अणगार, अढार सहस सिलांगना धार ॥ पंच महाव्रत समिती सार, पाले पलावे पंचाचार ॥ १४ ॥ बाह्य अभ्नितर तपउजमाल, ते मुनि वंदूं गुणमणिमाल ॥ नित नित उठी कीर्त्ति करूं, जीव कहे भवसायर तरूं ॥ १५ ॥ ॥ इति ॥ ५१ ॥

॥ अथ सकलार्हत् ॥

॥ सकलार्हत्प्रतिष्ठान, मधिष्ठानं शिवश्रियः ॥ भूर्भुवःस्वस्त्रयीशान, मार्हत्यं प्रणिदध्महे ॥ १ ॥ नामाकृतिद्रव्यभावैः, पुनतस्त्रिजगज्जनं ॥ क्षेत्रे काले च सर्वस्मि, न्नर्हतः समुपास्महे ॥ २ ॥ आदिमं पृथिवीनाथ, मादिमं निःपरिग्रहं ॥ आदिमं तीर्थनाथं च, ऋषभस्वामिनं स्तुमः ॥ ३ ॥ अर्हंतमजितं विश्व, कमलाकरभास्करं ॥ अम्लानकेवलादर्श, संक्रांतजगतं स्तुवे ॥ ४ ॥ विश्वभव्यजनाराम, कुल्यातुल्या

जयंतु ताः ॥ देशनासमये वाचः, श्रीसंभवज
गत्पतेः ॥ ५ ॥ अनेकांतमतांभोधि, समुल्लास
नचंद्रमाः ॥ दद्यादमंदमानंदं, भगवानभिनंद
नः ॥ ६ ॥ द्युसत्किरीटशाणाग्रो, त्तेजितांघ्रिन
खावलिः ॥ भगवान् सुमतिस्वामी, तनोत्वभिम
तानि वः ॥ ७ ॥ पद्मप्रभप्रभोर्देह, भासः पु
ष्णंतु वः श्रियं ॥ अंतरंगारिमथने, कोपाटो
पादिवारुणाः ॥ ८ ॥ श्रीसुपार्श्वजिनेंद्राय, महे
न्द्रमहितांघ्रये ॥ नमश्चतुर्वर्णसंघगगनाभो
गभास्वते ॥ ९ ॥ चंद्रप्रभप्रभोश्चंद्र, मरीचि
निचयोज्ज्वला ॥ मूर्त्तिर्मूर्त्तसितध्यान, निर्मितेव
श्रियेऽस्तुवः ॥ १० ॥ करामलकवद्विश्वं, कल
यन्केवलश्रिया ॥ अचिंत्यमाहात्म्यनिधिः, सुवि
धिर्बोधयेऽस्तु वः ॥ ११ ॥ सत्वानां परमानंद,
कंदोद्भेदनवांबुदः ॥ स्याद्वादामृतनिस्यंदी, शीत
लः पातु वो जिनः ॥ १२ ॥ भवरोगार्त्तजंतूना,
मगदंकारदर्शनः ॥ निःश्रेयसश्रीरमणः, श्रे

यांसः श्रेयसेऽस्तु वः ॥ १३ ॥ विश्वोपकारकी
भूत, तीर्थकृत्कर्मनिर्मितिः ॥ सुरासुरनरैः पूज्यो,
वासुपूज्यः पुनातु वः ॥ १४ ॥ विमलस्वामिनो
वाचः, कतकक्षोदसोदराः ॥ जयंति त्रिजगच्चे
तो, जलनैर्मल्यहेतवः ॥ १५ ॥ स्वयंभूरमण
स्पर्द्धि, करुणारसवारिणा ॥ अनंतजिदनंतां वः,
प्रयच्छतु सुखश्रियं ॥ १६ ॥ कल्पद्रुमसधर्म्माण,
मिष्टप्राप्तौ शरीरिणां ॥ चतुर्धा धर्म्मदेष्टारं, ध
र्म्मनाथमुपास्महे ॥ १७ ॥ सुधासोदरवाग्ज्यो
त्स्ना, निर्म्मलीकृतदिङ्मुखः ॥ मृगलक्ष्मा तमः
शान्त्यै, शांतिनाथजिनोऽस्तु वः ॥ १८ ॥ श्री
कुंथुनाथो भगवान्, सनाथोतिशयर्द्धिभिः ॥ सु
रासुरनृनाथाना, मेकनाथोऽस्तु वः श्रिये ॥१९॥
अरनाथस्तु भगवां, श्चतुर्थारनभोरविः ॥ चतु
र्थपुरुपार्थश्री, विलासं वितनोतु वः ॥ २० ॥
सुरासुरनराधीश, मयूरनववारिदं ॥ कर्म्मद्रून्मू
लनेहस्ति, मल्लिं मल्लिमभिष्टुमः ॥ २१ ॥ जग

न्महामोहनिद्रा, प्रत्यूषसमयोपमं ॥ मुनिसुव्र
तनाथस्य, देशनावचनं स्तुमः ॥ २२॥ लुठंतो
नमतां मूर्ध्नि, निर्मलीकारकारिणं ॥ वारिप्लवा
इव नमेः, पांतु पादनखांशवः ॥ २३ ॥ यदुवंश
समुद्रेंदुः, कर्मकक्षहुताशनः ॥ अरिष्टनेमिर्भ
गवान्, भूयाद्वोऽरिष्टनाशनः ॥ २४ ॥ कमठे ध
रणेंद्रे च, स्वोचितं कर्म कुर्वति ॥ प्रभुस्तुल्यम
नोवृत्तिः, पार्श्वनाथः श्रियेऽस्तु वः ॥ २५ ॥ श्री
मते वीरनाथाय, सनाथायाद्भुतश्रिया ॥ महानं
दसरोराज, मरालायार्हते नमः ॥ २६ ॥ कृता
पराधेपि जने, कृपामंथरतारयोः ॥ ईषद्बाष्पार्द्र
योर्भद्रं, श्रीवीरजिननेत्रयोः ॥ २७ ॥ जयति वि
जितान्यतेजाः, सुरासुराधीशसेवितः श्रीमान् ॥
विमलस्त्रासविरहित, स्त्रिभुवनचूडामणिर्भग
वान् ॥ २८ ॥ वीरः सर्व सुरासुरेंद्रमहितो वीरं
बुधाः संश्रिताः, वीरेणाभिहतः स्वकर्मनि
चयो वीराय नित्यं नमः ॥ वीरात्तीर्थमिदं प्र

लत्तमतुलं वीरस्य घोरं तपो, वीरे श्रीधृति कीर्त्तिकांतिनिचयः श्रीवीर जद्रं दिश ः ॥ २९ ॥ अवनितलगताना कृत्रिमाकृत्रिमानां, वरभुवन गतानां दिव्यवैमानिकानां ॥ इह मनुजकृतानां देवराजार्चितानां, जिनवरभुवनानां नावतोहं नमामि ॥ ३० ॥ सर्वेषां वेधसामाद्य, मादिमं परमेष्ठिनं ॥ देवाधिदेवं सर्वज्ञं, श्रीवीरं प्रणिद ध्महे ॥ ३१ ॥ देवोऽनेकनवार्जितोर्जितमहापा पप्रदीपानलो, देवः सिद्धिवधूविशाल हृदयाऽलं कारहारोपमः ॥ देवोष्टादशदोषसिंधुरघटानि र्नेदपंचाननो, नव्यानां विदधातु वांछितफलं श्रीवीतरागो जिनः ॥ ३२ ॥ ख्यातोऽष्टापदप र्वतो गजपदः सम्मेतशैलाभिधः, श्रीमान् रै वतकः प्रसिद्धमहिमा शत्रुंजयो मंडपः ॥ वैभार कनकाचलोऽर्बुदगिरिः श्रीचित्रकूटादय, स्तत्र श्रीऋषनादयोजिनवराः कुर्वंतु वोमंगलं ॥ ३३ ॥

॥ अथ अजितशांतिस्तवन ॥

॥ अजिअं जिअसवजयं, संतिंच पसंत सवगयपावं ॥ जयगुरु संति गुणकरे, दोवि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥ ववगय मंगुल जावे, तेहं विउल तवनिम्मल सहावे ॥ निरुवम महप्पजावे, थोसामि सुदिठ सप्नावे ॥ २ ॥ गाहा ॥ सवडुक्कप्पसंतीणं, सव पावप्पसंतिणं ॥ सया अजिय संतीणं, नमो अजिअ संतिणं ॥ ३ ॥ सिलोगो ॥ अजिय जिण सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम नामकित्तणं ॥ तहय धिइमइ प्पवत्तणं, तवय जिणुत्तम संतिकित्तणं ॥४॥ मागहिआ ॥ किरिआविहि संचिअ कम्मकिलेसविमुक्कयरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणि सिद्धिगयं ॥ अजिअस्स य संति महामुणिणोवि अ संतिकरं, सययं मम निवुइ कारणयं च नमंसणयं ॥ ५ ॥ आलिंगणयं ॥ पुरिसा जइ डुक्कवारणं, जइअ विमग्गह

सुक्खकारणं ॥ अजिअं संतिं च भावओ, अभ
यकरे सरणं पवज्जहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अ
रइ रइतिमिर विरहिअ मुवरय जरमरणं, सुर
असुर गरुल भुअगवइ पयय पणिवइअं ॥
अजिअ महमविअ सुनय नय निउण मभय
करं. सरण मुवसरिअ भुवि दिविजमहिअं
सयय मुवणमे ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तंच जिणुत्तम
मुत्तम नित्तम सत्तधरं, अज्जव मद्दव खंतिविमु
त्ति समाहि निहिं ॥ संतिकरं पणमामि दमुत्तम
तिथ्थयरं, संति मुणीममसंति समाहिवरं दिसउ
॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावथ्थिपुव्वपथ्थिवं च वरहथ्थि
मथ्थय पसथ्थ विथ्थिन्न संथिअं थिर सरिथ्थ वथ्थं
मयगल लीलायमाण वर गंध हथ्थि पथ्थाण प
थ्थियं संथवारिहं हथ्थिहथ्थ बाहु धंतकणग रुअ
ग निरुवहय पिंजरं पवर लख्खणो वचिअ सो
मचारु रूवं सुइ सुहमणाभिराम परम रमणि
ज्ज वरदेव दुंदुहि निनाय महुरयर सुहगिरं

॥ ए ॥ वेढ्ढउ ॥ अजिअं जिअरिगणं, जिअ स
व्वनयं नवो हरिउं ॥ पणमामि अहं पयउ, पावं
पसमेउ मे नयवं ॥ १० ॥ रासालुद्धउ ॥ कुरु
जणवय हत्थिणाउर नरीसरो पढमं तउ महाच
क्कवट्टिनोए महप्पनावो जोबावत्तरि पुरवर सह
स्स वर नगर निगम जणवयवइ बत्तीसाराय
वर सहस्साणु आय मग्गो चउदस वर रयण
नव महानिहि चउसठि सहस्स पवर जुवइण
सुंदर वइ चुलसी हय गय रह सय सहस्स
सामी छन्नवइ गाम कोडि सामी आसिजो ना
रहंमि नयवं ॥ ११ ॥ वेढ्ढउ ॥ तं संतिं संतिकरं,
संतिन्नं सव्व नया ॥ संतिंथुणामि जिणं, संतिं
विहेउमे ॥ १२ ॥ रासानंदिअयं ॥ इस्काग वि
देहनरीसर, नरवसहा मुणिवसहा ॥ नव सारय
ससि सकलाणण, विगय तमा विहुअरया ॥ अ
जि उत्तम तेअ गुणेहिं महामुणिं अमिअ बला
विउल कुला ॥ पणमामि ते नवनय मूरण, जग

सरणा मम सरणं ॥ १३ ॥ चित्तलेहा ॥ देव दा
णविंद चंद सूरवंद हठ तुठ जिठ परम, लठ
रूव धंत रुप्प पट्ट सेअ सुद्ध निद्ध धवल ॥ दं
तपंति संति सत्ति कित्ति मुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर,
दित्त तेअ वंदधेअ सव्वलोअ भाविअ प्पभाव
णे अ पइसमे समाहिं ॥ १४ ॥ नारायज ॥
विमल ससिकलाइरे अ सोमं, वितिमिर
सूर कराइरे अ तेअं ॥ तिअसवइ गणाइरे
अ रूवं, धरणिधर प्पवराइरे अ सारं ॥ १५ ॥
कुसुमलया ॥ सत्ते अ सया अजिअं, सारीरं अ
बले अजिअं ॥ तव संजमेअ अजिअं, एस थु
णामि जिणं अजिअं ॥ १६ ॥ भुअगपरिरंगि
अं ॥ सोमगुणेहिं पावइ नतं नवसरय ससी, ते
अ गुणेहिं पावइनतं नवसरयरवी ॥ रूवगुणे
हिं पावइनतं तिअस गणवइ, सारगुणेहिं
पावइनतं धरणिधरवइ ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं ॥
तित्थवर पवत्तयं तमरयरहिअं, धीरजण थु

अचिअं चुअ कलिकलुसं ॥ संतिसुहप्पवत्तयं तिगरण पयउ, संतिमहंमहा मुणि सरण मुवण मे ॥ १८ ॥ ललिअयं ॥ विणउणय सिररइ अंजलि, रिसिगण संथुअं थिमिअं ॥ विबुहा हिव धणवइ नरवइ, थुअ महिअचिअं बहु सो ॥ अइ रुग्गय सरय दिवायर, समहिअ सप्पन्नं तवसा ॥ गयणंगण वियरण समुइअ, चारण वंदिअं सिरसा ॥ १९ ॥ किसलयमा ला ॥ असुर गरुल परि वंदिअं, किन्नरोरगन मंसिअं ॥ देव कोडिसयसंथुअं, समणसंघप रिवंदिअं ॥ २० ॥ सुमुहं ॥ अजयं अणहं अर यं अरुयं अजिअं अजिअं पयउ पणमे ॥ ॥ २१ ॥ विज्जुविलसिअं ॥ आगयावर विमाण, दिव्व कणग रह तुरय पहकर सएहिं हुलिअं ॥ ससंभमो अरण खुभिअ, लुलिअ चल कुंम लं गय तिरीम सोहंत मउलिमाला ॥ २२ ॥ वेढउ ॥ जं सुरसंघा सासुर संघा वेर विउत्ता भ

त्ति सुजुत्ता, आयर नूसिअ संनमापिंफिअ सुठु
सु विह्निअ सव्वबलोघा ॥ उत्तम कंचण रयण प
रूविअ नासुर नूसण नासुरिअंगा, गाय स
मोणय नत्तिवसा गय पंजलिपेसियसीस पणा
मा ॥ ७३ ॥ रयणमाला ॥ वंदिऊणथोऊणतो
जिणं, तिगुणमेवय पुणोपयाहिणं ॥ पणमिऊण
य जिणं सुरासुरा, पमुइआ सनवणाइंतो ग
या ॥७४॥ खित्तयं ॥ तं महामुणिमहंपि पंजलि,
राग दोस नय मोह वज्जिअं ॥ देवदाणव नरिं
द वंदिअं, संति मुत्तम महातवं नमे ॥ ७५ ॥
खित्तयं ॥ अंबरंतरविआरणिआहिं, ललिअ
हंस वहुगामिणिआहिं ॥ पीण सोणियण सा
लिणिआहिं, सकल कमल दललोअणि आ
हिं ॥ ७६ ॥ दोवयं ॥ पीण निरंतर थणनरविण
मिय गायलयाहिं, मणिकंचण पसिढिलमह
ल सोहिअसोणि तडाहिं ॥ वरखिंखिणिनेउर
संतिलय वलय विनूसणियाहिं, रइकर चउर

मणोहर सुंदरं दंसणि आहिं ॥ २७ ॥ चित्तक्क
रा ॥ देवसुंदरीहिं पाय वंदिआहिं वंदिआय ज
स्स ते सुविक्कमाकमा अप्पणो निडालएहिं मं
डणोड्डणप्पगारएहिं केहिं केहिं वी अवंग तिल
य पत्तलेह नामएहिं चिल्लएहिं संगयं गयाहिं
भत्ति सन्निविठ वंदणागयाहिं हुंति ते वंदिआ
पुणो पुणो ॥ २८ ॥ नारायउ ॥ तमहं जिणचंदं,
अजिअं जिअमोहं ॥ धुअसव्वकिलेसं, पयउ पण
मामि ॥ २९ ॥ नंदिअयं ॥ थुअवंदिअस्सा
रिसिगण देवगणेहिं, तो देव वहुहिं पयउ पण
मिअस्सा ॥ जस्स जगुत्तमसासणअस्सा, भत्ति
वसा गयपिंडिअआहिं ॥ देव वरछरसा बहुआ
हिं, सुरवर रइगुण पंडिअआहिं ॥ ३० ॥ भासुर
यं ॥ वंस सद्द तंति ताल मेलिए तिउक्कराभिराम
सद्द मीस एकए अ, सुइसमाणणे अ सुद्ध स
ज्ज गीअ पाय जालघंटि आहिं ॥ वलय मेहला
कलावनेउराभिराम सद्द मीसए कए अ देवनं

हिआहिं ॥ हाव भाव विब्भम प्पगारएहिं न
चिरणअंग हारएहिं वंदिआय जस्स ते सुवि
क्कमाकमा ॥ तयंतिलोअ सव्व सत्त संतिकारयं
पसंत सव्व पाव दोस मेसहं नमामि संतिमुत्त
मं जिणं ॥ ३१ ॥ नारायव ॥ छत्त चामर पडाग
जूअ जव मंडिआ, झयवर मगर तुरय सि
रि वच्छ सुलंछणा ॥ दीवसमुद्द मंदरदिसाग
यसोहिआ, सत्थिअवसहसीहरहचक्कवरंकिया
॥ ३२ ॥ ललिअयं ॥ सहावलठ्ठा समप्पइठ्ठा,
अदोस दुठ्ठा गुणेहिं जिठ्ठा ॥ पसायसिठ्ठा तवेण
पुठ्ठा, सिरीइ इठ्ठा रिसीहिं जुठ्ठा ॥ ३३ ॥ वा
णवासिआ ॥ ते तवेण धुअसव्वपावया, सव्व
लोअहिअ मूल पावया ॥ संथुआ अजिअसंति
पायया, हुंतु मे सिव सुहाणदायया ॥ ३४ ॥
अपरांतिका ॥ एवं तव बल विउलं, थु
अंमए अजिअ संति जिणजुअलं ॥ ववगय
कम्म रयमलं, गइं गयं सासयं विउलं ॥ ३५ ॥

गाहा ॥ तं बहुगुणप्पसायं, मुक्ख सुहेण परमे ण अविसायं ॥ नासेउ मेविसायं, कुणउअ प रिसाविअ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं मोएउ अनंदिं, पावेउअ नंदिसेणमभिनंदिं ॥ परिसा विय सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमेनंदिं ॥३७॥ गाहा ॥ पक्खिअ चाउम्मासे, संवछरिए अ वस्स भणिअवो ॥ सोअवो सवेहिं, उवसग्ग नि वारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जोअ निसुण इ, उनउ कालंपि अजिअ संतिथयं ॥ न हु हुंति तस्स रोगा, पुवुप्पन्ना विनासंति ॥३९॥ जइ इ छह परम पयं, अहवा कित्तिं सुविछडं भुवणे ॥ तातेलुक्कुद्धरणे, जिणवयणे आयरं कुणह ॥४०॥ गाहा ॥ इति श्रीअजितशांतिस्तवनं ॥ ५३ ॥

॥ अथ महोटी शांति ॥

॥ भो भो भव्याः शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्व मेतत्, ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हतां भक्तिभा जः ॥ तेषां शांतिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा,

दारोग्यश्रीधृतिमतिकरी क्लेशविध्वंसहेतुः ॥१॥ भो भो भव्यलोका इह हि भरतैरावतविदेहसंभवानां समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकंपानंतरमवधिना विज्ञाय ॥ सौधर्म्माधिपतिः सुघोषा घंटा चालनानंतरं ॥ सकलसुरासुरेंद्रैः सह समागत्य ॥ सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकाद्रिशृंगे ॥ विहितजन्माभिषेकः शांतिमुद्घोषयति ॥ यथा ततोऽहं कृतानुकारमिति कृत्वा ॥ महाजनो येन गतः संपथाः ॥ इति भव्यजनैः सह समेत्य स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय ॥ शांतिमुद्घोषयामि ॥ तत्पूजायात्रास्नात्रादिमहोत्सवानंतरमिति कृत्वा ॥ कर्णं दत्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा ॥ ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयंतां प्रीयंतां भगवतोऽर्हतः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनस्त्रिलोकनाथास्त्रिलोकमहितास्त्रिलोकपूज्यास्त्रिलोकेश्वरास्त्रिलोकोद्योतकराः ॥ ॐ ऋषभ, अजित, संभव, अभिनंदन, सुमति, पद्मप्रभ,

सुपार्श्व, चंद्रप्रभ, सुविधि, शीतल, श्रेयांस, वासुपूज्य, विमल, अनंत, धर्म्म, शांति, कुंथु, अर, मल्लि, मुनिसुव्रत, नमि, नेमि, पार्श्व, वर्द्धमानांताः जिनाः शांताः शांतिकरा भवंतु स्वाहा ॥ ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविजयदुर्भिक्ष कांतारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षंतु वो नित्यं स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं श्रीं धृति, मति, कीर्ति, कांति, बुद्धि, लक्ष्मी, मेधा, विद्या, साधन, प्रवेश, निवेशनेषु ॥ सुगृहीतनामानो जयंतु ते जिनेंद्राः ॥ ॐ रोहिणी, प्रज्ञप्ति, वज्रशृंखला, वज्रांकुशी, अप्रतिचक्रा, पुरुषदत्ता, काली, महाकाली, गौरी, गांधारी, सर्वास्त्रामहाज्वाला, मानवी, वैरोट्या, अछुप्ता, मानसी, महामानसी, षोडश विद्या देव्यो रक्षंतु वो नित्यं स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्ण्यस्य ॥ श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॥ ॐ ग्रहाश्चंद्रसूर्यांगारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनै

श्चरराहुकेतुसहिताः सलोकपालाः सोम यमवरुणकुबेर वासवादित्यस्कंध विनायको पेताः येचान्येपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयंतां प्रीयंतां ॥ अक्षीणकोशकोष्ठागारा नरपतयश्च नवंतु स्वाहा ॥ ॐ पुत्र, मित्र, भ्रात्र, कलत्र, सुहृद्, स्वजन, संबंधि, बंधुवर्ग सहिताः नित्यं चामोदप्रमोदकारिण अस्मिँश्च नूमंमलायतन निवासी साधु साध्वी श्रावक श्राविकाणां रोगोपसर्ग व्याधि दुःख दुर्निक्षदौर्मनस्योपशमनाय शांतिर्नवतु ॥ ॐ तुष्टि, पुष्टि, ऋद्धि, वृद्धि, मांगल्योत्सवाः ॥ सदा प्रादुर्नूतानि पापानि शाम्यंतु दुरितानि ॥ शत्रवः पराङ्मुखा नवंतु स्वाहा ॥ श्रीमते शांतिनाथाय, नमः शांतिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधीश, मुकुटाभ्यर्चितांघ्रये ॥ १ ॥ शांतिः शांतिकरः श्रीमान्, शांतिं दिशातु मे गुरुः ॥ शांतिरेव सदा तेषां, येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ उन्मृष्ट

रिष्ट दुष्ट, ग्रहगति दुःस्वप्न दुर्निमित्तादि ॥ संपादितहित संप, न्नामग्रहणं जयति शांतेः ॥ ३ ॥ श्रीसंघजगज्जनपद, राजाधिपराजसन्निवेशानां ॥ गोष्ठिकपुरमुख्यानां, व्याहरणैर्व्याहरेच्छांतिं ॥ ४ ॥ श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु ॥ श्रीपौरजनस्य शांतिर्भवतु श्रीजनपदानां शांतिर्भवतु ॥ श्रीराजाधिपानां शांतिर्भवतु ॥ श्रीराजसन्निवेशानां शांतिर्भवतु ॥ श्रीगोष्ठिकानां शांतिर्भवतु ॥ श्रीपौरमुख्यानां शांतिर्भवतु ॥ श्रीब्रह्मलोकस्य शांतिर्भवतु ॥ ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा ॥ एषां शांतिप्रतिष्ठा यात्रास्नात्राद्यवसानेषु ॥ शांतिकलशं गृहीत्वा, कुंकुम चंदन कर्पूरागरु धूप वास कुसुमांजलिसमेतः ॥ स्नात्रचतुष्किकायां श्रीसंघसमेतः शुचिशुचिवपुः पुष्पवस्त्रचंदनाभरणालंकृतः, पुष्पमालां कंठे कृत्वा शांतिमुद्घोषयित्वा ॥ शांतिपानीयं मस्तके दातव्य

मिति ॥ नृत्यंति नृत्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजंति गायंति च मंगलानि ॥ स्तोत्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान्, कल्याणन्नाजो हि जिनान्निषेके ॥ १ ॥ शिवमस्तु सर्व्वजगतः, परहितनिरता नवंतु नूतगणाः ॥ दोषाः प्रयांतु नाशं, सर्वत्र सुखीनवंतु लोकाः ॥ २ ॥ अहं तिञयरमाया शिवादेवी तुम्हनयर निवासिनी ॥ अम्हशिवं तुम्ह शिवं अशिवोपशमं शिवं नवतु स्वाहा ॥ ३ ॥ उपसर्गाः क्षयं यांति, छिद्यंते विघ्नवल्लयः ॥ मनः प्रसन्नातामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ४ ॥ सर्व्व मंगलमांगल्यं, सर्व्वकल्याणकारणं ॥ प्रधानं सर्व्वधर्माणां, जैनं जयति शासनं ॥ ५ ॥ इति बृहच्छांतिः स्तव ॥ ५४ ॥

॥ अथ संतिकरस्तवन ॥

॥ संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिरीइ दायारं ॥ समरामि नत्त पालग, निव्वाणी गरुडकय सेवं ॥ १ ॥ ॐ सनमो विप्पोसहि पत्ता

णं संति सामिंपायाणं, कैाँ स्वाहा मंतेणं, सवा
सिव डुरिअहरणाणं ॥ २ ॥ ॐ संति नमुक्कारो,
खेलोसहि माइ लद्धि पत्ताणं ॥ साँ ह्रौं नमो स
व्वो, सहि पत्ताणं च देइसिरिं ॥३॥ वाणी तिहुअ
ण सामिणि, सिरि देवी जरककराय गणिपिडगा ॥
गह दिसिपाल सुरिंदा, सयावि रक्कंतु जिणभ
त्ते ॥ ४ ॥ रक्कंतु मम रोहिणी, पन्नत्ती वज्जसिख
ला सया ॥ वज्जंकुसि चक्केसरि, नरदत्ता कालि
महाकाली ॥ ५ ॥ गोरी तह गंधारी, महजाला
माणवीअ वइरुट्टा॥ अछुत्ता माणसिआ, महा
माणसिआउ देवीउ ॥ ६ ॥ जरका गोमुह मह
जरक, तिमुह जरकेसु तुंबरू कुसुमो ॥ मायग वि
जय अजिआ, बंभो मणुउ सुरकुमारो ॥ ७ ॥
छम्मुह पयाल किन्नर, गरुलो गंधव्व तहय ज
रिकंदो ॥ कुबेर वरुणो भिउडी, गोमेहो पासमायं
गो ॥ ८ ॥ देवीउ चक्केसरि, अजिआ डुरि आ
री कालि महाकाली ॥ अच्चुअ संता जाला, सु

तारयासोअ सिरिवच्छा ॥ ए ॥ चंमा विजयंकुसि
प, न्नःत्ति निव्वाणि अच्चुआ धरणी ॥ वइरुट्ट छुत्त
गंधा, रि अंब पउमावई सिद्धा ॥ १० ॥ इअ तिच्छ
रक्कण रया, अन्नेवि सुरासुरी चउहावि ॥ वंतर
जोइणी पमुहा, कुणंतु रक्कंसया अम्हं ॥ ११ ॥ ए
वं सुद्दिछि सुरगण, सहिउ संघस्स संति जिण
चंदो ॥ मऊवि करउ रक्कं, मुणिसुंदर सूरि थुअम
हिमा ॥ १२ ॥ इअ संतिनाह सम्म, दिछि रक्कं
सरइ ति कालं जो ॥ सव्वोवद्दव रहिउ, स लहइ
सुहसंपयं परमं ॥ १३ ॥ तवगछगयणदि
णयर, जुगवर सिरि सोमसुंदरगुरूणं ॥ सुपसा
य लद्धगणहरं, विद्या सिद्धिं जणइसीसो ॥ १४ ॥
इति संतिकर स्तवनम् ॥ ५५ ॥

॥ अथ श्रीपाक्षिकादि अतिचार ॥

॥ नाणंमि दंसणंमिअ, चरणंमि तवंमि त
हय विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इय एसो
पंचहा जणिउ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार, दर्शनाचार,

चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार ॥ ए पंचविध आचारमांहि अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हु उ होय, ते सवि हुं मनें, वचनें, कायायें करी तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥ १ ॥

तत्र ज्ञानाचारे आठ अतिचार ॥ कालेविणए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण अत्थ तदुभए, अठविहो नाण मायारो ॥१॥ ज्ञान काल वेलायें नण्यो गुण्यो नहीं. अकालें नण्यो. विनयहीन, बहुमानहीन, योगउपधान हीन, अनेरा कन्हें नणी अनेरो गुरु कह्यो. देव गुरु वांदणे, पडिक्कमणे, सच्चाय करतां नणतां, गुणातां, कूडो अक्षर काने मात्रायें अधिको उगे नण्यो. सूत्र कूडुं कह्युं. अर्थ कूडो कह्यो. तदुभय कूडां कह्यां. नणिने विसार्यां. साधु तणे धर्म काजें काजो अणउद्धर्ये मांडो अणपडिलेहे, वसतिअण शोधे, अणपवेसे, असज्झाइ अंणो

जाइ, मांहे श्री दशवैकालिकप्रमुख सिद्धांत भण्यो गुण्यो. श्रावकतणे धर्मे थविरावलि, पडिक्कमणां, उपदेशमाला प्रमुख सिद्धांत भण्यो गुण्यो. काल वेला काजो अणउद्धस्ये पढियो. ज्ञानोपगरण, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नोकरवाली, सापडा, सापडी, दस्तरी, वही, उलिया प्रमुख प्रत्यें पग लाग्यो. थूंक लाग्युं. थूंके करी अक्षर मांज्यो. उशीसें धस्यो. कने छतां आहार निहार कीधो. ज्ञानद्रव्य भक्षतां उपेक्षा कीधी. प्रज्ञापराधें विणसतो विणाड्यो. विणसतो उवेख्यो. छती शक्तियें सार संभाल न कीधी. ज्ञानवंतप्रत्यें द्वेष, मत्सर, चिंतव्यो. अवज्ञा आशातना कीधी. कोइप्रत्यें भणतां, गणतां अंतराय कीधो. आपणा जाणपणा तणो गर्व चिंतव्यो. मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनः पर्यवज्ञान, केवलज्ञान, ए पंचविधज्ञान तणी असद्दहणा कीधी.

कोइ तोतडो बोबडो हस्यो, वितर्क्यो, अन्य था प्ररूपणा कीधी ॥ ज्ञानाचारव्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस० ॥ १ ॥

दर्शनाचारे आठ अतिचार ॥ निस्संकिय निक्कंखिय, निव्वितिगिछा अमूढदिट्ठीअ ॥ उववूह थिरीकरणे, वछल पन्नावणे अठ ॥ १ ॥ देव गुरू धर्म तणेविषे निःशंकपणुं न कीधुं तथा एकांत निश्चय न कीधो. धर्म संबंधीया फल तणे विषे निःसंदेह बुद्धि धरी नहीं. साधु साधवीनां मल मलिन गात्र देखी डुगंछ निपजावी. कुचारित्रीया देखी चारित्रीया उपर अन्नाव हुउ. मिथ्यात्वीतणी पूजा प्रन्नावना देखी मूढदृष्टिपणुं कीधुं. तथा संघमांहे गुणवंत तणी अनुपबृंहणा कीधी, अस्थिरीकरण, अवात्सल्य, अप्रीति, अन्नक्ति निपजावी. अबहुमान कीधुं. तथा देवद्रव्य, गुरुद्रव्य, ज्ञानद्रव्य, साधारणद्रव्य, न्नक्षित उपेक्षित प्रज्ञापराधें विणाइयो. विणसतो उ

वस्यो. छती शक्तियें सार संभाल न कीधी. तथा साधर्मिक साथें कलह कर्मबंध कीधो. अ धोती, अष्टपड मुखकोश, पाखें देवपूजा कीधी. बिंबप्रत्यें वासकूंपी, धूपधाणुं, कलशनणो ठ बको लाग्यो. बिंब हाथथकी पाड्युं. उसास निःसास लाग्यो. देहरे, उपासरे, मलश्लेष्मा दिक लोह्युं. देहरामांहे हास्य, खेल, केलि, कुतूहल, आहार निहार कीधां. पान. सोपा री, निवेदीआं खाधां. ठवणाहारी हाथथकी पा डी. पडिलेहवुं विसास्युं. जिनभुवनें चोराशी आशातना; गुरु गुरुणी प्रत्यें तेत्रीश आशात ना कीधी होय. गुरुवचन तहत्ति करी पडिवज्युं नही ॥ दर्शनाचारव्रत विषइयो अनेरो जे को इ अतिचार पक्ष दिवस० ॥ २ ॥

चारित्राचारे आठ अतिचार ॥ पणिहाण जोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तिहिं ॥ एस चरित्तायारो, अठविहो होइ नायव्वो ॥ १ ॥

ईर्या समिति ते अणजोए हिंड्या. भाषा समिति ते सावद्य वचन बोल्या. एषणा समिति ते तृण, डगल, अन्न पाणी असूझतुं लीधुं. आदानभंडमत्त निक्खेवणा समिति ते आसन, शयन, उपकरण मातरुं प्रमुख अणपूंजी जीवाकुल भूमिकायें मूक्युं लीधुं. पारिष्ठापनिका समिति ते मल मूत्र श्लेष्मादिक अणपूंजी जीवाकुल भूमिकायें परठव्युं. मनोगुप्ति, मन मां आर्त्त रौद्रध्यान ध्यायां. वचनगुप्ति, सावद्य वचन बोल्यो. कायगुप्ति शरीर अणपडिलेह्युं हलाव्युं. अणपूंजे बेठा. ए अष्टप्रवचन माता ते, सदैव साधुतणे धर्मे अने श्रावकतणे धर्मे, सामायिक पोसह लीधे, रूडीपेरें पाल्या नहीं. खंडणा विराधना हुइ ॥ चारित्राचार व्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस मांही सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुउ हो

य, ते सवि हुं मनें वचनें कायायें करी तस्स मि च्छामि दुक्कडं ॥ ३ ॥

विशेषतः श्रावकतणें धर्मे श्रीसम्यक्त्व मूल बारव्रत, सम्यक्त्व तणा पांच अतिचार ॥ शंका कंखविगिच्छा० ॥ शंका श्रीअरिहंततणा बल, अतिशय, ज्ञानलक्ष्मी, गांभीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा, चारित्रीयानां चारित्र, श्रीजिनवचन तणो संदेह कीधो ॥ आकांक्षा: ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, क्षेत्रपाल, गोगो, आसपाल, पादरदेवता, गोत्रदेवता, ग्रहपूजा, विनायक, हनुमंत, सुग्रीव, वाली, नाह, इत्येवमादिक देश, नगर, गाम, गोत्र, नगरी, जूजू आ देव, देहरांना प्रभावदेखीरोग आतंक कष्ट आवे इह लोक परलोकार्थे पूज्या मान्या. सिद्ध विनायक जीरा वलानें मान्युं, इच्छुं. बौद्ध, सांख्यादिक संन्यासी, भरडा, भगत, लिंगिया, जोगीया, जोगी, दरवेश, अनेरा दर्शनीयातणो कष्ट, मंत्र, चम

त्कार देखी परमार्थ जाण्याविना भूलाव्या, मो हिया. कुशास्त्र शीख्यां, सांभल्यां. श्राद्ध संव छरी, होलि, बलेव, माहिपूनम, अजापडवो, प्रेतबीज, गौरीत्रीज, विनायकचोथ, नागपांच मी, झिलणा छठी, शीलसातमी, ध्रुवआठमी, नौली नौमी, अहवा दशमी, व्रतअग्यारशी, वछबारशी, धनतेरशी, अनंतचउदशी, अमा वास्या, आदित्यवार, उत्तरायण, नैवेद्य कीधां. नवोदक, याग, भोग, उतारणां कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां. पिपले पाणी घाल्यां, घलाव्या. घ रबाहिर क्षेत्र, खले, कूवे, तलावें, नदीयें, द्रहें, वावियें, समुद्रें, कुंडें, पुण्यहेतु स्नान कीधां, करा व्यां, अनुमोद्यां. दान दीधां. ग्रहण, शनिश्चर, माहमासें नवरात्री, नाहायां. अजाणना थाप्यां अनेराइ व्रत व्रतोलां कीधां, कराव्यां ॥ विति गिछा धर्म संबंधीआं फल तणे विषे संदेह की धो. जिन अरिहंत धर्मना आगर, विश्वोपकार

सागर, मोक्षमार्गना दातार, इस्या गुणजणी न मान्या, न पूज्या. महासती, माहात्मानी इह लोक परलोक संबंधीया जोग वांछित पूजा कीधी. रोग, आतंक कष्ट आवे खीण वचन जोग मान्या. माहात्मानां जात, पाणी, मल शोजा तणी निंदा कीधी. कुचारित्रिया देखी, चारित्रिया उपर कुजाव हुउ. मिथ्यात्वी तणी पूजा प्रजावना देखी प्रशंसा कीधी. प्रीति मांमी. दाक्षिण्य लगें तेहनो धर्म मान्यो, कीधो ॥ श्रीसम्यक्त्वव्रत विषयिउ अनेरो जे कोइ अतिचार, पक्ष दिवसमांहि० ॥ १ ॥

पहेले स्थूलप्राणातिपात विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ वहबंधछविछेए० ॥ द्विपद चतुष्पद प्रत्यें रीशवशे गाढो घाव घाल्यो. गाढे बंधनें बांध्या. अधिक जार घाल्यो. निलांछन कर्म कीधां. चारापाणी तणी वेलायें सार संजाल न कीधी. लेहणे देणें किणाहिं प्रत्यें लंघाव्यो. तेणे

भूखें आपण जम्या. कन्हें रही मराव्यो. बंधी खाने घलाव्यो. शाल्यांधान्य तावडे नाख्यां. दलाव्यां. भरडाव्यां. शोधी न वावर्यां. इंधण, छाणां, अणशोध्यां बाल्यां. तेमांहि साप, विंछी, खजूरा, सरवला, मांकड, जूआ, गिंगोडा, साहतां मुआ. उद्दव्या. रुडे स्थानकें न मूक्या. कीडि मकोडिनां इंडां विछोह्यां. लीख फोडि. उद्देही, कीडी, मकोडि, घीमेल, कातरां, चूडेल, पतंगिया, देडकां, अलसीयां, इअल, कुंता, डांस, मसा, बगतरा, माखी, तीड प्रमुख जीव विणठा. माला हलावतां चलावतां पंखी, चडकलां, काग तणां इंडां फोड्यां. अनेरा एकेंद्रियादिक जीव विणास्या. चांप्या. उद्दव्या. कांइ हलावतां, चलावतां, पाणी छांटतां, अनेरा कांइ काम काज करतां, निध्वंसपणुं कीधुं. जीवरक्षा रूडी न कीधी. संखारो सूकाव्यो. रूडुं गलणुं न कीधुं. अणगल पाणी वावर्युं. रूडी जयणा

न कीधी. अणगल पाणीयें झील्या. लुगडा धो यां. ग्वाटला तावडे नाख्या. झाटक्या. जीवा कुलनूमि लींपी. वाशीगार राखी. दलणें, खांमणें, लींपणें, रूडी जयणा न कीधी. आठम चउदशना नियम नांग्या. धूणी करावी ॥ पहेले स्थूलप्राणातिपात विरमण व्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥ १ ॥

बीजे स्थूलमृषावाद विरमण व्रतें पांच अतिचार ॥ सहसारहस्सदारे० ॥ सहसातकारे कुणह प्रत्यें अजुगतुं आल अन्याख्यान दीधुं. स्वदारा मंत्र नेद कीधो. अनेरा कुणहनो मंत्र, आलोच मर्म प्रकाश्यो. कुणहनें अनर्थ पाड वा कूडी बुद्धि दीधी. कूडो लेख लख्यो. कूडी साख नरी. थापण मोसो कीधो. कन्या, गौ, ढोर, नूमिसंबंधि लेहणें देणें व्यवसायें वाद वढवाड करतां मोटकुं जूठुं बोल्या. हाथ पग तणी गाली दीधी. कडकडा मोड्या. मर्म वचन बो

ल्या ॥ बीजे स्थूलमृषावाद विरमणव्रत विषइ उ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥ ७ ॥

त्रीजे स्थूलअदत्तादान विरमण व्रतें पांच अतिचार ॥ तेनाहडप्पयोगे० ॥ घर बाहिर खेत्र, खले, पराइ वस्तु अणमोकली लीधी. वावरी. चोराइ वस्तु वोहोरी. चोर धाडप्रत्यें संकेत कीधो. तेहनें संबल दीधुं. तेहनी वस्तु लीधी. विरुद्ध राज्यातिक्रम कीधो. नवा, पुराणा, सरस, विरस, सजीव, निर्जीव वस्तुना भेल संभेल कीधा. कूडे काटले, तोलें, मानें, मापें, वहोर्यां. दाण चोरी कीधी. कुणहनें लेखे वरांस्यो. साटे लांच लीधी. कूडो करहो काढ्यो. विश्वासघात कीधो. परवंचना कीधी. पासंग कूडां कीधां. डांडी चढावी. लहके त्रहके कूडा काटला मान मापां कीधां. माता, पिता, पुत्र, मित्र, कलत्र, वंची कुणहिने दीधुं. जूदी गांठ कीधी. थापण उलवी. कुणहिनें लेखे पलेखें

भूलव्युं. पडी वस्तु उलवी लीधी ॥ त्रीजे स्थूल अदत्तादान विरमणव्रत विषयिउ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवस० ॥ ३ ॥

चोथे स्वदारासंतोप. परस्त्रीगमन विरमण व्रतें पांच अतिचार ॥ अपरिग्गहिया इत्तर० ॥ अपरिगृहीतागमन इत्वर ॥ अपरिगृहीता गमन कीधुं. विधवा, वेश्या, परस्त्री, कुलांगना, स्वदारांशोकतणे विषे दृष्टिविपर्यास कीधो. सराग वचन बोल्यां. आठम, चउदश, अनेराइ पर्वतिथें नियम लइ भांग्या. घरघरेणां कीधां कराव्यां. वरवहू वखाण्यां. कुविकल्प चिंतव्यो. अनंग क्रीडा कीधी. स्त्रीनां अंगोपांग निरख्यां. पराया विवाह जोड्या. ढिंगला ढिंगली परणाव्यां. काम भोग तणे विषे तीव्र अभिलाष कीधो. अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, सुहणे स्वप्नांतरें हुआ. कुस्वप्न लाधां. नट,

विट, स्त्रीशुं हांसुं कीधुं ॥ चोथा स्वदारासंतोष व्रतविषयिउ अनेरो जे कोइ अतिचारपक्ष०॥४॥

पांचमे स्थूल परिग्रह परिमाणव्रतें पांच अतिचार ॥ धण धन्न खित्तवत्थू० ॥ धन धान्य, खेत्र, वास्तु, रूप्य, सुवर्ण, कुप्य, द्विपद, चतुष्पद, नवविध परिग्रह तणा नियम उपरांत वृद्धि देखी मूर्छा लगें संक्षेप न कीधो. माता, पिता, पुत्र, स्त्रीतणे लेखें कीधो. परिग्रह परमाण लीधुं नहीं. लेइने पढिउं नहीं. पढवुं विसार्युं. अलीधुं मेल्युं. नियम विसार्या ॥ पांचमे परिग्रह परिमाणव्रत विषयिउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥ ५ ॥

छठे दिग्परिमाणव्रते पांच अतिचार ॥ गमणस्सय परिमाणे० ॥ ऊर्ध्वदिशि, अधोदिशि, तिर्यग्दिशियें जावा आववातणा नियम लेइ नांग्या. अनाभोगे विस्मृत लगें अधिक भूमि गया. पाठवणी आघी पाछी मोकली. वहाण व्य

वसाय कीधो. वर्षाकालें गामतरूं कीधुं. भूमि
का एकगमा संखेपी, बीजीगमा वधारी ॥ उड्ढे
दिग्परिमाणव्रतविषयिउ अनेरो जे कोइ अति
चार पक्ष दिवसमांहि० ॥ ६ ॥

सातमे भोगोपभोग विरमण व्रतें भोजन आ
श्री पांच अतिचार अने कर्म हुंती पंदर अति
चार एवं वीश अतिचार ॥ सच्चित्ते पडिबद्धे० ॥
सचित्त नियम लीधे, अधिक सचित्त लीधुं ॥
अपक्वाहार, दुपक्वाहार, तुच्छोषधि तणुं भ
क्षण कीधुं. ओला, उंबी, पोंक, पापडी कीधां ॥
सच्चित्त दव्वविगइ, वाणह तंबोल वत्थ कुसुमेसु ॥
वाहण सयण विलेवण, बंभदिसि न्हाण भत्तेसु
॥ १ ॥ ए चउद नियम दिनगतरात्रिगत लीधा
नहीं. लेइने भांग्या. बावीश अभक्ष्य, बत्रीश
अनंत कायमांहि आलु, मूला, गाजर, पिंड,
पिंडालू, कचूरो, सूरण, कुणि आंबली, गलो,
वाघरडां खाधां. वाशी, कठोल, पोली, रोट

ली, त्रण दिवसनुं ऊदन लीधुं. मधु, मद्दुडा, मा
खण, माटी, वेंगण, पीलु. पीचु, पंपोटा, विप,
हिम, करहा, घोलवडां, अजाण्यां फल, टिंब
रु, गुंदां, महोर, अथाणुं, आमण बोर, काचुं
मीठुं, तिल, खसखस, कोठिंबडां खाधां. रात्रि
भोजन कीधां. लग बग वेलायें वालुं कीधुं. दि
वस विणउगें शीराव्या. तथा कर्मतः पन्नरक
र्मादान ॥ इंगालकम्मे, वणकम्मे, साडिक
म्मे, भाडिकम्मे, फोडिकम्मे, ए पांचकर्म्म ॥
दंतवाणिज्जे, लक्कवाणिज्जे, रसवाणिज्जे,
केसवाणिज्जे, विसवाणिज्जे, ए पांच वाणिज्य ॥
जंतपिल्लणकम्मे, निल्लंछणकम्मे, दवग्गि
दावणया, सरदह तलाय सोसणया, अस
इ पोसणया, ए पांच सामान्य ॥ ए पांच कर्म्म,
पांचवाणिज्य, पांच सामान्य, एवं पन्नर कर्मा
दान बहुसावद्य, महारंभ, रांगण, लीहाला,
कराव्या. इंट, निभाडा पचाव्या. धाणी, चणा,

पक्वान्न करी वेच्या. वाशी मांखण तपाव्यां. ति लवोढांख्या. फागणमासउपरांत राख्या. दलीढो कीधो. अंगीठा कराव्या. श्वान, बिल्लाडा, शूडा, सालहि, पोइया. अनेरा जे कांइ बहु सावद्य खरकर्मादिक समाचस्या. वाशीगार राखी. लीपणें, घूंपणें, माहारन कीधो. अणशोध्या चूला संधूक्या. घी, तेल, गोल, छाश तणांना जन उघाडां मूक्यां. तेमांहि माखी, कुंति, उंदर, घीरोली पडी. कीडी चडी, तेनी जयणा न कीधी ॥ सातमे भोगोपभोगविरमणव्रतविषयिउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि०॥७॥

आठमे अनर्थदंड विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ कंदप्पे कुक्कुइए० ॥ कंदर्पलगें विटचेष्टा, हास्य, खेल, कुतूहल कीधां. पुरुष स्त्रीना हाव भाव, रूप, शृंगार, विषयरस वखाण्या. राजकथा, भक्तकथा, देशकथा, स्त्रीकथा कीधी. पराइ तांत कीधी. तथा पैशुन्यपणुं कीधुं. आर्त्त

रौद्रध्यान ध्यायां. खांडां, कटार, कोश, कुहा डा, रथ, उखल, मुशल, अग्नि, घरंटी, निसा ह, दातरडां, प्रमुख अधिकरण मेली दाक्षिण लगें माग्यां आप्यां. पापोपदेश दीधो. अष्ट मी चतुर्दशीयें खांडवा दलवा तणा नियम भां ग्या. मूरखपणा लगें असंबंध वाक्य बोल्या. प्रमादाचरण सेव्यां. अंघोलें नाहणे, दातणें, पग धोअणें, खेलपाणि, तेल गंट्यां. झीलणें झील्या. जूवटें रम्या. हिंचोले हिंच्या. नाटक प्रेक्षणक जोयां. कण कुवस्तु, ढोर लेवराव्यां. कर्कश वचन बोल्या. आक्रोश कीधा. अबो ला लीधा. करडका मोड्या. मत्सर धर्यो. संभे डा लगाड्या. सराप दीधा. भेंसा, शांढ, हुडु, कूकडा, श्वानादिक झूझाख्या, झूझतां जोयां. खां धिलगें अदेखाइ चिंतवी. माटी, मीठुं, कण, क पाशीया, काजविण चांप्या. तेउपर बेठा. आ ली वनस्पति खुंदि. सूइ, शस्त्रादिक निपजा

व्यां. घणी निद्रा कीधी. राग द्वेष लगें एकने ऋद्धि परिवार वांछी. एकने मृत्यु हानी वांछी ॥ आठमे अनर्थ दंड विरमणाव्रत विषयिउ अने रो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥ ८ ॥

नवमे सामायिकव्रतें पांच अतिचार ॥ तिवि हे दुप्पणिहाणे० ॥ सामायिक लीधें मन आह ट्ट, दोहट्ट, चिंतव्युं. सावद्य वचन बोल्या. श रीर अणपडि लेह्युं हलाव्युं. छती वेलायें सा मायिक न लीधुं. सामायिक लेइ उघाडे मुखें बो ल्या. उंघ आवी. वात विकथा घरतणी चिंता कीधी. वीज दीवा तणी उज्जेहि हुइ. कण कपा शीया, माटी, मीठुं, खडी, धावडी. अरणेटो पा षाणप्रमुख चांप्यां. पाणी, नील, फूल, सेवाल, हरीयकाय, बीयकाय, इत्यादिक आभड्यां. स्त्री तिर्यंच तणा निरंतर परस्पर संघट्ट हुआ. मुहपत्तियो संघट्टि. सामायिक अण पूग्युं पाख्युं.

पारवुं विसार्युं ॥ नवमें सामायिकव्रत विषयि उ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस० ॥९॥

दशमे देशावगाशिकव्रतें पांच अतिचार ॥ आणवणे पेसवणे० ॥ आणवणप्पजगे, पेसवण प्पजगे, सद्दाणुवाई, रूवाणुवाई, बहिया पुग्गल पक्खेवे ॥ नियमित नूमिकामांहि बाहेरथी कांई अणाव्युं. आपण कन्हेथकी बाहेर कांई मोकल्युं. अथवा रूप देखाडी, कांकरो नाखी, साद करी आपपणुं बतुं जणाव्युं ॥ दशमे देशावगाशिक व्रत विषयिउ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥ १० ॥

इग्यारमे पोषधोपवासव्रतें पांच अतिचार॥ संथारुच्चारुविहि० ॥ अप्पडिलेहिय डुप्पडिलेहिय सज्जासंथारए ॥ अप्पडिलेहिय डुप्पडिलेहिय उच्चार पासवण नूमि ॥ पोसह लीधे संथारा तणी नूमि न पूंजी. बाहिरला लहुडां वडां स्थंमिल दिवसें शोध्यां नही. पडीलेह्यां

नही. मातरुं अणपूंज्युं हलाव्युं. अणपूंजी नू मिकायें परठव्युं. परठवतां " अणुजाणहजस्स ग्गो" न कह्यो. परठव्या पूठें वारत्रण " वोसिरे वोसिरे " न कह्यो. पोसह सालामांही पेसतां "निसिही" निसरतां " आवस्सहि " वार त्रण नणी नही. पुढवी, अप, तेउ, वाउ, वनस्पति, त्रसकाय तणा संघट्टपरिताप, उपद्रव, हुआ. संथारा पोरिसी तणो विधि नणवो विसार्यो. पोरिसीमांहे उंघ्या. अविधें संथारो पायर्यु. पा रणादिक तणी चिंता कीधी. कालवेलायें देव न वांद्या. पडिक्कमणुं न कीधुं. पोसह असूरो ली धो. सवेरो पार्यो. पर्वतिथें पोसह लीधो नही॥ इग्यारमे पोषधोपवासव्रत विषयिउ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष० ॥ ११ ॥

वारमे अतिथि संविन्नाग व्रतें पांच अति चार ॥ सच्चित्ते निक्खिवणे० ॥ सचित्त वस्तु हेठ उपरक्तां माहात्मा माहासती प्रत्यें असुफतुं

दान दीधुं. देवानी बुद्धें असूझतुं फेडी सूझतुं कीधुं. देवानी बुद्धें परायुं फेडी आपणुं कीधुं. अणदेवानी बुद्धें सूझतुं फेडी असूझतुं कीधुं. अणदेवानी बुद्धें आपणुं फेडी परायुं कीधुं. वोहोरवा वेला टली रह्या. असूरें करी माहात्मा तेड्या. मछर धरी दान दीधुं. गुणवंत आवे भक्ति न साचवी. छती शक्तें स्वामी वात्सल्य न कीधुं. अनेराई धर्मक्षेत्र सीदाता छती शक्तियें उद्धर्यां नही. दीन क्षीण प्रत्यें अनुकंपादान न दीधुं ॥ बारमे अतिथिसंविभागव्रत विषयिउ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥ १२ ॥

संलेषणा तणा पांच अतिचार ॥ इहलोए परलोए० ॥ इहलोगा संसप्पउगे, परलोगासंसप्पउगे, जीवियासंसप्पउगे, मरणासंसप्पउगे, कामभोगासंसप्पउगे ॥ इहलोके धर्मना प्रभावलगें राजऋद्धि, सुख, सौभाग्य, परिवार, वांछ्यो. परलोकें देव, देवेंद्र, विद्याधर, चक्रवर्त्ती

तणी पदवी वांछी. सुख आवे जीवितव्य वांछ्युं. दुःख आवे मरण वांछ्युं. काम भोग तणी वांछा कीधी ॥ संलेषणाव्रत विषयिउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥ १३ ॥

तपाचार बार भेद छ बाह्य, छ अभ्यंतर ॥ अणसण मूणोयरिआ० ॥ अणसण भणी उप वास विशेष पर्वतिथें छती शक्तियें कीधा नहीं. ऊणोदरीव्रत ते कोलिया पांच सात ऊणा रह्या नहीं. वृत्तिसंक्षेप ते द्रव्य भणी, सर्व वस्तुनो संक्षेप कीधो नहीं. रसत्याग तथा विगयत्याग न कीधो. कायक्लेश लोचादिक कष्ट कस्या न हीं संलीनता अंगोपांग संकोची राख्यां नहीं. पच्चरकाण भांग्या, पाटलो भगतो फेड्यो नहीं. गंठसी, पोरिसी, साढपोरिसि, पुरिमड्ढ, एकास णुं, बेआसणुं, नीवि, आंबिल प्रमुख पच्चक्का ण पारवुं विसार्युं. बेसतां नवकार न भण्यो. उठतां पच्चरकाण करवुं विसार्युं. गंठसीउं भा

ग्युं. नीवि, आंबिल, उपवासादिक, तप करी काचुं पाणी पीधुं. वमन हुउ. बाह्य तप विषयिउ अनेरो ज कोइ अतिचार पक्ष० ॥ १४ ॥

अभ्यंतरतप ॥ पायछित्तं विणउ० ॥ मनशुद्धें गुरू कन्हे आलोअण लीधी नहीं. गुरुदत्त प्रायश्चित्त तप लेखा शुद्धें पहुंचाड्यो नहीं. देव, गुरु, संघ, साहामी प्रत्यें विनय साचव्यो नहीं. बाल, वृद्ध, ग्लान, तपस्वी प्रमुखनुं वैयावच्च न कीधुं. वांचना, पृछना, परावर्त्तना, अनुप्रेक्षा, धर्मकथालक्षण पंचविध स्वाध्याय न कीधो. धर्मध्यान, शुक्लध्यान न ध्यायां. आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान ध्यायां. कर्मक्षय निमित्ते लोगस्स दशवीशनो काउस्सग्ग न कीधो ॥ अभ्यंतर तप विषयिउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्षदिवसमांहि० ॥ १५ ॥

वीर्याचारना त्रण अतिचार ॥ अणिगूहिअ बलविरिउ० ॥ पढवे, गुणवे, विनय, वैयावच्च,

देवपूजा, सामायिक, पोसह, दान, शील, तप, नावनादिक धर्मकृत्यनें विषे मन, वचन, काया तणुं ठतुं बल वीर्य गोपव्युं. रूडा पंचांग खमा समण न दीधां. वांदणातणा आवर्त्तविधि साचव्या नहीं. अन्यचित्त निरादरपणें बेठा. उतावलुं देववंदन, पडिक्कमणुं कीधुं ॥ वीर्याचार विषयिउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥ १६ ॥

नाणाइअठ पइवय, समसंलेहण पन्नरक म्मेसु ॥ बारस तप विरिअ तिगं, चउवीसंसय अइयारा ॥१॥ पडिसिद्धाणं करणे० ॥ प्रतिषेध, अनक्ष्य, अनंतकाय, बहुबीजनक्षण, महारंनपरिग्रहादिक कीधां. जीवाजीवादिक सूक्ष्म विचार सर्दह्या नहीं. आंपणी कुमति लगें उत्सूत्र प्ररूपणा कीधी. तथा प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोन, राग, द्वेष, कलह, अन्याख्यान, पैशु

न्य, रति अरति, परपरिवाद, मायामृषावाद, मिथ्यात्व शल्य, ए अढार पापस्थानक कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां होय. दिनकृत्यप्रतिक्रमण, विनय, वैयावच्च न कीधा. अनेरु जे काइ वीतरागनी आज्ञा विरुद्ध कीधुं, कराव्युं, अनुमोद्युं होय ॥ ए चिहुं प्रकारमांहे अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म, बादर, जाणतां, अजाणतां हुउ होय ते सवि हुं मनें, वचनें, कायायें करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥१७॥

एवंकारे श्रावकतणे धर्मे, श्री समकित मूल, बारव्रत, एकसो चोवीस अतिचारमांहि अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस मांहि सूक्ष्म, बादर, जाणतां अजाणतां हुउ होय ते सवि हुं मनें वचनें कायायें करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति श्रीश्रावकपक्खी, चोमासी, संवछरी अतिचार समाप्त ॥ ५६ ॥

॥ अथ प्रभातनां पच्चक्खांण ॥

॥ प्रथम नमुक्कार सहि मुठसहिनुं ॥

॥ उग्गए सूरे, नमुक्कार सहिअं, मुठिसहिअं पच्चक्खाइ ॥ चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं ॥ अन्नथणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरे ॥ ८७ ॥

॥ बीजुं पोरिसि साढपोरिसिनुं ॥

॥ उग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं, साढपोरिसिं, मुठिसहिअं, पच्चक्खाइ ॥ उग्गए सूरे, चउव्विहंपि, आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं ॥ अन्नथणा भोगेणं, सहस्सागारेणं, पछन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरे ॥८८॥

॥ त्रीजुं बियासणा एकासणानुं ॥

॥ उग्गए सूरे, नमुक्कार सहिअं, पोरिसिं, मुठिंसहिअं, पच्चक्खाइ ॥ उग्गए सूरे, चउविहं

पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं ॥ अन्नछणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकाले णं, दिसा मोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारे णं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं ॥ विगइउ पच्च क्खाइ ॥ अन्नछणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहछसंसठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्चमक्खिएणं, पारिठावणियागारेणं, महत्त रागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं, ॥ बिया सणं, पच्चक्खाइ तिविहंपि आहारं असणं खाइमं, साइमं, अन्नछणा भोगेणं, सह सागारेणं, सागारियागारेणं, आउंटण पसारे णं, गुरु अप्भुठाणेणं, पारिठावणियागारेणं, मह त्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं ॥ पाण स्स लेवेणवा, अलेवेणवा, अछेणवा, बहुलेण वा, ससिछेणवा, असिछेणवा, वोसिरे ॥ जो एकासणानुं पच्चक्खाण करवुं होय तो, बियास णंने ठेकाणे एकासणंनो पाठ केहवो ॥ ॥ इति

बियासणा एकासणानुं पच्चक्खाण समाप्त ॥५०॥

॥ चोथुं आयंबिलनुं पच्चक्खाण ॥

॥ उग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं, साढपोरिसिं, मुठिसहिअं पच्चक्खाइ ॥ उग्गए सूरे, चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ॥ आयंबिलं पच्चक्खाइ ॥ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पारिठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं ॥ एगासणं पच्चक्खाइ ॥ तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं ॥ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, आउंटण पसारेणं, गुरुअभ्भुठाणेणं, पारिठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ॥ पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अछेण वा, बहु

लेणवा, ससित्थेण वा, असित्थेणवा ॥ वोसिरे ॥ इति आयंबिलनुंपच्चरकाण ॥ ६० ॥

॥ पांचमुं तिविहार उपवासनुं ॥

॥ उग्गए सूरे, अप्भत्तठं पच्चरकाइ॥ तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं ॥ अन्नत्थणा भोगेणं, सहस्सागारेणं, पारिठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ॥ पाणाहार पोरिसिं, साढ पोरिसिं, मुठिसहिअं, पच्चरकाइ ॥ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पछन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं॥ पाणस्स लेवेण वा, अलेवेणवा, अछेण वा, बहुलेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा वोसिरे ॥ ॥ इति तिविहार उपवासनुं पच्चरकाण ॥ ६१ ॥

॥ छठुं चउविहार उपवासनुं ॥

॥ सूरे उग्गए अप्भत्तठं पच्चरकाइ ॥ चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्न

त्थणा नोगेणं, सहसागारेणं, पारिठावणियागा रेणं, महत्तरागारेणं, सवसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ इति चउविहारउपवासनुं ॥ ६२ ॥

॥ अथ सांझनां पच्चरकाण ॥

॥ तिहां प्रथम बीयासणं, एकासणं, आयंबिल, तिविहार उपवास, अने छठ जे करे तो तणे पाणहारनुं पच्चरकाण करवुं ते आवी रीतेः--

॥ पाणहार दिवसचरिमं पच्चरकाइ ॥ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ इति ॥ ६३ ॥

॥ बीजुं चउविहारनुं पच्चरकाण ॥

॥ दिवस चरिमं पच्चरकाइ ॥ चउविहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं ॥ अन्नत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सवसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ इति ॥ ६४ ॥

॥ त्रीजुं तिविहारनुं पच्चरकाण ॥

॥ दिवस चरिमं पच्चरकाइ ॥ तिविहंपि आहा

रं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्नबणा नोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सवसमाहिवत्ति यागारेणं वोसिरे ॥ इति तिविहारनुं ॥ ६५ ॥

॥ चोथुं डुविहारनुं पच्चरकाण ॥

दिवस चरिमं पच्चरकाइ ॥ डुविहंपि आहा रं, असणं, खाइमं, अन्नबणानोगेणं, सहसा गारेणं, महत्तरागारेणं, सव समाहिवत्तिया गारेणं वोसिरे ॥ इति ॥ ६६ ॥

॥ पांचमुं जे नियम धारे तेने देशावगा सियनुं पच्चरकाण करवुं तेनो पाठ कहे बे ॥

॥ देसावगासिअं उवनोगं परिन्नोगं पच्चरका इ॥ अन्नबणानोगेणं,सहसागारेणं, महत्तरागा रेणं,सव समाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ इति ६७

॥ बहुं पोसहनुं पच्चरकाण ॥

॥ करेमि नंते पोसहं, आहारपोसहं देसउ सवउ, सरीर सक्कार पोसहं सवउ, बंनचेर पोसहं सवउ, अवावारपोसहं सवउ, चउविहे

पोसहं ठामि ॥ जाव दिवसं अहोरत्तं प
ज्जुवासामि ॥ दुविहं तिविहेणं ॥ मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति पच्चक्खाणानि संपूर्णानि ॥ ६७ ॥

॥ अथ पोसह पारतां गाथा ॥

॥ सागरचंदो कामो, चंदवडिंसो सुदंसणो धन्नो ॥ जेसिं पोसह पडिमा, अखंडिआ जी विअंते वि ॥ १ ॥ धन्ना सलाहणिज्जा, सुलसा आणंद कामदेवा य ॥ जेसिं पसंसइ भयवं, द ढव्वयं तं महावीरो ॥ २ ॥ पोसह विधें लीधउं विधें पारीउं विधि करतां जे कोइ अविधि हुउ होइ. ते सवि हुं मन वचन कायायें करी मिच्छा मि दुक्कडं ॥ ॥ इति ॥ ६० ॥

॥ अथ संथारा पोरिसी ॥

॥ निसिही निसिही निसिही ॥ नमो खमास मणाणं, गोयमाइणं ॥ महामुणीणं ॥ ए पाठ त

था नवकार तथा करेमि नंते सामाइयं ॥ ए ट ला सर्व पाठ त्रण वार कहीनें ॥ अणुजाणह जि ठिज्जा ॥ अणुजाणह परमगुरू, गुरुगुणरय णेहिं मंमियसरीरा ॥ बहुपडिपुन्नापोरिसि, रा इय संथारए ठामि ॥ १ ॥ अणुजाणह संथारं, बाहुवहाणेण वामपासेणं ॥ कुक्कुडिपायपसा रण, अंतरंत पमज्जए नूमिं ॥ २ ॥ संकोइअ संमासा, उवट्टंतेअ काय पडिलेहा ॥ दवाइ उ वउगं, उसास निरुंनणा लोए ॥ ३ ॥ जइ मे हुज्ज पमाउ, इमस्स देहस्सिमाइ रयणीए ॥ आहार मुवहि देहं, सवं तिविहेण वोसिरिअं ॥ ४ ॥ चत्तारि मंगलं ॥ अरिहंता मंगलं ॥ सि द्धा मंगलं ॥ साहु मंगलं ॥ केवलिपन्नत्तो ध म्मो मंगलं ॥ ५ ॥ चत्तारि लोगुत्तमा ॥ अ रिहंता लोगुत्तमा ॥ सिद्धा लोगुत्तमा ॥ साहु लोगुत्तमा ॥ केवलि पन्नतो धम्मो लोगुत्तमो ॥ ६ ॥ चत्तारि सरणं पवज्जामि ॥ अरिहंते स

रणं पवज्जामि ॥ सिद्धे सरणं पवंज्जामि ॥ साहू सरणं पवज्जामि ॥ केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ ७ ॥ पाणाईवाय मलिअं, चोरिक्कं मेहुणं दविण मुछं ॥ कोहं माणं मायं, लोभं पिज्जं तहा दोसं ॥ ८ ॥ कलहं अप्नरकाणं, पसुन्न रई अरई समाउत्तं ॥ परपरिवायं माया, मोसं मिछत्तसल्लं च ॥ ए ॥ वोसिरिसु इमाइं, मुरक मग्ग संसग्ग विग्घनूआई ॥ दुग्गइ निबंधणाईं, अठारस पावठाणाईं ॥ १० ॥ एगोहं नत्थि मे कोई, नाह मन्नस्स कस्सई ॥ एवं अदीण मनसो, अप्पाण मणुसासई ॥ ११ ॥ एगो मे सासउ अप्पा, नाण दंसण संजुउ ॥ सेसा मे बाहिरा नावा, सव्वे संजोगलरकणा ॥१२॥ संजोगमूला जीवेण, पत्ता डुरकपरंपरा ॥ तम्हा संजोग संबंधं, सव्वं तिविहेण वोसिरिअं ॥१३॥ अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सु साहुणो गुरुणो ॥ जिणपन्नत्तं तत्तं, इअ सम्मत्तं मए गहि

ञं ॥ १४ ॥ खमिञ्च खमाविञ्च मइ खमिञ्च, सव्वह जीव निकाय ॥ सिद्धह साख आलोयण ह, मुज्झह वइर न नाव ॥ १५ ॥ सवे जीवा क म्म वस्स, चउदह राज नमंत ॥ ते मे सव्व ख माविञ्चा, मुज्झवि तेह खमंत ॥ १६ ॥ जं जं म णेण बद्धं, जं जं वाएण नासिञ्चं पावं ॥ जं जं काएण कयं, मिच्छामि डुक्कडं तस्स ॥ १७ ॥ ॥ इति संथारा पोरिसी ॥ ७० ॥

॥ अथ चैत्यवंदननो समुदाय ॥

॥ तत्र प्रथमं सीमंधरजिनचैत्यवंदनं ॥

॥ सीमंधर परमातमा, शिव सुखना दाता ॥ पुक्कल वइ विजये जयो, सर्व जीवना त्राता ॥ १ ॥ पूर्व विदेह पुंमरीगिणी, नयरीयें शोहे ॥ श्री श्रेयांस राजा तिहां, नविञ्चणनां मन मो हे ॥ २ ॥ चउद सुपन निर्मल लही, सतकी रा णी मात ॥ कुंथु अरजिन अंतरं, श्री सीमंधर जात ॥ ३ ॥ अनुक्रमें प्रनु जनमीया, वली

यौवन पावे ॥ मात पिता हरखें करी, रुकमिणी परणावे ॥ ४ ॥ भोगवी सुख संसारनां, संजम मन लावे ॥ मुनिसुव्रत नमी अंतरें, दीक्षा प्रनु पावे ॥ ५ ॥ घाती कर्मनो क्षय करी, पाम्या केवल नाण ॥ रिखन्न लंछनें शोन्नता, सर्व न्नावना जाण ॥ ६ ॥ चौरासी जस गणधरा, मुनिवर एक शो कोड ॥ त्रण नुवनमां जोअतां, नहिं कोइ एहनी जोड ॥ ७ ॥ दस लाख कह्या केवली, प्रन्नुजीनो परिवार ॥ एक समय त्रण कालना, जाणे सर्व विचार ॥ ७ ॥ उदय पेढाल जिनांतरेए, थाशे जिनवर सिद्ध ॥ जश विजय गुरु प्रणमतां, शुन्न वंछित फल लीध ॥ए॥

॥ अथ सीमंधरजिनद्वितीयचैत्यवंदन ॥

॥ श्रीसीमंधर जग धणी, आ भरतें आवो ॥ करुणावंत करुणा करी, अमने वंदावो ॥ १ ॥ सकल भक्त तुमे धणीए, जो होवे अमनाथ ॥ भवो भव हुं छुं ताहरो, नहीं मेलुं हवे साथ ॥

॥२॥ सयल संग छंमी करीए, चारित्र लेईशुं ॥ पाय तुमारा सेवीने, शिवरमणी वरिशुं ॥ ३ ॥ ए अलजो मुजने घणो ए, पूरो सीमंधर देव ॥ इहां थकी हुं वीनवुं, अवधारो मुऊ सेव ॥ ४ ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलजीनुं त्रीजुं चैत्यवंदन ॥

॥ विमल केवल ज्ञानकमला, कलित त्रिभुवन हितकरं ॥ सुरराजसंस्तुतचरणपंकज, नमो आदिजिनेश्वरं ॥ १ ॥ विमलगिरिवर शृंगमंमण, प्रवरगुणगणभूधरं ॥ सुर असुर किन्नर कोडि सेवित ॥ नमो० ॥ २ ॥ करती नाटक किन्नरी गण, गाय जिन गुण मनहरं ॥ निर्जरावली नमे अहनिश ॥ नमो० ॥ ३ ॥ पुंमरीक गणपति सिद्धि साधी, कोडि पण मुनि मनहरं ॥ श्रीविमल गिरिवर शृंग सिद्धा ॥ नमो० ॥ ४ ॥ निज साध्य साधन सुर मुनिवर, कोडि नंत ए गिरिवरं ॥ मुक्ति रमणी वर्या रंगें ॥ नमो० ॥ ५ ॥ पाताल नर सूरलोक मांही, विमल

गिरिवर तोपरं ॥ नहि अधिक तीरथ तीर्थपति कहे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ इम विमल गिरिवर शिखर मंमण, दुःख विहंमण ध्याईयें ॥ निज शुद्ध सत्ता साधनार्थं, परम ज्योतिने पाइयें ॥ ७ ॥ जित मोह कोह विछोह निज्ञा, परमपद स्थित जयकरं ॥ गिरिराज सेवाकरण तत्पर, पद्मविजय सुहित करं ॥ ८ ॥ ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ अथ सिद्धाचलनुं चोथु चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीशत्रुंजय सिद्ध खेत्र, दीठे दुर्गति वारे ॥ जाव धरीने जे चढे, तेने जवपार उतारे ॥ १ ॥ अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीरथनो राय ॥ पूर्व नवाणुं रिखजदेव, ज्यां ठविआ प्रजुपाय ॥ २ ॥ सूरज कुंमसोहामणो, कविड जक्क अजिराम ॥ नाजिराया कुलमंमणो, जिनवर करुं प्रणाम ॥ ३ ॥ ॥ इति चतुर्थ चैत्य० ॥ १४ ॥

॥ अथ श्रीपरमात्मानुं पांचमुं चैत्यवंदन ॥

॥ परमेसर परमातमा, पावन परमिठ ॥

जय जगगुरु देवाधिदेव, नयणें में दिठ ॥ १ ॥ अचल अकल अविकार सार, करुणा रससिंधु ॥ जगती जन आधार एक, निःकारण बंधु ॥ २ ॥ गुण अनंत प्रभु ताहारा ए, किमही कह्या न जाय ॥ राम प्रभु जिन ध्यानथी, चिदानंद सुख थाय ॥ ३ ॥ ॥ इति ॥ ७५ ॥

॥ अथ स्तवनानि प्रारभ्यन्तेः ॥

॥ तत्र प्रथम सीमंधरजिनस्तवनं ॥

॥ सुणो चंदाजी, सीमंधर परमातम पासें जाजो ॥ मुज वीनतडी, प्रेम धरीने एणि परे तुमे संभलावजो ॥ ए आंकणी ॥ जे त्रण्य भुवनने नायक छे ॥ जस चोसठ इंद्रपायक छे ॥ नाण दरिसण जेहनें खायक छे ॥ सुणो० ॥ १ ॥ जेनी कंचन वरणी काया छे ॥ जस धोरी लंछन पाया छे ॥ पुंमरीगिणि नगरीनो राया छे ॥ सुणो० ॥ २ ॥ बार पर्षदा मांहि बिराजे छे ॥ जस. चोत्रीश अतिशाय छाजे छे ॥ गुण पांत्रीश वा

णीए गाजे बे ॥ सुणो० ॥ ३ ॥ ज्नविजननें ते प
डिबोहे बे॥ तुम अधिक शितल गुण शोहे बे॥
रूप देखी ज्नविजन मोहे बे ॥ सुणो० ॥ ४ ॥
तुम सेवा करवा रसीउ हुं ॥ पण ज्नरतमां दूरें
वसीउ हुं ॥ महामोह राय कर फसीउ हुं ॥
सुणो० ॥ ५ ॥ पण साहिबचित्तमां धरीयो बे ॥
तुम आणा खड्ग कर ग्रहीयो बे ॥ पण कांईक
मुजथी मरीयो बे॥ सुणो० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम
पुंठ हवे पूरो ॥ कहे पद्मविजय थाउं शूरो ॥ तो
वाधे मुज मन अति नूरो ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय श्री सुबाहुजिनस्तवनं ॥

॥ चतुरसनेही मोहना ॥ ए देशी ॥

॥ स्वामी सुबाहु सुहंकरु, ज्नूनंदा नंदन प्या
रो रे ॥ निसढ नरेसर कुल तिलो, किं पुरुषानो
ज्नरतारो रे ॥ स्वामी० ॥ १ ॥ कपिलंबन नलि
नावती, विप्र विजय अजोध्यानाहो रे ॥ रंग म
लियें तेहश्युं, एह मणुय जनमनो लाहो रे ॥

स्वा० ॥ २ ॥ ते दिन सवि एलें गया, जिहां प्र
नुशुं गोठ न बांधी रे ॥ नक्ति दूतीकायें मन
हस्युं, पण वात कही बे आधी रे ॥ स्वा० ॥ ३ ॥
अनुनव मित्र जो मोकलो, तो ते सघली वात
जणावे रे ॥ पण तेहविण मुऊ नविसरे, कहो तो
पुत्र विचार ते आवे रे ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ तेणे जइ
वात सवे कही, प्रनुमल्या ते ध्याननें टाणे रे ॥
श्रीनयविजय विबुध तणो, इंम सेवक सुजस व
खाणे रे ॥ स्वा० ॥ ५ ॥ ॥ इतिस्तवनं ॥ ११ ॥

॥ तृतीय श्रीदेवजसाजिनस्तवनं ॥

॥ महाविदेह क्षेत्र शोहामणुं ए देशी ॥

॥ देव जसा दरिसण करो, विघटे मोह वि
नाव लालरे, प्रगटे शुद्धस्वनावता, आनंद ल
हरी दाव लालरे ॥ देव० ॥ १ ॥ स्वामी वसो
पुस्करवरें, जंबुनरतें दास लालरे ॥ क्षेत्र वि
नेद घणो पड्यो, केम पोहोंचे उल्लास लालरे ॥
देव० ॥ २ ॥ होवत जो तनु पांखडी, तो आवं

त नाथ हजूर लाललरे ॥ जो होवत चित्त आंख
डी, देखत नित्यप्रभु नूर लाललरे ॥ देव० ॥ ३ ॥
शासन भक्त जे सुरवरा, वीनवुं शीश नमाय
लाललरे ॥ कृपा करो मुज ऊपरें, तो जिनवंदन
थाय लाललरे ॥ देव० ॥ ४ ॥ पूछुं पूर्व विराधना,
शी कीधी एणें जीव लाललरे ॥ अविरति मोह
टली नहिं, दीठे आगम दीव लाललरे ॥ देव०
॥ ५ ॥ आतमतत्त्व स्वभावनें, बोधन शोधन
काज लाललरे ॥ रत्नत्रयी प्राप्ति तणो, हेतु कहो
महाराज लाललरे ॥ देव० ॥ ६ ॥ तुज सरिखो
साहिब मले, भांजे भवभ्रमटेव लाललरे ॥ पुष्टा
लंबन प्रभु लही, कोण करे परसेव लाललरे ॥
देव० ॥ ७ ॥ दीन दयाल कृपाल तुं, नाथ भ
विक आधार लाललरे ॥ देवचंद्र जिन सेवना,
परमामृत सुखकार लाललरे ॥ देव० ॥ ८ ॥ इति॥

॥ अथ चोथु वीशो विहरमाननुं स्तवन ॥

॥ राग रामकली ॥ सीमंधर युगमंधर बाहु,

चोथा स्वामी सुबाहु ॥ जंबुद्वीप विदेहें विचरे, के
वल कमला नाहुरे ॥ १ ॥ नविका विहरमान
जिनवंदो ॥ आतम पाप निकंदोरे ॥ न० ॥ ए
आंकणी ॥ सुजात स्वयंप्रन्न ऋषन्नानन, अनं
तवीरज चित्त धरीयें ॥ सूरप्रन्न श्रीविशाल व
ज्रंधर, चंडानन धातकीयेंरे ॥ नवि० ॥ २ ॥ चं
ड्बाहु नुजंगनें ईश्वर, नेमिनाथ वीरसेन ॥ दे
वजश चंडजशाजितवीरिय, पुस्करद्वीप प्रस
न्नरे ॥ न० ॥३॥ आठमी नवमी चोवीश पचवी
शमी, विदेहें विजय जयवंता ॥ दश लाख के
वली शो कोड साधु, परिवारें गहगहंतारे ॥
न० ॥ ४ ॥ धनुख पांचशें ऊंची शोहे, सोवन
वरणी काया ॥ दोप रहित सुर महि महीतल,
विचरे पावन पायारे ॥ न० ॥५॥ चोराशी लाख
पूरव जिन जीवित, चोत्रीश अतिशयधारी ॥
समवसरण बेठा परमेश्वर, पडिबोहे नर नारी
रे ॥ न० ॥ ६ ॥ खिमाविजय जिन करुणासा

गग, आप तस्या पर तारे ॥ धर्मनायक शिवमार
गदायक, जन्म जरा दुख वारेरे ॥ न० ॥७॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलजीनुंस्तवन ॥

॥ आंखडीयेंरे में आज, शत्रुंजो दीठोरे ॥

सवा लाख टकानो दहाडोरे, लागे मुने मी
ठोरे ॥ ए आंकणी ॥ सफल थयो मारा मननो
ऊमाहो ॥ वाला मारा ॥ नवनो संशय नाग्यो
रे ॥ नरक तिर्यंच गति दूर निवारी, चरणे प्रनु
जीनें लाग्योरे ॥ शत्रुं० ॥ १ ॥ मानवनवनो
लाहो लीधो ॥ वा० ॥ देहडी पावन कीधीरे ॥
सोना रूपानें फूलडे वधावी, प्रेमें प्रदक्षिणा
दीधीरे ॥ शत्रुं० ॥ २ ॥ दुधडे पखाली नें केस
र घोली ॥ वा० ॥ श्री आदीश्वर पूज्यारे ॥ श्री
सिद्धाचल नयणें जोतां, पाप मेवासी धूज्यारे ॥
शत्रुं० ॥ ३ ॥ स्वयमुखसुधर्मा सुरपति आगें ॥
वा० ॥ वीरजिणंद इम बोलेरे ॥ त्रण नुवनमां
तीरथ मोटुं, नहिं कोइ शत्रुंजा तोलेरे ॥ शत्रुं०

॥ ४ ॥ इंद्र सरिखा ए तीरथनी ॥ वा० ॥ चा करी चित्तमां चाहे रे ॥ कायानी तो कासल टाले, सूरज कुंममां नाहे रे ॥ शत्रुं० ॥ ५ ॥ काकेर कांकरे श्रीसिद्ध खेत्रें ॥ वा० ॥ साधु अनंता सीधा रे ॥ ते माटे ए तीरथ मोटुं, उद्धार अनंता कीधा रे ॥ शत्रुं० ॥ ६ ॥ नाभिराया सुत नयणे जोतां ॥ वा० ॥ मेह अमीरस वूठ्या रे ॥ उदयरतन कहे आज मारे पोतें, श्रीआदीश्वर त्रूठ्या रे ॥ शत्रुं० ॥ ७ ॥ इति स्तवनं ॥ ८० ॥

॥ अथ पट श्रीसिद्धाचलस्तवनं ॥

॥ जशोदा मावडी ॥ ए देशी ॥

॥ जात्रा नवाणुं करीएं विमलगिरि ॥ जात्रा नवाणुं करीयें ॥ ए आंकणी ॥ पूरव नवाणुं वार शेत्रुंजगिरी ॥ रिखभ जिणंद समोसरीयें ॥ वि० ॥ १ ॥ कोडि सहस भव पातक त्रूटे ॥ शेत्रुंज साहामो मग भरीयें ॥ वि० ॥ २ ॥ सात छठ दोय अठम तपस्या, करी चढीयें गिरिवरीयें ॥

वि० ॥ ३ ॥ पुंमरीक पद जपीयें हरखें, अध्य वसाय शुभ धरीयें ॥ वि० ॥ ४ ॥ पापी अभ व्य न नजरें देखे, हिंसक पण उद्धरीयें ॥ वि० ॥ ॥ ५ ॥ भुइं संथारो ने नारी तणो संग, दूरथकी परिहरीयें वि० ॥ ६ ॥ सचित परिहारीनें एकल आहारी, गुरु सायें पद चरीयें ॥ वि० ॥७॥ पडि क्कमणा दोय विधिशुं करीयें, पाप पमल विखरी यें ॥ वि०॥८॥ कलिकालें ए तीरथ मोहोटुं, प्रवह ण जिम भव दरीए ॥ वि० ॥ ए ॥ उत्तम ए गिरि वर सेवंता, पद्मकहे भव तरीयें ॥ विमल० ॥ १०॥

॥ अथ सप्तम सिद्धाचलस्तवनं ॥

॥ चालो चालोने राज, श्रीसिद्धाचल गिरि यें ॥ ए आंकणी ॥ श्री विमलाचलतीरथ फ रसी ॥ आतम पावन करीयें ॥ चालो० ॥ १ ॥ इण गिरिऊपर मुनिवर कोडी, आतम तत्व नि पायो ॥ पूर्णानंद सहज अनुभव रस, महानं दं पद पायो ॥ चालो० ॥ २ ॥ पुंमरिक पमुहा.

मुनिवर कोडि, सकल विभाव गमायो ॥ भेदा भेद तत्व परिणतिथी, ध्यान अभेदउपायो ॥ चालो० ॥ ३ ॥ जिनवर गणधर मुनिवर कोडी, ए तीरथ रंग राता ॥ शुद्ध शक्ति व्यक्त गुण सिद्धि, त्रिभुवन जनना त्राता ॥ चालो० ॥ ४ ॥ ए गिरि फरश्ये भव्य परीक्षा, दुर्गतिनो होये छेद ॥ सम्यक दरिसण निर्मल कारण, निज आनंद अभेद ॥ चालो० ॥ ५ ॥ संवत अढार छुम्मोत्तरा वरसें, शुदि मागशिर. तेरशीयें ॥ श्री सूरतथी भक्ति हरखथी, संघ सहित उल्लसीयें ॥ चालो० ॥ ६ ॥ कचरा कीका जिनवर भक्ति, रूपचंदजी एंद ॥ श्रीश्रीसंघने प्रभु भेटाव्या, जगपति प्रथम जिणंद॥ चालो० ॥ ॥ ७ ॥ ज्ञानानंदी त्रिभुवनवंदित, परमेश्वरगुणभीना ॥ देवचंद पद पामे अद्भुत, परम मंगल लय लीना ॥ चालो० ॥ ८ ॥ इति ॥८॥

॥ अथ अष्टम सिद्धाचलस्तवनं ॥

॥ विमलाचल नितु वंदीये, कीजें एहनी सेवा ॥ मानुं हाथ ए धर्मनो, शिवतरु फल लेवा ॥ वि० ॥ १ ॥ उज्जल जिनगृह मंडली, तिहां दीपे उत्तंगा ॥ मानुं हिमगिरि विभ्रमें, आइ अंबरगंगा ॥ वि० ॥ २ ॥ कोइ अनेरुं जग नहीं, ए तीरथ तोले ॥ एम श्रीमुख हरिआगलें, श्री सीमंधर बोले ॥ वि० ॥ ३ ॥ जे सघलां तीरथ कर्यां, जात्रा फल लहीयें ॥ तेहथी ए गिरि भेटतां, शतगणुं फल लहीयें ॥ वि० ॥ ४ ॥ जनम सफल होय तेहनो, जे ए गिरि वंदे ॥ सुजस विजय संपद लहे, ते नर चिर नंदे ॥

॥ अथ पंचतीर्थ थोयो ॥

॥ श्लोक ॥ ॥ श्रीशत्रुंजयमुख्यतीर्थ तिलकं श्रीनाभिराजांगजं, वंदे रैवतशैल मोलिमुकुटं श्रीनेमिनाथं यथा ॥ तारंगे अजितं जिनं भृगुपुरे श्रीसुव्रतं स्तंभने, श्रीपार्श्वं

प्रणमामि सत्यनगरे श्रीवर्द्धमानं त्रिधा ॥ १ ॥
वंदेऽनुत्तरकल्पतल्प भुवने ग्रैवेयकव्यंतरा,
ज्यौतिष्यामरमंदराद्रिवसतीं स्तीर्थंकरानाद
रान् ॥ जंबूपुष्करधातकीषु रुचके नंदीश्वरे कुं
मले, ये चान्येऽपि जिना नमामि सततं तान्
कृत्रिमाऽकृत्रिमान् ॥ २ ॥ श्रीमद्वीरजिनस्य
पद्महृदतो निर्गम्यते गौतमं, गंगावर्तनमे
त्य या प्रविभिदे मिथ्यात्ववैताढ्यकं ॥ उत्पत्ति
स्थितिसंहतित्रिपथगा ज्ञानांबुदा वृद्धिगा,
सीमे कर्ममलं हरत्वविकलं श्रीद्वादशांगी
नदी ॥ ३ ॥ शक्रश्चंद्ररविग्रहाश्चधरणब्रह्मेंद्र
शांत्यंबिका, दिक्पालाः सकपर्दिगोमुखगणि
श्चक्रेश्वरी भारती ॥ येऽन्ये ज्ञानतपःक्रियाव्रति
विधिश्रीतीर्थयात्रादिषु, श्रीसंघस्य तुरा चतु
र्विध सुरास्ते संतु भद्रंकराः ॥ ४ ॥ इति श्री
पंचतीर्थ स्तुतिः ॥ ८४ ॥

॥ अथ शंखेश्वरपार्श्वजिन स्तुतिः ॥

॥ शंखेश्वर पासजी पूजियें, नरभवनो ला हो लीजीयें ॥ मन वंछित पूरण सुरतरु, जय वा मासुत अलवेसरु ॥१॥ दोय राता जिनवर अति भला, दोय धोला जिनवर गुणनिला ॥ दोय नीला दोय सामल कह्या, शोले जिन कंचन व र्ण लह्या ॥२॥ आगम ते जिनवरें भाखीयो, ग णधर ते हइडे राखीयो ॥ तेहनो रस जेणे चाखी यो, ते हुउ शिव सुख साखीयो ॥ ३ ॥ धरणी धर राय पद्मावती, प्रभु पार्श्व तणा गुण गाव ती ॥ सहु संघना संकट चूरती, नयविमलना वंछित पूरती ॥ ४ ॥ ॥ इति ॥ ७५ ॥

॥ अथ सज्झायो प्रारंभ ॥

तत्र प्रथम श्रीविनयअध्ययननीसज्झाय.

॥ श्रीनेमीसर जिनतणुंजी ॥ ए देशी ॥

पवयण देवी चित्त धरीजी, विनय वखाणीश सार ॥ जंबूनें पूछे कह्यो जी, श्री सोहम गणधा

र ॥ १ ॥ नविक जन विनय वहो सुखकार ॥ ए आंकणी ॥ पहिले अध्ययनें कह्योजी, उतरा ध्ययन मझार ॥ सघला गुणमां मूलगोजी, जे जिन शासन सार ॥ २ ॥ नवि० ॥ नाण विन यथी पामीयेंजी, नाणें दरिसण शुद्ध ॥ चारित्र दरिसणथी हुए जी, चारित्रथी पुण सिद्ध ॥३॥ नवि० ॥ गुरुनी आण सदा धरेजी, जाणे गुरु नो नाव ॥ विनयवंत गुण रागीउजी, ते मुनिस रल स्वनाव ॥ ४ ॥ नवि० ॥ कणनुं कुंकुं परिह रीजी, विष्टाशुं मन राग ॥ गुरुद्रोही ते जाण वाजी, सूयर उपमा लाग ॥ ५ ॥ नवि० ॥ को ह्या काननी कूतरीजी, ठाम न पामीए जेम ॥ शील हीण अकह्यागराजी, आदर न लहे ते म ॥ ६ ॥ नवि० ॥ चंद्र तणीपेरें उजलीजी, की रति तेह लहंत ॥ विषय कषाय जीती करीजी, जे नर शील वहंत ॥ ७ ॥ नवि० ॥ विजय देव गुरुपाटवीजी, श्री विजयसिंह सूरींद ॥ शिष्य

उदय वाचक भणेजी, विनय सयलसुखकंद ॥

॥ अथ द्वितीय शिखामण सद्याय ॥

॥ जीव वारुं छुं मारा वालमां, परनारीथी प्रीति म जोड ॥ परनारीनी संगत नहीं भली, तारा कुलमां लागशे खोड ॥ जीव० ॥ १ ॥ जीव आ संसार छे कारमो दीसे छे आल पंपाल ॥ जीव एहवुं जाणी चेतजो, आगल मा[illegible] खी छे जाल ॥ जीव० ॥ २ ॥ जीव मात पिता भाइ बेनडी, सहु कुटुंब तणो परिवार ॥ [illegible] बेती वारे सहु सगुं, पछे लांबा कीधा जूहा ॥ जीव० ॥ ३ ॥ देहेली लगें सगो आंगणो, शेरीअ लगें सगीमाय ॥ जीव सीम लगें साजन भलो, पछे हंस एकीलो जाय ॥ जीव० ॥ ४ ॥ जीव जातां थकां नवि जाणीयुं. नवि जाण्यो वार कुवार ॥ जीव गाडुं भरीयुं ईंधणे, वली खोखरी हांमलीसार ॥ जीव० ॥ ५ ॥ जीव आठ मं पाखि न उलखी, जीव बहुलां कीधां पाप ॥

जीव सुमति विजय मुनि एम भणे, जीव आवागमण निवार ॥ जीव० ॥ ६ ॥ इति ॥ ८७ ॥

॥ अथ अनाथी मुनिनी सद्याय ॥

॥ श्रेणिक रयवाडी चढ्यो, पेखीयो मुनि एकंत ॥ वररूप कांतें मोहीउ, रायपूछे ए कहो नें विरतंत ॥ १ ॥ श्रेणिक राय हुं रे अनाथी निग्रंथ ॥ तिण में लीधोरे साधुजीनो पंथ ॥ श्रेणिक० ॥ ए आंकणी ॥ इणें कोसंबी नयरी वसे, मुज पिता परिघलधन ॥ परिवार पूरें परिवर्यो, हुं हुं तेहनो रे पुत्ररतन ॥ श्रे० ॥ २ ॥ एक दिवस मुज वेदना, उपनी में न खमाय ॥ मात पिता झूरी मरे, पण समाधि किणे नवि थाय ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ गोरडी गुण मणिउरडी, चोरडी अबला नार ॥ कोरडी पीडा में सही, कोणें न कीधी मोरडी सार ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ बहु राज्य वैद्य बोलाविया, कीधला कोडि उपाय ॥ बावना चंदन चरचिया, तोहिपण रे समाधिं

न थाय ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ जगमांहि को केहनो न
हीं, ते नणी हुं रे अनाथ ॥ वीतरागना धरम सा
रिखो, नहिं कोइ बीजो रे मुक्तिनो साथ ॥ श्रे०
॥६॥ वेदना जो मुऊ उपशमे, तो लेउं संजम ना
र ॥ इम चिंतवतां वेदन गइ, व्रत लीधुं में हर्ष
अपार ॥ श्रे० ॥ ७ ॥ कर जोडी राय गुण स्त
वे, धन धन ए अणगार ॥ श्रेणिक समकित
पामीयो, वांदी पोहोतो रे नगर मऊार ॥ श्रे०
॥ ७ ॥ मुनि अनाथी गावतां, तूटे कर्मनी कोड ॥
गणि समय सुंदर तेहना, पाय वंदे रे बे कर
जोड श्रे० ॥ ए ॥ लाइति अनाथी सद्याय ॥ ७७ ॥

॥ अथ श्रीनेम राजुलनी सद्याय ॥

॥ नदी जमुनाके तीर, ऊडे दोय पंखीया ॥ ए
देशी ॥ पिउजी पिउजीरे नाम, जपुं दिन राति
यां ॥ पिउजी चाल्या परदेश, तपे मोरी गती
यां ॥ पग पग जोती वाट, बालेसर कब मिले
॥ नीर विछोह्यां मीनके, ते ज्युं टलवले ॥ १ ॥

सुंदर मंदिर सेज, साहिब विण नवि गमे ॥ जि
हांरे वालेसर नेम, तिहां मारुं मन भमे ॥ जो
होवे सज्जन दूर, तोहि पासें वसे ॥ किहां सा
यर किहां चंद, देखी मन उल्लसे ॥ २ ॥ निःस्ने
हीशुं प्रीत, म करजो को सही ॥ पतंग जलावे
देह, दीपक मनमें नहीं ॥ वाला माणसनो वि
जोग, म होजो कहने ॥ सालेरे साल समान,
हइआमां तेहने ॥ ३ ॥ विरह व्यथानी पीड,
जोबन वय अति दहे ॥ जेनो पियु परदेश, ते
माणस दुःख सहे ॥ झुरी झुरी पंजर कीध, का
या कमलज जिसी ॥ हजीअ न आव्यो नेम, म
ली नयणें हसी ॥ ४ ॥ जेने जेहशुं रंग, टाल्यो
ते नवि टले ॥ चकवा रयणी विजोग, ते तो दि
वसें मले ॥ आंबा केरो स्वाद, लिंबू ते नवि क
रे ॥ जे नाह्या गंगा नीर, ते छिल्लर किम तरे
॥ ५ ॥ जे रम्या मालती फूल, धतूरे केम रमे ॥
जेहनें घीयशुं प्रेम, ते तेलें किम जमे ॥ जेहने

चतुरशुं नेह, ते अवरनें शुंकरे ॥ नव जोबन त
जी नेम, वैरागी थै फरे ॥ ६ ॥ राजुल रूप नि
धान, पोहोंती सहसा वने ॥ जइ वांद्या प्रभु
नेम, संजम लेइ एक मनें ॥ पाम्यां केवलज्ञान,
पोहोती मननी रली ॥ रूपविजय प्रभुनेम,
भेटे आशा फली ॥ ७ ॥ ॥ इति ॥ ७ए ॥

॥ अथ आउखानी सद्याय ॥

॥ आउखुं तूटानें सांधो को नहींरे, तिण का
रण मकरो जीव प्रमादरे ॥ जरा आव्यानें मर
णुं को नहींरे, हिंसा गेडीनें दया पालरे ॥ आ
उ० ॥ १ ॥ कुटुंब कबीला नारी कारणेंरे, मूरख
संच्यां बहुलां पापरे ॥ चोर तणी पेरें जंमी कूर
शेरे, सहिश इहलोक परलोक संतापरे ॥
आ० ॥ २ ॥ उंचां चणाव्यां मंदिर मालियांरे,
देदे धरतीमें जंमी नीवरे ॥ एक दिन आण जा
एयुं उठी चालवुंरे, सुख डुःख सहेशे आपणो
जीवरे ॥ आ० ॥ ३ ॥ चक्रवर्ति हरिबल राणो

केशवोरे, जो जो वली ईंद सुरांनो नाथरे ॥ ३ गी उगीनें उवेही आग्रम्यारे, जो जो कोइ अ चरिज वाली वातरे ॥ आ० ॥ ४ ॥ आथिर सं सार तजी मुनि नीसस्यारे, करता मुनि नवला विहार रे ॥ नारंभ पंखीनी दीधी उपमारे, न धरे ममता नेह लगाररे ॥ आ० ॥ ५ ॥ चारि त्र पाले रूडी रीतशुंरे, देवे मुनि अपनो उपदे शरे ॥ तिको मुनिवर सीधासि मोक्षने रे, जश लेइ इह लोक परलोक रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ शब्द रूप देखी समता धरोरे, मकरो मुनि नण्यानुं अनिमान रे ॥ ऋपिचोथमल सूत्र देखीनेरे, जोड कीधी जालोर मझार रे॥ आ०० ॥७॥ ए०॥

॥ अथ तिजयपहुत्त प्रारंनोयं ॥

॥ तिजय पहुत्त पयासय, अठ महापाडिहेर जुत्ताणं ॥ समयक्खित्त ठिआणं, सरेमि चक्कं जि णंदाणं ॥ १ ॥ पणवीसाय असीआ, पन्नरस पन्नास जिणवर समूहो ॥ नासेउ सयल डुरिअं,

भविआणं भत्ति जुत्ताणं ॥ २ ॥ वीसा पणया ला विय, तीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा ॥ गह भू अ रक्क साइणि, घोरुवसग्गं पणासंतु ॥ ३ ॥ सित्तिरि पणतीसाविय, सठी पंचेव जिणगणो एसो ॥ वाहि जल जलण हरि करि, चोरारि महाभयं हरउ ॥ ४ ॥ पणपन्ना य दसेव य, पन्न ठी तहय चेव चालीसा ॥ रक्कंतु मे सरीरं, देवा सुर पणमिआ सिद्धा ॥ ५ ॥ ॐ हरहुंहः सरसुं सः, हरहुंहः तहचेव सरसुंसः ॥ आलिहिय ना म गप्नं, चक्कं किर सवउ भद्दं ॥ ६ ॥ ॐ रोहिणि पन्नत्ती, वज्जसिंखला तहय वज्जअंकुसिआ ॥ चक्केसरि नरदत्ता, कालि महाकालि तह गोरी ॥ ७ ॥ गंधारी महजाला, माणवि वइरुट्ट तह य अछुता ॥ माणसि महमाणसिआ, विद्यादे वीउ रक्कंतु ॥ ८ ॥ पंचदस कम्म भूमिसु, उप्प न्नं सत्तरिं जिणाणसयं ॥ विविह रयणाइवन्नो, वसोहिअं हरउ डुरिआइं ॥ ए ॥ चउतीस अइ

सय जुआ, अठ महापाडिहेर कयसोहा ॥ ति
ढ्‌यरा गयमोहा, झाएअवा पयत्तेणं ॥ १० ॥
ॐ वरकणय संख विद्दुम, मरगय घण सन्निहं
विगयमोहं ॥ सत्तरिसयं जिणाणं, सवामर पूइ
अं वंदे ॥ स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ नवणवइ वाण
वंतर, जोइसवासी विमाणवासी अ ॥ जे केवि
डुठ देवा, ते सवे उवसमंतु मम ॥ स्वाहा ॥१२॥
चंदण कप्पूरेणं, फलए लिहिऊण खालिअं पी
अं ॥ एगंतराइ गहनूअ, साइणि मुग्गं पणासे
इ ॥ १३ ॥ इअ सत्तरिसयं जंतं, सम्मं मंतं डु
वारि पडिलिहिअं ॥ डुरिआरि विजयवंतं, नि
प्भंतं निच्चमच्चेह ॥ १४ ॥ इति ॥ ९१ ॥

॥ अथ नमिऊणनामक स्मरणं लिख्यते ॥

॥ नमिऊण पणय सुरगण, चूडामणि किरण
रंजिअं मुणिणो ॥ चलणजुअलं महान्नय, प
णासणं संथवं वुहं ॥ १ ॥ सडिय कर चरण
नह मुह, निबुड्ड नासा विवन्न लायन्ना ॥ कुठ

महा रोगानल, फुलिंग निद्दड्ढ सव्वंगा ॥ २ ॥
ते तुह चलणा राहण, सलिलंजलि सेय वुड्ढि
य भाया ॥ (गहाहा) वण दवदड्ढा गिरिपा,
यव व पत्ता पुणोलहिं ॥ ३ ॥ डुवाय खुभिय ज
लनिहि, उभड कल्लोल भीसणारावे ॥ संभंत
भय विसंठुल, निज्जामय मुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अ
विदलिअ जाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कू
लं ॥ पासजिण चलण जुअलं, निच्चंचिअ जे
नमंति नरा ॥ ५ ॥ खर पवणुद्धुअ वणदव, जा
लावलि मिलिय सयल डुम गहणे ॥ डज्झंत
मुद्ध मय वहु, भीसणरव भीसणंमि वणे ॥ ६ ॥
जगगुरुणो कमजुअलं, निव्वाविअ सयल तिहु
अणाभोअं ॥ जे संभरंति मणुआ, न कुणइ जल
णो भयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसंत भोग भीसण,
फुरिआरुण नयण तरल जीहालं ॥ उग्गभुअंगं
नवजल, य सच्छहं भीसणायारं ॥ ८ ॥ मन्नंति
कीड सरिसं, दूर परिच्छुढ विसम विसवेगा ॥

तुह नामस्कर फुडसि, छमंत गुरुआ नरा लोए ॥ ए ॥ अडवीसु त्रिल्ल तक्कर, पुलिंद सद्दूल सद्दन्नीमासु ॥ नयविहुर वुन्नकायर, उल्लूरिअ पहिअ सत्रासु ॥ १० ॥ अविलुत्तविहवसारा, तुह नाह पणाम मत्तवावारा ॥ ववगय विग्घासिग्घं, पत्ता हिय इच्छियं ठाणं ॥ ११ ॥ पज्जलि आनलनयणं, दूरवियारियमुहं महाकायं ॥ नह कुलिसघायविअलिअ, गइंद कुंनत्थलानोअं ॥१२॥ पणय ससंन्नम पछिव, नहमणिमाणिक्क पडिअ पडिमस्स ॥ तुह वयणपहरणधरा, सीहं कुद्धंपि न गणंति ॥ १३ ॥ ससिधवल दंतमुसलं, दीहकरुल्लाल वट्ठि उछाहं ॥ महुपिंग नयणजुअलं, ससलिल नवजलहरारावं ॥१४॥ त्रीमं महागइंदं, अच्चासन्नंपि ते नवि गणंति ॥ जे तुम्ह चलण जुअलं, मुणिवइ तुंगं समल्लीणा ॥ १५ ॥ समरम्मि तिरक खग्गा, त्रिग्घाय पविद्ध उद्धुय कबंधे ॥ कुंतविणित्रिन्न करि कल

ह, मुक्कसिक्कार पञरंमि ॥ १६ ॥ निज्जिय दप्पु
धुर रिउ, नरिंद निवहा भडा जसं धवलं ॥ पा
वंति पाव पसमिण, पासजिण तुह प्पभावेण ॥
॥ १७ ॥ रोग जल जलण विसहर, चोरारि म
इंद गय रण भयाइं ॥ पासजिण नाम संकी,
त्तणेण पसमंति सव्वाइं ॥ १८ ॥ एवं महा भय
हरं, पासजिणिंदस्स संथवमुआरं ॥ भविय ज
णाणंदयरं, कल्लाण परंपर निहाणं ॥ १९ ॥
राय भय जस्क रक्कस, कुसुमिण दुस्सउण रिक्क
पीडासु ॥ संझासु दोसु पंथे, उवसग्गे तहय र
यणीसु ॥ २० ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, ता
णं कइणो य माणतुंगस्स ॥ पासो पावं पसमेउ,
सयल भुवणच्चिअ चलणो ॥ २१ ॥ उवसग्गंते
कमठा, सुरम्मि झाणाउ जो न संचलिउ ॥ सुर
नर किन्नर जुवईहिं, संथुउ जयउ पासजिणो ॥
॥ २२ ॥ एअस्स मज्झयारे, अठारस अक्करेहिं
जो मंतो ॥ जो जाणइ सो झायइ, परम पयत्थं

फुडं पासं ॥ ७३ ॥ पासह समरण जो कुणइ, संतुठे हिययेण ॥ अठुत्तर सय वाहि नय, नासइ तस्स दूरेण ॥ ७४ ॥ इति श्रीमदाजयहर नामकं स्मरणं संपूर्णम् ॥ ८७ ॥

॥ अथ नक्तामर स्मरणं प्रारंनः ॥

॥ नक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रनाणा, मुद्यो तकं दलितपापतमोवितानं ॥ सम्यक् प्रण म्य जिनपादयुगं युगादा, वालंबनं नवजले प ततां जनानाम् ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकलवाङ् मयतत्वबोधा, उद्नूतबुद्धिपटुनिः सुरलोकना थैः ॥ स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारः स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेंद्रम् ॥२॥ बुद्ध्या वि नापि विबुधार्चितपादपीठ, स्तोतुं ममुद्यतमति र्विगतत्रपोऽहं ॥ बालं विहाय जलसंस्थितमिंदु बिंब, मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुं ॥३॥ वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र शशांककांतान्, कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोपि बुद्ध्या ॥ कल्पांतकालप

वनोद्धतनक्रचक्रं, कोवा तरीतुमलमंबुनिधिं नु
जान्यां ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तव नक्तिवशा
न्मुनीश, कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ॥
प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगोमृगेंडं, नान्येति किं
निजशिशोः परिपालनार्थं ॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं
श्रुतवतां परिहासधाम, त्वद्नक्तिरेव मुखरीकुरु
ते बलान्मां ॥ यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं वि
रौति, तच्चारुचूतकलिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥ त्व
त्संस्तवेन नवसंततिसन्निबद्धं, पापं क्षणात्क्षय
मुपैति शरीरनाजां ॥ आक्रांतलोकमलिनीलम
शेषमाशु, सूर्यांशुनिन्नमिव शार्वरमंधकारम्
॥ ७ ॥ मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद, मारन्य
ते तनुधियापि तव प्रनावात् ॥ चेतोहरिष्यति
सतां नलिनीदलेषु, मुक्ताफलद्युतिमुपैति न
नूदबिंडुः ॥ ८ ॥ आस्तां तव स्तवनमस्त
समस्तदोषं, त्वत्संकथापि जगतां डुरितानि
हंति ॥ दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रनैव, पद्मा

करेषु जलजानि विकाशभांजि ॥ ए ॥ ना
त्यद्भुतं भुवनभूषणभूत नाथ, भूतैर्गुणैर्भुवि
भवंतमभिष्टुवंतः ॥ तुल्याभवंति भवतोननु ते
न किंवा, भूत्याश्रितं यइह नात्मसमं करोति ॥
॥ १० ॥ दृष्ट्वा भवंतमनिमेषविलोकनीयं, नान्य
त्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पयःश
शिकरद्युतिदुग्धसिंधोः, क्षारं जलं जलनिधेर
शितुं कइछेत् ॥ ११ ॥ यैः शांतरागरुचिभिः प
रमाणुभिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत
॥ तावंतएव खलु तेप्यणवः पृथिव्यां, यत्ते स
मानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्रं क्व ते
सुरनरोरगनेत्रहारि, निःशेषनिर्जितजगत्त्रित
योपमानम् ॥ बिंबं कलंकमलिनं क्व निशाक
रस्य, यद्वासरे भवति पांडुपलाशकल्पम् ॥१३॥
संपूर्णमंडलशशांककलाकलाप, शुभ्रागुणास्त्रि
भुवनं तव लंघयंति ॥ ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर
नाथमेकं कस्तान्निवारयति संचरतोयथेष्टम् ॥

॥ १३ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभि,
र्नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ॥ कल्पांत
कालमरुता चलिताचलेन, किं मंदराद्रिशि
खरं चलितं कदाचित् ॥ ॥ १५ ॥ निर्धूमव
र्त्तिरपवर्जिततैलपूरः कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रक
टीकरोपि ॥ गम्योन जातु मरुता चलताचला
नां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः ॥
॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः,
स्पष्टीकरोपि सहसा युगपज्जगंति ॥ नांभोधरो
दरनिरुद्धमहाप्रभावः, सूर्यातिशायिमहिमासि
मुनींद्र लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलितमोहम
हांधकारं, गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानां ॥
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकांति, विद्योतयज्ज
गदपूर्वशशांकबिंबम् ॥ १८ ॥ किंशर्वरीषु श
शिनाह्नि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेंदुदलितेषु
तमस्सु नाथ ॥ निष्पन्नशालिवनशालिनि जी
वलोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ॥

॥ १ए ॥ ज्ञानं यथा त्वयि विन्नाति कृतावका शं, नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ॥ तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवंतु काचशकले किरणाकुलेपि ॥ ३० ॥ मन्ये वरं हरिहरादयएव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ॥ किं वीक्षितेन नवता नुवि येन नान्यः, कश्चिन्मनोहरति नाथ नवांतरेपि ॥ ३१ ॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वडुपमं जननी प्रसूता ॥ सर्वादिशो दधति नानि सहस्त्ररश्मिं, प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥ ३२ ॥ त्वामामनंति मुनयः परमं पुमांस, मादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात् ॥ त्वामेव सम्यगुपलन्य जयंति मृत्युं, नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनींद्र पंथाः ॥ ३३ ॥ त्वामव्ययं विनुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनंतमनंगकेतुम् ॥ योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदंति संतः ॥ ३४ ॥ बुद्ध

स्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्, त्वं शंकरोसि भुवनत्रयशंकरत्वात् ॥ धातासि धीर शिवमार्ग विधेर्विधानात्, व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्त मोऽसि ॥ २५ ॥ तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ, तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ॥ तु भ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय, तुभ्यं नमोजिन भवोदधिशोषणाय ॥ २६ ॥ कोविस्मयोऽत्र य दि नाम गुणैरशेषै, स्त्वंसंश्रितो निरवकाशतया मुनीश ॥ दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः, स्व प्नांतरेपि न कदाचिदपीक्षितोसि ॥ २७ ॥ उच्चै रशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख, माभाति रूपमम लं भवतोनितांतम् ॥ स्पष्टोल्लसत्किरणमस्तत मोवितानं, बिंबं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्त्ति ॥२८॥ सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे, विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ॥ बिंबं वियद्विलसदंशु लतावितानं, तुंगोदयाद्रिशिरसीव सहस्त्रर श्मेः ॥ २९ ॥ कुंदावदातचलचामरचारुशोभं,

विभ्राजते तव वपुः कलधौतकांतम् ॥ उद्यच्छशां
कशुचिनिर्झरवारिधार, मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव
शातकौंभम् ॥ ३० ॥ छत्रत्रयं तव विभाति श
शांककांत, मुच्चैःस्थितंस्थगितभानुकरप्रतापम्
॥ मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं, प्रख्यापय
त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥ ३१ ॥ उन्निद्रहेमनव
पंकजपुंजकांति, पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाभिरा
मौ ॥ पादौ पदानि तव यत्र जिनेंद्र धत्तः, पद्मानि
तत्र विबुधाः परिकल्पयंति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा
तवविभूतिरभूज्जिनेंद्र, धर्मोपदेशनविधौ न त
था परस्य ॥ यादृक्प्रभा दिनकृतः प्रहतांधका
रा, तादृक्कुतोग्रहगणस्य विकाशिनोपि ॥ ३३ ॥
श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल, मत्तभ्रमद्
भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ॥ ऐरावताभमिभमुद्धत
मापतंतं, दृष्ट्वा भयं भवतिनो भवदाश्रितानाम्
॥ ३४ भिन्नेभकुंभगलदुज्ज्वलशोणिताक्त, मुक्ता
फलप्रकरभूषितभूमिभागः ॥ बद्धक्रमः क्रमगतं

हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रि
तं ते ॥ ३५ ॥ कल्पांतकाल पवनोद्धतवह्निकल्पं,
दावानलं ज्वलितमुज्वलमुत्फुलिंगम् ॥ विश्वं
जिघत्सुमिव संमुखमापतंतं, त्वन्नामकीर्तनजलं
शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं समदकोकि
लकंठनीलं, क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतंतं ॥
आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशंक, स्त्वन्नाम
नागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥ ३७ ॥ वल्गत्तुरं
गगजगर्जित भीमनाद, माजौ बलं बलवताम
पि भूपतीनां ॥ उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं,
त्वत्कीर्त्तनात्तमइवाशु भिदामुपैति ॥ ३८ ॥ कुं
ताग्रभिन्नगजशोणित वारिवाह, वेगावतारतर
णातुरयोधभीमे ॥ युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयप
क्षा, स्त्वत्पादपंकजवनाश्रयिणो लभंते ॥ ३९ ॥
अंभोनिधौ क्षुभितभीपणनक्रचक्र, पाठीनपीठ
भयदोल्बणवाडवाग्नौ ॥ रंगत्तरंगशिखरस्थित
यानपात्रा, स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद्व्रजं

ति ॥ ४० ॥ उद्भूतभीषणजलोदरभारभुग्नाः, शोच्यांदशामुपगताश्च्युतजीविताशाः ॥ त्वत्पादपंकजरजोमृतदिग्धदेहा, मर्त्या भवंति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥ आपादकंठमुरुशृंखलवेष्टितांगा, गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजंघाः ॥ त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरंतः, सद्यः स्वयं विगतबंधभया भवंति ॥ ४२ ॥ मत्तद्विपेंद्रमृगराजदवानलाहि, संग्रामवारिधिमहोदरबंधनोत्थं ॥ तस्याशु नाशमुपयाति भयंभियेव, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४३ ॥ स्तोत्रस्रजं तवजिनेंद्र गुणैर्निबद्धां, भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पां ॥ धत्तेजनो य इह कंठगतामजस्रं, तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥ इति भक्तामर स्तोत्रं संपूर्णं ॥

अथ श्रीकल्याणमंदिरस्तोत्रं प्रारभ्यते ॥

॥ वसंततिलकावृत्तम् ॥

॥ कल्याणमंदिरमुदारमवद्यभेदि, भीताभ

यन्नदमनिंदितमंघ्रिपद्मं ॥ संसारसागरनिमज्ज
दशेषजंतु, पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य
॥ १ ॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमांबुराशेः, स्तो
त्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुं ॥ तीर्थेश्वरस्य
कमठस्मयधूमकेतो, स्तस्याहमेप किल संस्तव
नं करिष्ये ॥ २ ॥ युग्मम् ॥ सामान्यतोऽपि त
व वर्णयितुं स्वरूप, मस्मादृशाः कथमधीश
भवंत्यधीशाः॥ धृष्टोपि कौशिकशिशुर्यदि वा दि
वांधो, रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः ॥३॥
मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ मर्त्यो, नूनं गुणान्
गणयितुंनतवक्षमेत ॥ कल्पांतवांतपयसः प्रक
टोऽपि यस्मा, न्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नरा
शिः ॥ ४ ॥ अभ्युद्यतोस्मि तव नाथ जडाश
योऽपि, कर्तुंस्तवं लसदसंख्यगुणाकरस्य ॥ बा
लोऽपि किं न निजबाहुयुगंवितत्य, विस्तीर्णतां
कथयति स्वधियांबुराशेः ॥ ५ ॥ ये योगिनाम
पि न यांति गुणास्तवेश, वक्तुं कथं भवति तेषु

ममावकाशः ॥ जाता तदेवमसमीक्षितकारितेयं, जल्पंतिवा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥ आस्तामचिंत्यमहिमा जिन संस्तवस्ते. नामापि पाति नवतो नवतोजगंति ॥ तीव्रातपोपहत पांथजनान्निदाघे, प्रीणाति पद्मसरसः सरसो निलोऽपि ॥ ७ ॥ हृद्वर्त्तिनि त्वयि विनो शिथिलीनवंति, जंतोः क्षणेन निबिडा अपि कर्मबंधाः॥ सद्यो नुजंगममया इव मध्यनाग, मन्यागते वनशिखंमिनि चंदनस्य ॥ ८ ॥ मुच्यंत एव मनुजाः सहसा जिनेंद्र, रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि ॥ गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे, चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ॥ ए ॥ त्वं तारकोजिन कथं नविनां त एव, त्वामुद्वहंति हृदयेन यङत्तरंतः ॥ यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नून, मंतर्गतस्य मरुतः स किलानुनावः ॥ ॥ १० ॥ यस्मिन् हरप्रनृतयोऽपि हतप्रनावाः, सोऽपि त्वयारतिपतिः क्षपितः क्षणेन ॥ विध्यां

पिता हुतभुजः पयसाथ येन, पीतं न किं तद
पि दुर्धरवाडवेन ॥ ११ ॥ स्वामिन्ननल्पगरिमा
णमपि प्रपन्ना, स्त्वां जंतवः कथमहो हृदये द
धानाः ॥ जन्मोदधिं लघु तरंत्यतिलाघवेन,
चिंत्यो न हंत महतां यदि वा प्रभावः ॥ १२ ॥
क्रोधस्त्वया यदि विभो प्रथमं निरस्तो, ध्वस्ता
स्तदा बत कथं किल कर्मचौराः ॥ प्लोषत्यमुत्र
यदिवा शिशिरापि लोके, नीलद्रुमाणि विपि
नानि न किं हिमानी ॥ १३ ॥ त्वां योगिनो जि
न सदा परमात्मरूप, मन्वेषयंति हृदयांबुजको
शदेशे ॥ पूतस्य निर्मलरुचेर्यदिवा किमन्य,
दक्षस्य संभवि पदं ननु कर्णिकायाः ॥ १४ ॥
ध्यानाज्जिनेश भवतोभविनः क्षणेन, देहं विहा
य परमात्मदशां व्रजंति ॥ तीव्रानलादुपलभाव
मपास्य लोके, चामीकरत्वमचिरादिव धातुभे
दाः ॥ १५ ॥ अंतःसदैव जिन यस्य विभाव्यसे
त्वं, भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरं ॥ एत

त्स्वरूपमथ मध्यविवर्त्तिनो हि, यद्विग्रहं प्रशम
यंति महानुभावाः ॥ १६ ॥ आत्मा मनीषिभिर
यं त्वदभेदबुद्ध्या, ध्यातोजिनेंद्र भवतीह भव
त्प्रभावः ॥ पानीयमप्यमृतयत्यनुचिंत्यमानं,
किं नाम नो विषविकारमपाकरोति ॥ १७ ॥
त्वामेव वीततमसं परवादिनोपि, नूनं विभो ह
रिहरादिधियाप्रपन्नाः ॥ किं काचकामलिभिरी
श सितोऽपि शंखो, नो गृह्यते विविधवर्णविपर्य
येण ॥ १८ ॥ धर्मोपदेशसमये सविधानुभावा,
दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः ॥ अभ्यु
द्गते दिनपतौ समहीरुहोपि, किंवा विबोधमु
पयाति न जीवलोकः ॥ १९ ॥ चित्रं विभो क
थमवाङ्मुखवृंतमेव, विष्वक् पतत्यविरला सुर
पुष्पवृष्टिः ॥ त्वद्गोचरे सुमनसां यदिवामुनीश,
गच्छंति नूनमधएव हि बंधनानि ॥ २० ॥ स्था
ने गभीरहृदयोदधिसंभवायाः, पीयूषतां तवगि
रः समुदीरयंति ॥ पीत्वा यतः परमसंमदसंग

भाजो, भव्या व्रजंति तरसाप्यजरामरत्वं ॥
॥ २१ ॥ स्वामिन् सुदूरमवनम्य समुत्पतंतो,
मन्ये वदंति शुचयः सुरचामरौघाः ॥ येऽस्मै न
तिं विदधते मुनिपुंगवाय, ते नूनमूर्ध्वगतयः ख
लु शुद्धभावाः ॥ २२ ॥ श्यामं गभीरगिरमुज्ज्व
लहेमरत्न, सिंहासनस्थमिह भव्यशिखंडिन
स्त्वां ॥ आलोकयंति रभसेन नदंतमुच्चै, श्चामी
कराद्रिशिरसीव नवांबुवाहम् ॥ २३ ॥ उद्गच्छ
ता तवशितिद्युतिमंडलेन, लुप्तच्छदच्छविरशोक
तरुर्बभूव ॥ सान्निध्यतोऽपि यदिवा तव वीतरा
ग, नीरागतां व्रजति कोन सचेतनोऽपि ॥ २४ ॥
भोभोः प्रमादमवधूय भजध्वमेन, मागत्य नि
र्वृतिपुरिं प्रतिसार्थवाहम् ॥ एतन्निवेदयति देव
जगत्त्रयाय, मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुंदुभिस्ते
॥ २५ ॥ उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ, ता
रान्वितो विधुरयं विहताधिकारः ॥ मुक्ताकलाप
कलितोच्छ्वसितातपत्र, व्याजात्त्रिधा धृततनु र्ध्रुव

मन्युपेतः ॥ २६ ॥ स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिंमितेन, कांतिप्रताप यशसामिव संचयेन ॥ माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन, सालत्रयेण नगवन्नभितोविभासि ॥ २७ ॥ दिव्यसृजोजिन नमत्त्रिदशाधिपाना, मुत्सृज्यरत्नरचितानपि मौलिबंधान् ॥ पादौ श्रयंति भवतो यदिवा परत्र, त्वत्संगमे सुमनसो न रमंतएव ॥ २८ ॥ त्वं नाथ जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोपि, यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् ॥ युक्तंहि पार्थिव निपस्य सतस्तवैव, चित्रं विभो यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥ २९ ॥ विश्वेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं, किंवाक्षर प्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश ॥ अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव, ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥ ३० ॥ प्राग्भारसंभृतनभांसि रजांसि शेपा, दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि ॥ गयापि तैस्तव न नाथ हताहताशो, ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा ॥

॥ ३१ ॥ यद् गर्जदूर्जितघनौघमदभ्रभीमं, भ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसलघोरधारम् ॥ दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे, तेनैव तस्य जिन दुस्तरवारिकृत्यम् ॥ ३२ ॥ ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुंड, प्रालंबभृद् भयदवक्रविनिर्यदग्निः ॥ प्रेतव्रजः प्रतिभवंतमपीरितोयः, सोऽस्याऽभवत्प्रतिभवं भवदुःखहेतुः ॥ ३३ ॥ धन्यास्त एव भुवनाधिप ये त्रिसंध्य, माराधयंति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः ॥ भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशाः, पादद्वयं तव विभो भुवि जन्मभाजः ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश, मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि ॥ आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रमंत्रे, किंवा विपद्विषधरी सविधं समेति ॥ ३५ ॥ जन्मांतरेऽपि तव पादयुगं न देव, मन्ये मया महितमीहितदानदक्षम् ॥ तेनेह जन्मनि मुनीश पराभवानां, जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥ ३६ ॥

नूनं न मोहतिमिरावृत लोचनेन, पूर्वं विभो सकृदपि प्रविलोकितोऽसि ॥ मर्माविधो विधुर यंति हि मामनर्थाः, प्रोद्यत्प्रबंधगतयः कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥ आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि, नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या ॥ जातोऽस्मि तेन जनबांधव दुःखपात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रतिफलंति न भावशून्याः ॥३८॥ त्वं नाथ दुःखिजनवत्सल हे शरण्य, कारुण्य पुण्यवसते वशिनां वरेण्य ॥ भक्त्या नते मयि महेश दयां विधाय, दुःखांकुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसंख्यसारशरणं शरणं शरण्य, मासाद्य सादितरिपुप्रथितावदातम् ॥ त्वत्पादपंकजमपि प्रणिधानवंध्यो, वध्योऽस्मि चेद्भुवनपावन हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥ देवेंद्रवंद्य विदिताखिलवस्तुसार, संसारतारक विभो भुवनाधिनाथ ॥ त्रायस्व देव करुणाह्रद मां पुनीहि, सीदंतमद्य भयदव्यसनांबुराशेः ॥ ४१ ॥

यद्यस्ति नाथभवदंघ्रिसरोरुहाणां, भक्तेः फलं किमपि संततिसंचितायाः ॥ तन्मे त्वदेकशरण स्य शरण्य भूयाः, स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवां तरेऽपि ॥ ४२ ॥ इत्थं समाहितधियो विधिवज्जि नेंद्र, सांद्रोल्लसत्पुलककंचुकितांगभागाः ॥ त्व द्बिंबनिर्मलमुखांबुजबद्धलक्ष्या, ये संस्तवं तव विभो रचयंति भव्याः ॥ ४३ ॥ जननयनकुमुद चंद्र, प्रभास्वराः स्वर्गसंपदो भुक्त्वा ॥ ते विग लितमलनिचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यंते ॥ यु ग्मम् ॥ ४४ ॥ इति श्रीकल्याणमंदिरं संपूर्णं ॥

अथ श्रीरत्नाकरसूरिकृत श्रीरत्नाकरपं चविंशिकाप्रारंभः ॥ उपजातिछंदः ॥

॥ श्रेयःश्रियां मंगलकेलिसद्म, नरेंद्रदेवेंद्रन तांघ्रिपद्म ॥ सर्वज्ञ सर्वातिशय प्रधान, चिरं जय ज्ञानकलानिधान ॥ १ ॥ जगत्त्रयाधार कृपावतार, दुर्वारसंसारविकारवैद्य ॥ श्रीवी तराग त्वयि मुग्धभावाद्विज्ञ प्रभोविज्ञपया

मि किंचित् ॥ २ ॥ किं बाललीलाकलितो न बालः, पित्रोः पुरो जल्पति निर्विकल्प ॥ तथा यथार्थं कथयामि नाथ, निजाशयं सानुशायस्तवाग्रे ॥ ३ ॥ दत्तं न दानं परिशीलितं च, न शालि शीलं न तपोऽभितप्तं ॥ शुभो न भावोप्यभवभवेऽस्मिन्, विभो मया भ्रांतमहो मुधैव ॥ ४ ॥ दग्धोग्निना क्रोधमयेन दष्टो, दुष्टेन लोभाख्यमहोरगेण ॥ ग्रस्तोऽभिमानाजगरेण माया, जालेन बद्धोऽस्मि कथं भजे त्वां ॥ ५ ॥ कृतं मयाऽमुत्र हितं न चेह, लोकेऽपि लोकेश सुखं न मेऽभूत् ॥ अस्मादृशां केवलमेव जन्म, जिनेश जज्ञे भवपूरणाय ॥ ६ ॥ मन्ये मनो यन्न मनोज्ञवृत्तं, त्वदास्यपीयूषमयूखलाभात् ॥ द्रुतं महानंदरसं कठोर, मस्मादृशां देव तदश्मतोऽपि ॥ ७ ॥ त्वत्तः सुदुःप्राप्यमिदं मयाप्तं, रत्नत्रयं भूरि भवभ्रमेण ॥ प्रमादनिद्रावशतो गतं तत्, कस्याग्रतो नायक पूत्करोमि ॥ ८ ॥ वैराग्यरंगो

परवंचनाय, धर्मोपदेशो जनरंजनाय ॥ वादाय
विद्याऽध्ययनं च मेऽनूत्, कियद्ब्रुवे हास्यकरं
स्वमीश ॥ ए ॥ परापवादेन मुखं सदोषं, नेत्रं
परस्त्रीजनवीक्षणेन ॥ चेतः परापायविचिंतनेन,
कृतं नविष्यामि कथं विनोहं ॥ १० ॥ विमंबि
तं यत्स्मरघस्मरार्त्ति, दशावशात्स्वं विषयांधले
न ॥ प्रकाशितं त नवतोह्रियैव, सर्वज्ञ सर्वं स्वय
मेव वेत्सि ॥ ११ ॥ ध्वस्तोऽन्यमंत्रैः परमेष्ठिमं
त्रः, कुशास्त्रवाक्यैर्निहितागमोक्तिः ॥ कर्त्तुं वृथा
कर्म कुदेवसंगा, दवांछि ही नाथ मतिभ्रमो मे
॥ १२ ॥ विमुच्य दृग्लक्ष्यगतं नवंतं, ध्याता म
या मूढधिया हृदंतः ॥ कटाक्षवक्षोजगनीरना
नि, कटीतटीयाः सुदृशां विलासाः ॥ १३ ॥ लो
लेक्षणावक्त्रनिरीक्षणेन, यो मानसो रागलवोवि
लग्नः ॥ न शुद्धसिद्धांतपयोधिमध्ये, धौतोप्यगा
त्तारक कारणं किं ॥ १४ ॥ अंगं न चंगं न ग
णो गुणानां, न निर्मलः कोपि कलाविलासः ॥

स्फुरत्प्रजा न प्रजुता ः कापि, तथाप्यहंकारक दर्थितोऽहं ॥ १५ ॥ आयुर्गलत्याशु न पापबुद्धि, र्गतं वयो नो विषयाजिलापः ॥ यत्नश्च जैषज्यविधौ न धर्मे, स्वामिन्महामोहविमंबना मे ॥ १६ ॥ नाऽत्मा न पुण्यं न जवो न पापं, मया विटानां कटुगीरपीयं ॥ आधारि कर्णे त्वयि केवलार्के, पुरः स्फुटे सत्यपि देव धिङ्मां ॥ १७ ॥ न देवपूजा न च पात्रपूजा, न श्राद्धधर्मश्च न साधुधर्मः ॥ लब्ध्वापि मानुष्यमिदं समस्तं, कृतं मयाऽरण्यविलापतुल्यं ॥ १८ ॥ चक्रे मया सत्स्वपि कामधेनु, कल्पद्रुचिंतामणिषु स्पृहार्त्तिः ॥ न जैनधर्मे स्फुटशर्मदेऽपि, जिनेश मे पश्य विमूढजावं ॥ १९ ॥ सद्भोगलीला न च रोगकीला, धनागमो नो निधनागमश्च ॥ दारा न कारा नरकस्य चित्ते, व्यचिंति नित्यं मयकाऽधमेन ॥ २० ॥ स्थितं न साधो हृदि साधुवृत्तात्, परोपकारान्न यशोऽर्जितं च ॥ कृतं न तीर्थोद्धरणादिकृत्यं, मं

या मुधा हारितमेव जन्म ॥ ७१ ॥ वैराग्यरंगो न गुरूदितेषु, न दुर्जनानां वचनेषु शांतिः ॥ नाऽध्यात्मलेशो मम कोपि देव, तार्यः कथं कारमयं नवाब्धिः ॥ ७७ ॥ पूर्वे नवेऽकारि मया न पुण्य, मागामिजन्मन्यपि नो करिष्ये ॥ यदीहशोऽहं मम तेन नष्टा, नूतोभवज्ञाविनवत्रयीश ॥७३॥ किं वा मुधाऽहं बहुधा सुधानुक्, पूज्य त्वदग्रे चरितं स्वकीयं ॥ जल्पामि यस्मात् त्रिजगत्स्वरूप, निरूपकस्त्वं कियदेतदत्र ॥ ७४ ॥ शार्दूलविक्रीडितछंदः ॥ दीनोद्धारधुरंधरस्त्वदपरो नास्ते मदन्यः कृपा, पात्रं नात्र जने जिनेश्वर तथाप्येतां न याचे श्रियं ॥ किंत्वर्हन्निदमेव केवलमहो सद्बोधिरत्नं शिवं, श्रीरत्नाकरमंगलैकनिलयश्रेयस्करं प्रार्थये ॥ ७५ ॥

॥ अथ सामायिक पारवानो विधि ॥

॥ खमासमण देइ ॥ इरियावहिपडिक्कमाथी यावत् लोगस्स सुधी कही ॥ खमा० ॥ इच्छा०॥

मुहपत्ती पडीलेहुं एम कही मुहपत्ती पडिलेही, खमासमण देइ ॥ इच्छा० ॥ सामायिक पारुं ॥ यथाशक्ति ॥ वली खमा० इच्छा० ॥ सामायिक पार्युं ॥ तहत्ति कही पछी जमणो हाथ चरवला उपर अथवा कटासणाउपर थापी एक नवकार गणी " सामाइयवयजुत्तो " कहियें ॥ पछी जमणो हाथ थापना सामो सवलो राखीने एक नवकार गणी उठवुं ॥ इति सामायिक पारवानो विधि समाप्त ॥ ए६ ॥

॥ अथ सामायिक लेवानो विधि ॥

॥ प्रथम उंचें आसनें पुस्तक प्रमुख मूकी श्रावक श्राविका कटासणु, मुहपत्ती, चरवलो लेइ, शुद्ध वस्त्र, जग्या पूंजी, कटासणा उपर बेसी, मुहपत्ती माबा हाथमां मुख पासें राखी, जमणो हाथ थापनाजी सन्मुख राखी, एक नवकार गणी, पचिंदिअ कहीयें; अने जो अगलथी ते स्थानकें आर्याप्रमुखनी स्थापना क

हेलो होय, तो तिहां पंचिंदिय न कहेवुं, पछी इ च्छामि खमासमण देइ, इरियावहिया तथा त स्स उत्तरी अने अन्नछ उससीएणं कही, एक लोगस्सनो अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी पारी, प्रगट लोगस्स कही, खमासमण देइ, "इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायि क मुहपत्ती पडिलेहुं ॥ इछं ॥ एम कही मुहपत्ति तथा अंगनी पडिलेहण ना पच्चाश बोल कही, मुहपत्ती पडिलेहीयें; पछी खमासमण देइ, "इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक, संदिसाहुं ॥ इछं" कही खमा० इच्छा० ॥

खमा० होय, त्यां खमासमण देवुं. इच्छा० होय, त्यां इ च्छाकारेण संदिसह भगवन् कहेवुं, तथा ए सर्व विधि जे लख्यां छे, ते स्थापनाजी संमुख क्रिया करवा आश्रयी समजवो, परंतु साक्षात् गुरु विराजमान होय तो इच्छाकारेण संदिसह भगवन् स ज्झाय संदिसाहुं, एम शिष्य कहे तेवारें गुरु कहे संदिसह तथा इ रियावहि पडिक्कमवाना आदेशमां गुरु पडिक्कमेह कहे, एम सर्व स्थानकें समजी लेवुं.

सामायिक ठाउं इछं एम कही, बे हाथ जोडी, एक नवकार गणी, इछाकारी जगवन् पसाय करी, सामायिक दंमक उच्चरावो जी. तेवारें वडिल, करेमि जंते कहे, पछी खमासमण देइ इछा० ॥ बेसणे संदिसा हुं ॥ इछं ॥ खमा० ॥ इछा० ॥ बेसणे ठाउं ॥ इछं ॥ खमा० ॥ इछा० ॥ सज्झाय संदिसाहु ॥ इछं ॥ खमा० ॥ इछा० ॥ सज्झाय करुं ॥ इछं ॥ एम कही त्रण नवकार गणवा ॥ पछी बे घडी सज्झाय धर्मध्यान करवुं ॥ इति ॥ ए७ ॥

॥ अथ पच्चरकाण पारवानो विधि ॥

प्रथम " इरियावहियाए " पडिक्कमी, यावत् " जगचिंतामणि " नुं चैत्यवंदन " जयवीयराय " सुधी करवुं ॥ पछी " मन्हजिणाणं " नी सज्झाय कही मुहपत्ति पडिलेहवी ॥ पछी खमासमण देई इछाकारेण संदिसह जगवन् पच्चरकाण पारुं यथाशक्ति " इछामि० इछा० पच्चरकाण पार्युं " तहत्ति " एम कही, जम

णो हाथ कटासणां अथवा चवला ऊपर था पी, एक " नवकार " गणी, पच्चरकाण कर्युं होय तेनुं नाम कहीने पारवुं. ते लखीये बेयें:- उग्गए सूरे नमुक्कार सहिअं; पोरिसिं, साढपोरिसिं; गंठिसहिअं; मुट्ठिसहिअं, पच्चक्खाण कर्युं. चउविहार, आंबिल, निवी, एकासणुं, बेआसणुं कर्युं तिविहार पच्चरकाण, फासिअं, पालिअं, सोहिअं, तीरिअं, किट्टिअं, आराहिअं, जं च न आराहिअं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं एम कही एक नवकार गणवो ॥ इति ॥९८॥

॥ अथ पडिलेहण करवानो विधि ॥

॥ नवकार पंचिंदिअ कही, इरियावहियाए कहेवुं, थापना होय तो नवकार पंचिंदिअ न कहेवो. पछी तस्सउत्तरी कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स कही, ऊभे पगें बेसी मुहपत्ती, चवलो, काटासणुं, उत्तरासणुं, धोतीयुं, कंदोरो आदि

नुं पडिलेहण करवुं; पछी काजो काढाडी, जीव कलेवर सचित्त आदि जोवुं; पछी काजो काढ डनार थापनाजी सामो ऊभो रही, इरियावही पडिक्कमी, काजो परठववा जग्या शोधी, त्रण वार अणुजाणह जस्सग्गो कही, काजो परठवी ने पछी त्रण वार " वोसिरे " कहे ॥ इति ॥९९॥

॥ अथ देव वांदवानो विधि ॥

॥ प्रथम इरियावही पडिक्कमवाथी मांमीने यावत् लोगस्स कही, पछी उत्तरासण नाखी, चैत्यवंदन, " नमुत्थुणं " कही, " जय वीअराय आभवमखंमा " सुधी अडधुं हाथ जोडी कहे, वली फरी " चैत्यवंदन " कहीने " नमुत्थुणं " कही, जावत् चार थोयो कहीयें छेयें तिहां सुधी बधुं कहेवुं; पछी " नमुत्थुणं " कही, वली चार थोयो कहीयें, त्यां सुधी बधुं कहेवुं; पछी " नमुत्थुणं " तथा बे " जावंती " कही, स्तव न कही, अडधुं " जयवीअराय आभवमखं

मा " सुधी कही, पछी " चैत्यवंदन " कही, " नमुत्थुणं " कही, आखो " जय वीयराय " केहेवो. इहां सवारें देव वांदवा, तेमां " मन्ह जिणाणं " नी सज्झाय कहेवी, अने मध्यान्हे तथा साजे देव वादवामां सज्झाय न कहेवी ॥इति॥ देव वांदवानो विधि समाप्त ॥ १०० ॥

॥ अथ देवसि प्रतिक्रमणविधि ॥

॥ प्रथम सामायिक लीजें, पछी पाणी वावर्युं होय तो, मुहपत्ति पडिलेहवी, अने आहार वावर्यो होय तो, वांदणा बे देवां, त्यां बीजा वांदणामां " आवसियाए " ए पाठ न कहेवो ॥ पछी यथाशक्ति पच्चरकाण करवुं ॥ पछी खमासमण देई इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करुं " इच्छं " एम कही, वडेराएं अथवा पोतें चैत्यवंदन कहेवुं ॥ पछी जंकिंचि कही नमुत्थुणं कहेवुं ॥ पछी ऊभा थईने अरिहंत चेइयाणं० अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउ

स्सग्ग करी, पारीने, जेने वडेरा हुकुम आपे, ते धणीयें " नमोऽर्हत्० " कहीने प्रथम थोय कहेवी ॥ पछी प्रगट लोगस्स कही, सव्वलोए अरिहंत चेइयाणं कही, एक नवकारनो काउ स्सग्ग पारी, बीजी थोय कहेवी ॥ पछी पुस्कर वरदी कही, " सुअस्स नगवउ करेमि काउ स्सग्गं वंदणवत्तिआए " कही, एक नवकार नो काउस्सग्ग करी, त्रीजी थोय कहेवी ॥ पछी सिद्धाणं बुद्धाणं० वेयावच्चगराणं० करेमि काउस्स ग्गं अन्नत्थ० नो पाठ कही, एक नवकारनो का उस्सग्ग करी, पारी " नमोऽर्हत्० " कही, चो थी थोय कहेवी ॥ पछी बेशी हाथ जोडीने " न मुत्थुणं " कही, खमासमण देई, नगवानहं क हेवुं, वली बीजुं खमासमण देई, " आचार्यहं " कहेवुं, वली त्रीजुं खमासमण देई, " उपाध्या यहं " कहेवुं, वली चोथुं खमासमण देइ, " स र्वसाधुन्योऽहं " कहेवुं, ए रीतें चार खमासमं

ए देवा पूर्वक भगवानादि चारने थोभ वंदन करीयें ॥ पछी खमासमण आपी इछाकारेण संदिसह भगवन् " देवसिप्रतिक्रमणे ठाउं " एम कही, जमणो हाथ चवला अथवा कटासणा ऊपर थापीने, इछं सवस्सवि देवसिअ० नो पाठ कही ऊभा थई, करेमि भंते इछामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिउ० तस्सउत्तरि० कही अतिचारनी आठ गाथानो काउस्सग्ग करवो, जो आठ गाथा न आवडती होय तो आठ नवकारनो काउस्सग्ग करवो, ते पारीने प्रगट लोगस्स कहेवो ॥ पछी बेशीने त्रीजा आवश्यकनी मुहपत्ति पडिलेहीने वांदणां बे देवां ॥ पछी ऊभा थईने इछाकारेण संदिसह भगवन् देवसिअं आलोउं इछं आलोएमि कही जो मे देवसिउ कहेवुं, पछी सात लाख० कही, अढार पापस्थानक आलोइने, " सवस्सवि देवसियं " कहेवुं ॥ पछी नीचें बेशी, जमणो ढींचण

ऊभो राखी, एक नवकार गणी, करेमि भंते इ
च्छामि पडिक्कमिउं कही वंदिता सूत्र संपूर्ण कही
ने वांदणां बे देवां ॥ पछी खमासमण देई इच्छा
कारेण संदिसह भगवन् अब्भुट्ठिओहं अब्भिंतर
देवसियं खामेउं एम कही, अब्भुट्ठिओ खामीने
वांदणां बेवार देवां ॥ पछी ऊभा थई "आयरि
य उवज्झाए" कही, करेमि भंते इच्छामि ठामि
काउस्सग्गं जो मे देवसिओ० कही "तस्स उत्त
री" कही, बे लोगस्सनो अथवा आठ नव
कारनो काउस्सग्ग करी पारीने प्रगट लोगस्स
कहेवो ॥ पछी सव्वलोए अरिहंतचेइआणं क
ही, एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो का
उस्सग्ग पारीने पछी पुक्खरवरदी, सुअस्स
भगवओ, करेमि काउस्सग्गं वंदण० अन्नत्थ०
कही, एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो
काउस्सग्ग पारीने पछी सिद्धाणं बुद्धाणं कही,
सुअ देवयाए करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ० कं

ही, एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी, "नमोऽ र्हत्० " कही, पुरुषें ' सुअदेवया " नी पहेली थोय अने स्त्रीयें " कमलदल " नी पहेली थोय कहेवी ॥ पछी खित्तदेवयाए करेमि काउ स्सग्गं० कही, एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी " नमोऽर्हत्० " कही खित्तदेवयानी त्रीजी थोय स्त्रीयें तथा पुरुषें कहेवी ॥ पछी प्रगट एक नव कार गणी, बेशीनें छठा आवश्यकनी मुहपत्ति पडिलेही वांदणां बे देईनें, इछाकारेण संदिसह जगवन् सामायिक, चउविसछो, वंदनक, पडि क्कमणुं, काउस्सग्ग, पच्चख्काण, कर्युं छे जी, ए रीतें छ आवश्यक संन्नारवां ॥ पछी " इछामो अणुसठिं" " नमोखमासमणाणं० " "नमोऽर्ह त्० " कही, पुरुष, नमोस्तु वर्द्धमानाय कहे, अ ने स्त्री संसारदावानी त्रण थोयो कहे ॥ पछी न मुछुणं कही, खमासमण आपी इछाकारेण सं दिसह जगवन् स्तवन जणुं. एम कही नमोऽर्ह

तू० कही स्तवन कहेवुं ॥ पछी वरकनक कही पूर्वली रीतें चार खमासमणपूर्वक जगवान्, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, ए चारने वांदी जमणो हाथ उपधि ऊपर थापी अड्ढाइज्जेसु मुनिवंदन कहेवुं ॥ पछी खमासमण आपी इछा कारेण संदिसह जगवन् देवसिय पायछित्तवि सोहणत्थं काउस्सग्ग करुं; इछं देवसिय पाय छित्त विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं अन्नछ उस सिएणं कही चार लोगस्स अथवा शोल नव कारनो काउस्सग्ग करवो, ते पारी प्रगट लोग स्स कहीने नीचे बेशी खमासमण देई इछा कारेण संदिसह जगवन् सज्जाय संदिसाहुं, इ छं कही वली बीजुं खमासमण देई इछाकारेण संदिसह जगवन् सिज्जाय जणुं एम सज्जायनो आदेश मागी एक नवकार गणी सज्जाय कहेवी ॥ पछी एक नवकार गणी, खमासमण देई इ छाकारेण संदिसह जगवन् डुरकरकउ कम्मरक

उ निमित्तं काउस्सग्ग करुं, इढं डुक्कडउ क म्मक्कउ निमित्तं करेमि काउस्सग्गं "अन्नछ०" कही " संपूर्ण चार लोगस्स अथवा शोल न वकार " नो काउस्सग्ग करवो, ते जेने लघु शांति कहेवी होय एवो एक वडेरो, अथवा पो तें शांति कहेवावालो होय तो पोतेज पारीने " नमोऽर्हत्० " कही लघुशांति कहीने प्रगट लोगस्स कहे ॥ पछी इरियावही अने तस्स उ त्तरी कही, एक लोगस्स अथवा चार नवकार नो काउस्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स कहेवो ॥ पछी चउक्कसाय कही, नमुत्थुणं कही, जावंति चेइआइं कही खमासमण देइ जावंति केवि सा हु कही उवसग्गहरं कही हाथ जोडी मस्तकें राखी जयवीयराय कही खमासमण देइ मुहप त्ति पडिलेहवी ॥ पछी खमासमण देई इछाका रेण संदिसह जगवन् सामायिक पारुं. आ स्थांनकें जो साक्षात् गुरु बिराजमान होय तो

ते कहे के पुणोवि कायवं, तेवारें शिष्य यथाश क्ति कही फरी खमासमण देई इछाकारेण संदि सह जगवन् सामायिक पार्युं. तेवारें गुरु कहे "आयरं न मुत्तवं" ते सांजली शिष्य तहत्ति कहे ॥ पछी जमणो हाथ चवला अथवा कटा सणा ऊपर थापी एक नवकार गणी "सामाइ यवयजुत्तो" कहीने थापेली थापना होय तो तेनी सामो जमणो हाथ राखी एक नवकार ग णी ऊठे ॥ ए देवसि प्रतिक्रमणनो विधि सा मान्य पणे कह्यो, बाकी अंतर्विधि वडेराथी समजवो ॥ इति ॥ १०१ ॥

॥ अथ राइप्रतिक्रमणविधि ॥

॥ प्रथम पूर्वली रीतें सामायिक लेवुं ते ज्यां सुधी त्रण नवकार गणीयें तिहां सुधी सर्व वि धि जाणवो ॥ पछी खमासमण देई इछाकारेण संदिसह जगवन् कुसुमिण उसुमिण राइउह्राव णि पायछित्तविसोहणछं काउस्सग्ग करुं. इछं

करेमि काउस्सग्गं " अन्नब उससिएणं० " कही चार लोगस्स अथवा शोलनवकारनो काउस्सग्ग करी पारीने प्रगट लोगस्स कहेवो ॥ पछी खमासमण देई इछाकारेण संदिसह नगवन् चैत्यवंदन करुं एम कही जगचिंतामणिनुं चैत्यवंदन जयवीयराय सुधी कहेवुं ॥ पछी पूर्वोक्त देवसिनी रीतें नगवान्, आचार्य, उपाध्याय अने सर्वसाधु, ए चारने प्रत्येकें एकेकुं खमासमण देइ वांदवां ॥ पछी बे खमासमण देवापूर्वक सज्झायनो आदेश मागी, एक नवकार गणी नरहेसरनी सज्झाय कही फरी एक नवकार गणी इछाकार सुहराइ० कही इछाकारेण संदिसह नगवन् राइप्रतिक्रमणे ठाउं एम कही जमणो हाथ उपधि ऊपर थापी इछं सवस्सवि राइय डुच्चिंतिय० कहीयें ॥ पछी नमुत्थुणं, करेमि नंते इछामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे राइउ०, तस्सउत्तरी० कही,

एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्स
ग्ग पारी प्रगट लोगस्स कहीने सवलोए अरि
हंतचेइयाणं० कही एक लोगस्स अथवा चार
नवकारनो काउस्सग्ग करवो ॥ पछी पुक्करवर
दी०, सुअस्स०, वंदण०, कही, अतिचारनी
आठ गाथा अथवा गाथा न आवडे तो आ
ठ नवकारनो काउस्सग्ग पारी सिद्धाणं बुद्धाणं
कही बेसीने त्रीजा आवश्यकनी मुहपत्ति पडि
लेही वांदणा बे देवां ॥ पछी ऊभा थई इछाकारे
ण संदिसह भगवन् राइयं आलोउं इछं आ
लोएमि जो मे राइउ अइआरो कउ० कही
"सातलाख" नो पाठ कही, अढार पापस्था
नक आलोई सवस्सवि राइयंनो पाठ कहेवो ॥
पछी बेशीने जमणो ढींचण ऊभो राखी एक न
वकार गणी, करेमि भंते इछामि पडिक्कमिउं क
ही वंदितासूत्र संपूर्ण कही बे वार वांदणां देवां.
वळी अप्भुठिउहं अप्भिंतर राइयं खामीने फरी

बे वार वांदणां देवां ॥ पछी ऊना थईने आय रिय उवज्झाए करेमि भंते इच्छामि ठामि काउस्स ग्गं जोमे राईउ कही तस्स उत्तरी कही तप चिंता मणि करतां न आवडे तो चार लोगस्स अथवा शोल नवकारनो काउस्सग्ग करी प्रगट लोग स्स कही छठा आवश्यकनी मुहपत्ति पडिलेही नें वादणां बे वार देवां ॥ पछी सकल तीर्थवंद न करीने यथा शक्तियें पच्चक्खाण करवुं ॥ पछी इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक, चउ विसत्थो, वंदनक, पडिक्कमण, काउस्सग्ग, पच्च क्खाण कर्युं छेजी. एम छ आवश्यक संभारवा ॥ पछी पच्चक्खाण कर्युं होय तो कर्युं छेजी धार्युं होय तो धार्युं छे जी, कहेवुं ॥ पछी इच्छामो अणु सहिं नमो खमासमणाणं कही नमोऽर्हत् कहीयें ॥ पछी विशाल लोचन, नमुत्थुणं, अरिहंत चे इयाणं, कही एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत् कही कल्लाणकंदनी प्रथम थोय क

देवी ॥ पछी लोगस्स, पुक्खरवरदी, सिद्धाणं बु द्धाणं, कही अनुक्रमे चार थोयो कहीयें छैयें, तिहां सुधी सर्व कहेवुं ॥ पछी नमुत्थुणं कही भ गवान् आदि चारने चार खमासमणे वांदवा ॥ पछी जमणो हाथ उपधि ऊपर थापी " अड्ढाइ ज्जेसु " कहेवुं ॥ पछी ईशान खूणनी सन्मुख श्रीसीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जयवी यराय, काउस्सग्ग थोय पर्यंत कहीयें तिहां सुधी सर्व करवुं ॥ पछी खमासमण देई श्रीसि द्धाचलजीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीयराय, काउस्सग्ग थोय पर्यंत कहीयें छैये तिहां सुधी स र्व करवुं ॥ पछी सामायिक पारवाना विधिनी रीतें सामायिक पारवा सुधीनो सर्व विधि करवो ॥ इ ति राइप्रतिक्रमणविधिः समाप्तः ॥ १०७ ॥

॥ अथ पक्खि प्रतिक्रमणविधि ॥

॥ प्रथम दैवसिकप्रतिक्रमणमां वंदित्तु कही रहियें तिहां सुधी सर्व केहेवुं; पण चैत्यवंदन स

कला ईतनुं केहवुं, अने थोयो स्नातस्यानी के
हेवी. पछी खमासमण देईने इच्छाकारेण संदि
सह भगवन् देवसिअं आलोइअ पडिक्कंता इ
च्छाकारेण० ॥ पक्खि मुहपत्ति पडिलेहुं. एम क
ही मुहपत्ति पडिलेहियें पछी वांदणां बे दीजें. प
छी इच्छाकार० संबुद्धा खामणेणं अब्भुठिओहं अ
ब्भिंतर पक्खिअं खामेउं इछं खामेमि प[illegible] प
नरस दिवसाणं, पनरस राइआणं, [illegible]
अपत्तियं० ॥ कही इच्छाकारेणसं० ॥ पक्खिअं
आलोएमिं इछं आलोएमि जो मे पक्खिओ अ
इआरो कओ कही इच्छाकारेणसं० ॥ पक्खी अ
तिचार आलोउं एम कही अतिचार कहियें. प
छी एवंकार श्रावकतणे धर्मे श्रीसमकेत मूल बा
रव्रत, एकशो चोवीश अतिचार मांहे जे कोइ
अतिचार पक्ष दिवसमांहे सूक्ष्म बादर जाणतां
अजाणतां हुओ होय ते सवि हुं मने वचने का
यायें करी मिछामि डुक्कडं ॥ सव्वस्सवि पक्खिअ

दुच्चिंतिअ, दुप्नासिअ, दुच्चिठिअ, इच्छाकारेण संदिसह नगवन् तस्स मिच्छामि दुक्कडं इच्छाकारि नगवन् पसाउ करि पक्खि तपप्रसाद करो जी. एम उच्चार करीने आवी रीतें कहियें – चउत्थेणं एक उपवास, बे आंबिल, त्रण नीवि, चार एकासणा, आठ बेआसणा, बे हजार सक्षाय, यथाशक्ति तप करी प्रवेश कर्यो होय तो पइठी कहीयें, अने करवो होय तो तहत्ति कहीयें; तथा न करवो होय तो अणबोल्या रहीयें. पछी वांदणां बे दीजें. पछी इच्छाका० ॥ पत्तेअ खामणेणं अप्नुठिउहं अप्निंतर पक्खिअं खामेउं इच्छं खामेमि पक्खिअं पनरस दिवसाणं पनरस राइआणं जंकिंचि अपत्तियं० पछी वांदणा बे दीजें. पछी देवसिअं आलोइअ पडिक्कंता इच्छाका० ॥ नगवन्० पक्खिअं पडिक्कमुं सम्मपडिक्कमामि इच्छं एम कही करेमि नंते सामाइयं०॥ कही इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे पक्खिउ केहे

वुं. पछी खमासमण देइ इच्छाकारेणसंदि० ॥ प
क्खिसूत्र पढुं. एम कही त्रण नवकार गणी साधु
होय तो पक्खिसूत्र कहे अने साधु न होय तो
त्रण नवकार गणीने श्रावक वंदित्तु कहे
पछी सुअदेवयानी थोय केहेवी. पछी हे
ठा बेसी जमणो ढिंचण उभो राखी एक नवका
र गणी करेमिभंते० ॥ इच्छामि पडि० ॥ कही वं
दित्तु कहेवुं. पछी करेमिभंते० इच्छामि ठामि का
उस्सग्गं जो मे पक्खि उ० ॥ तस्सउत्तरी० ॥ अ
न्नछ० ॥ कहीने बार लोगस्सनो काउस्सग्ग
करवो ते लोगस्स चंदेसु निम्मलयरा सुधी क
हेवा. अथवा अडतालीश नवकारनो काउस्स
ग्ग करी पारवो. पारीनें प्रगट लोगस्स कही
मुहपत्ति पडिलेहिनें वांदणां बे दीजें, पछी इच्छा
का० ॥ समाप्त खामणेणं अब्भुठिउहं अभिंतर०
॥ पक्खिअं० ॥ खामेउं इच्छं खामेमि पक्खिअं ए
क पच्चक्खाणं पनरस दिवसाणं पनरस राइया

णं जंकिंचि अपत्तिअं कही पछी खमासमण दे इनें इछाकाo ॥ पक्खि खामणां खामुं. एम कही खामणा चार खामवां. पछी देवसि प्रतिक्रमणामां वंदित्तु कह्या पछी बे वांदणां देइने तिहांथी ते सामायिक पारीयें तिहां सुधी सर्व देवसीनी पेठं जाणवुं. पण सुअदेवयानी थोयोने ठेकाणे ज्ञानादिनी थोयो कहेवी. स्तवन अजित शांतिनुं कहेवुं. सझायने ठेकाणे उवसग्गहरं तथा संसारदावानी थोयो चार कहेवी. अने लघुशांतिने ठेकाणे मोहोटी शांति केहेवी ॥ इति पक्खिप्रतिक्रमणविधिः ॥ १०३ ॥

॥ अथ चउमासीप्रतिक्रमणविधिः ॥

॥ ए उपर कह्या मुजब पक्खिना विधि प्रमाणे करवुं पण एटलुं विशेष जे बार लोगस्सना काउस्सग्गने ठेकाणे वीश लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो अने पक्खिना आगारने ठेकाणे चउमासीना केहवा तथा तपने ठेकाणे छठ्ठणं बे उ

पवास, चार आंबिल. छ नीवि, आठ एकास णां, शोल बेआसणां, चार हजार सद्याय, ए रीतें कहीयें ॥ इति ॥ १०४ ॥

॥ अथ संवत्सरीप्रतिक्रमणविधिः ॥

॥ एपण उपर लख्या मुजब पक्खिना विधि प्रमाणे करवुं; पण बार लोगस्सना काउस्सग्गने ठेकाणे चालीश लोगस्स अथवा एकशोने शाठ नवकारनो काउस्सग्ग करवो. अने तपने ठेकाणे अठम भत्तं एटले त्रण उपवास, छ आं बिल, नव नीवि, बार एकासणां, चोवीस बेआ सणां, अने छ हजार सद्याय एरीते केहेवुं ने प क्खिना आगारने ठेकाणे संवत्सरीना आगार केहेवा ॥ इति संवत्सरीप्रतिक्र० सं० ॥ १०५ ॥

॥ अथ श्रीपाक्खिकादि अतिचार ॥

॥ नाणंमि दंसणंमिअ, चरणंमि तवंमि त हय विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिउ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार, दर्शनाचार,

चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार, ए पंचविध आचारमांहि अनेरो जे को अतिचार पक्ष दिवस मांहे सूक्ष्म बादर, जाणतां अजाणतां हुउ हुइ ॥ ते सवि हुं मन, वचन, कायायें करी मिच्छामि डुक्कडं ॥ १ ॥ तत्र ज्ञानाचार आठ अतिचार, कालेविणए बहुमाणे, उवहाणे तहय निह्नवणे ॥ वंजण अच्छ तदुभए, अठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥ ज्ञान कालवेलायें नण्यो गुण्यो, विनयहीन, बहुमानहीन, योगउपधान हीन, अनेरा कन्हें नणी, अनेरो गुरु कह्यो. देववंदन वांदणे, पडिक्कमणे, सद्याय करतां, नणतां, गुणतां, कूडो अक्षर, कान्हा मात्रे, आगलो उंगे नण्यो, सूत्र अर्थ बिहूं कूडां कह्यां ॥ साधु तणे धर्मे काजा फांफो, अणपडिलेह्यां, काजो अणउध्धरिउ, असज्झाइ उणोजा मांहि दशवैकालिकप्रमुख सिद्धांत नण्यो गुण्यो ॥ श्रावक तणे धर्मे थविरावलि पडिक्कमणासूत्र, उपदेश

माला प्रमुख काल वेला काजो अण उद्धरेयें पठियो. ज्ञानद्रव्य भक्षित उपेक्षित प्रज्ञापरा ध विणासियो, विणसतां उवेखियो, सार संभा ल न कीधी, तथा ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नोकरवाली, सांपडा, सांपडी, दस्तरी, वही, उलिया प्रत्यें पग लागो, थूंक लागो, थूंकेंकरी अक्षर मांज्यो, कन्हें छते आ हार नीहार कीधो, ज्ञानवंतप्रत्यें द्वेष, मत्सर अंतराय, अवज्ञा कीधी ॥ आपणा जाणवा त णो गर्व चिंतव्यो, ज्ञानाचारव्रत विषइउ अने रो जे को अतिचार प० ॥ १ ॥ दंसणाचार आठ अतिचार ॥ निस्संकिय निक्कंखिय, निव्वि तिगिच्छा अमूढ दिठीअ ॥ उववूह थिरीकरणे, वछलपभावणे अठ ॥ ३ ॥ देव गुरु धर्म तणे विषे निस्शंकपणुं न कीधुं, तथा एकांत निश्चय न कीधो, धर्म संबंधिया फल तणेविषे निस्संदेह बुद्धि धरी नहीं, तपोधन तपोधनी प्रत्यें मल

मलिन गात्र देखी डुगंछा कीधी, मिथ्यात्वी तणी पूजा प्रभावना देखी. मूढ दृष्टि पणुं कीधुं, तथा संघमांहि गुणवंत तणी अनुपबृंहणा कीधी, अस्थिरीकरण अवात्सल्य अप्रीति अभक्ति कीधी, तथा देवद्रव्य गुरुद्रव्य साधारणद्रव्य भक्षित उपेक्षित प्रज्ञापराध विणास्यो, विणसतो उवेख्यो, छती शक्तें सार संभाल न कीधी, तथा साधर्मिकशुं कलह कर्मबंध कीधो, अधोती अष्टपट मुखकोश पाखें देवपूजा कीधी, वास कूंपी धूपधाणुं कलसतणो ठबको लागो, देहरा पोसालमांहि मलश्लेष्म लुह्यां, हास्य केली कुतूहल कीधां, जिनभुवने चोरासी आशातना गुरुप्रत्यें तेत्रीश आशातना, ठवणहारी हाथ थकुं पड्युं, पडिलेहवुं विसार्युं, गुरुवचन तहत्ति करी पडिवज्युं नहीं, दंसणाचारव्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥ २ ॥ चारित्राचार आठ अतिचार ॥ पणिहा

ए जोगजुत्तो, पंचहिं समइहिं तिहिं गुत्तीहिं ॥ एस चरित्तायारो, अठविहो होइ नायव्वो ॥४॥ इर्यासमिति, नापासमिति, एपणासमिति, आदानभांमनिखेवणासमिति, पारिठावणियासमिति, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति, ए अष्ट प्रवचनमाता तणे धर्मे, सदैव साधुश्रावकतणे धर्मे, सामायिक पोसह लीधे, रूडीपेरें चिंतव्युं नहीं, खंमणा विराधना कीधी, चारित्राचार व्रतविपइयो अनेरो जे को अ० प० ॥ ३ ॥

॥ विशेपतः श्रावकतणे धर्मे मम्यक्त्व मूल बारव्रत, मम्यक्त्व तणा पांच अतिचार ॥ शंका कंख विगिछा० ॥ शंका श्रीअरिहंत तणां बल, अतिशय, ज्ञानलक्ष्मी, गांनीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा, चारित्रियानां चारित्र, जिन वचनतणो संदेह कीधो ॥ आकांक्षा ब्रम्हा, विष्णु, महेश्वर, क्षेत्रपाल, गोगो, आसपाल, पादरदेवता, गोत्रदेवता, देवदेहरानो प्रनाव

देखी रोग आवे इहलोक परलोकार्थें पूज्या, मान्या. बौद्ध, सांख्य, संन्यासी, भरडा, भगत, लिंगीया, योगी, दरवेश, अनेराइ दर्शनीयानुं कष्ट मंत्र चमत्कार देखी, परमार्थ जाण्याविण भू लाव्या, मोह्या, कुशास्त्र शीख्यां, सांभल्यां, श्राद्ध, संवत्सरी, होली, बलेव, माहीपूनम, अ जापडवो, प्रेतबीज, गौरीत्रीज, विणायगचोथ, नागपंचमी, जीलणाछठी, शीयलसप्तमी, ध्रुव अष्टमी, नौलीनवमी, अहवदशमी, व्रतइग्या रसी, वत्सबारसी, धनतेरसी, अनंतचौदसी, अ मावास्या, आदित्यवार, उत्तरायन, नैवेद्य, या ग, भोग, मान्या, पींपले पाणी रेड्यां. रेडा व्यां. घरबाहिर, कूवे, तलावे, नदी, द्रह, कुंभ, वावि, समुद्र, पुण्यहेतु स्नान कीधां ॥ वितिगि ह्या ॥ धर्मसंबंधीया फल तणो संदेह कीधो, जि न अरिहंत धर्मना आगर, विश्वोपगारसागर, मोक्षमार्गना दातार, इस्या गुणभणी, पूज्या न

हीं. इहलोक परलोक संबंधीया जोगवंछित पूजा कीधी, रोग आतंके कष्ट आवे क्षीण वचन योग मान्या. महात्माना जात, पाणी, मल शोना तणी निंदा कीधी. मिथ्यात्वी साथें प्रीति मांमी, तेहनी दाक्षिण लगें तेहनो धर्म मान्यो, श्रीसम्यक्त्व व्रतविषइयो अनेरो० ॥ ५ ॥

॥ पहेले थूलप्राणातिपातविरमणव्रते पांच अतिचार ॥ वहबंधछविछेए० ॥ द्विपद चतुष्पद प्रत्यें रीशवशें गाढो घाय घाल्यो, गाढ बंधणे बांध्युं, घणे जारें पीड्यो, निल्लंछण कर्म कीधुं, चारा पाणी तणी वेलायें सार संजाल न कीधी, लेणे देणे कुणहने लंघ्युं, लंघाव्युं, तेणें जूख्यें आपण जिम्या, सड्यां धान्य रूडीपेरें जोयां नहीं, पाणी गलतां ढोल्युं, जीवाणी शूकव्युं, गलतां झालक नाखी, गलणुं रूडुं न कीधुं, इंधण गणां अणशोध्यां बाल्यां, तेमांही साप, खजूरा, विंछी, सरोला, माकड, जूवा, गींगोडा,

साहतां मूक्या, छुहव्या, रूडे थानकें न मूक्या, कीडी, मंकोडी, उद्देही, घीमेल, कातरा, चूडेल, पतंगीया, डेडकां, अलसीयां, इयलप्रमुख जे कोइ जीव, विणठा, विणसतां उवेख्या, चांप्या, छुहव्या, हलावतां चलावतां, पाणी गटतां अनेराइ कामकाज करतां निर्ध्वंसपणुं कीधुं, जीवरक्षा रूडी न कीधी ॥ पहेले थूलप्राणातिपात व्रत विषइउ अनेरो जे को अति० ॥

॥ बीजे थूलमृषावादविरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ सहस्सा रहस्सदारे ॥ सहसात्कारें कुणहप्रत्यें अयुक्त आल दीधुं, स्वदारामंत्रभेद कीधो, अनेराइ कुणहनो मंत्र आलोच मर्म प्रकाश्यो, कुणहने अपाय पाडवा कूडी बुद्धि धरी, कूडो लेख लख्यो, जूठी साख भरी, थापण मोसो कीधो, कन्या, ढोर, भूमि संबंधिया लेहेणे देहेणे वादवढवाड करतां मोटकुं जूठुं बोल्या, बीजे थूल मृषावादव्रत विषइयो अनेरो०॥

॥ त्रीजे मूल अदत्तादान विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ तेनाहडप्पओगे० ॥ घर बाहिर, खेत्र, खले, परायुं अणमोकल्युं लीधुं, वापर्युं, चोराउ वस्तु लीधी, चोरप्रत्यें शंबल दीधुं, विरुद्ध राज्यादि कर्म कीधुं, कूडां मान, मापां [illegible], माता, पिता, पुत्र, मित्र, कलत्र, वंची [illegible] दीधुं, जूदी गांठ कीधी, नवा जूना सर [illegible] नीरस वस्तुतणा भेलसंभेल कीधा ॥ त्रीजे [illegible] नादान व्रतविपइयो अनेरो० ॥ ३ ॥

॥ चोथे स्वदारासंतोष परस्त्रीविरमणव्रते पांच अतिचार ॥ अपरिग्गहियाइत्तर० ॥ अपरिग्रहीता गमन कीधुं, अनंगक्रीडा कीधी, विवाहकारण कीधुं, कामभोग तणेविषे अति अभिलाप कीधो, दृष्टिविपर्यास कीधो, आठम, चउदशीतणा नियम लेइ भांग्या, अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, सुहणे स्वप्नांतरें हुआ, चोथे मैथुनविरमण व्रत विपइयो अनेरो० ॥

॥ पांचमे थूल परिग्रह परिमाणव्रतें पाच अतिचार ॥ धण धन्न खित्तवत्थू० ॥ धणधन्ननुं परिमाण उपरांत राखाव्युं, सोनुं रूपुं नवविध परिग्रह प्रमाण लीधुं नहीं, पढवुं विसार्युं ॥ पांचमे परिग्रह परिमाण व्रतविषइयो अनेरो० ॥ ए ॥

॥ छट्ठे दिग्विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ गम णस्स य परिमाणे० ॥ उर्ध्वदिशें, अधोदिशें, तिर्यग्दिशें जावा आववातणा नियम लेइ भांग्या, एक दिशि संक्षेपी बीजी दिशि वधारी, विस्मृत लगें अधिक भूमि गया, पाठवणी आघी मोकली, वाहण व्यवसाय कीधो, वर्षाकालें गाम तरुं कीधुं. छट्ठे दिग्विरमणव्रत विषइयो अने०॥

॥ सातमे भोगोपभोगव्रतें पांच अतिचार ॥ सचित्ते पडिबद्धे० ॥ सचित्त आहारे, सचित्त प्रतिबद्ध आहारे, अप्पोलसहि भरकणाया, डुप्पोलसहि भरकणाया, तुहोसहि भरकणाया, सचित्त भरकणाया, अपक्क आहारे, डुपक्क आहारे, तु

नओौषधि, कुंली आंबली, तला, तंबी, पहुंक, पापडीतणां नक्षण कीधां, अनंत काय, आथा णांतणां नक्षण कीधां, तथा रिंगण, विंगण, पीलू, पीचू, पंपोटा, महुडां, वडबोर, प्रमुख बहु बीज तणा नक्षण कीधां ॥ गाथा ॥ सचित्त दव्वविगइ, वाणहतंबोल वछ कुसुमेसु ॥ वाहण सयण विलेवण, बंनदिसी नाणनत्तेसु ॥ १ ॥ ए चउद नियम दिनप्रत्ये लीधा नहीं, लेइ संक्षे प्या नहीं, सचित्तद्रव्य, विगय, खासडा, वाह न, तंबोल, फोफल, बेसण, सयन, पाणी अं घोलण, फल, फूल, नोजन, आछादनें जे को इ नियम लेइ नांग्या, बावीश अनक्ष्य, बत्रीश अनंत काय मांहि आदूं, मूला, गाजर, पिंम, पिंमालुं, कचूरो, सूरण, खिलोडां, मोरडा, से लरां, कुलीआंबली, वाघरडां, गरमर, नीलीग लो, वाल्होल खाधी, वाशी कठोल, पोली, रो टली, त्रण दिवसना उदन, मधु, महुडां, विष,

हेम, करहा, घोलवडां, अजाणा फल, ींबरु, गुंदां, बोर, अथाणुं, काचुं मीठुं, तिल, खसख स, कोठिंबडां खाधां. लगबग वेलायें वालु की धां, दिन उग्याविण शीराव्या, जे कोइ अनेरो अतिचार हुउ होय ॥ तथा कर्मतः ॥ ईंगालक म्मे, वन्नकम्मे, साडीकम्मे, नाडीकम्मे, फोडी कम्मे, ए पांच कर्म ॥ दंतवाणिज्य, लखवाणि ज्य, रसवाणिज्य विषवाणिज्य, केशवाणिज्य, ए पांच वाणिज्य ॥ जंतपिल्लणकम्मे, निल्लंछण कम्मे, दवग्गिदावणया, सरदह तलाय सोस णया, असई पोसणया ॥ ए पांच सामान्य, ए पन्नर कर्मादान मांहीं कीधां, कराव्यां, अनुमो द्यां अनेराइ कांइ सावद्यकर्म समाचर्यां होय ॥ सातमे नोगोपनोगव्रतविषइयो अनेरो० ११

॥ आठमे अनर्थ दंमव्रतें पांच अतिचार ॥ कं दप्पे कुक्कुइए० ॥ अनर्थ दंम जे कहियें, काम का ज पाखें मुधा पाप लाग्यां, मुखहास्य, खेल,

कुतूहल, अंगकुचेष्टा कीधी, निरर्थक लोकने क र्षण, गाडां, वाही, गामांतरें कमावानी बुद्धि दी धी, कण वस्तु ढोर लेवराव्यां, अनेराइ पापोपदे श दीधा, कोश, कूहाडा, रथ, उखल, मुशल, घर, घंटि प्रमुख सज्ज करी मेहेल्यां, माग्यां, आप्यां. अंघोल, नाहणे, पग धोयणे, खाले पाणी ढोल्यां, अथवा झीलणा झील्यां, जूवटुं रम्या, नाटक पेखणां जोयां, पुरुष स्त्रीना रूप शृंगार वखाण्या, राजकथा, देशकथा, नक्तक था, स्त्रीकथा, पराइ तांत कीधी, कर्कश वचन बोल्या, संनेडा लगाड्या, शरन्न, कूकडा, प्र मुख जूझतां जोया, कलह करतां जोया, लोक तणी उपार्जना कीधी. सुख कीर्ति देश लइ चिं तवी. लूण, पाणी, माटी, कण, कपाशिया, का जविण चांप्या, ते उपरें बेठा, आले वनस्पति चूंटी, अंगीठा काष्ठ वणिज कीधा, गरा, पा णी, घी, तेल, गोल, अम्लवेतस, बेरंजात

णां भाजन उघाडां मेहेल्यां, ते मांहे कीडी, मं कोडी, कंथुआ, उद्देही, घीमेल, गिरोली, प्रमु ख जे कोइ जीव विणठा, शूडा, सालही, क्री डा हेतु पांजरे घाल्या, अनराइ जीवने रागद्वे ष लगें एकने ऋद्धि परिवार वंछी, एकने मृत्यु हाणी वंछी ॥ आठमे अनर्थदंडव्रत विषयिउ अ०

॥ नवमे सामायिकव्रतें पांच अतिचार ॥ ति विहे डुप्पणिहाणे० ॥ सामायिक मांही मन आह ट्ट दोहट्ट चिंतव्युं, वचन सावद्य बोल्युं, शरीर अणपडिलेह्युं, हलाव्युं छती शक्तियें सामायिक लीधुं नहीं, उघाडे मुखें बोल्या, सामायिकमांहि उंघ आवी, वीज दीवा तणी उजेही लागी, वि कथा कीधी, कण, कपाशिया, माटी, पाणी त णा संघट्ट हुआ, मुहपत्ती संघट्टी, सामायिक अणपूगे पार्युं, पारवुं विसार्युं ॥ नवमे सामा यिकव्रत विषयिउ अनेरो० ॥ १३ ॥

॥ दशमे देशावगाशिकव्रतें पांच अतिचार॥ आणवणे पेसवणे० ॥ आणवणप्पयोगे, पेसवण प्पयोगे, सद्दाणुवाइ, रूवाणुवाइ, बहियापुग्गल पखेवे ॥ निमी भूमिका मांहीथी बाहिर अणाव्युं, आपण कन्हेथी बाहिर मोकल्युं, शब्द संनलावी रूप देखाडी कांकरो नाख्यो, आपणपणुं छतुं जणाव्युं, पुद्गलतणो प्रक्षेप कीधो ॥ दशमे देशावगाशिकव्रत विपइयो अनेरो०

॥ अग्यारमे पोषधोपवासव्रतें पांच अतिचार ॥ संथारुच्चारुविहि० ॥ पोसह लीधे संथारातणी भूमी बाहिरलां थंम्डिलां संदिसे रूडां शोध्यां नहीं, पडिलेह्यां नहीं, थंम्डिल वावरतां मात्रू परठवतां चिंतवणी न कीधी, " अणुजाणह जस्सग्गो " न कह्यो, परठव्यां पूंठें वार त्रण वोसिरे न कह्यो. देहरा पोसालमांहे पेसतां निसरतां निसीहि आवस्सहि कहेवी विसारी, पुढवी, अप्प, तेउ, वाउ, वनस्पति, त्रसकायतणा

संघट्ट परिताप उपद्रव कीधा, संथारा पोरिसी तणो विधि नणवो विसाख्यो, अविधियें संथा ख्या, पारणादिकतणी चिंता निपजावी, कालवे लायें देव न वांद्या पोसह असुरो लीधो, सवा रो पाख्यो, पर्वतिथें पोसह लीधो नहीं ॥ अ ग्यारमे पोषधोपवासव्रतविषइयो अनेरो० १७

॥ बारमे अतिथि संविनागव्रतें पांच अतिचार ॥ सच्चित्ते निक्खिवणे॥ सचित्त वस्तु हेठां, उपर ब तां असूजतुं दान दीधुं ॥ वहोरवा वेलायें टली र ह्या, मत्सर लगें दान दीधुं, देवातणी बुद्धें परा इ वस्तु धणीने अणकहे दीधी, अथवा आप णी करी दीधी, अणदेवातणी बुद्धें सूऊतुं फेडी असूऊतुं कीधुं, गुणवंत आवे नक्ति न साचवी, अनेराइ धर्म क्षेत्र सीदातां बती शक्तें उद्धस्यां नहीं, दीन खीन प्रत्यें अनुकंपादान दीधुं नहीं, देतां वाख्युं ॥ बारमे अतिथि संविनागव्रत वि षइयो अनेरो० ॥ १८ ॥

॥संलेषणा तणा पांच अतिचार ॥ इहलोए परलोए० ॥ इहलोगा संसप्पउगे, परलोगा संसप्पउगे, जीविया संसप्पउगे, मरणा संसप्पउगे ॥ इहलोके धर्मतणा प्रभावलगें राजऋद्धि भोग वंछया, परलोकें, देव, देवेंद्र चक्रवर्तितणी पदवी वांछी, सुख आवे जीववातणी वांछा कीधी, दुःख आवे मरवातणी वांछा कीधी, काम भोगतणी वांछा कीधी ॥ संलेषणाव्रत विषइयो अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष ॥ १७ ॥

॥ तपाचार बार भेद ॥ ६ बाह्य, ६ अभ्यंतर ॥ अणसणमूणो यरिया० ॥ अणसणभणी उपवासादिक पर्व तिथे तप न कीधुं, ऊणोदरी बे चार कवल उणा न उठया, द्रव्य भणी सर्व वस्तु तणो संक्षेप न कीधो, रसत्याग न कीधो, कायक्लेश लोचादिक कष्ट कर्यां नहीं, संलीणता अंगोपांग संकोची राख्यां नहीं, पच्चख्काण भांग्यां, पाटलो डगतो फेड्यो नहीं, गंठसही

पच्चरकाण जांग्युं, उपवास, आंबील, नीवि की धे मुखें सचित्त पाणी घाल्युं, विमन हुउ ॥ बाह्यतपव्रत विषइयो अनेरो० ॥ १८ ॥

॥ अभ्यंतर तप ॥ पायच्छित्तं विणउ० ॥ सूधुं प्रायच्छित्त पडिवज्युं नहीं, आलोयण तणी सूधी टीप कीधी नहीं, सूधो तप पहोंचाड्यो नहीं, साते जेदें विनय न कीधो, दशजेदें वेयावच्च न कीधो, पंचविध सद्याय न कीधो, कपाय वोसराव्यो नहीं, दुःखक्षय कर्मक्षय निमित्त काउस्सग्ग न कीधो. शुक्लध्यान, धर्मध्यान ध्यायां नहीं, आर्त्त तथा रौद्र ध्यान ध्यायां ॥ अभ्यंतर तपव्रत विषइयो अनेरो० ॥ १९ ॥

॥ वीर्याचार त्रण अतिचार ॥ अणगूहिय बलवीरियो० ॥ मनोवीर्य धर्मध्यान तणे विषे उद्यम न कीधो, पडिक्कमणे देवपूजा धर्मानुष्ठान दान शील तप जावना छती शक्तियें गोपवी, आलसें उद्यम न कीधो, बेठां पडिक्कमणुं कीधुं,

रूडां खमासमण न दीधां ॥ वीर्याचार तप वि षइयो अनेरो० ॥ ७० ॥

॥ पडिसिद्धाणं करणे० ॥ प्रतिषेध, अनदय, अनंत काय, महापरिग्रह, जे कोइ प्राणाति पात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अन्याख्यान, पैशुन, रति अरति, परपरिवा द, माया मृपावाद, मिथ्यात्वशल्य, ए अढार पापस्थानक मांहे कीधां, कराव्या, अनुमोद्यां हुए ते सवि हुं मन वचन कायायें करी मिछा मि छुक्कडं ॥ ७१ ॥

॥ एवंकारे साधु श्रावकतणे धर्मे सम्यक्त्व मूल बारव्रत एकशोचोवीस अतिचार पक्ष दिव स मांहे सूक्ष्म, बादर, जाणतां, अजाणतां हु वो हुइ ते सवि हुं मन वचन कायायें करी मिछा मि छुक्कडं ॥७२॥ इति पाक्षिकादि अति० १०६

॥ अथ श्रीतीर्थमालास्तवनं ॥

॥ शत्रुंजय ऋषन्न समोसस्या, नला गुण नस्यारे ॥ सिद्धा साधु अनंत, तीरथ ते नमुंरे ॥ तीन कल्याणक तिहां थयां, मुगतें गयारे ॥ नेमीसर गिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो, गिरि सेहरोरे ॥ नरतें नराव्यां बिंब ॥ ती० ॥ आबु चौमुख अतिनलो, त्रिनुवन तिलोरे ॥ विमल वसइ वस्तुपाल ॥ ती० ॥२ ॥ समेतशिखर सोहामणो, रलीयामणोरे ॥ सिद्धा तीर्थंकर वीश ॥ ती० ॥ नयरी चंपा निरखीये, हैये हरखीयेंरे ॥ सिद्धा श्रीवासुपूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावापूरी, ऋद्धें नरीरे ॥ मुक्ति गया महावीर ॥ ती० ॥ जेशलमेर जुहारीयें, डुःख वारीयेंरे ॥ अरिहंत बिंब अनेक ॥ ती० ॥ ४ ॥ विकानेरज वंदीयें, चिरनंदीयेंरे ॥ अरिहंत देहरां आठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो संखेश्वरो, पंचासरोरे ॥ फलोधी थंनणपास ॥ ती० ॥ ५ ॥

अंतरिक अजावरो, अमीझरोरे ॥ जीरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो, जात्रा करोरे ॥ राणपुरें रिसहेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ श्री नाफुलाइ जादवो, गोडि स्तवोरे ॥ श्रीवरकाणो पास ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनां देहरां, बावन भलांरे ॥ रुचक कुंमलें चार चार ॥ ती० ॥७॥ शाश्वती अ शाश्वती, प्रतीमा छतिरे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ तीरथ जात्रा फल तिहां, होजो मुज इहांरे ॥ समयसुंदर कहे एम ॥ ती० ॥ १०७ ॥

॥ अथ श्रीमहावीरजिन छंद ॥

॥ सेवो वीरने चित्तमां नित्यधारो, अरिक्रोधने मन्नथी दूर वारो ॥ संतोप वृत्ति धरो चित्त मांहिं, राग द्वेषथी दूर थाउ उछांहिं ॥ १ ॥ पड्या मोहना पासमां जेह प्राणी, शुद्ध तत्त्वनी बात तेणें न जाणी ॥ मनु जन्म पामी वृथा कां गमो छो, जैनमार्ग छंमी भुला कां भमो छो ॥२॥

अलोभी अमानी निरागी तजो छे, सलोभी समानी सरागी भजो छे ॥ हरि हरादि अन्य थी शुं रमो छो, नदी गंग मूकी गलीमां पडो छो ॥ ३ ॥ केइ देव हाथें असि चक्रधारा, केइ देव घाले गले रुंड माला ॥ केइ देवउत्संगें राखे छे वामा, केइ देव साथें रमे वृंद रामा ॥४॥ केइ देव जपे लेइ जपमाला, केइ मांसभक्षी महाविकराला ॥ केइ योगिणी भोगिणी भोग रागें, केइ रुद्राणी छागनो होम मागे ॥ ५ ॥ इसा देव देवी तणी आश राखे, तदा मुक्तिना सुखने केमचाखे ॥ जदा लोभना थोकनो पारनाव्यो, तदा मधनो बिंडुउ मन्न भाव्यो ॥ ६ ॥ जेह देवलां आपणी आशराखे, तेह पिंडने मन्नशुं लेख चाखे ॥ दीन हीननी भीड ते केम भांजे, फुटो ढोल होए कहो केम वाजे ॥ ७ ॥ अरे मूढ भ्राता भजो मोक्ष दाता, अलोभी प्रभूने भजो विश्वख्याता ॥ रत्न चिंताम

णि सारिखो एह साचो, कलंकी काचना पिंम शुं मत राचो ॥ ८ ॥ मंद बुद्धि जेह प्राणी कहे छे, सवि धर्म एकत्व नूलो नमे छे ॥ कीहां सर्ष वा ने कीहां मेरु धीरं, कीहां कायराने कीहां शूर वीरं ॥ ए ॥ कीहां स्वर्णथालं कीहां कुंनखंमं, कीहां कोद्रवाने कीहां खीरमंमं ॥ कीहां खीरसिंधु कीहां क्षारनीरं, कीहां कामधेनु कीहां गग खीरं ॥ १० ॥ कीहां सत्यवाचा कीहां कूडवाणी, कीहां रंकनारी कीहां रायराणी ॥ कीहां नारकीने कीहां देवनोगी, कीहां इंद्र देही कीहां कुष्टरोगी ॥ ११ ॥ कीहां कर्म घाती कीहां कर्म धारी, नमो वीर स्वामी नजो अन्यवारी ॥ जिसी सेजमां स्वप्नथी राज्य पामी, राचे मंदबुद्धि धरी जेह स्वामी ॥ १२ ॥ अथिर, सुख संसारमां मन माचे, ते जना मूढमां श्रेष्ठशुं इष्ट गजे ॥ तजो मोह माया हरो दंनरोशी, सजो पुण्य

पोशी जजो ते अरोशी ॥ १३ ॥ गति चार सं
सार अपार पामी, आव्या आश धारी प्रभु
पाय स्वामी ॥ तुहीं तुहीं तुहीं प्रभुपरमरागी,
भव फेरनी शृंखला मोहभांगी ॥ १४ ॥ मानी
यें वीरजी अर्ज छे एक मोरी, दीजे दासकुं सेव
ना चरण तोरी ॥ पुण्य उदय हुउ गुरु आज मेरो,
विवेकें लह्यो में प्रभू दर्श तेरो ॥१५॥ इति १०८

॥ अथ श्रीगौतमाष्टक छंद ॥

॥ वीर जिणेसर केरो शिष्य, गौतम नाम
जपो निशदीश ॥ जो कीजें गौतमनुं ध्यान, तो
घर विलसे नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामें गि
रिवर चढे, मनवांछित हेला संपजे ॥ गौतम ना
में नावे रोग, गौतम नामें सर्व संजोग ॥ २ ॥
जे वैरी विरूआ वंकडा, तस नामें नावे ढुंकडा
॥ भूत प्रेत न विमंडे प्राण, ते गौतमनां करुं व.
खाण ॥ ३ ॥ गौतम नामें निर्मल काय, गौतम

नामें वाधे आय ॥ गौतम जिनशासन शणगार, गौतम नामें जय जयकार ॥ ४ ॥ शाल दाल सुरहा घ्रत गोल, मनवंछित कापड तंबोल ॥ घरसुघरणी निर्मल चित्त, गौतम नामें पुत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौतम नदयो अविचल नाण, गौतम नाम जपोजग जाण ॥ मोहोटां मंदिर मेरुसमान, गौतम नामें सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल घोडानी जोड, वारू पोहोंचे वंछित कोड ॥ महीयल माने मोहोटा राय, जो तूठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातक टले, नत्तम नरनी संगत मले ॥ गौतम नामें निर्मल ज्ञान, गौतम नामें वाधे वान ॥ ८ ॥ पुण्यवंत अवधारो सहु, गुरु गौतमना गुण छे बहु ॥ कहे लावण्य समय कर जोड, गौतम तूठे संपत्ति कोड ॥ ए ॥ इति ॥ १०ए ॥

॥ अथ पंचतीर्थी चैत्यवंदनं ॥

॥ आज देव अरिहंत नमुं. समरुं तारुं ना

म ॥ ज्यां ज्या प्रतिमा जिनतणी, त्यां त्यां करूं प्रणाम ॥ १ ॥ शत्रुंजय श्रीआदिदेव, नेम नमुं गिरनार ॥ तारंगे श्री अजित नाथ, आबू रिखन जुहार ॥ २ ॥ अष्टापदगिरिऊपरें, जिनचोवीशी जोय ॥ मणिमय मूरति मानशुं, नरतें नरावी सोय ॥ ३ ॥ समेत शिखर तीरथ वडुं, ज्यां वीशे जिन पाय ॥ वैन्नारकगिरि ऊपरें, श्री वीरजिनेश्वर राय ॥ ४ ॥ मांम्वगढनो राजीयो, नामे देव सुपास ॥ रिखन कहे जिन· समरतां, पोहोचे मननी आश ॥ ५ ॥ इति ॥ ११० ॥

॥ अथ ज्ञानपंचमीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ त्रिगडे बेठा वीरजिन, नांखे नविजन आगें ॥ त्रिकरणशुं त्रिहुं लोक जन, निसुणो मन रागें ॥ १ ॥ आराहो नलि नातसें, पांचम अजु वाली ॥ ज्ञान आराधन कारणें, एह ज तिथि निहाली ॥ २ ॥ ज्ञान विना पशु सारि

खा, जाणो एणें संसार ॥ ज्ञानआराधनथी ल ह्युं. शिवपद सुखश्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान रहित क्रिया कही, काशकुसुम उपमान ॥ लोकालो क प्रकाशकर, ज्ञान एक परधान ॥ ४ ॥ ज्ञा नी सासो सासमें. करे कर्मनो खेह ॥ पूर्व को डी वरसां लगे, अज्ञानें करे तेह ॥ ५ ॥ देश आराधक क्रिया कही, सर्व आराधक ज्ञान ॥ ज्ञान तणो महिमा घणो, अंग पांचमे नग वान ॥ ६ ॥ पंच मास लघु पंचमी, जाव जीव उत्कृष्टी ॥ पंच वरस पंच मासनी, पंच मी करो शुनदृष्टि ॥ ७ ॥ एकावनही पंचनो ए, काउस्सग्ग लोगस्सकेरो ॥ उजमणुं क रो नावशुं, टाले नवफेरो ॥ ८ ॥ एणी परें पंचमी आराहीयें ए, आणी नाव अपार ॥ वरदत्त गुणमंजरी परें, रंगविजय लहो सार ॥ ए ॥ इति ज्ञानपंचमी चैत्यवंदन ॥ १११ ॥

॥ अथ बीजनुं चैत्यवंदन ॥

॥ डुविध धर्म जिणें उपदिश्यो, चोथा अभिनंदन ॥ बीजें जन्म्या ते प्रभु, भवडुःखनिकंदन ॥ १ ॥ डुविध ध्यान तुम्हें परिहरो, आदरो दोय ध्यान ॥ एम प्रकाश्युं सुमति जिनें, ते चविया बीज दिन ॥ २ ॥ दोय बंधन राग द्वेष, तेहनें भवि तजीयें ॥ मुऊपरें शीतल जिन कहे, बीजदिन शिव भजीयें ॥ ३ ॥ जीवाजीव पदार्थनुं, करो नाण सुजाण ॥ बीज दिनें वासुपूज्य परें, लहो केवल नाण ॥ ४ ॥ निश्चय नय व्यवहार दोय, एकांत न ग्रहीयें ॥ अरजिन बीज दिनें चवी, एम जिन आगल कहीयें ॥ ५ ॥ वर्त्तमान चोवीशीयें, एम जिन कल्याण ॥ बीज दिनें केइ पामीया, प्रभु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥ एम अनंत चोवीशीयें ए, हुआं बहु कल्याण ॥ जिन उत्तम पद पद्मनें, नमतां होय सुखखाण ॥ ७ ॥ इति ॥ ११२॥

॥ अथ श्रीगौतमस्वामिनो रास ॥

॥ भाषा ॥ वीर जिणेसर चरणकमल, कम
ला कय वासो ॥ पणमवि पभणिशुं सामिसा
ल, गोयमगुरुरासो ॥ मण तणु वयण एकंत
करवि, निसुणो भो भवियां ॥ जिम निवसे तु
म्ह देह गेह, गुण गण गहगहिया ॥ १ ॥ जं
बूदीव सिरि भरह खित्त. खोणीतलमंमण, म
गधदेस सेणिय नरीसर. रिउदलबलखंमण ॥
धणवर गुब्बर गाम नाम, जिहां जणगुणसज्जा ॥
विप्प वसे वसुभूइ तब, जसु पुहवीभज्जा ॥ २ ॥
ताण पुत्त सिरि इंदभूइ, भूवलय पसिद्धो ॥ चउ
दह विद्या विविह रूव, नारीरसविद्धो ॥ विनय
विवेक विचार सार, गुण गणह मनोहर ॥ सा
त हाथ सुप्रमाण देह, रूपें रंभावर ॥ ३ ॥ न
यण वयण कर चरण जिण, विपंकज जलपा
डिय ॥ तेजें तारा चंद सूर, आकास भमाडिय ॥
रूवें मयण अनंग करवि, मेल्हिउ निरधाडिय ॥

धीरमें मेरु गंभीर सिंधु, चंगमचयचाडिय ॥४॥ पेखवि निरुवम रूव जास, जिण जंपे किंचिय ॥ एकाकी किल भीत इब, गुण मेल्हा संचिय ॥ अहवा निश्चे पुव्व जम्म, जिणवर इण अंचिअ ॥ रंभा पउमा गौरी गंगा, रति हा विधि वंचिय ॥ ५ ॥ नहिं बुध नहिं गुरु कवि न कोइ, जसु आगल रहिउ ॥ पंचसया गुणपात्र गात्र, हींडे परवरिउ ॥ करे निरंतर यज्ञकर्म, मिथ्यामति मोहिय ॥ इण बल होशे चरम नाण, दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु छंद ॥ जंबूदीवह जंबूदीवह, भरह वासंमि, खोणीतलमंझणो, मगध देस सेणिय नरेसर ॥ वर गुब्बर गाम तिहां, विप्प वसे वसुभूइ सुंदर तसु ॥ भद्या पुहवि सयल, गुण गण रूव निहाण ॥ ताण पुत्त विद्यानिल उ, गोयम अतिहि सुजाण ॥ ७ ॥ भाषा ॥ चरम जिणेसर केवल नाणी, चउविहसंघपइछा जाणी ॥ पावापुर सामी संपत्तो, चउविह देव

निकायें जुत्तो ॥ ८ ॥ देवें समवरण तिहां कीजें ॥ जिण दीठे मिथ्यामति खीजें त्रिजुवनगुरु सिंहासण बइठो, ततखिण मोह दिगंतें पइठो ॥ ए॥ क्रोध मान माया मद पूरा, जाये नाठा जिम दिनचोरा ॥ देवडुंडुहि आकाशें वाजी, धर्म नरेसर आविउ गाजी ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि विरचे तिहां देवा, चोशठ इंड जसु मागे सेवा ॥ चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रूपेंहिं जिणवर जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उवसम रसजर जरी वरसंता, जोजन वाणी वखाण करंता ॥ जाणवि वद्धमाण जिण पाया, सुर नर किन्नर आवे राया ॥ १२ ॥ कंतिसमूहें जलजलकंता, गयण विमाणें रणरणकंता ॥ पेखवि इंदनूइ मन चिंते, सुर आवे अम्ह जगन होवंते ॥ १३ ॥ तीर तरंमक जिम ते वहता, समवसरण पुहता गहगहता ॥ तो अजिमानें गोयम जंपे, इणि अवसरें कोपें तणु कंपे, ॥ १४ ॥

मूढ लोक अजाणिउं बोले, सुर जाणंता इम कांइ मोले ॥ मूं आगल कोइ जाण नणीजें, मेरु अवर किम उपमा दीजें ॥१५॥ वस्तु छंद ॥ वीर जिणवर वीर जिणवर नाण संपन्न, पावा पुरिसुर महिय पत्तनाह संसार तारण ॥ तिहिं देवेहिं निम्मविय समवसरण बहु सुक्ककारण॥जिणवर जग उज्जोय करे, तेजें करि दिनकार ॥ सिंहासण सामिय ठविउ, हुउ सुजयजयकार ॥ १६ ॥ नाषा ॥ तो चढिउ घणमाण गजें, इंदनूइ नूय देव तो ॥ हुंकारो करी संचरिउ, कवण सुजिणवर देव तो ॥ जोजन नूमि समोसरण, पेखवी प्रथमारंन तो ॥ दह दिसि देखे विबुधवहू, आवंती सुररंन तो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरण दंम धजा, कोसीसें नव घाट तो ॥ वैरविवर्जित जंतुगण, प्रातीहारज आठ तो ॥ सुर नर किन्नर असुरवर, इंद इंद्राणी राय तो ॥ चित्तें चमक्किय चिंतवे ए, सेवंता प्रनुपाय तो ॥ १८ ॥ सहस

किरण सम वीर जिण, पेखवी रूप विसाल तो ॥ एह असंभव संभव ए, साचो ए इंद्रजाल तो ॥ तो बोलावे त्रिजग गुरु, इंदभूइ नामेण तो ॥ श्रीमुख संसय सांमि सवे, फेडे वेदपएण तो ॥ ॥ १९ ॥ मान मेल्हि मद ठेलि करे, भगतें ना में सीस तो ॥ पंचसया शुं व्रत लिउ ए, गोयम पहिलो सीस तो ॥ बंधव संजम सुणवि करे, अगनिभूइ आवेइ तो ॥ नाम लेइ आभाप करे, तं पुण प्रतिबोधेइ तो ॥ २० ॥ इणि अनुक्रमें ग णहररयणं, थाप्या वीर इग्यार तो ॥ तो उपदे शें भुवन गुरु, संजमशुं व्रत बार तो ॥ बिहु उ पवासें पारणुं ए, आपणपें विहरंत तो ॥ गोय म संजम जग सयल, जयजयकार करंत तो ॥ २१ ॥ वस्तु छंद ॥ इंदभूइ इंदभूइ चढिय ब हुमान ॥ हुंकारो करि संचरिउ समवसरण पुह तो तुरंतो ॥ इह संसा सामि सवे चरमनाह फे डे फुरंतो ॥ बोधबीज सद्याय मने, गोयम भवह

विरत्त ॥ दिख्क लेइ सिख्का सहिय, गणहर प
य संपत्त ॥ २२ ॥ ज्ञापा ॥ आज हुउ सुविहा
ण, आज पचेलिमां पुण ज्ञरो ॥ दीठा गोयम
सामि, जो नियनयणे अमिय ज्ञरो ॥ सिरिगो
यम गणहार, पंचसया मुनि परिवरिय ॥ ज्ञूमि
य करय विहार, ज्ञवियां जन पडिबोह करे ॥ स
मवसरण मझार, जे जे संसा उपजे ए ॥ ते ते
पर उपगार, कारण पूछे मुनिपवरो ॥ २३ ॥
जिहां जिहां दीजें दिख्क, तिहां तिहां केवल उ
पजे ए ॥ आप कन्हे अण हुंत, गोयम दीजें
दान इम ॥ गुरु उपर गुरु ज्ञत्ति, सामिय गोय
म उपनिय ॥ इण छल केवल नाण, रागज रा
खे रंगज्ञरे ॥ २४ ॥ जो अष्टापद शैल, वंदे च
ढि चउवीस जिण ॥ आतम लब्धि वसेण, च
रम सरीरी सोइ मुनि ॥ इअ देसण निसुणेइ,
गोयम गणहर संचलिउ ॥ तापस पन्नरस एण,
तो मुनि दीठो आवतो ए ॥ २५ ॥ तवसोसिय

नियअंग, अम्ह सक्ति नवि उपजे ए ॥ किम चढशे दृढकाय, गज जिम दीसे गाजतो ए ॥ गिरुउ ए अभिमान, तापस जो मन चिंतवे ए ॥ तो मुनि चढिउ वेग, आलंबवि दिनकर किरण ॥ ३६ ॥ कंचण मणि निप्पन्न, दंभ कलस धज वडसहिय ॥ पेखवि परमाणंद, जिणहर भरहेसरमहिअ ॥ निय निय काय प्रमाण, चउदिसि संठिअ जिणह बिंब ॥ पणमवि मन उल्लास, गोयम गणहर तिहां वसिय ॥ ३७ ॥ वयर सामीनो जीव, तिर्यक जूंभक देव तिहां ॥ प्रतिबोधे पुंमरीक, कंमरीक अध्ययन भणी ॥ वलता गोयम सामी, सवि तापस प्रतिबोध करे ॥ लेइ आपणे साथ, चाले जिम जूथाधिपति ॥ ३८ ॥ खीरखंम घृत आणि, अमिअ वूठ अंगुठ ठवे ॥ गोयम एकण पात्र, करावे पारणुं सवे ॥ पंचसया शुभ भाव, उज्जल भरिउ खीर मीसें ॥ साचो गुरुसंजोग, कवल ते केवल रू

प हुउ ॥ २ए ॥ पंचसया जिणनाह, समवसर ण प्राकारत्रय ॥ पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उ ज्जोय करे ॥ जाणे जिणह पीयूप, गाजंति घण मेघ जिम ॥ जिणवाणी निसुणेइ, नाणी हूआ पंचसया ॥३०॥ वस्तु बंद ॥इणे अनुक्रमे इणे अ नुक्रमें नाणसंपन्न ॥ पन्नरह सय परवरिय, हरि य डुरिय जिणनाह वंदई ॥ जाणवि जग गुरुव यण, तिह नाण अप्पाण निंदई ॥ चरम जिणे सरइम नणइ, गोयम मकरिस खेउ ॥ बेह जई आपण सही, होसुं तुल्ला बेउ ॥ ३१ ॥ नाषा ॥ सामिउ ए वीर जिणंद, पूनिम चंद जिम उल्ल सिअ ॥ विहरिउ ए नरहवासम्मि, वरिस ब हुत्तर संवसिअ ॥ ठवतो ए कणय पउमेव, पा यकमल संघें सहिअ ॥ आविउ ए नयणाणं द, नयर पावापुरिसुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेखि उ ए गोयम सामी, देवशर्मा प्रतिबोध करे ॥ आपण ए त्रिशला देवी, नंदन पहोतो परम प

ए ॥ वलतो ए देव आकास, पेखवि जाणिय जिणसमेए ॥ तो मुनि ए मन विखवाद, नाद नेद जिम ऊपनो ए ॥ ३३ ॥ कुण समो ए सा मिय देखि. आप कन्हेहुं टालिउ ए ॥ जाणं तो ए तिहुअण नाह, लोक ववहार न पालि उ ए ॥ अति नलुं ए कीधलुंसामि, जाणिकं केवल मागशे ए ॥ चिंतविकं ए बालक जेम, अहवा केडें लागशे ए ॥ ३४ ॥ हुं किम ए वीर जिणंद, नगतें नोलो नोलविउ ए ॥ आपणो ए अविहड नेह, नाह न संपे सूचव्यो ए ॥ साचो ए इह वीतराग, नेह न जेणें लालिउ ए ॥ इण समे ए गोयमचित्त, राग वैरागें वा लिउ ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए जो ऊलट, रहेतो रागें साहिउ ए ॥ केवलु ए नाण ऊप्पन्न, गोय म सेहेजें ऊमाहिउ ए ॥ तिहुअण ए जयजय कार, केवल महिमा सुर करे ए ॥ गणहरु ए करय वखाण, नवियण नव इम निस्तरे ए

॥ ३५ ॥ वस्तु छंद ॥ पढम गणहर पढम गणह र वरस पंचास, गिहिवासें संवसिय ॥ तीस व रिस संजम विभूसिय ॥ सिरिकेवल नाण पुण, बार वरिस तिहुयणनमंसिय ॥ रायगिहि नय रीहिं ठविअ, बाणवइ वरिसाउ ॥ सामी गोयम गुण निलो, होशे शिवपुर ठाउ ॥ ३७ ॥ नाषा ॥ जिम सहकारें कोयल टहुके, जिम कुसुमवनें परिमल बहके, जिम चंदन सुगंधनिधि ॥ जिम गंगाजल लहेरें लहके, जिम कणयाचल तेजें ऊलके, तिम गोयम सौनाग्यनिधि ॥ ३८ ॥ जिम मान सरोवर निवसे हंसा जिम सुरवर सिरि कणयवतंसा, जिम महुयर राजीववनी ॥ जिम रयणायर रयणें विलसे, जिम अंबर तारा गण विकसे, तिम गोयम गुण केलिवनी ॥ ३९ ॥ पूनिम निसि जिम ससिहर सोहे, सुरतरु महिमा जिम जग मोहे, पूरव दिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानन जिम गिरिवं

र राजे, नरवइ घर जिम मयगल गाजे, तिम जिनशासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम सुरतरुव र सोहे शाखा, जिम उत्तममुख मधुरी जाखा, जिम वनकेतकी महमहे ए ॥ जिम नूमिपति नु यबल चमके, जिम जिनमंदिर घंटा रणके, तिम गोयम लब्धें गहगहे ए ॥ ४१ ॥ चिंतामणिक र चढिउ आज, सुरतरु सारे वंछिय काज, का मकुंन सवि वश हुउ ए ॥ कामगवी पूरे मनका मिय, अष्ट महासिद्धि आवे धामिय, सामिय गोयम अणुसरो ए ॥ ४२ ॥ पणवरकर पहेलो पन्नणीजें, मायाबीज श्रवण निसुणीजें, श्रीम ती शोजा संजवे ए ॥ देवहधुरि अरिहंत नमी जें, विनयपहु उवझाय थुणीजे, इण मंत्रें गोय म नमो ए ॥ ४३ ॥ पुर पुर वसतां कांइ करी जे, देश देशांतर कांइ जमीजें, कवण काज आयास करो ॥ प्रह उठी गोयम समरीजें, का ज समग्रह ततखण सिझे, नवनिधि विलसे ता

स घरे ॥ ४४ ॥ चउदह सय बारोत्तर वरसें, गोयम गणहर केवल दिवसें, किउं कवित उपगार करो ॥ आदेहिं मंगल एह पभणीजें, परव महोछव पहिलो लीजें, ऋद्धि वृद्धि कल्लाण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिणें उयरें धरिया, धन पिता जिण कुल अवतरिया, धन सहगुरु जिणे दिक्खिया ए ॥ विनयवंत विद्याभंभार, जस गुण कोइ न लभ्भे पार, विद्यावंत गुरु वीनवे ए ॥ गौतम स्वामीनो रास भणीजें, चउविह संघ रलियायत कीजे ऋद्धि वृद्धि कल्याण करे ॥४६॥ ॥ इति गौतम स्वामीनो रास संपूर्ण ॥ ११३ ॥

॥ अथ श्रीशत्रुंजय स्तुति ॥

॥ श्रीशत्रुंजय गिरि तीरथ सार, गिरिवर मांहे जेम मेरु उदार, ठाकुर राम अपार ॥ मंत्र मांहे नवकारज जाणुं, तारामां जेम चंद वखाणुं, जलधर मांहे जल जाणुं ॥ पंखी मांहे जेम उत्तम हंस, कुल मांहें जेम ऋपभनो वंश,

नाभि तणो जे अंश ॥ क्षमावंत मांहे जेम अरिहंता, तपशूरा मुनिवर महंता, शत्रुंजय गिरि गुणवंता ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव अभिनंदा, सुमतिनाथ मुख पूनम चंदा, पद्म प्रभ सुखकंदा ॥ श्रीसुपार्श्व चंद्रप्रभ सुविधि; शीतल श्रेयांस सेवो बहु बुद्धि, वासु पूज्य मति शुद्धि ॥ विमल अनंत जिन धर्म ए शांति. कुंथु अर मल्लि नमुं एकांति, मुनि सुव्रत शुद्ध पंथी ॥ नमी पासने वीर चोवीश, नेम विना ए जिन त्रेवीश, सिद्ध गिरि आव्या ईश ॥ २ ॥ भरतराय जिन साथें बोले, स्वामी शत्रुंजय गिरि कुण तोले, जिननुं वचन अमोल ॥ ऋषभ कहे सुणो भरतराय, छहरी पालंता जे नरजाय, पातक भूको थाय ॥ पशु पंखी जे इण गिरि आवे, भव त्रीजे ते सिद्धज थावे, अजरामर पद पावे ॥ जिनमतमें शत्रुंजो वखाण्यो, ते में आगम दि

ल मांहे आव्यो, सुणतां सुख उपजाव्यो ॥ ३ ॥ संघपति भरत नरेसर आवे, सोवन तणां प्रासाद करावे, मणिमय मूरति ठावे ॥ नाभिराया मरुदेवी माता, ब्राह्मी सुंदरी बेहेन विख्याता, मूर्त्ति नवाणुं भ्राता ॥ गोमुखने चक्केसरी देवी, शत्रुंजय सार करे नित्य मेवी, तप गछ उपर हेवी ॥ श्रीविजयसेन सूरीश्वर राया, श्रीविजयदेव सूरि प्रणमी पाया, ऋषभदास गुणगाया ॥ ४ ॥ इति ॥ स्तुति ॥ ११४ ॥

॥ अथ सीमंधर जिन स्तुति ॥

॥ महाविदेहखेत्रें सीमंधर स्वामी, सोनानां सिंहासणजी ॥ रूपानां कोशीशां विराजे, रत्नना दीवा दीपेजी ॥ कुंकुमवर्णी गहूंली विराजे, मोतीना अक्षत सारजी ॥ त्यां बेठा सीमंधर स्वामी, बोले मधुरी वाणीजी ॥ १ ॥ केशर चंदन भरीरे कचोलां, कस्तूरीबरासजी ॥ पहेली रे पूजा अमारीरे होजो, उगम ते परभातजी ॥

॥ अथ नवकारनो छंद ॥

॥ दोहा ॥ वंछित पूरे विविध परें, श्रीजिन शासन सार ॥ निश्चें श्रीनवकार नित्य, जप तां जयजयकार ॥ १ ॥ अडशठ अक्षर अधि क फल, नव पद नवे निधान ॥ वीतराग स्वय मुख वदे, पंच परमेष्ठि प्रधान ॥ २ ॥ एकज अ क्षर एक चित्त, समस्या संपत्ति थाय ॥ संचित सागर सातनां ॥ पातक दूर पलाय ॥३॥ सकल मंत्र शिर मुकुट मणि, सद्गुरु न्नापित सार ॥ सो न्नवियां मनं शुद्ध शुं, नित्य जपीयें नवकार ॥ ४ ॥ छंद हाटकी ॥ नवकार थकी श्रीपाल नरेश्वर, पाम्यो राज्य प्रसिद्ध ॥ समशान विषे शिवनाम कुमरनें, सोवन पुरिसो सिद्ध ॥ नव लाख जपं ता नरक निवारे, पामे न्नवनो पार ॥ सो न्नवि यां न्नत्ते चोखें चित्तें, नित्य जपीयें नवकार ॥५॥ बांधि वडशाखा शिंकें बेसि, हेठल कुंम हुताश ॥ तस्करने मंत्र समर्प्यो श्रावकें, उड्यो ते आ

काश ॥ विधिरीत जप्यो विषधर विष टाले, ढाले अमृतधार ॥ सो० ॥ ६ ॥ बीजोरा कारण राय महाबल, व्यंतर डुष्ट विरोध ॥ जेणें नव कारें हत्या टाली, पाम्यो यक्ष प्रतिबोध ॥ नव लाख जपतां थाये जिनवर, इस्यो बे अधिकार ॥ सो० ॥ ७ ॥ पल्लिपति शिख्यो मुनिवर पासें, महामंत्र मन शुद्ध ॥ परजव ते राजसिंह ए थिवीपति, पाम्यो परिगल रिद्ध ॥ ए मंत्रथकी अमरापुर पोहोतो, चारुदत्त सुविचार ॥ सो० ॥ ८ ॥ संन्यासी काशी तप साधंतो, पंचाग्नि परजाल ॥ दीठो श्रीपास कुमारें पन्नग, अध ब लतो ते टाल ॥ संजलाव्यो श्रीनवकार स्वयं मुख, इंडजुवन अवतार ॥ सो० ॥ ए ॥ मनशुद्धें जपतां मयणा सुंदरी, पामी प्रिय संयोग ॥ इण ध्याने कुष्ठ टल्युं उंबरनु, रगतपित्तनो रोग ॥ निश्चें शुं जपतां नवनिधि थाये, धर्म तणो आधार ॥ सो० ॥ १० ॥ घटमांहि कृष्ण जु

जंगम घाव्यो, घरणी करवा घात ॥ परमेष्ठि प्र भावे हार फूलनो, वसुधामांहि विख्यात ॥ कम लावतीयें पिंगल कीधो, पापतणो परिहार ॥ ॥ सो० ॥ ११ ॥ गयणांगण जाति राखी गिहि णी, पाडी बाणा प्रहार ॥ पद पंच सुणंतां पां मुपति घर, ते थई कुंता नार ॥ ए मंत्र अमूल क महिमा मंदिर, भवडुःख भंजनहार ॥ सो० ॥ ॥ १२ ॥ कंबल संबलें कादव काढ्यां, शकट पां चशें मान ॥ दीधे नवकारें गया देवलोकें विल से अमर विमान ॥ ए मंत्रथकी संपति वसुधातले विलसे जैन विहार ॥ सो० ॥ १३ ॥ आगें चोवीशी हुई अनंती, होशे वार अनंत ॥ नवकार तणी कोइ आदि न जाणे, एम भाखे अरिहंत ॥ पूरव दिशि चारे आदि प्रपंचें, समरयो संपत्ति सार ॥ सो० ॥ १४ ॥ परमेष्ठि सुरपद ते पण पामे, जे कृत कर्म कठोर ॥ पुंमरिगिरि उपर प्रत्यक्ष पेख्यो, मणिधरने एक मोर ॥ सद्गुरु सन्मु

ख विधियें समरंतां, सफल जनम संसार ॥ सो० ॥ १५ ॥ सूलिकारोपण तस्कर की धो, लोह खरो परसिद्ध ॥ तिहां शेठें नवकार सुणाव्यो, पाम्यो अमरनी ऋद्ध ॥ शेठने घर आवी विघ्न निवास्यो, सुरें करी मनोहार ॥ ॥ सो० ॥ १६ ॥ पंच परमेष्ठि ज्ञानज पंचह, पंच दान चारित्र ॥ पंच सद्याय महाव्रत पंचह, पंच समिति समकित ॥ पंच प्रमाद विषय तजो पंचह, पालो पंचाचार ॥ सो० ॥ १७ ॥ कलश ॥ छप्पय ॥ नित्य जपीयें नवकार, सार संपत्ति सुखदायक ॥ सिद्धमंत्र ए शाश्वतो, एम जंपे श्रीजगनायक ॥ श्री अरिहंत सुसिद्ध, शुद्ध आचार्य नणीजें ॥ श्रीउवज्झाय सुसाधु, पंच परमेष्ठि थुणीजें ॥ नवकार सार संसार छे, कुशल लाज्न वाचक कहे ॥ एक चित्तें आराधतां, विविध ऋद्धि वंछित लहे ॥१८॥ इति ॥ ११५ ॥

॥ अथ श्रीवीरजिन विनतिरूप स्तवन ॥

॥ वीर सुणो मोरी वीनति, कर जोडी हो कहुं मननी वात ॥ बालकनी परें वीनवुं, मोरा स्वामीहो तुं त्रिभुवन तात ॥ वीर० ॥ १ ॥ तुम दरिसण विण हुं भम्यो, भव मांहे हो स्वामी समुज मोजार ॥ दुःख अनंता में सह्या, ते कहेतां हो केम आवे पार ॥ वी० ॥ २ ॥ पर उपकारी तुं प्रभु, दुःख भंजे हो जग दीन दयाल ॥ तेणे तुज.चरणे आवीयो, स्वामी मुजनेंहो निज नयण निहाल ॥ वी० ॥ ३ ॥ अपराधी पण उद्धर्या, तें कीधी हो करुणा मोरा स्वाम ॥ हुंतो परम भक्त तादरो, तेणें तारो हो नही ढीलनुं काम ॥ वी० ॥ ४ ॥ शूलपाणि प्रति बूजव्यो, जेणे कीधोहो तुजनें उपसर्ग ॥ डंक दीधो चंडकोसीये, तें दीधोहो तसु आठमो सर्ग ॥ वी० ॥ ५ ॥ गोशालो गुनही घणु, जेणे बोल्याहो तोरा अवरणवाद ॥ ते बलतो तें राखी

यो, सीत लेश्याहो मूकी सुप्रसाद ॥ वी० ॥६॥ वचन उथाप्यां ताहरां, जे जगड्यो हो तुम साथें जमाल ॥ तेहने पण पन्नरे भवें, शिवगामी हो कीधो तें कृपाल ॥ वी० ॥ ७ ॥ अइमत्तो रुषी जे रम्यो, जलमांहे हो बांधी माटीनी पाल ॥ तरती मूकी काचली, तें तार्योहो तेहने तत्काल ॥ वी० ॥ ८ ॥ ए कोण छे इंद्रजालीयो, एम कहेतो हो आव्यो तुम तीर ॥ ते गौतमनें तें कर्यो, पोतानी हो प्रभुतानो वजीर ॥ ॥ वी० ॥ ९ ॥ मेघ कुमर रुषी बूजव्यो, चित्त चूक्यो हो चारित्रथी अपार ॥ एकावतारी तेहनें, तें कीधो हो करुणाभंमार ॥ वी० ॥१०॥ बार बरस वेश्या घरें, रह्यो मूकीहो संयमनो भार ॥ नंदीषेण पण उधर्यो, सुर पदवी हो दीधी अतिसार ॥ वी० ॥ ११ ॥ पंच महाव्रत परिहरी, गृहवासें हो वश्या वरस चोवीश ॥ ते पण आर्द्रकुमारनें, तें तार्योहो ताहारी एह

जगीश ॥ वी० ॥ १२ ॥ राय श्रेणिकराणी चे
लणा, रूप देखी हो चित्त चूका जेह ॥ समोव
सरण साधु साधवी, तें कीधोहो आराधक ते
ह ॥ वी० ॥ १३ ॥ विरत नहीं नहीं आखडी,
नहीं पोसोहो नहीं आदरी दिख ॥ ते पण श्रे
णिक रायनें, तें कीधोहो स्वामी आप सरिख
॥ वी० ॥ १४॥ एम अनेक तें उद्धार्या, कहूं ता
हाराहो केता अवदात ॥ सार करो हवे माहरी,
मन आणो हो स्वामी माहरी वात ॥ वी० ॥१५॥
सूधो संयम नवि पले, नहीं तेहवो हो मुज द
रिसण नाण ॥ पण आधार छे एटलो, एकता
हारो हो धरुं निश्चल ध्यान ॥ वी० ॥ १६ ॥ मे
ह महीतल वरसतो, नवि जोवे हो सम विष
मा ठाम ॥ गिरुआ सहेजें गुणकरे, स्वामी सा
रो हो माहारा वंछित काम ॥ वी० ॥ १७ ॥ तुम
नामें सुख संपदा, तुम नामें हो दुःख जाये दूर
॥ तुम नामे वंछित फले, तुम नामें हो मुज आ

नंद पूर ॥ वी० ॥ १८ ॥ कलश ॥ इम नगर जेसलमेरुमंमण, तीर्थंकर चोवीशमो ॥ शासनाधीश्वर सिंहलांछन, सेवतां सुरतरु समो ॥ जिनचंद त्रिशला मात नंदन, शकलचंद कलानिलो ॥ वाचनाचारज समयसुंदर, संथुण्यो त्रिभुवन तिलो ॥ १९ ॥ इति ॥ ११६ ॥

॥ अथ श्री आनंदघनकृत चोवीसजिनस्तुति ॥

॥ तत्र प्रथमं श्री ऋषभजिनस्तवनम् ॥

॥ करम परीक्षाकरण कुमरचल्यो रे ॥ एदेशी ॥

॥ ऋषभजिनेश्वर प्रीतम माहरो रे, उर न चाहुंरे कंत ॥ रीज्यो साहेब संग न परिहरे रे, भांगे सादि अनंत ॥ ऋषभ० ॥ १ ॥ प्रीत सगाईरे जगमां सहु करे रे प्रीत सगाई न कोय ॥ प्रीत सगाईरे निरूपाधिक कहीरे, सोपाधिक धन खोय ॥ ऋषभ० ॥ २ ॥ कोइ कंत कारण काष्ठ भक्षण करे रे, मलसुं कंतने धाय ॥ ए मेलो नवि कहियें संभवे रे, मेलो ठाम न ठाय ॥

ऋपन्न० ॥ ३ ॥ कोइ पति रंजन अति घणो त
प करे रे, पति रंजनतन ताप ॥ ए पति रंजन
में नवि चित्त धर्युं रे, रंजन धातु मिलाप ॥ ऋ
षन्न० ॥ ४ ॥ कोइ कहे लीलारे अलख लल
ख तणी रे, लख पूरे मन आस ॥ दोष रहित
ने लीला नवि घटे रे, लीला दोष विलास ॥
ऋपन्न० ॥ ५ ॥ चित्त प्रसन्नेरे पूजन फल कह्युं
रे, पूज अखंडित एह ॥ कपट रहित थई आतम
अरपणा रे, आनंद घन पद रेह ॥ ऋपन्न० ॥६॥

॥ अथ श्रीअजितजिनस्तवनम् ॥

॥ मारुंमनमोह्युंरेश्रीविमलाचलेरे ॥ एदेशी ॥

॥ पंथडो निहालुंरे बीजा जिनतणो रे, अ
जित अजित गुण धाम ॥ जे तें जीत्यारे तेणे हुं
जीतियो रे, पुरुष किस्युं मुज नाम ॥ पंथ० ॥
॥ १ ॥ चरम नयण करी मारग जोवतो रे, भू
लो सयल संसार ॥ जेणे नयणे करी मारग जो
इयें रे, नयणते दिव्य विचार ॥ पंथ० ॥२॥ पुरु

ष परंपर अनुनव जोवतां रे, अंधो अंध पुलाय ॥वस्तु विचारे रे जो आगमें करीरे, तो चरण धर ण नही गय ॥ पंथ० ३ ॥ तर्क विचारेंरे वाद परं परा रे, पार न पहोचे कोय ॥ अनिमतें वस्तु वस्तुगतें कहे रे, ते विरला जग जोय ॥ पंथ० ॥ ॥ ४ ॥ वस्तु विचारेंरे दिव्य नयण तणो रे, विर ह पड्यो निरधार ॥ तरतम जोगेरें तरतम वा सना रे, वासित बोध आधार ॥ पंथ० ॥ ५ ॥ काल लबधि लही पंथ निहालसु रे, ए आ स्या अविलंब ॥ ए जन जीवेरे जिनजी जाणजो रे, आनंद घन मत अंब ॥ पंथ० ॥६॥ इति ॥

॥ अथश्रीसंनवजिनस्तवनप्रारंनः ॥

॥ रातडीरमिनेकिहांथीआवियारे ॥ एदेशी ॥

॥ संनवदेव ते धुर सेवो सवे रे, लहि प्रनु सेवन नेद ॥ सेवन कारण पहेली नूमिका रे, अनय अद्वेष अखेद ॥ संनव० ॥ १ ॥ नय चंचलताहो जे परिणामनी रे, द्वेष अरोचक ना

व ॥ खेद प्रवृत्तिहो करतां थाकीयें रे, दोष अ
बोध लखाव ॥ संभव० ॥ २ ॥ चरमावर्त्तहो च
रम करण तथा रें, भव परिणति परि पाक ॥
दोष टले वली दृष्टी खुले भली रे, प्रापति प्र
वचन वाक ॥ संभव० ॥ ३ परिचय पातिक घा
तिक साधुसूं रे, अकुशल अपचय चेत ॥ ग्रंथ
अध्यातम श्रवण मनन करी रे, परिशीलन
नय हेत ॥ संभव० ॥ ४ ॥ कारण जोगेहो का
रज नीपजे रे, एमां कोइ न वाद ॥ पण कारण
विण कारज साधीयें रे, ए निज मत उनमाद ॥
संभव० ॥ ५ ॥ मुग्ध सुगम करी सेवन आदरे
रे, सेवन अगम अनूप ॥ देजो कदाचित सेव
क याचना रे, आनंदघन रस रूप ॥ संभव० ॥

॥ अथश्री अभिनंदनजिनस्तवनंलिख्यते ॥

॥ आज निहेजो रे दीसे नाहलो ॥ एदेशी ॥

॥ अभिनंदन जिन दरिशण तरसीये, द

रिशण डुर्लजदेव ॥ मत मत नेदें रे जो जई पू
डीयें, सहुथापे अह मेव ॥ अजि० ॥ १ ॥ सा
मान्ये करी दरिशण दोहेलूं, निरणाय सकल
विशेष ॥ मदमें घेर्योरे आंधो केम करे, रवि
शशि रूप विलेख ॥ अजि० ॥ २ ॥ हेतु विवा
दें हो चित्त धरि जोइयें, अति डुरगम नय वाद
॥ आगमवादेंहो गुरुगम को नही, ए शबलो
विषवाद ॥ अजि० ॥ ३ ॥ घाती डूंगर आ
डा अतिघणा, तुज दरिशण जगनाथ ॥ धीठा
ई करी मारग संचरूं, सेंगू कोइ न साथ ॥ अ
जि० ॥ ४ ॥ दरिशण दरिशण रटतो जो फ
रूं, तो रण रोझ समान ॥ जेहने पीपासा हो
अमृत पाननी, किम नाजे विषपान ॥ अजि०
॥ ५ ॥ तरस न आवेहो मरण जीवन तणो, सी
जे जो दरिशण काज ॥ दरिशण डुर्लज सुलज
कृपा थकी, आनंदघन महाराज ॥ अजि०॥६॥

॥ अथश्री सुमतिजिनस्तवनंलिख्यते ॥
॥ रागवसंत तथा केदारो ॥

॥ सुमति चरण कज आतम अरपण, दर पण जिम अविकार ॥ सुग्यानी ॥ मति तरपण बहु सम्मत जाणियें, परिसरपण सुविचार ॥ सुग्यानी ॥ सुमति० ॥ १ ॥ त्रिविध शकल त नु धर गत आतमा, बहिरातम धुरि भेद ॥ सु० ॥ बीजो अंतर आतम तीसरो, परमातम अविछेद ॥ सु० ॥ सुमति० ॥२॥ आतम बुद्धे हो कायादिक ग्रह्यो, बहिरातम अघरूप ॥ सुग्या नी ॥ कायादिकनो हो साखी धर रह्यो, अंतर आतम रूप ॥ सुग्यानी ॥ सुमति० ॥ ३ ॥ ज्ञा नानंदेहो पूरण पावनो, वरजित सकल उपाधी ॥ सुग्यानी ॥ अतिंद्रिय गुण गण मणि आग रू, इम परमातम साध ॥ सुग्यानी ॥ सुमति० ॥ ४ ॥ बहिरातम तज अंतर आतमा, रूप थ ई थिर भाव ॥ सु० ॥ परमातमनुं हो आतम

नाववूं, आतम अरपण दाव ॥ सु० ॥ सुमति० ॥ ५ ॥ आतम अरपण वस्तु विचारतां, नरम टले मति दोष ॥ सु० ॥ परम पदारथ संपति संपजे, आनंदघन रस पोष ॥ सु० ॥ सु० ॥६॥

॥ अथश्रीपद्मप्रन जिन स्तवनं लिख्यते ॥

॥ राग मारु तथा सिंधुउ चांदलीया संदेसो ॥

॥ केहेजे मारा कंतने रे ॥ एदेशी ॥

॥ पद्मप्रन जिन तुझ मुझ अंतरूं रे, किम नाजे नगवंत ॥ करम विपाकें कारण जोइने रे, कोइ कहे मतिमंत ॥ पद्म० ॥ १ ॥ पयइ ठिई अणुनाग प्रदेशथी रे, मूल उत्तर बहु नेद ॥ घाती अघातीहो बंधूदय उदीरणा रे, सत्ता करम विछेद ॥ पद्म० ॥ २ ॥ कनकोपलवत् पयडि पुरुष तणी रे, जोडी अनादि स्वनाव ॥ अन्य संजोगी जिहां लगें आतमा रे, संसारी कहेवाय ॥ पद्म० ॥ ३ ॥ कारण जोगेहो बंधे बंधने रे, कारण मुगति मूकाय ॥ आश्रव संवर ना

म अनुक्रमें रे, हेय उपादेय सुणाय ॥ पद्म०
॥ ४ ॥ युंजन करणे हो अंतर तुज पड्यो रे, गु
ण करणे करी नंग ॥ ग्रंथ उकतें करी पंम्ति ज
न कह्यो रे, अंतर नंग सुअंग ॥ पद्म० ॥ ५ ॥
तुज मुज अंतर अंतर नाजसे रे, वाजसे मंग
ल तूर ॥ जीव सरोवर अतिशय वाधसे रे, आ
नंदघन रस पूर ॥ पद्म० ॥ ६ ॥

॥ अथश्रीसुपार्श्वजिनस्तवनप्रारंनः ॥

॥ रागसारंग तथा मल्हार ॥ ललनानीदेशी ॥

॥ श्रीसुपासजिन वंदियें, सुख संपतिने हेतु
॥ ललना ॥ शांति सुधारस जलनिधि, नवसा
गरमांहें सेतु ॥ ललना ॥ श्रीसु० १ ॥ सात म
हा नय टालतो, सप्तम जिनवर देव ॥ ललना
॥ सावधान मनसा करी, धारो जिनपद सेव ॥
ल० ॥ श्रीसु० ॥ २ ॥ शिव शंकर जगदीश्वरू,
चिदानंद नगवान ॥ ल० ॥ जिन अरिहा तीर्थं
करू, ज्योतिसरूप असमान ॥ ल० ॥ श्रीसु०

॥ ३ ॥ अलख निरंजन वछलू, सकल जंतु वि
सराम ॥ ल० ॥ अनयदान दाता सदा, पूरण
आतमराम ॥ ल० ॥ श्रीसु० ॥ ४ ॥ वीतराग
मद कल्पना, रति अरति नय सोग ॥ ललना
॥ निद्रा तंद्रा डुरंदसा, रहित अबाधित योग ॥
ल०॥ श्रीसु० ॥५॥ परम पुरुष परमातमा, परमे
श्वर परधान ॥ ललना ॥ परम पदारथ परमे
ष्ठी, परमदेव परमान ॥ ल० ॥ श्रीसु० ॥६॥ विधि
विरंचि विश्वंनरू, ऋषी केश जगनाथ ॥ ल०
॥ अघहर अघमोचन धणी, मुक्ति परम पद
साथ ॥ ल०॥श्रीसु०॥७ ॥ एम अनेक अनिधा
धरे, अनुनव गम्य विचार ॥ ल० ॥ जेह जाणे
तेहने करे, आनंदघन अवतार॥ल०॥श्री०॥८॥

॥ अथ श्रीचंद्रप्रनजिनस्तवनं लिख्यते ॥

॥ रागकेदारो तथा गोडी ॥ कुमरी रोवे आक्रंद
करें मुने कोइ मूकावे ॥ ए देशी ॥

॥ देखणदेरे सखी मुने देखणदे, चंद्रप्रन

मुखचंद ॥ सखि० ॥ उपशम रसनो कंद ॥
॥ सखि० ॥ सेवे सुरनर इंद ॥ सखि० ॥ गत क
लिमल दुख दंद ॥ सखी० ॥ १ ॥ सुदम निगोदें न
देखिउ ॥ सखि० ॥ बादर अतिहि विशेष ॥ स० ॥
पुढवी आउ न लेखिउ ॥ स० ॥ तेउ वाउ न ले
स ॥ स० ॥ २ ॥ वनसपति अति घणदीहा ॥
॥ स० ॥ दीठो नही य देदार ॥ स० ॥ बि ति च
उरिंदी जल लिहा ॥ स० ॥ गति सन्नीपण धा
र ॥ स० ॥ ३ ॥ सुर तिरि निरय निवासमां ॥
॥ स० ॥ मनुज अनारज साथ ॥ स० ॥ अप
ज्ञता प्रति न्हासमां ॥ स० ॥ चतुर न चढीउ हा
थ ॥ स० ॥ ४ ॥ एम अनेक थल जाणियें ॥
॥ स० ॥ दरिशण विणु जिन देव ॥ स० ॥ आ
गमथी मति आणियें ॥ स० ॥ कीजे निरमल
सेव ॥ स० ॥ ५ ॥ निरमल साधु नगति लही
॥ स० ॥ योग अवंचक होय ॥ स० ॥ किरिया
अवंचक तिम सही ॥ स० ॥ फल अवंचक जो

य ॥ स० ॥ ६ ॥ प्रेरक अवसर जिनवरू ॥स०॥ मोहनीय क्षय जाय ॥ स० ॥ कामित पूरण सुरतरू ॥ स० ॥ आनंदघनप्रभुपाय ॥ स० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्रीसुविधिजिनस्तवनप्रारंभः ॥

॥रागकेदारो एम धन्नो धणने परचावे॥ ए देशी॥

॥ सुविधिजिणेसर पाय नमीने, शुभ करणी एम कीजें रे ॥ अतिघणो उलट अंग धरीने, प्रह उठी पूजीजें रे ॥ सुवि० ॥ १ ॥ द्रव्य भाव शुचि भाव धरीने, हरखें देहरे जइयें रे ॥ दह तिग पण अहिगम साचवतां, एकमना धुरि थइय रे ॥ सु० ॥ २ ॥ कुसुम अक्षत वर वास सुगंधो, धूप दीप मन साखी रे ॥ अंग पूजा पण भेद सुणी एम, गुरु मुख आगम भाखी रे ॥ सु० ॥ ॥ ३ ॥ एहनुं फल दोय भेद सुणीजें, अनंतर ने परं पर रे ॥ आणा पालण चित्त प्रसन्नी, मुगति सुगति सुर मंदिर रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ फूल अक्षत वर धूप पइवो, गंध नैवेद्य फल जल

नरी रे ॥ अंग अग्र पूजा मलि अडविध, नावें नविक सुनक्ति वरी रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ सत्तर नेद एकवीस प्रकारे, अठोत्तर सत नेदें रे॥ नाव पूजा बहुविधि निरधारी, दोहग डुरगति छेदे रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ तुरिय नेद पडिवत्ती पूजा, उपशम खीण सयोगी रे ॥ चउहा पूजा इम उतरज्झयणे, नाखी केवल नोगी रे ॥ सु० ॥ ॥ ७ ॥ इम पूजा बहु नेद सुणीने, सुखदायक शुन करणी रे ॥ नाविक जीव करसे ते लेशे, आनंदघन पद धरणी रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीशीतलजिनस्तवनं लिख्यते ॥

॥ मंगलिक माला गुणह विसाला ॥ ए देशी ॥

॥ शीतल जिनतपति ललित त्रिनंगी, विविध नंगी मन मोहे रे ॥ करुणा कोमलता तीक्षणता, उदासीनता सोहे रे ॥ शी० ॥ १ ॥ सर्व जंतु हित करणी करुणा, कर्म विदारण तीक्षण रे ॥ हानादाना रहित परणामि, उदाशीन

ता वीक्षण रे ॥ शी० ॥ २ ॥ परदुःख छेदन इ
छा करुणा, तीक्ष्ण पर दुख रीझे रे ॥ उदासी
नता उन्नय विलक्षण, एक ठामें केम सीझे रे ॥
शी० ॥ ३ ॥ अन्नयदान ते मलक्षय करुणा,
तीक्ष्णता गुण नावें रे ॥ प्रेरण विणु कृत उदा
सीनता, इम विरोध मति नावेरे ॥ शी० ॥ ४ ॥
शक्ति व्यक्ति त्रिन्नुवन प्रन्नुता, निर्ग्रंथता संयो
गें रे ॥ योगी न्नोगी वक्ता मौनी, अनुपयोगि
उपयोगें रे ॥ शी० ॥ ५ ॥ इत्यादिक बहु न्नंग
त्रिन्नंगी, चमतकार चित्त देती रे ॥ अचरिज
कारी चित्र विचित्रा, आनंदघन पद लेती रे ॥

॥ अथ श्री श्रेयांसजिनस्तवनप्रारंन्नः ॥

॥ राग गोडी अहोमतवाले साजना ॥ ए देशी ॥

॥ श्री श्रेयांस जिन अंतरजामी, आतमरा
मी नामीरे ॥ अध्यातम मत पूरण पामी, सह
ज मुगतिगति गामीरे ॥ श्रीश्रे० ॥ १ ॥ सयल
संसारी इंडियरामी, मुनिगुण आतम रामीरें ॥

मुख्य पणे जे आतम रामी, ते केवल निःकामी रे ॥श्रीश्रे० ॥२॥ निज स्वरूप जे किरिया साधे, तेह अध्यातम लहियेरे॥ जे किरिया करि चउग ति सोध, ते न अध्यातम कहियेरे॥श्रीश्रे०॥३॥ नाम अध्यातम ठवण अध्यातम, द्रव्य अध्या तम छंमोरे ॥ नाव अध्यातम निजगुण साधे, तो तेहसुं रढ मंमोरे ॥ श्रीश्रे० ॥ ४ ॥ शब्द अ ध्यातम अरथ सुणीने, निर विकल्प आदरजो रे ॥ शब्द अध्यातम नजना जाणी, हान ग्रहण मति धरजोरे ॥ श्रीश्रे०॥५॥ अध्यातम जे वस्तु विचारी, बीजा जाण लबासीरे॥वस्तुगतेंजे वस्तु प्रकाशे, आनंदघन मति वासीरे ॥ श्री० ॥ ६ ॥

॥ अथ वासुपूज्य जिनस्तवनं लिख्यते ॥

॥ तूंगीयागिरि सिखरसोहे ॥ एदेशी ॥

॥ वासुपूज्य जिन त्रिनुवन स्वामी, घनना मी पर नामीरे ॥ निराकार साकार सचेतन, क रम करम फल कामीरे ॥ वासु० ॥ १ ॥ निरा

कार अभेद संग्रांहक, भेद ग्राहक साकारोरे ॥
दर्शन ज्ञान छ भेद चेतना, वस्तु ग्रहण व्यापा
रोरे ॥ वासु० ॥ २ ॥ कर्ता परिणामि परिणामो,
कर्म्मजे जीवें करियेंरे ॥ एक अनेक रूप नय
वादें, नियतें नर अनुसरियेंरे ॥ वासु० ॥ ३ ॥
छुख सुख रूप करम फल जाणो, निश्चय एक
आनंदोरे ॥ चेतनता परिणाम न चूके, चेतन क
हे जिनचंदोरे ॥ वासु० ॥ ४ ॥ परिणामि चेत
न परिणामो, ज्ञान करम फल जावीरे ॥ ज्ञान
करम फल चेतन कहियें, लेजो तेह मनावीरे ॥
वासु० ॥ ५ ॥ आतम ज्ञानी श्रमण कहावे, बी
जा तो उव्य लिंगीरे ॥ वस्तुगते जे वस्तु प्रका
से, आनंदघनमति संगीरे ॥ वासु० ॥६॥ इति॥

॥ अथ श्रीविमलजिनस्तवनं ॥

॥ रागमल्हार इम्मरआंबाआंबलीरे ॥ ए देशी ॥

॥ छुख दोहग दूरें टल्यारे, सुख संपदसुं भे
ट ॥ धींग धणी माथे कियांरे, कुण गंजे नर खे

ट ॥ विमलजिन, दीठा लोयण आज ॥ मारा सीधा वंछित काज, विमलजिन दीठा० ॥ १ ॥ चरण कमल कमला वसेरे, निरमल थिर पद देख ॥ समल अथिर पद परिहरीरे, पंकज पा मर पेख ॥ वि० ॥ दी० ॥ २ ॥ मुझ मन तुझ प द पंकजेरे, लीनो गुण मकरंद ॥ रंक गणे मंदि र धरारे, इंद चंद नागिंद ॥ वि० ॥ दी० ३ ॥ साहिब समरथ तुं धणीरे, पाम्यो परम उदार ॥ मन विसरामी वालहोरे, आतमचो आधार ॥ वि० ॥ दी० ॥ ४ ॥ दरिशण दीठे जिन तणो रे, संशय नरहे वेध ॥ दिनकर करभर पसरं तारे, अंधकार प्रतिखेध ॥ वि० ॥ दी० ॥ ५ ॥ अमीय भरी मूरति रचीरे, उपम न घटे कोय ॥ शांति सुधारस झीलतीरे, निरखित तृपति न होय वि० ॥ दी० ॥ ६ ॥ एक अरज सेवक त णीरे, अवधारो जिनदेव ॥ कृपा करी मुझ दीजी येरे, आनंदघन पद सेव ॥ वि० ॥ दी० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री अनंतजिनस्तवनं लिख्यते ॥
॥ रागरामगिरि ॥ कडखानादेशीनी ढाल ॥

॥ धार तरवारनी सोहेली दोहेली, चउदमां जिनतणी चरण सेवा ॥ धार पर नाचता देख बाजीगरा, सेवना धार पर रहे न देवा ॥ धा० ॥ १ ॥ एआंकणी छे ॥ एक कहे सेवियें विविध किरिया करी, फल अनेकांत लोचन न देखे ॥ फल अनेकांत किरिया करी बापडा, रडवडे चार गति मांहे लेखे॥ धा० ॥ २ ॥ गछना भेद बहु नयण निहालतां, तत्वनी वात करतां न लाजे॥ उदर भरणादि निज काज करता थका, मोह नडिया कलिकाल राजे ॥ धा० ॥ ३ ॥ वचन निरपेक्ष व्यवहार जूठो कह्यो, वचन सापेक्ष व्यवहार साचो ॥ वचन निरपेक्ष व्यवहार संसार फल, सांभली आदरी कांइ राचो ॥ ॥ धा० ॥ ४ ॥ देव गुरु धर्मनी शुद्धि कहो केम रहे, केम रहे शुद्ध श्रद्धान आणो ॥ शुद्धश्रद्धांन

विण सर्व किरिया करी, गार पर लीपणो तेह जाणो ॥ धा० ॥ ५ ॥ पाप नही कोइ उत्सूत्र भाषण जिशो, धर्म नही कोइ जग सूत्र सरिखो ॥ सूत्र अनुसार जे भविक किरिया करे, तेहनो शुद्ध चारित्र परिखो ॥ धा० ॥ ६ ॥ एह उपदेशनुं सार संक्षेपथी, जे नरा चित्तमें नित्य ध्यावें ॥ ते नरा दिव्य बहु काल सुख अनुभवी. नियत आनंद घन राज पावे ॥ धा० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्रीधर्मजिनस्तवनं लिख्यते ॥

॥ राग गोडी सारंग ॥ रसीयानी देशीमां ॥

॥ धरमजिनेसर गाउं रंगसुं, भंग म पडसो हो प्रीत ॥ जिनेसर ॥ बीजो मनमंदिर आणु नही, ए अम कुलवट रीत ॥ जिनेसर ॥ धर्म० ॥ १ ॥ धरम धरम करतो जग सहु फिरे, धरम न जाणेहो मर्म ॥ जि० ॥ धरम जिनेसर चरण ग्रह्या पछी, कोइ न बांधे हो कर्म ॥ जि० ॥ ॥ धर्म० ॥२॥ प्रवचन अंजन जो सदगुरु करे,

देखे परम निधान ॥ जि० ॥ हृदय नयण नि
हाले जग धणी, महिमा मेरुसमान ॥ जि० ॥
॥ धर्म० ॥ ३ ॥ दोडत दोडत दोडत दोडीउ,
जेती मननी रे दोड ॥ जि० ॥ प्रेम प्रतीत वि
चारो ढूकडी, गुरुगम लेजो रें जोड ॥ जि० ॥
॥ ४ ॥ एक पखी केम प्रीति वरें पडे, उन्नय मि
ल्या हुए संधि ॥ जि० ॥ हुं रागी हुं मोहें फं
दिउ, तुं निरागी निरबंध ॥ जि० ॥ ध० ॥ ५ ॥
परम निधान प्रगट मुख आगलें, जगत उलं
घी हो जाय ॥ जि० ॥ ज्योति विना जुउ जगदी
सनी, अंधो अंध पुलाय ॥ जि० ॥ ध० ॥ ६ ॥
निरमल गुण मणि रोहण नूधरा, मुनिजन मा
नस हंस ॥ जि० ॥ धन ते नगरी धन वेला
घडी, माता पिता कुलवंश ॥ जि० ॥ धर्म० ॥
॥ ७ ॥मन मधुकर वर कर जोडी कहे, पदकज
निकट निवास ॥ जि० ॥ घन नामी आनंदघन
सांजलो, ए सेवक अरदाश ॥जि०॥ धर्म० ॥८॥

॥ अथ श्रीशांतिजिनस्तवनप्रारंभः ॥

॥ चतुर चोमासो पडिक्कमी ॥ ए देशी ॥

॥ शांति जिन एक मुझ वीनती, सुणो त्रिभुवनराय रे ॥ शांति सरूप केम जाणियें, कहो मन परखाय रे ॥ शांति० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ धन्य तुं आतमा जेहने, एहवो प्रश्न अवकाश रे ॥ धीरज मन धरी सांभलो, कहुं शांति प्रतिभाश रे ॥ शांति० ॥ २ ॥ भाव अविशुद्ध सुविशुद्धजे, कह्या जिनवर देव रे ॥ ते तिम अवितथ सद्दहे, प्रथम ए शांति पद सेव रे ॥ शांति० ॥ ३ ॥ आगमधर गुरु समकेति, किरिया संवर सार रे ॥ संप्रदायी अवंचक सदा, सुची अनुभवाधाररे ॥ शांति० ॥ ४ ॥ शुद्ध आलंबन आदरे, तजी अवर जंजाल रे ॥ तामसी वृत्ति सवि परिहरी, भजे सात्विकी शाल रे ॥ शाति० ॥ ५ ॥ फल विसंवाद जेह मां नही, शब्द ते अर्थ संबंधि रे ॥ सकल नय

वाद व्यापि रह्यो, ते शिव साधन संधि रे ॥ शांति० ॥ ६ ॥ विधि प्रतिषेध करी आतमां, पदारथ अविरोध रे ॥ ग्रहण विधि महाजने परिग्रह्यो, इसो आगमें बोध रे ॥ शांति० ॥७॥ दुष्ट जन संगति परिहरी, भजे सुगुरु संतान रे ॥ जोग सामर्थ चित्त भावजे, धरे मुगति निदान रे ॥ शांति० ॥८॥ मान अपमान चित्त सम गणे, समगणे कनक पाषाण रे ॥ वंदक निंदक सम गणे, इशो होय तुं जाण रे ॥ शांति० ॥९ ॥ सर्व जगजंतुने समगणे, गणे तृणमणि भाव रे ॥ मुक्ति संसार बेहु समगणे, मुणे भवजल निधि नाव रे ॥ शांति० ॥ १० ॥ आपणो आतमा भावजे, एक चेतनाधार रे ॥ अवर सवि साथ संयोगथी, एह निज परिकरसार रे ॥ शांति० ॥ ११ ॥ प्रभु मुखथी एम सांभली, कहे आतमराम रे ॥ ताहरे दरिशणे निस्तर्यो, मुझ सीधा सवी काम रे ॥ शांति० ॥१२॥ अहो

अहो हुं मुऊने कहुं, नमो मुऊ नमो मुऊ रे ॥ अमित फल दान दातारनी, जेहनी नेट थयी तुऊ रे ॥ शांति० ॥ १३ ॥ शांति सरूप संक्षेप थी, कह्यो निज पर रूप रे ॥ आगम मांहें विस्तर घणो, कह्यो शांति जिन नूप रे ॥ शांति० ॥ १४ ॥ शांति सरूप एम नावसे, धरी शुद्ध प्रणिधान रे आनंदघनपद पामसे, ते लेहेसे बहु मान रे ॥ शांति० ॥ १५ ॥

॥ अथ श्रीकुंथुजिनस्तवनप्रारंन्नः ॥

॥रागगुर्जरी अंबरदेहो मुरारी हमारो०ए देशी॥

॥ मनडुं किमही न बाजे हो ॥ कुंथुजिन म० ॥ जिम जिम जतन करीने राखुं, तिम तिम अलगुं नाजे हो ॥ कुं० ॥ १ ॥ रजनी वासर वसति उजड, गयण पायालें जाय ॥ साप खाएने मुखडुं थोथुं, एह उखाणो न्याय हो ॥ कुं० ॥ २ ॥ मुगतितणा अनिलाषी तपीया, ज्ञानने ध्यान अन्यासें ॥ वयरीडुं कांइ एहवुं

चिंते, नाखे अवलें पासें हो ॥ कुं० ॥ ३ ॥ आगम आगम धरने हाथें, नावे किणविध आंकूं ॥ किहां कणे जो हठकरी हटकूं, तो व्याल तणी परें वांकूं हो ॥ कुं० ॥ ४ ॥ जो ठग कहुं तो ठगतो न देखुं, साहुकार पण नाही, सर्व मांहे ने सहुथी अलगुं, ए अचरिज मन मांही हो ॥ कुं० ॥ ५ ॥ जे जे कहुं ते कान न धारे, आप मतें रहे कालो ॥ सुर नर पंमित जन समजावे, समजे न माहरोसालो हो ॥ कुं० ॥ ६ ॥ में जाएयुं ए लिंग नपुंसक, सकल मरदने ठेले ॥ बीजी वातें समरथ बे नर, एहने कोइन जेले हो ॥ कुं० ॥ ७ ॥ मन साध्युं तेणें सघलुं साध्युं, एह वात नही खोटी ॥ एम कहे साध्युं ते नवी मानुं, ए कहि वातबे मोटी हो ॥ कुं० ॥ ८ ॥ मनडुं डुराराध्य तें वस आणुं, ते आगमथी मति आणुं ॥ आनंदघन प्रभु माहरुं आणो, तो साचुं करी जाणुं हो ॥ कुं० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअरजिनस्तवनं लिख्यते ॥

॥ ऋषन्ननो वंसरयणायरू ॥ ए देशी ॥

॥ धरम परम अरनाथनो, किम जाणुं न्नगवंत रे ॥ स्वपर समय समजावियें, महिमावंत महंत रे ॥ ध० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ शुद्धातम अनुन्नव सदा, स्वसमय एह विलास रे ॥ परवडी गहडी जेह पडे, ते परसमय निवास रे ॥ ध० ॥ २ ॥ तारा नक्षत्र ग्रह चंदनी, ज्योति दिनेस मझार रे ॥ दर्शन ज्ञान चरण थकी, शकति निजातम धार रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ न्नारी पीलो चीकणो, कनक अनेक तरंग रे ॥ पर्याय दृष्टी न दीजीयें, एकज कनक अन्नंग रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ दरिशण ज्ञान चरण थकी, अलख सरूप अनेक रे ॥ निरविकल्प रस पीजियें, शुद्ध निरंजन एक रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ परमारथ पंथ जे कहे, ते रंजे एक तंतरे ॥ व्यवहारें लख जे रहे, तेहना न्नेद अनंत रे ॥ ध० ॥ ६ ॥ व्यव

हारें लखे दोहिला, कांइ न आवे हाथ रे॥ शु
ध नय थापना सेवतां, नवीरहे डुविधा साथ रे
॥ ध० ॥ ७ ॥ एक पखी लखि प्रीतनी, तुम
साथें जगनाथ रे॥कृपा करीने राखजो, चरण
तलें ग्रही हाथ रे ॥ध०॥ ८॥ चक्री धरम तीरथ
तणो, तीरथ फल तत सार रे ॥ तीरथ सेवे
ते लहे, आनंदघन निरधार रे ॥ ध० ॥ ए ॥

॥ अथ श्रीमल्लिजिनस्तवनप्रारंभः ॥

॥ सेवक किम अवगणियें हो० ॥ ए देशी ॥

॥ सेवक किम अवगणियें हो, मल्लिजिन
न ॥ एह अब सोभा सारी॥ अवर जेहने आ
दर अतिदीए, तेहने मूल निवारी हो॥ मल्लि०
॥ १ ॥ ज्ञान स्वरूप अनादि तमारुं, ते ली
धुं तुमें ताणी ॥ जुउ अज्ञान दशा रीसावी,
जातां काण न आणी हो ॥ मल्लि० ॥ २ ॥ नि
द्रा सुपन जागर उजागरता, तुरिय अवस्था
आवी ॥ निद्रा सुपन दशा रीसाणी, जाणी न

नाथ मनावी हो ॥ मल्लि० ॥ ३ ॥ समकेत साथें सगाई कीधी, सपरिवारशुं गाढी ॥ मिथ्या मति अपराधण जाणी, घरथी बाहिर काढी हो ॥ मल्लि० ॥ ४ ॥ हास्य अरति रति शोक डुगछा, नय पामरक रसाली ॥ नोकषाय श्रेणी गज चढतां, श्वानतणी गति जाली हो ॥ मल्लि० ॥ ५ ॥ राग द्वेष अविरतिनी परणति, ए चरण मोहना योद्धा ॥ वीतराग परणति परणमता, उठी नाठा बोद्धा हो ॥ मल्लि० ॥ ६ ॥ वेदोदय कामा परिणामा, काम्य करम सहु त्यागी ॥ निःकामी करुणा रस सागर, अनंत चतुष्क पद पागी हो ॥ मल्लि० ॥ ७ ॥ दान विघन वारी सहु जनने, अभय दान पद दाता ॥ लाभ विघन जग विघन निवारक, परम लाभ रस माता हो ॥ मल्लि० ॥ ८ ॥ वीर्य विघन पंडित वीर्यें हणी, पूरण पदवी योगी ॥ भोगोपभोग दोय विघन निवारी, पूरण भोग

सुभोगी हो ॥ मल्लि० ॥ ए ॥ ए अढार दूपण वर्जित तनु, मुनिजन वृंदें गाया ॥ अविरति रूपक दोष निरूपण, निर्दूपण मन भाया हो०॥मल्लि०॥१०॥ इणविध परखी मन विसरा मी, जिनवर गुण जे गावे ॥ दीनबंधुनी महेर न जरथी, आनंदघन पद पावे हो ॥ मल्लि०॥११॥

॥ अथ श्रीमुनिसुव्रत जिनस्तवनं लिख्यते ॥

॥ आघा आम पधारो पूज्य०॥ए देशी ॥

॥ मुनिसुव्रत जिन राय, एक मुऊ वीनति निसुणो ॥ आतम तत्त्व क्युं जाण्युं जगत गुरु, एह विचार मुऊ कहियो ॥ आतम तत्त्व जाण्या विण निरमल, चित्त समाधि नवि लहियो ॥ ॥ मुनि० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ कोइ अबंध आ तम तत माने, किरिया करतो दीसे ॥ क्रिया त णुं फल कहो कुण भोगवे, एम पूछ्युं चित्त रीशें ॥ मुनि० ॥ २ ॥ जड चेतन ए आतम एकज, थावर जंगम सरिखो ॥ दुख सुख संकर दूष

ए आवे, चित्त विचारी जो परखो ॥ मुनि० ॥
॥ ३ ॥ एक कहे नित्यज आतम तत, आतम दरिसण लीनो ॥ कृत विनाश अकृतागम दूषण, नवि देखे मतिहीणो ॥ मु० ॥
॥ ४ ॥ सौगतमति रागी कहे वादी, क्षणिक ए आतम जाणो ॥बंध मोखने सुख दुख न घटे, एह विचार मन आणो ॥ मुनि० ॥ ५ ॥ भूत चतुष्क वर्जित आतम तत, सत्ता अलगी न घटे॥ अंध शकट जो नजर न देखे, तो शुं कीजें शकटें ॥ मुनि० ॥ ६॥ एम अनेक वादीमत विभ्रम, संकट पडियो न लहे ॥ चित्त समाध ते माटे पूछुं, तुम विण तत कोइ न कहे ॥ मु०॥
॥ ७ ॥ वलतुं जगगुरु इणिपरें भाषे, पक्षपात सब छंडी ॥ राग द्वेष मोह पख वर्जित, आतम शुं रढ मंडी ॥ मुनि० ॥८॥ आतम ध्यानं करे जो कोउ,सो फिर इणमें नावे॥वाग जाल बीजुं सहु जाणे, एह तत्त्व चित चावे ॥ मुनि०॥ ए॥

जेणे विवेक धरी ए पख ग्रहियें, ते ततज्ञानी कहियें ॥ श्रीमुनि सुव्रत कृपा करो तो, आनंदघनपद लहियें ॥ मुनि० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीनमिजिन स्तवनं लिख्यते ॥

॥ धनधन संप्रति साचो राजा ॥ ए देशी ॥

॥ षट दरिसण जिन अंग नणीजें, न्यास षडंग जो साधेरे ॥ नमि जिनवरना चरण उपासक, षट दरिसण आराधेरे ॥ षट० ॥ १ ॥ ए आंकणी॥ जिन सुर पादप पाय वखाणुं, सांख्य जोग दोय नेदें रे ॥ आतम सत्ता विवरण करता, लहो डुग अंग अखेदें रे ॥षट०॥२॥ नेद अनेद सौगत मीमांसक, जिनवर दोय कर नारी रे ॥ लोकालोक अवलंबन नजियें, गुरुगमथी अवधारी रे ॥ षट० ॥३॥ लोकायतिक कूख जिनवरनी, अंश विचारी जो कीजें रे ॥ तत्त्व विचार सुधारस धारा, गुरुगम विण केम पीजें रे ॥ षट० ॥ ४ ॥ जैन जिनेश्वर वर उं

त्तम अंग, अंतरंग बहिरंगेरे ॥ अक्षरन्यास धरा आधारक, आराधे धरी संगेरे ॥ पट० ॥ ॥ ५ ॥ जिनवरमां सघलां दरिसण छे, दर्शन जिनवर भजना रे ॥ सागरमां सघली तटिनी सही, तटिनीमां सागर भजना रे ॥ पट०॥ ॥ ६ ॥ जिनस्वरूप थइ जिन आराधे, ते सही जिनवर होवे रे ॥ भृंगी इलिकाने चटकावे, ते भृंगी जग जोवे रे ॥पट०॥७॥ चूर्णी भाष्य सूत्र निर्युक्ति, वृत्ति परंपर अनुभव रे ॥ समय पुरुष ना अंग कह्यां ए, जे छेदे ते दुर्भव रे ॥ पट०॥ ॥ ८ ॥ मुद्रा बीज धारणा अक्षर, न्यास अरथ विनियोगेरे ॥ जे ध्यावे ते नवि वंचीजे, क्रिया अवंचक भोगेरे ॥ पट० ॥ ए ॥ श्रुत अनुसार विचारी बोलुं, सुगुरु तथा विधि न मले रे ॥ किरिया करी नवि साधी सकीयें, ए विषवाद चित्त सघले रे ॥ पट० ॥१०॥ ते माटे उभा कर जोडी, जिनवर आगल कहीयें रे ॥ समय चर

ए सेवा शुद्ध देजो, जेम आनंदघन लहीयें रे ॥
॥ पट० ॥ ११ ॥ इति समाप्त ॥

॥ अथ श्रीनेमनाथजिन स्तवनं लिख्यते ॥

॥ राग मारूणी धणराढोला ॥ ए देशी ॥

॥ अट नवंतर वालही रे, तुं मुज आतमराम ॥ मनरा वाला ॥ मुगति स्त्रीशुं आपणे रे, सग पण कोइ न काम ॥ म० ॥१॥ घर आवो हो वालिम घर आवो, महारी आशाना विसराम ॥ म० ॥ रथ फेरो हो साजन रथ फेरो, साजन महारा मनोरथ साथ ॥ म० ॥ २ ॥ नारी पखो इयो नेहलो रे, साच कहे जगनाथ ॥ म० ॥ ईश्वर अरधंगें धरी रे, तुं मुज झाले न हाथ ॥ ॥ म० ॥ ३ ॥ पशु जननी करुणा करी रे, आणी हृदय विचार ॥ म० ॥ माणसनी करुणा नही रे, ए कुण घर आचार ॥ म० ॥ ४ ॥ प्रेम कलपतरु छेदियो रे, धरियो जोग धतूर ॥ म० ॥ चतुराइरो कुण कहो रे, गुरु मलियो जग सूर ॥ म० ॥ ५ ॥

मारुं तो एमां क्युंही नही रे, आप विचारें राज ॥ म० ॥ राजसन्नामें बेसतांरे, किसडी बधसी लाज ॥म०॥६॥ प्रेम करे जग जन सहु रे, निर वाहे ते नर ॥म०॥प्रीत करीने गेडी दे रे,तेह शुं न चाले जोर ॥ म० ॥ ७ ॥ जो मनमां एहवुं हतुं रे, निष्पति करत न जाण ॥ म० ॥ निष्पत्ति करीने गंभतां रे, माणस हुवे नुकसान ॥म० ॥ ॥ ८ ॥ देतां दान संवत्सरीरे, सहु लहे वंछित पोप ॥ म० ॥ सेवक वंछित नवी लहे रे, ते सेव कनो दोप ॥ म० ॥ए॥ सखी कहे ए शामलो रे, हुं कहुं लक्षण सेत ॥ म०॥ इण लक्षण साची सखी रे, आप विचारे हेत ॥ म० ॥१० ॥ रागी शुं रागी सहुरे, वैरागी श्यों राग ॥ म० ॥ राग विना किम दाखवो रे, मुगति सुंदरी माग ॥ म० ॥११॥ एक गुह्य घटतुं नथी रे, सघलोई जाणे लोग ॥ म० ॥ अनेकांतिक न्नोगवो रे, ब्रह्मचा री गतरोग ॥ म० ॥ १२ ॥ जिण जोणी तुमने

जोऊंरे, तिण जोणी जुवो राज ॥ म० ॥ एकवार मुऊने जुन रे, तो सीझे मुऊ काज ॥ म० ॥१३॥ मोहदशा धरी न्नावना रे, चित्त लहे तत्त्व विचार ॥म०॥ वीतरागता आदरी रे, प्राणनाथ निरधार ॥ म० ॥ १४ ॥ सेवक पण ते आदरे रे, तो रहे सेवक माम ॥ म० ॥ आशय साथें चालीयें रे, एहिज रूडुं काम ॥ म० ॥ १५॥ त्रिविध योग धरी आदस्यो रे, नेम नाथ न्नरतार ॥ म०॥ धारण पोपण तारणो रे, नव रस मुगताहार ॥ म० ॥ १६॥ कारण रूपी प्रन्नु न्नज्यो रे, गण्यो न काज अकाज ॥ म० ॥ कृपा करी मुऊ दीजीयेंरे, आनंद घन पद राज ॥ म० ॥१७॥ ॥ इति द्वाविंशतिजिनस्तवनम् ॥

॥ अथ अष्टमीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ माहा शुदि आठमने दिनें, विजया सुत जायो ॥ तेम फागुण शुदि आठमे, संन्नव चवि आयो ॥१॥ चइतर वदनी आठमे, जन्म्या

ऊपन्न जिणंद ॥ दीक्षापण ए दिन लही, हु
आ प्रथम मुनिचंद ॥ २ ॥ माधवशुदि आठम
दिनें, आठ कर्म कर्यां दूर ॥ अभिनंदन चो
था प्रभु, पाम्या सुख नरपूर ॥ ३ ॥ एहिज
आठम ऊजली, जन्म्या सुमति जिणंद ॥ आठ
जाति कलशें करी, न्हवरावे सुर इंद ॥ ४ ॥ ज
न्म्या जेठ वदि आठमे, मुनि सुव्रत स्वामी ॥
नेम आशाढ शुदि आठमे, अष्टमी गति पा
मी ॥ ५ ॥ श्रावण वदनी आठमे, नमि जन्म्या
जगभाण ॥ तिम श्रावण शुदि आठमे, पास
जीनुं निर्वाण ॥ ६ ॥ भाद्रवा वदि आठमदिनें,
चविया स्वामी सुपास ॥ जिन उत्तम पदपद्मनें,
सेव्याथी शिववास ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशीनुं चैत्यवंदन ॥

॥शासन नायक वीरजी,प्रभु केवल पायो॥
संघ चतुर्विध थापवा, महसेन वन आयो ॥
॥ १ ॥ माधव सीत एकादशी, सोमल द्विज य

ड़ ॥ इंद्रजूति आदें मल्या, एकादश विद्ध ॥२॥ एकादशसें चउगुणा, तेहनो परिवार ॥ वेद अर्थ अवलो करे, मन अजिमान अपार ॥ ३ ॥ जीवादिक संशय हरी ए, एकादश गणधार ॥ वीरें थाप्या वंदीयें, जिन शासन जयकार ॥ ॥ ४ ॥ मल्ली जन्म अर मल्ली पास, वरचरण विलासी ॥ ऋषभ अजित सुमति नमी, मल्लि घनघाति विनाशी ॥ ५ ॥ पद्मप्रन शिववास पास, जवजवना तोडी ॥ एकादशी .दिन आपणी, ऋद्धि सघली जोडी ॥ ६ ॥ दश खेत्रें त्रिहुं कालनां, त्रणशें कल्याण ॥ वरस अग्यार एकादशी, आराधो वर नाण ॥ ७ ॥ अगीयार अंग लखावीयें, एकादश पाठां ॥ पूंजणी ठवणी विंटणी, मशी कागल काठां ॥ ८ ॥ अगीयार अव्रत गंमवां ए, वहो पडिमा अगियार ॥ खिमाविजय जिन शासनें, सफल करो अवतार ॥ ए ॥ ॥ इति ॥

॥ अथ सीमंधर जिन थोय ॥

॥ सीमंधर जिनवर, सुखकर साहेब देव ॥ अरिहंत सकलनी, नाव धरी करुं सेव ॥ सकल आगम पारग, गणधर नाखित वाणी ॥ जयवंती आणा, ज्ञानविमल गुणखाणी ॥ १ ॥ ए थोय चार वखत पण कहेवाय बे ॥

॥ अथ श्री सीमंधर जिन थोय ॥

॥ श्री सीमंधर देव सुहंकर, मुनि मन पंकज हंसाजी ॥ कुंथु अर जिन अंतर जनम्या, तिहुअण जश परशंसा जी ॥ सुव्रत नमि अंतर वरदीक्षा, शिक्षा जगत निरासेंजी ॥ उदय पेढाल जिनांतरमां प्रनु, जाशे शिव वहु पासेंजी ॥ १ ॥ बत्रीश चउसहि चउसहि मलिया, इग सय सहि उक्किठाजी ॥ चउ अड अड मली मध्यम कालें, वीश जिनेश्वर दिघाजी ॥ दो चउ चार जघन्य दश जंबु, धायइ पुस्कर मोजारेंजी ॥ पूजो प्रणमो आचारांगे, प्र

वचन सार उद्धारेंजी ॥ २ ॥ सीमंधर वर केव
ल पामी, जिनपद खवण निमित्तेजी ॥ अर्थ
निदेशन वस्तु निवेशन, देतां सुणत विनी
तेंजी ॥ द्वादश अंग पूरवयुत रचियां, गण
धर लब्धि विकसियां जी ॥ अप्पज्जवसिय जि
नागम वंदो, अक्षर पदना रसियांजी ॥ ३ ॥
आणारंगी समकित संगी, विविध नंग व्रतधा
रीजी ॥ चउविह संघ तीरथ रखवाली, सहु उ
पद्रव हरनारीजी ॥ पंचांगुली सूरि शासन दे
वी, देती तस जस ऋद्धिजी ॥ श्रीशुभवीर कहे
शिव साधन, कार्य सकलमां सिद्धिजी ॥ ४ ॥

॥ अथ बीजतिथिनी स्तुति ॥

॥ दिन सकल मनोहर, बीज दिवस सुवि
शेष ॥ राय राणा प्रणमे, चंद्रतणी ज्यां रेख ॥
तिहां चंद्रविमानें, शाश्वत जिनवर जेह ॥ १ ॥ हुं
बीज तणे दिन, प्रणमुं आणी नेह ॥ १ ॥ अभिनंद
न चंदन, शीतल शीतल नाथ ॥ अरनाथ सुम

तिजिन, वासुपूज्य शिव साथ ॥ इत्यादिक जिनवर, जन्म ज्ञान निरवाण ॥ हुं बीज तणे दिन, प्रणमुं ते सुविहाण ॥ २ ॥ परकाश्यो बीजें, डुविध धर्म ज्ञगवंत ॥ जेम विमला कमला, विज्ञल नयन विकसंत ॥ आगम अति अनुपम, जिहां निश्चय व्यवहार ॥ बीजें सवि कीजें, पातकनो परिहार ॥ ३ ॥ गजगामिनी कामिनी, कमल सुकोमल चीर ॥ चक्केसरी केसरी, सरस सुगंध शरीर ॥ कर जोडी बीजें, हुं प्रणमुं तस पाय ॥ एम लब्धिविजय कहे, पूरो मनोरथ माय ॥ ४ ॥ इति ॥ बीज स्तुति ॥

॥ अथ पंचमीनी स्तुति ॥

॥ श्रावण शुदि दिन पंचमी ए, जन्म्या नेम जिणंद तो ॥ श्यामवरण तन शोज्ञतुं ए, मुख शारदको चंद तो ॥ सहस वरस प्रज्ञु आयुखुं ए, ब्रह्मचारी ज्ञगवंत तो ॥ अष्ट करम हेलें हणी ए, पोहोता मुक्ति महंत तो ॥ १ ॥ अष्टा

पद आदि जिन ए, पहोता मुक्ति मोझार तो ॥ वासुपूज्य चंपापुरी ए, नेम मुक्ति गिरनार तो ॥ पावापुरी मांहे वलि ए, श्रीवीरतणुं निर्वाण तो ॥ समेत शिखर वीश सिद्ध हुआ ए, शिर वहुं तेहनी आण तो ॥ २ ॥ नेमनाथ ज्ञानी हुवा ए, नांखे सार वचन्न तो ॥ जीवदया गुण वेलडी ए, कीजें तास जतन्न तो ॥ मृषा न बोलो मानवी ए, चोरी चित्त निवार तो ॥ अनंत तीर्थंकर एम कहे ए, परहरियें परनार तो ॥ ॥ ३ ॥ गोमेद नामें यक्ष नलो ए, देवी श्री अंबिका नाम तो ॥ शासन सान्निध्य जे करे ए, करे वलि धर्मनां काम तो ॥ तपगछ नायक गुण निलो ए, श्रीविजयसैन्य सूरिराय तो ॥ रिखन दास पाय सेवतां ए, सफल करो अवतार तो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टमीनी स्तुति ॥

॥ मंगल आठ करी जस आगल, नाव ध

री सुरराज जी ॥ आठ जातिना कलश करीने न्हवरावे जिनराज जी ॥ वीरजिनेश्वर जन्म महोत्सव, करतां शिव सुख साधेजी ॥ आठमनुं तप करतां अम घर, मंगल कमला वाधेजी ॥ १ ॥ अष्ट करम वयरी गजगंजन, अष्टापद परें बलीयाजी ॥ आठमे आठ सुरूप विचारी, मद आठे तस गलीयाजी ॥ अष्टमी गतिपरें पहोता जिनवर, फरस आठ नहिं अंग जी ॥ आठमनुं तप करतां अम घर, नित्य नित्य वाधे रंगजी ॥ २ ॥ प्रातिहारज आठ बिराजे, समवसरण जिन राजेजी ॥ आठडे आठ शो आगम भांखी, भवि मन संशय भांजेजी ॥ आठे जे प्रवचननी माता, पाले निरतिचारोजी ॥ आठमने दिन अष्टप्रकारें, जीवदया चित्त धारो जी ॥ ३ ॥ अष्ट प्रकारी पूजा करीने, मानव भवफल लीजें जी ॥ सिद्धाइ देवी जिनवर सेवी, अष्टमहासिद्धि दीजेंजी ॥ आठमनुं तप

करता लीजें, निर्मल केवल ज्ञानजी ॥ धीर वि
मल कवि सेवक नय कहे, तपथी कोड कल्या
ण जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशीनी स्तुति ॥

॥एकादशी अति रूअडी, गोविंद पूछे नेम॥
कोण कारण ए पर्व मोहोटुं, कहो मुझशुं तेम ॥
जिनवर कल्याणक अति घणां, एकशोने पचा
स ॥ तेणें कारण ए पर्व मोहोटुं, करो मौन उ
पवास ॥ १ ॥ अगिआर श्रावक तणी प्रतिमा,
कहे ते जिनवर देव ॥ एकादशी एम अधिक
सेवो, वन गजा जिम रेव ॥ चोवीश जिनवर स
यल सुखकर, जैसा सुरतरु चंग ॥ जेम गंग
निर्मल नीर जेहवुं,करो जिनशुं रंग ॥२॥ अगी
आर अंग लखावियें, अगीयार पाठां सार ॥
अगिआर कवली वींटणां, ठवणी पूंजणी सार
॥ चावखी चंगी विविध रंगी, शास्त्र तणे अनु
सार ॥ एकादशी एम उजवो, जेम पामियें भव

पार ॥ ३ ॥ वर कमलनयणी कमलवयणी, क
मल सुकोमलकाय ॥ भुजदंम चंम अखंम जेह
ने, समरतां सुख थाय ॥ एकादशी एम मन व
शी, गणि हर्ष पंमित शिस ॥ शासन देवी वि
घन निवारो, संघ तणां निशदीस ॥४॥ इति ॥

॥ अथ श्री ज्ञानपंचमीनुं स्तवन ॥

॥ पुण्य प्रशंसीयें ॥ ए देशी ॥ सुत सिद्धार
थ नूपनो रे, सिद्धारथ नगवान ॥ बारह परख
दा आगलें रे, नांखे श्री वर्द्धमानो रे ॥ १ ॥ न
वियण चित्त धरो ॥ मन वच काय अमायो रे,
ज्ञान नगति करो ॥ ए आंकणी ॥ गुण अनंत
आतम तणा रे, मुख्यपणे तिहां दोय ॥ तेमां
पण ज्ञानज वडुं रे ॥ जिणथी दंसण होय रे
॥२॥ न०॥ ज्ञानें चारित्र गुण वधे रे, ज्ञानें उ
द्योत सहाय ॥ ज्ञानें थविरपणुं लहे रे, आचा
रज उवझाय रे ॥ ३ ॥ न० ॥ ज्ञानी श्वासोश्वा
समां रे, कठिण करम करे नाश ॥ वह्नि जेम इं

धण दहे रे, क्षणमां ज्योति प्रकाशो रे ॥ ४ ॥ ज० ॥ प्रथम ज्ञान पछे दया रे, संवर मोह विनाश ॥ गुण ठाणांग पग थालीयें रे, जेम चढे मोक्ष आवासो रे ॥ ५ ॥ ज० ॥ मइ सुअ उहि पणपज्जवा रे, पंचम केवल ज्ञान ॥ चउ मुंगा श्रुत एक छे रे, स्वपर प्रकाश निदान रे ॥ ६ ॥ ज० ॥ तेहनां साधन जे कह्यां रे, पाटी पुस्तक आदि ॥ लखे लखावे साचवे रे, धर्मी धरी अप्रमादो रे ॥ ७ ॥ ज० ॥ त्रिविध आशातना जे करे रे, जणातां करे अंतराय ॥ अंधा बेहेरा बोबडा रे, मुंगा पांगुला थाय रे ॥८॥ ज०॥ जणातां गुणातां न आवडे रे, न मले वल्लन चीज ॥ गुणमंजरी वरदत्त परें रे, ज्ञान विराधन बीज रे ॥ ॥ ए ॥ ज० ॥ प्रेमें पूछे परखदा रे, प्रणमी जग गुरु पाय ॥ गुणमंजरी वरदत्तनो रे, करो अधिकार पसायो रे ॥ १० ॥ ज० ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥ कपूर होये अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ जंबुद्वीपना जरतमां रे, नयर पदम पुर खास ॥ अजितसेन राजा तिहां रे, राणी यशो मती तास रे ॥ १ ॥ प्राणी आराधो वर ज्ञान ॥ एहज मुक्ति निदान रे ॥ प्राणी० ॥ ए आंकणी ॥ वरदत्त कुंवर नंदनो रे, विनयादिक गुण वंत ॥ पितरें जणवा मूकिउ रे, आठ वरस जब हुंत रे ॥ २ ॥ प्रा० ॥ पंमित यत्न करे घणो रे, गात्र जणावण हेत ॥ अक्षर एक न आवडे रे, ग्रंथतणी शी चेत रे ॥ ३ ॥ प्रा० ॥ कोढें व्यापी देहडी रे, राजा राणी सचिंत ॥ श्रेष्ठी तेहीज नयरमां रे, सिंहदास धनवंत रे ॥ ४ ॥ प्रा० ॥ कपूरतिलका गेहिनी रे, शीलें शोजित अंग ॥ गुणमंजरी तस बेटडी रे, मुंगी रोगें व्यंग रे ॥ ॥ ५ ॥ प्रा० ॥ शोल वरषनी सा थइ रे, पामी यौवन वेश ॥ डुर्जग पण परणे नहीं रे, मात

पिता धरे खेद रे ॥ ६ ॥ प्रा० ॥ तेणें अवसरें उ द्यानमां रे, विजयसेन गणधार ॥ ज्ञान रयण रयणायरू रे, चरण करण व्रतधार रे ॥ ७ ॥ प्रा० ॥ वनपालक नूपालने रे, दीध वधाई जाम ॥ चतुरंगी सेन्या सजी रे, वंदन जावे ताम रे ॥ ८ ॥ प्रा० ॥ धर्मदेशना सांनले रे, पुरजन सहित नरेश ॥ विकसित नयन वदन मुदा रे, नहिं प्रमाद प्रवेश रे ॥ ९ ॥ प्रा० ॥ ज्ञान विराधन परनवें रे, मूरख परआधीन ॥ रोगें पीड्या टलवले रे, दीसे डुःखीया दीन रे ॥ १० ॥ ॥ प्रा० ॥ ज्ञान सार संसारमां रे, ज्ञान परम सुखहेत ॥ ज्ञान विना जग जीवडा रे, न लहे तत्त्व संकेत रे ॥ ११ ॥ प्रा० ॥ श्रेष्ठी पूछे मुणिंदने रे, नांखो करुणावंत ॥ गुणमंजरी मुज अंगजा रे, कवण कर्म विरतंत रे ॥ १२ ॥ प्रा० ॥ इति ॥ ढाल त्रीजी ॥ सूरती महिनानी देशीमां ॥

॥ धातकी खंमना नरतमां, खेटक नयर सु

गम ॥ व्यवहारी जिन देव छे, घरणी सुंदरी नाम ॥ १ ॥ अंगज पांच सोहामणा, पुत्री चतुराचार ॥ पंमित पासें शीखवा, तातें मूक्या कुमार ॥ २ ॥ बालस्वन्नावें रामतें, करतां दहाडा जाय ॥ पंमित मारे त्यारें, मा आगल कहे आय ॥ ३ ॥ सुंदरी सुखिणी शीखवे, नणवानुं नहीं काम ॥ पंमयो आवे तेडवा, तो तस हणज्यो ताम ॥ ४ ॥ पाठी खडिया लेखणा, बाली कीधां राख ॥ शठने विद्या नवि रुचे, जेम करहाने डाख ॥ ५ ॥ पाडापरें मोहोटा थया, कन्या न दीये कोय ॥ शेठ कहे सुण सुंदरी, ए तुज करणी जोय ॥ ६ ॥ त्रटकी नांखे नामिनी. बेटा बापना होय ॥ पुत्री होये मातनी, जाणे छे सहु कोय ॥ ७ ॥ रे रे पापिणी सापिणी, सामा बोल म बोल ॥ रीसाली कहे ताहरो, पापी बाप निटोल ॥ ८ ॥ शेठें मारी सुंदरी, काल करी तन खेव ॥ ए तुज बेटी गपनी, ज्ञानविराधन

हेव ॥ ए ॥ मूर्छागत गुणमंजरी, जातिसमरण पामि ॥ ज्ञान दीवाकर साचो, गुरुने कहे शिर नामि ॥ १० ॥ शेठ कहे सुणो स्वामी, केम जाये ए रोग ॥ गुरु कहे ज्ञान आराधो, साधो वंछित योग ॥ ११ ॥ उज्ज्वल पंचमी सेवो, पंच वरस पंच मास ॥ नमो नाणस्स गणणुं गुणो, चोविहार उपवास ॥ १२ ॥ पूरव उत्तर सन्मुख, जपियें दोय हजार ॥ पुस्तक आगल ढोइयें, धान्य फलादि उदार ॥ १३ ॥ दीवो पंच दीवट तणो, साथिउ मंगल गेह ॥ पोसहमां न करी शके, तेणविधि पारण एह ॥ १४ ॥ अथवा सौभाग्य पंचमी, उज्जल कार्त्तिकमास ॥ जावज्जीव लगें सेवीयें, उजमणा विधि खास॥१५॥इति॥

॥ ढाल चोथी ॥ एकवीशानी देशीमां ॥

॥ ढाल ॥ पांच पोथी रे, ठवणी पाठां विटांगणां ॥ चाबखी दोरा रे, पाटी पाटला वरतणां ॥ मसी कागल रें, कांबी खडीआ लेखणी ॥ क

वली भावली रे, चंदुआ झरमर पुंजणी ॥ १ ॥
॥ त्रुटक ॥ प्रासाद प्रतिमा तास नूपण, केस
र चंदन भावली ॥ वासकूंपि वालाकूंची, अंग
लुहणां गवडी ॥ कलश थाली मंगलदीवो,
आरतिने धूपणां ॥ चरवला मुहपत्ती सामीवछ
ल, नोकरवाली थापना ॥ २ ॥ ढाल ॥ ज्ञान
दरिसण रे, चरणनां साधन जे कह्यां ॥ तप सं
युत रे, गुणमंजरीएं सद्दह्यां ॥ नृप पूछे रे, वर
दत्त कुंअरनें अंग रे ॥ रोग उपनो रे, कवण
करमना नंग रे ॥ ३ ॥ त्रुटक ॥ मुनिराज नासे
जंबु दीपें, नरत सिंहपुर गाम ए ॥ व्यवहारी
वसु तास नंदन, वसु सार वसुदेव नाम ए ॥
वनमांहे रमतां दोय बंधव, पुण्य योगें गुरु
मल्या ॥ वैराग्य पामी नोग वामी, धर्म धामि
संवस्या ॥ ४ ॥ ढाल ॥ लघु बांधव रे, गुणवंत
गुरु पदवी लहे ॥ पणसय मुनिने रे, सारण
वारण नितु दिए ॥ कर्मयोगें रे, अशुन उदय

थयो अन्यदा॥संथारे रे, पोरिसी जणी पोढ्यो यदा ॥ ५ ॥ त्रुटक ॥ सर्वघाति निंद व्यापी, साधु मागे वायणां ॥ जंघमां अंतराय थातां, सूरि हूआ दूमणा ॥ ज्ञान ऊपर द्वेष जाग्यो, लाग्यो मिथ्या जूतडो ॥ पुण्य अमृत ढोली नाख्युं, जर्यो पाप तणो घडो ॥ ६ ॥ ढाल ॥ मन चिंतवे रे, कां मुज लागुं पाप रे ॥ श्रुत अ न्यास्यो रे,तो एवडो संताप रे ॥ मुज बांधव रे, जोयण सयण सुखें करे ॥ मूरखना रे, आठ गुणो मुख उच्चरे ॥ ७ ॥ त्रुटक ॥ बार वासर कांइ मुनिने, वायणा दीधी नहीं॥अशुज ध्यानें आ यु पूरी, जूप तुज नंदन सही ॥ ज्ञानविराधन मूढ जडपणुं, कोढनी वेदन लही ॥ वृद्धबांधव मानसरवर, हंसगति पाम्यो सही ॥८॥ ढाल ॥ वरदत्तने रे, जातिसमरण उपनुं ॥ जव दीठो रे, गुरु प्रणमी कहे शुजमनो ॥ धन्य गुरुजी रे, ज्ञानजगत्रय दीवडो ॥ गुण अवगुण रे, जास

न जे जग परवडो ॥ ए ॥ त्रु० ॥ ज्ञानपावन सिद्धि साधन, ज्ञान कहो केम आवडे ॥ गुरु कहे तपथी पाप नासे, टाढ जेम घन तावडे ॥ नूप पभणे पुत्रने प्रभु, तपनी शक्ति न एवडी ॥ गुरु कहे पंचमी तप आराधो, संपदा ल्यो बेवडी ॥ १० ॥ इति ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ मेंदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥

॥ सद्गुरु वयण सुधारसें रे, भेदी साते धात ॥ तपशुं रंग लागो ॥ गुणमंजरी वरदत्तनो रे, नाठो रोगमिथ्यात्व ॥ त० ॥ १ ॥ पंचमी तप महिमा घणो रे, पसर्यो महीयल मांही ॥ त० ॥ कंन्यासहस सयंवरा रे, वरदत्त परण्यो त्यांही ॥ त० ॥ २ ॥ नूपें कीधो पाटवी रे, आप थयो मुनि नूप ॥ त० ॥ भीम कांति गुणें करी रे, वरदत्त रवि शशि रूप ॥ त० ॥ ३ ॥ राज रमा रमणी तणा रे, भोगवे भोग अखंड ॥ त० ॥ वरसें वरसें उजवे रे, पंचमी तेज प्रचंड ॥ त०

॥ ४ ॥ नुक्तन्नोगी थयो संजमी रे, पाले व्रत खट काय ॥ त० ॥ गुणमंजरी जिनचंद्रने रे, परणावे निज ताय ॥ त० ॥ ५ ॥ सुख विलसी थइ साधवी रे, वैजयंते दोय देव ॥ त० ॥ वरदत्त पण उपनो रे, जिहां सीमंधर देव ॥ त० ॥ ॥ ६ ॥ अमरसेन राजा घेरें रे, गुणवंत नारी पेट ॥ त० ॥ लक्षण लक्षित रायने रे, पुण्यें कीधो नेट॥ त० ॥ ७ ॥ शूरसेन राजा थयो रे, शो कन्या नरतार ॥ त० ॥ सीमंधर सामी कने रे, सुणि पंचमी अधिकार ॥ त० ॥७॥ तिहां पण ते तप आदस्युं रे, लोक सहित नूपाल ॥ ॥ त०॥ दश हजार वरसां लगे रे, पाले राज्य उदार ॥ त० ॥ ए ॥ चार माहाव्रत चोपशुं रे, श्रीजिनवरने पास ॥त०॥ केवलधरि मुक्ते गयो रे, सादि अनंत निवास ॥ त० ॥ १० ॥ रमणी विजय शुन्नापुरी रे, जंबु विदेह मझार ॥ त०॥ अमरसिंह महीपालने रे, अमरावती घरनार

॥ त० ॥ ११ ॥ वैजयंत थकी चवी रे, गुणमंज रीनो जीव ॥ त० ॥ मान सरस जेम हंसलो रे, नाम धर्युं सुग्रीव ॥ त० ॥ १२ ॥ वीशे वरसें राजवी रे, सहस चोराशी पुत्र ॥ त० ॥ लाख पूरव समता धरे रे, केवल ज्ञान पवित्र ॥त०॥ ॥ १३ ॥ पंचमीतप महिमा विषे रे, नांखे निज अधिकार ॥ त० ॥ जेणें जेहथी शिवपद लह्युं रे ॥ तेहने तस नपकार ॥ त० ॥१४॥ इति ॥ ढाल ७मी॥ करकंडुने करुं वंदना ॥ ए देशी ॥

॥ चोवीशा दंडक वारवा हुं वारी लाल ॥ चोवीशमो जिनचंद रे॥हुं वारी लाल॥प्रगट्यो प्राणत स्वर्गथी ॥हुं०॥ त्रिशला नर सुखकंद रे ॥ हुं० ॥ १ ॥ माहावीरने करुं वंदना ॥ हुं० ॥ ए आंकणी ॥ पंचमी गतिने साधवा ॥ हुं० ॥ पंचम नाण विलास रे ॥ हुं० ॥ माहानिशीथ सिद्धांतमां ॥ हुं० ॥ पंचमी तप प्रकाश रे ॥ हुं० ॥ ॥ २ ॥ अपराधी पण नद्धर्यो ॥ हुं० ॥ चंमको

शित साप रे ॥ ढुं० ॥ यज्ञ करता बांम्नणा ॥ ॥ ढुं० ॥ सरखा कीधा आप रे ॥ ढुं० ॥ ३ ॥ देवानंदा ब्राह्मणी ॥ ढुं० ॥ रिखन्नदत्त वली विप्र रे ॥ ढुं० ॥ व्याशी दिवस संबंधथी ॥ ढुं०॥ कामित पूस्यो क्षिप्र रे ॥ ढुं० ॥ ४ ॥ कर्म रोगने टालवा ॥ ढुं० ॥ सवि ओषधनो जाण रे ॥ढुं०॥ आदस्यो में आशाधरी ॥ ढुं०॥ मुज उपर हित आणि रे ॥ ढुं० ॥५॥ श्रीविजयसिंह सूरीसनो ॥ ढुं० ॥ सत्यविजय पन्यास रे ॥ ढुं० ॥ शिष्य कपूरविजय कवि ॥ ढुं०॥ चंदकिरण जस जास रे ॥ ढुं० ॥ ६ ॥ पास पंचासरा सान्निध्यें ॥ढुं०॥ खिमाविजय गुरु नाम रे ॥ ढुं० ॥ जिनविजय कहे मुऊ हजो ॥ ढुं० ॥ पंचमी तप परिणाम रे ॥ ढुं० ॥७॥ कलश ॥ इय वीर लायक विश्वनायक, सिद्धि दायक संस्तव्यो ॥ पंचमी तप संस्तवन टोम्हर, गुंथी निज कंठें ठव्यो ॥ पुण्य पाटण खेत्रमांहे, सत्तर त्राणुं संवत्सरें ॥ श्री

पार्श्व जन्म कल्याण दिवसें, सकल भवि मंग
ल करे ॥ ८ ॥ इति श्रीपंचमीदिनस्तवनं ॥
अथ सीमंधरजिन स्तवन ॥ रासूडाना रागमां
॥ रुपैय्योतें आलुं रोकडो, मह्रारा वालाजी रे
॥ ए देशी ॥
॥ मनडुंते मह्रारुं मोकले, मह्रारा वालाजी
रे ॥ ससिहर साथें संदेश, जइने कहेजो मह्रा
रा वालाजी रे ॥ ए आंकणी ॥ भरतना भक्त
ने तारवा ॥ मह्रा० ॥ एकवार आवोने आदेश
॥ जइ० ॥ १ ॥ प्रभुजी वसो पुष्कलावती ॥
मह्रा० ॥ महाविदेह खेत्र मझार ॥ जइ० ॥ पुरी
राजें पुंमरिगिणी ॥ मह्रा० ॥ जिहां प्रभुनो अ
वतार ॥ जइ० ॥२॥ श्रीसीमंधर साहेबा॥मा०॥
विचरंता वीतराग ॥जइ०॥ पडिबोहो बहु प्राणी
ने ॥ मह्रा० ॥ तेहनो पामे कुण ताग ॥ जइ० ॥
॥ ३॥ मन जाणे ऊमी मलुं॥ मह्रा० ॥ पण पोतें
नहीं पांख ॥ जइ० ॥ भगवंत तुम जोवा भणी

॥ महा०॥ अलजो धरे बे ए आंख ॥जइ०॥४॥ दुर्गम महोटा डूंगरा ॥ महा० ॥ नदी नालानो नहीं पार ॥ जइ० ॥ घाटीनी आंटी घणी॥मा० ॥ अटवी पंथ अपार ॥ जइ० ॥ ५ ॥ कोडी सो नैये काशीदी ॥ महा० ॥ करनारो नहीं कोय ॥ जइ० ॥ कागलीउ केम मोकलुं ॥ महा० ॥ होंश तो नित्य नवली होय ॥ जइ० ॥ ६ ॥ ल खुं जे जे लेखमां ॥ महा० ॥ लाख गमे अनि लाप ॥ जइ० ॥ तमें लेजामां ते लहो ॥महा०॥ मुऊ मन पूरे बे साख ॥ जइ० ॥७॥ लोकालोक सरूपना ॥महा०॥ जगमां तुमें बो जाण ॥जइ०॥ जाण आगें शुं जणावीयें ॥ महा० ॥ आखर अमें अजाण ॥ जइ० ॥ ७ ॥ वाचक उदयनी विनति ॥ महा० ॥ ससिहर कह्या संदेश ॥ ॥ ज० ॥ मानी लेजो माहरी॥ महा० ॥ वस्ति दूर विदेश ॥ ज० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्री युगमंधर जिन स्तवन ॥ मधुकरनी देशीमां ॥

॥ काया पामी अति कूडी, पांख नहीं रे आवुं ऊडी, लब्धि नहीं कोये रूडी रे ॥ श्रीयुगमंधरने केजो ॥ दधिसुत वीनतडी सुणजो रे ॥१॥ श्रीयुग० ॥ ए आंकणी॥ तुम सेवामांहे सुर कोडी, ते इहां आवे एक दोडी, आश फले पातक मोडी रे ॥ श्रीयुग० ॥२॥ दुखम समयमां एणें नरतें, अतिशय नाणी नवि वरते ॥ कहीयें कहो कोण सांभलते रे ॥ श्रीयुग० ॥ ३ ॥ श्रवणें सुखीया तुम नामें, नयणां दरिसण नवि पामे, ए तो ऊगडानो ठामें रे ॥ श्रीयुग० ॥ ४ ॥ चार आंगल अंतर रहेवुं, शोकडलीनी परें दुःख सहेवुं, प्रभु विना कोण आगल कहेवुं रे ॥श्रीयुग० ॥ ५ ॥ महोटा मेल करी आपे, बेहुने तोल करी थापे, सज्जन जस जगमां व्यापे रे ॥ श्रीयुग० ॥ ६ ॥ बेहुनो एक मतो थावे, केवल

नाण जुगल पावे, तो सविवात बनी आवे रे॥ श्रीयुग०॥ ७ ॥गजलंछन गजगतिगामी, विचरे विप्रविजय स्वामी, नयरी विजया गुणधामी रे॥ श्रीयुग०॥ ८॥ मात सुतारायें जायो, सुदृढ नरपति कुल आयो, पंडित जिनविजयें गायो रे॥ श्रीयुग०॥ ९॥ इति॥

॥ अथ बीजनुंस्तवन॥ फतमल पाणीडाने जाय

॥ ए देशी॥

॥ प्रणमी शारद माय, शासन वीर सुहंकरूं जी॥ बीज तिथि गुणगेह, आदरो भवियण सुंदरू जी॥ १ ॥ एह दिन पंच कल्याण, विवरीने कहुं ते सुणो जी॥ माह शुदि बीजें जाण, जन्म अभिनंदन तणो जी॥२॥ श्रावण शुदिनी हो बीज, सुमति चव्या सुरलोकथी जी॥ तारण भवोदधि तेह, तस पद सेवे सुरथोकथी जी॥ ३ ॥ समेतशिखर शुभगण, दशमा शीतल जिन गणुं जी॥ चैत्र वदिनी हो बीज,

वख्या मुक्तितस सुख घणुं जी ॥ ४ ॥ फाल्गुन मासनी बीज, उत्तम उज्ज्वल मासनी जी ॥ अप रनाथ तस च्यवन, कर्मक्षयें तव पासनी जी ॥ ॥ ५ ॥ उत्तम माघज मास, शुदि बीजें वासुपू ज्यनो जी ॥ एहिज दिन केवल नाण, शरण करो जिनराजनो जी ॥६॥ करणीरूप करो खेत समकित बीज रोपो तिहां जी ॥ खातर किरिया हो जाण, खेड समता करी जिहां जी ॥ ७ ॥ उ पशम तद्रूप नीर, समकित छोड प्रगट होवे जी॥ संतोष करी अहो वाड, पच्चखाण व्रत चोकी सोवे जी ॥ ८ ॥ नासे कर्म रिपु चोर, स मकित वृक्ष फल्यो तिहां जी ॥ मांजर अनुभ व रूप, उतरे चारित्र फल जिहां जी ॥९॥शांति सुधारस वारी, पान करी सुख लीजीएं जी ॥ तंबोल सम ल्यो स्वाद, जीवने संतोष रस कि जीएं जी ॥ १० ॥ बीज करो बावीश मास, उ त्कृष्टी बावीश मासनी जी॥चोविहार उपवास,

पालियें शील वसुधासनी जी ॥११॥ आवश्य क दोय वार, पडिलेहण दोय लीजीयें जी ॥ देववंदन त्रण काल, मन वच कायायें कीजीयें जी ॥ १२ ॥ उजमणुं शुन्न चित्त, करी धरीयें संयोगथी जी ॥ जिन वाणी रस एम, पीजीयें श्रुत उपयोगथी जी ॥१३ ॥ एणि विध करियें हो बीज, रागने द्वेष दूरें करी जी ॥ केवल पद लहि तास, वरे मुक्ति उलट धरी जी ॥ १४ ॥ जिन पूजा गुरुन्नक्ति, विनय करी सेवो सदा जी ॥ पद्मविजयनो शिष्य, न्नक्ति पामे सुख संपदा जी ॥ १५ ॥ इति बीज तिथीनुं स्तवन ॥

॥ अथ पंचमीनुं लघु स्तवन लिख्यते ॥

॥ पंचमीतप तमें करो रे प्राणी, जेम पामो निर्मल ज्ञान रे ॥ पहेलुं ज्ञानने पछी क्रिया, नहिं कोइ ज्ञानसमान रे ॥ पंचमी० ॥ १ ॥ नंदीसूत्रमां ज्ञान वखाएयुं, ज्ञानना पांच प्रकार रे ॥ मति श्रुत अवधि ने मनः पर्यव, केवल

एक उदार रे ॥ पंचमी० ॥ २ ॥ मति अठावीश श्रुत चउदह वीश, अवधि असंख्य प्रकार रे ॥ दोय भेदें मनः पर्यव दाख्युं, केवल एक उदार रे ॥ पंचमी० ॥ ३ ॥ चंद्र सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा, एकथी एक अपार रे॥ केवल ज्ञान समुं नहिं कोइ, लोकालोक प्रकाश रे ॥ पंचमी० ॥ ॥ ४ ॥ पारसनाथ प्रसाद करीने, म्हारी पूरो उमेद रे ॥ समय सुंदर कहे हुं पण पामुं, ज्ञाननो पांचमो भेद रे ॥ पंचमी० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अष्टमीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ हांरे मारे ठाम धरमना साडा पचवीश देश जो ॥ दीपे रे त्यां देश मगध सहुमां शिरें रे लो ॥ हांरे मारे नगरी तेहमां राजग्रही सु विशेप जो ॥ राजे रे त्यां श्रेणिक गाजे गज परें रे लो ॥ १ ॥ हांरे मारे गाम नगर पुर पावन करता नाथ जो ॥ विचरंता तिहां आवी वीर समोसर्या रे लो ॥ हां० ॥ चउद सहस्स

मुनिवरना साथें साथ जो ॥ सुधारे तप संयम
शियले अलंकर्या रे लो ॥ २ ॥हां०॥ फूल्या
रस भर फूल्या अंब कदंबजो ॥ जाणुं रे गुण
शील वन हसि रोमंचीत रे लो ॥ हां० ॥ वाया
वाय सुवाय तिहां अविलंब जो ॥ वासें रे परि
मल चिहुं पासे संचित रे लो ॥३॥ हां० ॥ देव
चतुर्विध आवे कोडा कोड जो॥त्रिगडुं रे मणि
हेम रजतनुं ते रचे रे लो ॥ हां० ॥ चोशठ सु
रपति सेवे होडाहोड जो॥ आगें रे रस लागे
इंद्राणी नचे रे लो ॥ ४ ॥हां०॥ मणिमय हेम
सिंहासन बेठा आप जो ॥ ढाले रे सुर चामर
मणि रत्नें जड्यां रे लो ॥हां०॥ सुणतां दुंदुभि
नाद टले सवि ताप जो ॥ वरसे रे सुर फूल स
रस जानू अड्यां रे लो ॥ ५ ॥ हां० ॥ ताजे
तेजे गाजें घन जेम लुंब जो ॥ राजे रे जिन
राज समाजे धर्मने रें लो ॥ हां० ॥ निरखी ह
रखी आवे जनमन लुंब जो ॥ पोषे रे रस न

पडे घोपें ज्ञर्ममां रे लो ॥ ६ ॥ हां० ॥ आगम जाणी जिननो श्रेणिक राय जो ॥ आव्यो रे परिवरियो ॥ हय गय रथ पायगें रे लो ॥हां०॥ दइ प्रदक्षिणा वंदि बेठो ठाय जो ॥ सुणवा रे जिनवाणी मोटे ज्ञायगें रे लो ॥ ७ ॥हां०॥ त्रिज्ञुवन नायक लायक तव ज्ञगवंत जो ॥ आणी रे जन करुणा धर्मकथा कहे रे लो ॥ हां०॥ सहज विरोध विसारी जगना जंत जो ॥ सुणना रे जिनवाणी मनमां गह गहेरे लो ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥ वालिम वहेला रे आवजो ॥ ए देशी ॥

॥ वीरजिनवर एम उपदिशे, सांज्ञलो चतुर सुजाण रे ॥ मोहनी निंदमां कां पडो, उलखो धर्मनां ठाण रे ॥ विरति ए सुमति धरी आदरो ॥ १ ॥ एआंकणी ॥ परिहरो विषय कषाय रे, बापडा पंच परमादथी ॥ कां पडो कुगतिमां धाय रे ॥ वि० ॥ २ ॥ करी शको धर्म करणी स

दा, तो करो ए उपदेश रे ॥ सर्वकालें करी नवि शको, तो करो पर्व सुविशेष रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ जूजूआ पर्व पटनां कह्यां, फल घणां आगमें जोय रे ॥ वचन अनुसारें आराधतां, सर्वथा सिद्धि फल होय रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ जीवने आयु परज्नव तणुं, तिथिदिनें बंध होय प्राय रे ॥ ते ह ज्नणि एह आराधतां, प्राणिउ सज्ञति जाय रे ॥वि०॥५॥ तेहवे अष्टमी फल तिहां, पूछे गौतम स्वाम रें ॥ ज्नविक जीव जाणवा कारणे, कहे वीर प्रज्नु ताम रे ॥ वि० ॥ ६ ॥ अष्ट महा सिद्धि होय एहथी, संपदा आठनी वृद्धि रे ॥ बुद्धिना आठ गुण संपजे, एहथी आठ गुण सिद्धि रे ॥ वि० ॥ ७ ॥ लाज्न होय आठ पडिहारनो, अठ पवयण फल होय रे ॥ नाश आठ कर्मनो मूलथी, अष्टमीनुं फल जोय रे ॥ वि० ॥८॥ आदि जिन जन्म दीक्षा तणो, अजितनो जन्म कल्याण रे ॥ च्यवन संज्नव तणो एह तिथें, अ

भिनंदन निर्वाण रे ॥ वि० ॥ ए ॥ सुमति सुव्र
त नमि जनमीया, नेमनो मुक्तिदिन जाणरे ॥
पासजिन एह तिथें सिद्धला, सातमा जिन च्य
वन माणरे ॥ वि० ॥ १० ॥ एह तिथि साधनो
राजिउ, दंम वीरज लह्यो मुक्तिरे ॥ कर्म ह्नण
वा भणी अष्टमी, कहे सूत्र निर्युक्ति ॥ रे ॥ वि०
॥ ११ ॥ अतित अनागत कालना, जिन तणा
केइ कल्याणरे ॥ एह तिथें वली घणा संयमी
पामशे पद निर्वाणरे ॥ वि० ॥ १२ ॥ धर्मवासि
त पशु पंखिआ, एह तिथे करे उपवास रे ॥
व्रतधारि जीव पोसो करे, जेहने धर्म अन्यास
रे ॥ वि० ॥ १३ ॥ भांखियो वीरे आठम तणो,
नविकहित एह अधिकार रे ॥ जिन मुखें उच्चरी
प्राणिया, पामशे नव तणो पार रे ॥ वि० ॥
॥ १४ ॥ एहथी संपदा सवि लहे, टले कष्टनी
कोड रे ॥ सेवजो शिष्य बुध प्रेमनो, कहे कां
तिकर जोड रे ॥ वि० ॥ १५ ॥ कलश ॥ एम

त्रिजग भासन अचल शासन, वर्द्धमान जिनेश्वरू ॥ बुध प्रेम गुरु सुपसाय पामी, संथूण्यो अलवेसरू ॥ जिन गुण प्रसंगें भण्यो रंगें, स्तवन ए आठम तणो ॥ जे भविक भावें सुणे गावे, कांति सुख पावे घणो ॥ १ ॥ श्लोक संख्या ॥ ४३ ॥

॥ अथ एकादशीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ जगपति नायक नेमि जिणंद, द्वारिका नगरी समोसर्या ॥ जगपति वंदवा कृष्ण नरिंद, जादव कोडशुं परिवर्या ॥ १ ॥ जगपति धीगुण फूल अमूल, भक्ति गुणें माला रची ॥ जगपति पूजी पूछे कृष्ण, क्षायिक समकित शिवरुचि ॥ २ ॥ जगपति चारित्र धर्म अशक्त, रक्त आरंभ परिग्रहे ॥ जगपति मुज आतम उद्धार, कारण तुम विण कोण कहे ॥ ३ ॥ जगपति तुम सरिखो मुज नाथ, माथे गाजे गुणनिलो ॥ जगपति कोय उपाय बताव, जेमकरे शिववधू कंतलो ॥ ४ ॥ नरपति उज्ज्वल मागशिर मास, आ

राधो एकादशी ॥ नरपति एकशोनें पंचाश, क
ल्याणक तिथि उल्लसी ॥ ५ ॥ नरपति दश क्षे
त्रें त्रण काल, चोवीशी त्रीशे मली ॥ नरपति
नेवुं जिननां कल्याण, विवरी कहुं आगल व
ली ॥ ६ ॥ नरपति अर दीक्षा नमि नाण, म
ल्लीजन्म व्रत केवली ॥ नरपति वर्त्तमान चोवी
शी, मांहे कल्याणक आवली ॥ ७ ॥ नरपति
मौन पणे उपवास, दोढशो जप माला गणो ॥
नरपति मन वच काय पवित्र, चरित्र सुणो सुव्र
त तणो ॥ ८ ॥ नरपति दाहिण धातकीखंड, प
श्चिम दिशि इक्षुकारथी ॥ नरपति विजय पाट
ण अभिधान, साचो नृप प्रजापालथी ॥ ए ॥
नरपति नारी चंद्रावती तास, चंद्रमुखी गजगा
मिनी ॥ नरपति श्रेष्ठी शूर विख्यात, शीयल
सलीला कामिनी ॥ १० ॥ नरपति पुत्रादिक प
रिवार, सार भूषणचीवर धरी ॥ नरपति जाए
नित्य जिनगेह, नमन स्तवन पूजा करे ॥११॥

नरपति पोषे पात्र सुपात्र, सामायिक पोषध व
रे ॥ नरपति देववंदन आवश्यक, काल वेला
यें अनुसरे ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥ एकदिन प्रणमी पाय, सुव्रं
त साधु तणारी ॥ विनयें वीनवे शेठ, मुनिवर
करी करुणा री ॥ १ ॥ दाखो मुज दिन एक,
थोडो पुण्य कीयो री ॥ वाधे जिम वड बीज,
शुभ अनुबंधी थयो री ॥ २ ॥ मुनि भासे मह
भाग्य, पावन पर्व घणां री ॥ एकादशी सुविशे
ष, तेहमां सुण सुमना री ॥ ३ ॥ सित एकाद
शी सेव, मास इग्यार लगें री ॥ अथवा वर
स इग्यार, उजवी तपशुवगे री ॥ ४ ॥ सांभलि
सद्गुरु वेण, आनंद अति उल्लस्यो री ॥ तप से
वी उजविय, आरण स्वर्ग वश्यो री ॥ ५ ॥ एक
वीश सागर आय, पाली पुण्य वसें री ॥ सां
भल केशवराय, आगल जेह थशे री ॥ ६ ॥
सोरी पुरमां शेठ, समृद्धदत्त वडो री ॥ प्रीतिम

ति प्रिया तास, पुण्यें जोग जड्यो री ॥ ७ ॥ त
स कुखें अवतार, सूचित शुभ स्वपनें री ॥ ज
नम्यो पुत्र पवित्र, उत्तम ग्रह शुकने री ॥ ८ ॥
नालनिक्षेप निधान, भुमिथी प्रगट हवो री ॥
गर्भदोहद अनुभाव, सुव्रत नाम ठव्यो री ॥९॥
बुद्धि उद्यम गुरु जोग, शास्त्र अनेक भण्यो री
॥ यौवनवय अगीआर, रूपवती परण्यो री
॥ १०॥ जिन पूजन मुनिदान, सुव्रत पच्चरकाण
धरे री ॥अगीआर कंचन कोड, नायक पुण्य
भरे री ॥ ११ ॥ धर्मघोष अणगार, तिथि अ
धिकार कहे री ॥ सांभलि सुव्रत शेठ, जातिस्म
रण लहे री १२ ॥ जिनप्रत्यय मुनि शाख, भ
क्तें तप उचरे री ॥ एकादशी दिन आठ, पोहो
रो पोसो धरे री ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ पत्नी संयुतें पोसह लीधो,
सुव्रत शेठें अन्यदा जी ॥ अवसर जाणी तस्क
र आव्या, घरमां धन लूंटे तदा जी ॥ १ ॥ शा

सन भक्तें देवी शक्तें, थंभाणा ते बापडा जी ॥ कोलाहल सुणि कोटवाल आव्यो, नूप आगल धस्या रांकडा जी ॥ २ ॥ पोसह पारी देव जुहारी, दयावंत लेइ भेटणां जी ॥ रायने प्रणमी चोर मूकावी, शेठें कीधां पारणां जी ॥ ३ ॥ अन्य दिवस विश्वानल लागो, सोरीपुरमां आकरो जी ॥ शेठ जी पोसह समरस बेठा, लोक कहे हठ कां करो जी ॥ ४ ॥ पुण्यें हाट वखारो शेठनी, उगरी सौ प्रशंसा करेजी ॥ हरखें शेठजी तप उजमणुं, प्रेमदा साथें आदरे जी ॥ ५ ॥ पुत्रने घरनो भार भलावी, संवेगी शिर सेहरो जी ॥ चउनाणी विजयशेखर सूरि, पासें तपव्रत आदरें जी ॥ ६ ॥ एक खट मासी चार चौमासी, दोसय छठ सो अठम करे जी ॥ बीजां तप पण बहुश्रुत सुव्रत, मौन एकादशी व्रत धरे जी ॥ ७ ॥ एक अधम सुर मिथ्यादृष्टि, देवता सुव्रत साधुने जी ॥ पूर्वोपार्जित कर्म उ

देरी, अंगें वधारे व्याधिने जी॥ ८ ॥ कर्मे नडी
उ पापें जडीउ, सुर कहे जाउ औषध लणीजी
॥ साधु न जाये रोष लराये, पाटु प्रहारें हण्यो
मुनि जी ॥ ए ॥ मुनि मन वचन काय त्रियोगें,
ध्यान अनल दहे कर्मने जी॥ केवल पामी जि
तपद रामी, सुव्रतनेम कहे श्यामने जी ॥१०॥
॥ ढाल चोथी ॥ कान पयंपे नेमने ए धन्य
धन्य यादव वंश ॥ जिहां प्रनु अवतस्या ए ॥
मुज मनमानस हंस, जयो जिन नेमने ए॥१॥
धन्य शिवा देवी मावडी ए, समुद्र विजय ध
न्यतात ॥ सुजात जगतगुरुए, रत्न त्रयी अव
दात ॥ जयो० ॥ २ ॥ चरण विराधी उपनो ए,
हुं नवमो वासुदेव ॥ जयो० ॥ तिणें मन नवि
उल्लसेए, चरण धरमनी सेव ॥ जयो० ॥ ३ ॥
हाथी जेम कादव गल्यो ए, जाणुं उपादेय हेय
॥ ज० ॥ तो पण हुं न करी शकुं ए, छुष्ट कर्म
ना लेय ॥ जयो०॥४॥ पण सरणो बलियातणो

ए, कीजें सीजे काज ॥ज० ॥ एहवां वचनने सां भली ए ॥ बांहे ग्रह्यानी लाज ॥ जयो० ॥५ ॥ नेम कहे एकादशिए, समकित युत आराध ॥ ज० ॥ थाईश जिनवर बारमो ए, भावि चोवी शियें लाध ॥ जयो० ॥ ६ ॥ कलश ॥ इय ने मि जिनवर, नित्य पुरंदर, रैवताचल मंमणो ॥ बाण नंद मुनि चंद वरसें, राजनगरें संथुण्यो ॥ संवेगरंग तरंग जलनिधि, सत्यविजय गुरु अनुसरी ॥ कपूरविजय कवि, क्षमाविजय ग णि, जिनविजय जयसिरि वरी ॥ १ ॥ इति ॥

अथ

श्रीजिनहर्षजीकृत पांचमां आरानी सज्झाय ॥

॥ वीर कहे गौतम सुणो, पांचमा आराना भा व रे ॥ दुःखीया प्राणी अति घणा, सांभल गौ तम स्वभाव रे ॥ वीर० ॥ १ ॥ सहेर होसे रे गामडा, गाम होसे समसान रे ॥ विणु गो वालें रे धण चरे, ज्ञानी नहीं निरवाण रे

॥ वीर० ॥ २ ॥ मुज केडे कुमति घणा, हो
शे ते निरधार रे ॥ जिनमतिनी रुची नवि
गमे, थापशे निजमति सार रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥
कुमति जाजा कदाग्रही, थापशे आपणा बा
ल रे ॥ शास्त्र मारग सवि मूकशे, करशे जिन
मत मोल रे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ पाखंमी घणा जा
गशे, भांगशे धरमनां पंथ रे ॥ आगम मत म
रडी करी, करशे नवा वली ग्रंथ रे ॥ वीर० ॥
॥ ५ ॥ चारणीनी परें चालशे, धर्म न जाणे ले
श रे ॥ आगम शाखाने टालशे, पालसे निज
उपदेश रे ॥ वीर० ॥ ६ ॥ चोर चरड बहु ला
गशे, बोली न पाले बोल रे ॥ साधुजन सीदा
यसे, डुर्जन बहुला मोल रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ रा
जा प्रजाने पीडशे, हिंमशे निर्धन लोक रे ॥
माग्या न वरससे मेहुला, मिथ्या होशे बहु
थोक रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ संवत उगणीश चौदो
त्तेर, होशे कलंकी राय रे ॥ मात ब्राह्मणी जा

णीयें, बाप चंमाल कहेवाय रे ॥ वीर० ॥ ए ॥ ब्यासी वरषनो आउखो, पाडली पुरमां होशे रे ॥ तसु सुत दत्त नामे नलो, श्रावककुल शुन पोषे रे ॥ वीर० ॥ १० ॥ कौतुकी दाम चलावशे, चर्म तणा ते जोय रे ॥ चोथ लेशे निक्षा तणी, महा अकरा कर होय रे ॥ वीर० ॥११॥ इंद्र अवधियें जोयतां, देखशे एह स्वरूप रे ॥ द्विज रूपे आवी करी, हणशे कलंकी नूप रे ॥ वीर० १२ ॥ दत्तने राज्य थापी करी, इंद्र सुर लोके जाय रे ॥ दत्त धरम पाले सदा, नेटशे शत्रुंजय गिरि राय रे ॥वीर०॥ १३ ॥ पृथ्वी जिन मंमित करी, पामशे सुख अपार रे ॥ देव लोके सुख नोगवे, नामे जयजय कार रे ॥ वीर० ॥ १४ ॥ पांचमां आराने बेडले, चतुर्विध श्रीसंघ होशे रे ॥ बठो आरो बेसतां, जिनधर्म पहिलो जाशे रे ॥ वीर० ॥ १५ ॥ बीजे अग्नि जागशे, त्रीजे राय न कोय रे ॥ चोथे प्रहरे

लोपना, छठे आरे ते होय रे ॥ वीर० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥ छठे आरे मानवी, बिल्लवासी स वि होय ॥ वीश वरसनुं आउखुं, षटवर्षे गर्भ ज होय ॥ १७ ॥ सहस चोरासी वर्ष पणे, जो गवशे भविकर्म ॥ तीर्थंकर होशे भलो, श्रेणि क जीव सुधर्म ॥ १८ ॥ तसु गणधर अति सुंद रु, कुमारपाल भूपाल ॥ आगम वाणी जोइने, रचीया रयण रसाल ॥ १९ ॥ पांचम आराना भाव ए, आगमें भाख्या वीर॥ ग्रंथ बोल विचा र कह्या, सांभलजो भवि धीर ॥ २० ॥ भण तां समकित संपजे, सुणतां मंगल माल ॥ जि नहर्ष कही जोड ए, भाख्या वयण रसाल ॥ २१ ॥ इति पांचमा आरानी सज्झाय ॥

अथ रहेनेमीनी सझाय ॥

॥ काउस्सग्ग ध्याने मुनि रहनेमी नामे, र ह्या छे गुफामां शुभ परिणाम रे ॥ देवरिया मु निवर ध्यानमां रहेजो, ध्यानथकी होय भवनुं

पार रे ॥ देव० ॥ ए आंकणी ॥ वरसादे जीना चीवर मोकला करवा, राजुल आव्या तेणे ठाम रे॥देव०॥१॥रूपें रति रे वस्त्रें वर्जित बाला, देखी खोलाणो तेणे काम रे ॥ देव० ॥ दिलडुं खोलाणु जाणी राजुल नाखे, राखो स्थिर मन गुणना धाम रे ॥ देव० ॥ २ ॥ जादव कुलमां जिनजी नेम नगीनो, वमन करी छे मुजने तेण रे ॥ देव० ॥ बंधव तेहना तमे शिवादेवी जाया, एवडो पटंतर कारण केण रे ॥ देव० ॥ ३ ॥ परदारा सेवि प्राणी नरकमां जाय, दुर्लभबोधि होय प्राय रे ॥ देव० ॥ साधवी साथें चूकी पाप जे बांधे, तेहनो छूटकारो कदीय न थाय रे॥ देव० ॥ ४ ॥ अशुची काया रे मल मूत्रनी क्यारी, तमने केम लागी एवडी प्यारी रे ॥ देव० ॥ हुं रे संयमी तमे महाव्रत धारी, कामे महाव्रत जासो हारी रे ॥ देव० ॥ ५ ॥ जोग वम्यां रे मुनि मनथी न इछे, नाग अगंधन फूलनी

जेम रे ॥ देव० ॥ धिक् कुल नीचा थइ नेहथी निहाले, न रहे संयम शोभा एम रे ॥देव०॥६॥ एहवा रसीला राजुल वयण सुणीने, बूज्या र हनेमी प्रभुजी पास रे ॥ देव० ॥ पाप आलो इ करी संयम लीधुं, अनुक्रमे पाम्या शिव आ वास रे ॥ देव० ॥ ७ ॥ धन्यधन्य जे नरनारी शीयलने पाले, समुद्र तस्यासम व्रत छे एह रे ॥ देव० ॥ रूप कहे तेहना नामथी होवे, अ म मन निर्मल सुंदर देह रे ॥ देव० ॥ ८ ॥

॥ अथ जंबुस्वामीनी सद्याय ॥

॥ राजगृही नयरी वसे, ऋषभदत्त व्यवहारी रे ॥तसु सुत जंबुकुमर नमुं, बालपणे ब्रह्मचारी रे ॥ १ ॥ जंबु कहे जननी सुणो, स्वामी सुधर्मा आया रे ॥ दीक्षा लेशुं ते कनें, अनुमतिद्यो मोरी माया रे ॥ जंबु० ॥ २ ॥ माय कहे सुणो बेटडा, वात विचारी कीजें रे ॥ तरुणपणे तरु णी वरी, छांडी केम छूटीजें रे ॥ जंबु० ॥ ३ ॥

आगें अरणिक मुनिवरा, फरी पाछा घरें आया रे ॥नाटकणी नेहे करी, आषाढभूति भोलाया ॥ जंबु० ॥ ४ ॥ वेश्या वश पडीया पछी, नंदी षेण नगीनो रे ॥ आर्द्रदेशनो पाटवी, आर्द्रकुमर कां कीनो रें ॥ जंबु० ॥ ५ ॥ सहस वरष संयम लीउ, तोही पार न पाया रे ॥ कूडकने करमें करी, पछी घणु पछताया रे ॥ जंबु० ॥६॥ मुनिवरु श्रीरहनेमिजी, नेमिजिनेसर भाई रे ॥ राजीमती देखी करी, विषयतणी मति आई रे ॥ जंबु० ॥७॥ दीक्षा छे वत्स दोहिली, पालवी खंमानी धारा रे ॥ सरस नीरस अन्न जिमवुं, सूवुं भाज संथारा रे ॥ जंबु० ॥ ८ ॥ दीक्षा छे वत्स दोहेली, कह्यो अमारो कीजें रे ॥ परणों पनोता पदमणी, अम्म मनोरथ पूरीजें रे ॥ जंबु० ॥ ९ ॥ जंबु कहे जननी सुणो, धन्य धन्नो अणगारो रे॥मेघ मुनीश्वर मोटको, शालिभंद्र संभारो रे ॥ जंबु० ॥ १० ॥ गजसुकुमाल गुणे

नथो, आतम साधन कीधो रे ॥ षटमासी तप पारणे, ढंढणे केवल लीधो रे ॥ जंबु० ॥ ११ ॥ दशार्णनद्र केवल लही, पाय लगाड्यो इंदो रे ॥ प्रसन्नचंद्र केवल लही, पाम्यो जे परमा नंदो रे ॥ जंबु० ॥ १२ ॥ एम अनेक मुनिवर हूवा, कहेतां पार न पाय रे ॥ अनुमतिद्यो मोरी मातजी, क्षण लाखीणो जाय रे ॥ जंबु० ॥ १३ ॥ पांचशें सत्तावीशशुं, जंबुकुमर परिवरियो रे ॥ पंचमहाव्रत उचरी, नवजल सायर तरियो रे ॥ जंबु० ॥ १४ ॥ जंबु चरमज केवली, तास तणा गुण गाया रे ॥ पंम्ति ललितविजय तणो, हितविजय सुपसाया रे ॥ जंबु० ॥ १५ ॥ ॥ इति ॥

अथ सनत्कुमारजीनी सद्याय प्रारंभ.

॥ सरस्वति सरस वचन रस मागुं, तोरे पाय हुं लागुं ॥ सनतकुमार चक्री गुण गाउं, जिम हुं निरमल थाउं ॥ १ ॥ रंगीला राणा रहो र हो, जीवन रहो रहो, मेरे सनत्कुमार, वीनवे

सहु परिवार ॥ रंगी० ॥ जीव० ॥ मेरे० ॥ ए आंकणी ॥ रूप अनोपम इंद्रें वखाण्या, सुर जाणे तब माया ॥ रूपकरी दोय ब्राह्मण आया, फिर फिर निरखत काया ॥ रंगी० ॥ २ ॥ क्या निरखो तुम लाल रंगीले, मेल भरी मोरी काया ॥ नाही धोइ जब छत्र धराया, तब फिर व मन आया ॥ रंगी० ॥ ३ ॥ देखी जोतां रूप पलटाया, सुनहो चक्री राया ॥ शोल रोग तेरी देहे उपना, गर्व मकरो कुडीकाया ॥ रंगी० ॥४॥ कलमलियो घणु चक्री मनमां, अमर तणी सुणी वाणी ॥ तुरत तंबोल नाखीने जोवे, रंगभरि काय पलटाणी ॥ रंगी० ॥ ५ ॥ गढमढ मंदिर पोल पालीया, छंडी सब ठकुराइ ॥ नव निधि चौद रतन सवि छंडी, छंडी सयल सजाइ ॥ रंगी०॥६॥ धन पुर नयर अंतेउरि म्हेली, म्हेली ममता माया, संयम लेइ फिरे एकिला, केड न मूके राणा राया ॥ रंगी० ॥ ७ ॥ तुम पासे

मोरुं तन मन लीजे, दिन केही परें लीजें ॥ ए
कलक्तने सहस बाहाणू, नयन जरी जरी लीजे ॥
रंगी० ॥ ८ ॥ पाय घूघरीयां घम घम वाजे, ठ
मठम करती आये ॥ दश आंगुली मुखे देइने,
वीनति घणी कराये ॥ रंगी० ॥ ए ॥ प्रोहित म
हेता प्रजा सब जूरे, अंतेउरसी रोवे ॥ एकवार
तुमे सामुं जोवो, सनत्कुमार न जोवे ॥ रंगी०
॥ १० ॥ छत्रधरे शिर चामर ढाले, रावत प्रन
पो रूडें ॥ खटपंम पृथ्वीके निरंतर, छमास लगें
फिरे केडें ॥ रंगी० ॥ ११ ॥ देव छलें माया नवि
पडीयो, वैद्य रूप करी आवे ॥ तप शक्तें करी
लब्धि उपनी, थूंक सें रोग गमावे ॥ रंगी० ॥
॥ १२ ॥ वर्ष बे लाख मंमलिक चक्री, लाख
वरपनी दीक्षा ॥ पन्नरमा जिनवरने वारे, नरदे
व करे जीव रक्षा ॥ रंगी ॥ १३ ॥ श्रीविजयसेन
सूरीश्वर वाणी, तपागछराजे जाणी ॥ विनयकुश
ल पंमित वर खाणी, तसु चरणे चित्तआणी ॥

रंगी० ॥ १४ ॥ वरस सातसें रोग अहियासी, सूधो संयम पाली ॥ शांतिकुशल मुनि एम पयंपे, देवलोक त्रीजे जाली ॥ रंगी० ॥ १५ ॥

॥ अथ खंधक मुनि सज्झाय ॥

॥ नमो नमो खंधक महामुनि, खंधक क्षमा भंडार रे ॥ उग्र विहार मुनि विचरता, चारित्र खडगनी धार रे ॥ नमो० ॥ १ ॥ समिति गुप्तिने धारतो, जितशत्रु राजानो नंद रे ॥ धारणी उदरे जनमीयो, दरिसण परमानंद रे ॥ नमो० ॥ ॥ २ ॥ धर्मघोष मुनि देशना, पामीयो तेण प्रतिबोध रे ॥ अनुमति लइ माय तायनी, करमशुं युद्ध थइ योद्ध रे ॥ नमो० ॥ ३ ॥ छठ अठम आदे घणा, दुःकृत तपे तनुं शोष रे ॥ रात्र दिवस परिसह सहे, तो पण मन नही रोष रे ॥ नमो० ॥ ४ ॥ दवदाधा खीजडा देहमां, चालतां खडखडे हाड रे, तो पण तप करे आकरा, जाणतो अथिर संसार रे ॥ नमो० ॥ ५ ॥ इक

समे नगिनी पुरी प्रत्ये, आवीया साधुजी सो
य रे ॥ गोख बेठी चिंते बहेनडी, ए मुज बं
धव होय रे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ बेनने बंधव सां
भार्यो, उलट्यो विरह अपार रे॥गतडी लागी
छे फाटवा, नयणे वहे जेम नीर रे ॥ नमो ०॥७॥
रायचिंते मनमां इश्यो, ए कोइ नारीनो यार रे
॥ सेवकने कहे साधुनी, ल्यावोजी खाल उतार
रे ॥ नमो० ॥ ८ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ राय सेवक कहे साधुने, लाकडी जीवथी
हणाशुं रे ॥ अम ठाकुरनी ए छे आणा, ते अमे
आज करेसुं रे ॥ १॥ अहो अहो साधु समता
वस्या ॥ ए आंकणी ॥ मुनिवर मनमांहे आ
णंद्या, परिसह आव्यो जाणी रे॥ करम खपावा
अवसर एहवो, वली नही आवे प्राणी रे ॥
अ० ॥ २ ॥ एतो वलीय सखाइ मलीयो, भाइ
थकी भलेरो रे ॥ प्राणी कायर पणु परिहरजे,

जिम न थाये नव फेरो रे ॥ अ० ॥३॥ राय सेव
कने तव कहे मुनिवर, कठिन फरस मुज काया
रे ॥ बाधा रखे तुम हाथें थाये, कहो तिम र
हीयें नाया रे ॥ अ० ॥ ४ ॥ चारे सरणा चतुर
करीने, नव चरम आवंते रे ॥ शुकलध्यानशुं
तान लगाव्युं, काया वोसिरायंते रे॥अ० ॥५॥
चडचड चामडी तेह उतारे, मुनि समता रस
जीले रे॥ क्षपक श्रेणी आरोहण करीने, कर
म कठिणने पीले रे ॥ अ० ॥ ६ ॥ चोथुं ध्यान
धरतां अंते, केवल लइ मुनि सीधा रे ॥ अजर
अमर पद मुनिवर पाम्या, कारज सघला सी
धा रे॥ अ० ॥ ७ ॥ हवे मुहपतीने लोहीये ख
रडी, पंखीडे आमीष जाणी रे ॥ राजद्वारे ते
लइ नांखी, सेवके लीधी ताणी रे ॥ अ०॥ ८ ॥
सेवक मुखथी वातज जाणी, बहिने मुहपति
दीठी रे ॥ निश्चें नाइ हणीयो जाणी, हीयें अ
री अंगीठी रे ॥ अ० ॥ ए ॥ विरह विलाप करे

राय राणी, साधुनी समता वखाणी रे ॥ अ॰ ॥
संसार सरूप ते जाणी, संयम ल्ये राय राणी रे
॥अ०॥१०॥आलोइ पातिक सवि छंडी, करम क
ठिणने नंदी रे॥तप डुक्कर करी काया गाली, सिव
सुख लहे आणंदी रे ॥अ०॥११॥ नवियण एह
वा मुनिवर वंदी, मानव नव फल लीजें रे ॥ कर
जोडी मुनि मोहन विनवे, सेवक सुखीया कीज
रे ॥ अ० ॥ १२ ॥ इति खंधक मुनि सज्झाय ॥

॥ अथ श्री आराधनानुं स्तवन प्रारंन ॥

॥ दोहा ॥ सकल सिद्धि दायक सदा, चो
वीशो जिनराय ॥ सद्गुरु सामिनी सरसती,
प्रेमें प्रणमुं पाय ॥ १ ॥ त्रिनुवनपति त्रिशला
तणो, नंदन गुण गंनीर ॥ शासन नायक जग
जयो, वर्द्धमान वडवीर ॥ २ ॥ एक दिन वीर
जिणंदने, चरणे करि परिणाम ॥ नविक जीव
नर हित नणी, पूछे गौतम स्वाम ॥ ३ ॥ मुक्ति
मार्ग आराधियें, कहो किण परें अरिहंत ॥ सू

धा सरस तव वचन रस, नांखे श्री नगवंत ॥
॥ ४ ॥ अतिचार आलोइयें, व्रत धरीयें गुरु
साख ॥ जीव खमावो सयल जे, योनि चोराशी
लाख ॥ ५ ॥ विधिशुं वली वोसिरावियें, पाप
स्थान अढार ॥ चार शरण नित्य अनुसरो,
निंदो पुरित आचार ॥ ६ ॥ शुनकरणी अनुमो
दियें, नाव नलो मनआण ॥ अणसण अवस
र आदरी, नवपद जपो सुजाण ॥ ७ ॥ शुनग
ति आराधन तणा, ए वे दश अधिकार ॥ चि
त्त आणीने आदरो, जेम पामो नवपार ॥ ८ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ ए बिंडि किहां राखी ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञान दरिसन चारित्र तप वीरज, ए पांचे
आचार ॥ एह तणा इह नव परनवना, आ
लोइयें अतिचार रे ॥ १ ॥ प्राणी ज्ञान नणो
गुणखाणी ॥ वीर वदे एम वाणी रे ॥प्रा०॥ज्ञा०॥
॥ ए आंकणी ॥ गुरु उलवीयें नहिं गुरु विनयें,

कालें धरी बहुमान ॥ सूत्र अर्थ तडुनय करी सूधां, नणीयें वही उपधान रे ॥ २ ॥ प्रा० ॥ ज्ञा० ॥ ज्ञानोपकरण पाटी पोथी, ठवणी नोकरवाली ॥ तेह तणी कीधी आशातना, ज्ञान नक्ति न संनाली रे ॥३॥ प्रा० ॥ ज्ञा० ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, ज्ञान विराध्युं जेह ॥ आनव परनव वलिय नवोनवें, मिह्वाडुक्कड तेह रे ॥ ४ ॥ प्राणी, ॥ समकित ल्यो शुद्ध जाणी ॥ ए आंकणी ॥ जिनवचनें शंका नवि कीजे, नवि परमत अनिलाख ॥ साधुतणी निंदा परिहरजो, फलसंदेह म राख रे ॥ ५ ॥ प्रा० ॥स० ॥ मूढपणुं ढंफो परशंसा, गुणवंतने आदरियें ॥ सामीनें धर्मं करी थिरता, नक्ति प्रनावना करीयें रे ॥ ६ ॥ प्रा० ॥ स० ॥ संघचैत्य प्रासाद तणो जे, अवर्णवाद मन लेख्यो ॥ ड्व्य देव को जे विणसाड्यो, विणसंतां उवेख्यो रे ॥ ७ ॥ प्रा० ॥ स० ॥ इत्यादिक विपरीत पणाथी, सम

कित खंम्युं जेह ॥ आलव० ॥ मिछा० ॥ ८ ॥ प्रा० ॥ चारित्रल्यो चित्त आणी ॥ए आंकणी ॥ पांच समिति त्रण गुप्ति विराधि, आठे प्रवचन माय ॥ साधुतणे धर्मे परमादें, अशुद्ध वचन मन काय रे ॥ ए ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ श्रावकने धर्मे सामायिक, पोसहमां मन वाली ॥ जे जयणापूर्वक जे आठे, प्रवचनमाय न पाली रे ॥ १० ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, चारित्र मोल्युं जेह ॥आलव० ॥ मिछा० ॥ ११ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ बारें जेदें तप नवि कीधुं, उते योगें निज शक्तें ॥धर्मे मनवच काया वीरज, नवि फोरविउं जगतें रे ॥ १२ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ तपवीरज आचारें एणी परें, विविध विराध्या जेह ॥ आलव० ॥ मिछा० ॥ १३ ॥ प्रा० चा० ॥ वलीय विशेषें चारित्र केरा, अतिचार आलोइयें ॥ वीर जिणेसर वयण सुणीने, पाप मयल सवि धोइयें रे ॥ १४ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥

॥ ढाल बीजी ॥ पामी सुगुरुपसाय ॥ ए देशी ॥

॥ पृथिवी पाणी तेउ, वाउ वनसपति ॥ ए पांचे थावर कह्यां ए ॥ करि करसण आरंभ, खेत्र जे खेडीयां ॥ कूवा तलाव खणावीया ए ॥ ॥ १ ॥ घर आरंभ अनेक, टांकां भोंयरां ॥ मेडी माल चणावीआए ॥ लिंपण घूंपण काज, एणी परें परपरें ॥ पृथिवी काय विराधीया ए ॥ २ ॥ धोयण नाहण पाणी, झीलण अपकाय ॥ छोतीधोती करी दूहव्यां ए॥ भाठीगर कुंभार, लोह सोवनगरा ॥ भाडभुंजा लिहालागरा ए ॥ ३ ॥ तापण शेकण काजें, वस्त्र निखारण ॥ रंगण रांधण रसवती ए ॥ एणी परें कर्मादान, परें परें केलवी ॥ तेउ वाउ विराधीया ए ॥ ४ ॥ वाडीवन आराम, वावी वनस्पति ॥ पान फूल फल चूंटीयां ए॥ पोंहक पापडी शाक, शेक्यां शूकव्यां ॥ छुंद्यां छेद्यां आथीयां ए ॥ ५ ॥ अल सीनें एरंड, घाणी घालीनें ॥ घणा तिलादिक

पीलीया ए ॥ घाणी कोलुं मांहि, पीली शेलडी ॥ कंद मूल फल वेचीयां ए ॥ ६ ॥ एम एकें ड्रिय जीव, हण्या हणावीया ॥ हणतां जें अनु मोदीया ए ॥ आ भव परभव जेह, वलिय भ वोभवें ॥ ते मुझ मिछामि डुक्कडुं ए ॥ ७ ॥ कृमी सरमीयां कीडा, गाभर गंभोला ॥ इयल पूरा अ लसीयां ए ॥ वाला जलो चूडेल, विचलित र सतंणा ॥ वली अथाणां प्रमुखनां ए ॥८॥ एम बे इंड्रिय जीव, जे में दूहव्या ॥ ते मुझ० ॥ उ हेही जू लीख, मांकड मंकोडा ॥ चांचड कीडी कुंथुआ ए ॥ ए॥ गद्दहीयां घीमेल, कान खजू रडा ॥ गींगोडा धनेरीयां ए ॥ एम ते इंड्रिय जीव, जे में डुहव्या ॥ ते मुझ० ॥ १० ॥ माखी मत्सर झांस, मसा पतंगीया॥ कंसारी कोलिया वडाए ॥ ढींकण वींछु तीड, भमरा भमरीयो ॥ कोता बग खड मांकडी ए ॥ ११ ॥ एम चौरिं ड्रिय जीव, जे में दूहव्या ॥ ते मुझ० ॥ जं

लमां नाखी जाल, जलचर दूहव्या ॥ वनमां मृग संतापीया ए ॥ १३ ॥ पीड्या पंखी जीव, पाडी पासमां ॥ पोपट घाल्या पांजरे ए ॥ एम पंचेंद्रिय जीव, जे में डुहव्या ॥ ते मुझ०॥ १३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ प्रथम गोवाला तणे नवें जी ॥ ए देशी ॥

॥ क्रोध लोभ नय हासथी जी, बोल्यां वचन असत्य ॥कूड करी धन पारकां जी, लीधां जेह अदत्त रे॥जिनजी ॥१॥ मिछाडुक्कड आज, तुम साखें महाराज रे ॥ जिनजी ॥ देइ सारूं काज रे ॥ जिनजी ॥ मि० ॥ ॥ ए आंकणी ॥ देव मनुज तिर्यंचना जी, मैथुन सेव्यां जेह ॥ विषयरस लंपटपणे जी, घणुं विटंब्यो देह रे ॥ जि० ॥ २ ॥ मि० ॥ परिग्रहनी ममता करी जी, नव नव मेली आथ ॥ जेह जिहांनी ते तिहां रही जी, कोइ न आवी साथ रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ मि० ॥ रयणी नोजन जे कर्यां जी, की

धा नक्ष्य अनक्ष्य ॥ रसना रसनी लालचें जी, पाप कर्यां प्रत्यक्ष रे ॥ जि० ॥ ४ ॥ मि० ॥ व्रत लेइ विसारीयां जी, वली नांग्यां पच्चरकाण ॥ कपटहेतु किरिया करी जी, कीधां आप व खाण रे ॥ जि०॥५॥ मि० ॥ त्रण ढाल आठे डु हे जी, आलोया अतिचार ॥ शिवगति आराधनतणो जी, ए पहेलो अधिकार रे॥जि०॥६॥

॥ ढाल चोथी ॥ साहेलडीनी देशी ॥

॥ पंच महाव्रत आदरो ॥साहेलड़ी रे॥अथवा ल्यो व्रत बार तो ॥ यथाशक्ति व्रत आदरी॥ सा० ॥ पालो निरतिचार तो ॥ १ ॥ व्रत लीधां संनारीयें ॥ सा० ॥ हियडे धरीय विचार तो ॥ शिवगति आराधन तणो ॥ सा० ॥ ए बीजो अधिकार तो ॥२॥ जीव सवे खमावियें ॥ सा० ॥ योनि चोराशी लाख तो ॥ मन शुद्धं करो खामणां ॥ सा० ॥ कोइशुं रोष न राख तो ॥ ३ ॥ सर्व मित्र करी चिंतवो ॥ सा० ॥ कोइ न जाणो

शत्रु तो ॥ राग द्वेष एम परिहरो ॥ सा० ॥ की
जें जन्म पवित्र तो ॥ ४ ॥ सामी संघ खमावि
यें ॥ सा० ॥ जे उपनी अप्रीति तो ॥ सज्जन कु
टुंब करी खामणां ॥ सा० ॥ ए जिनशासन री
ति तो ॥ ५ ॥ खमियें अने खमावियें ॥ सा० ॥
एहज धर्मनो सार तो ॥ शिवगति आराधनत
णो ॥ सा० ॥ ए त्रीजो अधिकार तो ॥ ६ ॥ मृ
षावाद हिंसा चोरी ॥ सा० ॥ धन मूर्छा मेहुन्न
तो ॥ क्रोध मान माया तृष्णा ॥ सा० ॥ प्रेम द्वे
ष पैशुन्य तो ॥ ७ ॥ निंदा कलह न किजीयें ॥
सा० ॥ कूडां न दीजें आल तो ॥ रति अरति
मिथ्या तजो ॥ सा० ॥ माया मोस जंजाल तो
॥८॥ त्रिविध त्रिविध वोसिरावियें ॥ सा० ॥ पा
पस्थांन अढार तो ॥ शिवगति आराधन तणो
॥ सा० ॥ ए चोथो अधिकार तो ॥ ९ ॥

ढाल ५ मी हवे निसुणो इहां आवीया ए ए देशी
॥ जनम जरा मरणें करी ए, ए संसार अ

सार तो ॥ कर्यां कर्म सहु अनुभवे ए, कोइ न राखणहार तो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनुं ए, शरण सिद्ध भगवंत तो ॥ शरण धर्म श्रीजैननो ए, साधु शरण गुणवंत तो॥२॥ अवर मोह सवि परिहरी ए, चार शरण चित्त धार तो ॥ शिवगति आराधन तणो ए, ए पांचमो अधिकार तो ॥ ३ ॥ आ भव परभव जे कर्यां ए, पापकर्म केइ लाख तो ॥ आत्मसाखें ते निंदीयें ए, पडिक्कमियें गुरु साख तो ॥ ४ ॥ मिथ्यामति वर्त्तावियां ए, जे भांख्यां उत्सूत्र तो ॥ कुमति कदाग्रहने वशें ए, वली थाप्यां उत्सूत्र तो॥५॥ घड्यां घडाव्यां जे घणां ए, घरटी हल हथीआर तो॥भव भव मेली मूकीयां ए, करता जीव संहार तो ॥ ६ ॥ पाप करीने पोपिया ए, जनम जनम परिवार तो ॥ जनमांतर पोहोता पछी ए, कोइ न कीधी सार तो ॥ ७ ॥ आ भव परभव जे कर्यां ए, एम अधिकरण अनेक तो

॥ त्रिविध त्रिविध वोसरावीयें ए, आणी हृदय विवेक तो ॥८॥ दुष्कृत निंदा एम करी ए, पाप कर्या परिहार तो॥शिवगति आराधन तणो ए ए छठो अधिकार तो ॥ ए ॥

॥ढाल छठी॥आदि तुं जो इने आपणी॥ए देशी॥

॥ धन्य धन्य ते दिन महारो, जिहां कीधो धर्म ॥ दान शीयल तप आदरी, टाल्यां दुष्कर्म ॥ ध० ॥ १ ॥ शत्रुंजादिक तीर्थनी, जे कीधी यात्र ॥ युगतें जिनवर पूजीया, वली पोख्यां पात्र ॥ ध० ॥२॥ पुस्तक ज्ञान लखावीयां, जिणहर जिणचैत्य॥संघ चतुर्विध साचव्या, ए सा ते खेत्र ॥ ध० ॥३॥ पडिक्कमणां सुपरें कर्यां, अनुकंपा दान ॥ साधु सूरि उवजायनें, दीधां बहु मान॥ ध० ॥ ४ ॥ धर्मकारज अनुमोदियें, एम वारोवार ॥शिवगति आराधनतणो, ए सातमो अधिकार ॥ ध० ॥ ५ ॥ भाव भलो मन आणीयें, चित्त आणी ठाम ॥समता भावें भावीयें,

ए आतमराम ॥ ध० ॥ ६ ॥ सुख दुःख कारण जीवने, कोइ अवर न होय ॥कर्म आप जे आचर्यां, जोगवियें सोय ॥ ध० ॥ ७ ॥ समता विण जे अनुसरे, प्राणी पुण्यनां काम ॥ गर उपर ते लीपणुं, झांखर चित्राम ॥ ध० ॥८॥ जाव जली परें जावीयें, ए धर्मनो सार ॥ शिवगति आराधनतणो, आठमो अधिकार॥ ध० ॥ ए ॥

॥ ढाल सातमी ॥ रेवतगिरि उपरें ॥ ए देशी ॥

॥ हवे अवसर जाणी, करीयें संलेषण सार ॥ अणसण आदरीयें, पच्चखी चार आहार ॥ लखुता सवि मूकी, गंमी ममता संग ॥ ए आतम खेले, समता ज्ञान तरंग ॥१॥ गति चारें कीधा, आहार अनंत निःशंक ॥ पण तृप्ति न पाम्यो, जीव लालचीउ रंक ॥ दुलहो ए वली वली, अणसणनो परिणाम॥ एथी पामीजें, शिवपद सुरपद गम॥२॥धन धनाशालिजड,खंधो मेघकुमार ॥ अणसण आराधी, पाम्या जवनो

पार ॥ शिवमंदिर जाशे, करी एक अवतार ॥ आराधन केरो, ए नवमो अधिकार ॥ ३ ॥ दशमे अधिकारें, महामंत्र नवकार ॥ मनथी न वि मूको, शिवसुख फल सहकार ॥ ए जपतां जाए, दुर्गति दोष विकार ॥ सुपरें ए समरो, चउद पूरवनो सार ॥ ४ ॥ जन्मांतरें जातां, जो पामे नवकार ॥ तो पातक गाली, पामे सुर अवतार ॥ ए नव पद सरिखो, मंत्र न को संसार ॥ इह नवने परनवें, सुख संपत्ति दातार ॥५॥ जुन नीलने नीलडी, राजा राणी थाय ॥ नव पद महिमाथी, राजसिंह महाराय॥ राणी रत नवती बेहु, पाम्या बे सुरनोग ॥ एक नवथी लेशे, सिद्धवधू संयोग ॥ ६ ॥ श्रीमतीने ए व ली, मंत्र फल्यो ततकाल ॥ फणिधर फीटीने, प्रगट थइ फूलमाल ॥ शिवकुमरें योगी, सोव नपुरिसो कीध ॥ एम एणे मंत्रे, काज घणानां सिद्ध ॥ ७ ॥ ए दश अधिकारें, वीर जिणेसर

भांख्यो ॥ आराधन केरो, विधि जेणें चित्तमां रा
ख्यो ॥ तेणे पाप पखाली, भव भय दूरें नाख्यो ॥
जिन विनय करंतां, सुमति अमृतरस चाख्यो ८
॥ढाल आठमी॥ नमो भवि भावशुं ए॥ ए देशी॥

॥ सिद्धारथ राय कुलतिलो ए, त्रिशलामात
मल्हार तो ॥ अवनीतलें तुमें अवतस्या ए, क
रवा अम उपगार ॥ १ ॥ जयो जिन वीरजी ए॥
ए आंकणी ॥ में अपराध कस्या घणा ए, केहे
तां न लहुं पार तो ॥ तुम चरणें आव्या भणी
ए, जो तारे तो तार ॥ २ ॥ ज० ॥ आश करी
ने आवीउ ए, तुम चरणें महाराज तो ॥ आव्या
ने उवेखशो ए, तो केम रहेशे लाज ॥ ३ ॥
ज० ॥ कर्म अलुजण आकरां ए, जन्म मरण
जंजाल तो ॥ हुं बुं एहथी उभग्यो ए, छोडावो
देवदयाल ॥ ४ ॥ ज० ॥ आज मनोरथ मुज
फल्या ए, नाठां दुःख दंदोल तो ॥ तूठो जिन
चोवीशमो ए, प्रगट्यो पुण्य कल्लोल ॥ ५ ॥

ज० ॥ नवनव विनय तुमारडो ए, नाव नक्ति तुम पाय तो ॥ देव दया करी दीजीयें ए, बोध बीज सुपसाय ॥ ६ ॥ ज० ॥ इति ॥

॥ कलश ॥ इय तरण तारण सुगति कारण, फुःखनिवारण जग जयो ॥ श्रीवीर जिनवर चरण थुणतां, अधिक मन उलट थयो ॥ १ ॥ श्री विजय देव सूरिंद पटधर, तीरथ जंगम इणि जगें ॥ तप गछपति श्रीविजयप्रन सूरि, सूरितेजें ऊगमगे ॥ २ ॥ श्रीहीरविजय सूरि शिष्य वाचक, कीर्त्तिविजय सुर गुरु समो ॥ तस शिष्य वाचक विनयविजयें, थुण्यो जिन चोवीशमो ॥ ३ ॥ सइ सत्तर संवत उगण त्रीशें, रही रांदेर चौमास ए ॥ विजय दशमी विजय कारण, किउ गुणअन्यास ए ॥ ४ ॥ नरनव आराधन सिद्धि साधन, सुकृत लीलविलास ए ॥ निर्जरा हेतें तवन रचियुं, नामें पुण्य प्रकाश ए ॥ ५ ॥ इति पुण्यप्रकाशस्तवनं ॥ श्लोक ॥ १७७ ॥

॥ अथ चोवीश जिननुं चैत्यवंदन ॥

॥ पद्मप्रभ ने वासुपूज्य, दोय राता कहीएं ॥ चंद्रप्रभ ने सुविधिनाथ, दो उज्ज्वल लहीएं ॥ १ ॥ मल्लीनाथ ने पार्श्वनाथ, दो नीला निरख्या ॥ मुनि सुव्रत ने नेमनाथ, दो अंजन सरिखा ॥ २ ॥ शोले जिन कंचनसमा ए, एवा जिन चोवीश ॥ धीरविमल पंम्ति तणो, ज्ञानविमल कहे शिष्य ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री चोविश जिन समकितभव गणतीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ प्रथम तीर्थंकर तणा हुवा, भव तेर कहीजें ॥ शांतितणा भव बार सार, नव भव नेम लहीजें ॥ १ ॥ दश भव पासजिणंदने, सत्तावीश श्रीवीर ॥ शेष तीर्थंकर त्रिहुं भवें, पाम्या भवजल तीर ॥ २ ॥ ज्यांथी समकित फरसीयुं, त्यांथी गणीएं तेह ॥ धीरविमल पंम्ति तणो, ज्ञानविमल गुण गेह ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ चउदशें बावन गणधरनुं चैत्यवंदन ॥

॥ गणधर चोराशी कह्या, वली पंचाणुं छेक ॥ दोय अधिक इग सय गणा, शोल अधिक शत एक ॥ १ ॥ शत सुमति ने गणधरा, एक सय अधिका सात ॥ पंचाणुं त्राणुं तथा, अडसी इगसी ख्यात ॥ २ ॥ छेहोंतेर छाशठ सगवन, पंचास तेंतालीश ॥ छत्तिस पणतिस कुंथुने, अर गणधर तेत्रीश ॥ ३ ॥ अडवीस अष्टादश कह्या, नमि सत्तर गणधार ॥ एकादश दश शिव गया, वीर तणा अगीयार ॥ ४ ॥ रिखभादिक चोवीशना, एक सहस सय चार ॥ अधिकेरा बावन कह्या, सर्व मली गणधार ॥ ५ ॥ अक्षय पद वरिया सवें, सादि अनंत निवास ॥ करीएं शुभ चित वंदना, जब लग घटमां शास ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ पंच परमेष्ठि चैत्यवंदनं ॥

॥ बार गुण अरिहंत देव, प्रणमीजें भावें ॥

सिद्ध आठ गुण समरतां, दुःख दोहग जावे ॥ १ ॥ आचारज गुण छत्रीस, पंचवीश उवज्झाय ॥ सत्तावीश गुण साधुना, जपतां सुख थाय ॥ २ ॥ अष्टोत्तर सय गुण मलीए, एम समरो नवकार ॥ धीरविमल पंडित तणो, नय प्रणमे नित सार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ वीशस्थानकनुं चैत्यवंदन ॥

॥ पेहेले पद अरिहंत नमुं, बीजे सर्व सिद्ध ॥ त्रीजे प्रवचन मन धरो, आचारज सिद्ध ॥ १ ॥ नमोथेराणं पांचमे, पाठक गुण छठे ॥ नमो लोए सव्वसाहुणं, जे छे गुण गरिठे ॥ २ ॥ नमो नाणस्स आठमे, दर्शन मन भावो ॥ विनय करो गुणवंतनो, चारित्रपद ध्यावो ॥ ३ ॥ नमो बंभवयधारीणं, तेरमे किरियाणं ॥ नमो तवस्स चौदमे, गोयम नमो जिणाणं ॥ ४ ॥ चारित्र ज्ञान सुअस्सने ए, नमो तीत्थस्स जाणी ॥ जिनउत्तमपद पद्मने, नमतां होय सुखखाणी ॥ ५ ॥

॥अथ वीसथानकनां काउस्सगनुं चैत्यवंदनं॥

॥ चोवीश पंदर पिसतालीशनो, छत्रीश नो करीयें ॥ दश पचवीश सत्तावीशनो, काउ स्सग्ग मन धरीयें ॥१॥ पंच सडसठ ने दश व ली, सीत्तेर नव पणवीश ॥ बार अडवीस लो गस्स तणो, काउस्सग्ग धरो गुणीश ॥ २ ॥ वीश सत्तर इगवन, द्वादश ने पंच ॥ एणी परें काउस्सग्ग जो करे, तो जाये नव संच ॥ ३ ॥ अनुक्रमें काउस्सग्ग मन धरो, गुणी लेजो वी श ॥ वीश थानक एम जाणीयें, संक्षेपथी ले श ॥ ४ ॥ नाव धरी मनमां घणो ए, जो एक पद आराधे ॥ जिन उत्तमपद पद्मने, नमी निज कारज साधे ॥ ५ ॥

॥ अथ रोहिणीतपचैत्यवंदनं ॥

॥ रोहिणी तप आराधीयें, श्रीश्री वासुपू ज्य ॥ दुख दोहग दूरें टले, पूजक होये पूज्य ॥ १ ॥ पेहेला कीजें वासखेप, प्रह उठीने प्रेम

॥ मध्यान्हें करी धोतीआं, मन वच काया खेम ॥ २ ॥ अष्ट प्रकारनी रचीयें, पूजा नृत्य वाजित्र ॥ नावें नावना नावीयें, कीजें जन्म पवित्र ॥ ३ ॥ त्रिहुं कालें लेइ धूप दीप, प्रनु आगल कीजें ॥ जिनवर केरी नक्तिशुं, अविचल सुख लीजें ॥ ४ ॥ जिनवर पूजा जिन स्तवन, जिन नो कीजें जाप ॥ जिनवर पदने ध्याइयें, जिम नावे संताप ॥ ५ ॥ कोड कोड गुण फल दीये, उत्तर उत्तर नेद ॥ मान कहे ए विध करो, ज्युं होये नवनो बेद ॥ ६ ॥

॥ अथ विचरता जिननुं चैत्यवंदन ॥

॥ सीमंधर प्रमुख नमुं, विहरमान जिन वीश ॥ रिखनादिक वली वंदीयें, संपइ जिन चोवीश ॥ १ ॥ सिद्धाचल गिरनार आबु, अष्टापद वलि सार ॥ समेतशिखर ए पंचतीर्थ, पंचमी गति दातार ॥ २ ॥ ऊर्ध्व लोकें जिनहर नमुं, ते चोराशी लाख ॥ सहस सत्ताणुं ऊपरें, त्रे

विश जिनवर नांख ॥ ३ ॥ एक शो बावन कोड वली, लाख चोराणुं सार ॥ सहस चुम्मालीसातशें, शाठ जिन पडिमा उदार ॥ ४ ॥ अधोलोकं जिनजवन नमुं, सात कोड बोहोंतेर लाख ॥ तेरशें कोड नेव्याशी कोड, शाठ लाख चित्त राख ॥ ५ ॥ व्यंतर ज्योतिषीमां वली ए, जिन जवन अपार ॥ ते जवि नित्य वंदन करो, जेम पामो जवपार ॥ ६ ॥ तिर्गलोकें शाश्वतां, श्रीजिनजवनविशाल ॥ बत्रीशशें ने उगणशाठ, वंदूं थइ उजमाल ॥ ७ ॥ लाख त्रण एकाणुं सहस, त्रणशें वीश मनोहार ॥ जिनपडिमा ए शाश्वती, नित्य नित्य करुं जुहार ॥ ८ ॥ त्रण जुवनमांही वली ए, नामादिक जिन सार ॥ सिद्ध अनंता वंदीयें, महोदय पद दातार ॥ ए ॥ इति ॥

॥अथ चोवीश तिर्थंकरनी राशिनुं चैत्यवंदन॥

॥ शांति नमी मल्ली मेष छे, कुंथु अजित वृ

षनाति ॥ संनव अनिनंदन मिथुन, धर्म कर्क सिंह सुमति ॥ १ ॥ कन्या पद्मप्रन्न नेम वीर, पास सुपास तुला ए ॥ शशी वृश्चिक धन ऋषनदेव, सुविधि शीतल जिनराय ॥ २ ॥ मकर सुव्रत श्रेयांसनें ए, बारमा घट मीन लील ॥ विमल अनंत अर नामथी, सुखीया श्री शुनवीर ॥ ३ ॥ इति ॥

॥अथ श्री चंदकेवलीना रासमांथी चैत्यवंदन॥

॥ अरिहंत नमो नगवंत नमो, परमेसर जिन राज नमो ॥ प्रथम जिनेसर प्रेमें पेखत, सिध्धां सघलां काज नमो ॥ अ० ॥ १ ॥ प्रनु पारंगत परम महोदय, अविनाशी अकलंक नमो ॥ अजर अमर अनुत अतिशयनिधि, प्रवचन जलधिमयंक नमो ॥ अ० ॥ २ ॥ तिहुयण नविगण जण मण वंछिय, पूरण देव रसाल नमो ॥ ललि ललि पाय नमुं हुं नावें, कर जोडीनें त्रिकाल नमो ॥ अ० ॥ ३ ॥ सिद्ध

बुध तूं जग जन सज्जन, नयनानंदन देव नमो ॥ सकल सुरासुर नर वर नायक, सारे अह निशि सेव नमो ॥ अ० ॥ ४ ॥ तूं तीर्थंकर सुखकर साहिब, तूं निःकारण बंधु नमो ॥ शरणागत जविने हितवत्सल, तूंही कृपारसासिंधु नमो ॥ अ० ॥ ५ ॥ केवलज्ञानादर्शें दर्शित, लोकालोकस्वजाव नमो ॥ नाशित सकलकलंककलुपगण, डुरित उपडवजाव नमो ॥ अ० ॥ ६ ॥ जगचिंतामणि जगगुरु जगहित. कारक जगजननाथ नमो ॥ घोर अपार जवोदधितारण, तूं शिवपुरनो साथ नमो ॥ अ० ॥ ७ ॥ अशरण शरण नीराग निरंजन, निरुपाधिक जगदीश नमो ॥ बोधि दीउ अनुपम दानेसर, ज्ञान विमल सूरीश नमो ॥ अ० ॥ ८ ॥

॥ अथ श्री शंखेश्वर पार्श्व जिन छंद ॥

॥ सेवो पास संखेसरो मन्न शुधें, नमो नाथ निश्चें करी एक बुधें ॥ देवी देवलां अन्यने शुं

नमो रे, अहो नव्यलोको नुला कां नमो रे ॥ १ ॥ त्रिलोकना नाथने शुं तजो रे, पड्या पाशमां नूतने कां नजो रे ॥ सुरधेनु ठंमी अजा शुं अजो रे, महापंथ मूकी कुपंथे व्रजो रे ॥ २ ॥ तजे कोण चिंतामणी काचमाटें, ग्रहे कोण रासन्नने हस्ति माटें ॥ सुरड्डुम उपाडी कुण आक वावे, महा मूढ ते आकुला अंत पावे ॥ ३ ॥ किहां कांकरो ने किहां मेरुशृंगं, किहां केशरीने किहां ते कुरंगं ॥ किहां विश्वनाथं किहां अन्य देवा, करो एकचित्तें प्रन्नु पास सेवा ॥ ४ ॥ पूजो देव प्रन्नावती प्राणनाथं, सहू जीवने जे करे ने सनाथं ॥ महा तत्त्व जाणी सदा जेह ध्यावे, तेनां ङःख दारिड् दूरें पलावे ॥ ५ ॥ पामी मानुषोने वृथा कां गमो रे, कुशीलें करी देहनें कां दमो रे ॥ नहीं मुक्तिवासं विना वीतरागं. नजो नगवंतं तजो हष्टिरागं ॥ ६ ॥ उदयरत्न नांखे सदा हेत आणी, दं

याभाव कीजें प्रभु दास जाणी ॥ आज मादरे मोतीडे मेह वुठा, प्रभु पास संखेश्वरो आप तूठा ॥ ७ ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तोत्रं लिख्यते ॥

॥ कल्याणकेलिसदनाय नमोनमस्ते, श्रीमत्सरोजवदनाय नमोनमस्ते ॥ रागारिवारकदनाय नमोनमस्ते, वज्राभिरामरदनाय नमोनमस्ते ॥ १ ॥ अंभोधराभकरणाय न०, लोकातिरिक्तचरणाय न० ॥ संसारवार्धितरणाय न०, त्रैलोक्यसारशरणाय न० ॥ २ ॥ सन्निर्मितांघ्रिमहनाय न०, रागोरुदारुदहनाय न० ॥ विध्वस्तकृत्स्नकुदहनाय न०, पुण्यद्रुमालिगहनाय न० ॥ ३ ॥ संसारतापशमनाय न०, निर्दाह्यदाह्यदमनाय न० ॥ सुव्यक्तमुक्तिगमनाय न०, रूपाभिभूतकमनाय न० ॥ ४ ॥ पापौघपांसुपवनाय न०, सेवापरत्रिभुवनाय न० ॥ क्रोधाशुशुक्षणिवनाय न०, संसृत्युदन्वदवना

य न० ॥ ५ ॥ नेत्राभिभूतकमलाय न०, श
क्रार्चितांघ्रियमलाय न० ॥ निर्नाशिताखिलम
लाय न०, पद्मोल्लसत्परिमलाय न० ॥ ६ ॥
श्रीअश्वसेनतनयाय न०, सर्वाद्भुतैकविन
याय न० ॥ विख्यातनिश्चितनयाय न०, नि
र्णीतभूर्भुपनयाय न० ॥ ७ ॥ श्रीसंघदर्पसुविने
यकधर्मसिंह,पादारविंदमधुलिएमुनिरत्नसिंहः॥
पार्श्वप्रभोर्भगवतः परमं पवित्रं, स्तोत्रं चकार
जनताभिमतार्थसिद्ध्यै ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शोल सतीनो छंद ॥

॥ आदि नाथ आदें जिनवर वंदी, सफल
मनोरथ कीजियें ए ॥ प्रभातें उठी मांगलिक
कामें, शोल सतीनां नाम लीजियें ए ॥ १ ॥
बाल कुमारी जग हितकारी, ब्राह्मी भरतनी बे
हेनडी ए ॥ घट घट व्यापक अक्षर रूपें, शो
ल सतीमांहि जे वडी ए ॥ २ ॥ बाहुबल भगि
नी सतीय शिरोमणि, सुंदरी नामें रिषभ सुता

ए ॥ अंग स्वरूपी त्रिभुवन मांहे, जेह अनुपम गुणजुता ए ॥ ३ ॥ चंदनबाला बालपणाथी, शीयलवती शुध श्राविका ए ॥ अडदना बाकुला वीर प्रतिलाभ्या, केवल लही व्रत भाविका ए ॥ ४ ॥ उग्रसेन धुआ धारिणी नंदनी, राजिमती नेम वल्लभा ए ॥ जोबन वेशें. कामनें जीत्यो, संजम लेइ देव दुल्लभा ए ॥ ५ ॥ पंच भरतारी पांम्डव नारी. डुपद तनया वखाणीयें ए ॥ एक शो आठे चीर पूराणां. शीयल महिमा तस जाणीएं ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारी निरुपम. कौशल्या कुलचंद्रिका ए ॥ शीयल सलूणी राम जनेता, पुण्य तणी प्रनालिका ए ॥ ७ ॥ कोशंबिक ठामें संतानिक नामें, राज्य करे रंग राजीयो ए ॥ तस घर घरणी मृगावती सती, सुरभुवनें जश गाजीयो ए ॥ ८ ॥ सुलसा साची शीयलें न काची, राची नहीं विषयारसें ए ॥ मुखडुं जोतां पाप पलाए, नाम

लेतां मन उल्लसे ए ॥ ए ॥ राम रघुवंशी तेह
नी कामनी, जनकसुता सीता सती ए ॥ जग
सहू जाणे धीज करंतां, अनल शीतल थयो
शीयलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतणे चालणी बां
धी, कूवायकी जल काढीयुं ए ॥ कलंक उतारवा
सतीय सुनद्रा, चंपा बार उघाडीयुं ए ॥ ११ ॥
सुरनर वंदित शीयल अखंमित, शिवा शिवप
दगामिनी ए ॥ जेहने नामें निर्मल थइयें, बलि
हारी तस नामनी ए ॥ १२ ॥ हस्तिनागपुरें पां
मुरायनी, कुंता नामें कामिनी ए ॥ पामव मा
ता दसे दसारनी, बेहेन पतिव्रता पद्मनी ए ॥
॥१३॥ शीयलवती नामें शीलव्रत धारिणी, त्रि
विधें तेहने वंदीयें ए ॥ नाम जपंतां पातक जा
ए, दरिसण उरित निकंदीयें ए ॥ १४ ॥ निप
धा नगरी नलहनरिंदनी, दमयंती तस गेहिनी
ए ॥ संकट पडतां शीयलज राख्युं, त्रिनुवन
कीर्त्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग अजीता जग

जन पूजिता, पुष्पचूला ने प्रभावती ए ॥ विश्व विख्याता कामित दाता, शोलमी सती पद्मा वती ए ॥ १६ ॥ वीरें भांखी शास्त्रें साखी, उद यरतन भांखे मुदा ए ॥ वाहाणुं वातां जे नर भणशे, ते लेशे सुख संपदा ए ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री वीतरागाष्टकं ॥ भुजंग प्रयातं छंदः॥

॥ शिवं शुद्धबुद्धं परं विश्वनाथं, न देवो न बंधुर्न कर्म न कर्त्ता ॥ न अंगं न संगं न चेच्छा न कामं, चिदानंदरूपं नमो वीतरागं ॥ १ ॥ न बंधो न मोक्षो न रागादि लोकं, न योगं न भो गं न व्याधिर्न शोकं ॥ न क्रोधं न मानं न मा या न लोभं ॥ चि० ॥ २ ॥ न हस्तौ न पादौ न घ्राणं न जिव्हा, न चक्षुर्न कर्णं न वक्त्रं न नि द्रा ॥ न स्वामी न भृत्यं न देवो न मर्त्यं ॥ चि० ॥ ३ ॥ न जन्मं न मृत्युर्न मोहं न चिंता, न क्षुद्रो न भीतो न कृश्यं न तंद्रा ॥ न स्वेदं न खेदं न वर्णं न मुद्रा ॥ चि० ॥ ४ ॥ त्रिदंडे त्रि

खंने हरे विश्वनाथं, हृपीकेश विध्वस्तकर्मारि जालं, न पुण्यं न पापं नचाक्षादि प्राणं ॥ चि० ॥ ५ ॥ न बालो न वृद्धो न तुछो न मूढो, न खेदं न नेदं न मूर्त्तिर्न मेध, न कृष्णं न शुक्लं न मोहं न तंजा ॥ चि० ॥ ६ ॥ न आद्यं न मध्यं न अंतं न मान्या, न द्रव्यं न क्षेत्रं न कालो न नावाः, न गुर्वो न शिष्यो न हीनं न दीनं ॥ चि० ॥ ७ ॥ इदं ज्ञानरूपं स्वयं तत्त्ववेदी, न पूर्णं न शून्यं न चैत्यस्वरूपी ॥ न अन्योऽन्य निन्नं न परमार्थमेकं ॥ चि० ॥ ८ ॥ शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ आत्मारामगुणाकरं गुणनिधिं, चैतन्यरत्नाकरं, सर्वे नूतगतागते सुखदुःखे ज्ञाते त्वया सर्वगे ॥ त्रैलोक्याधिपते स्वयं स्वमनसा, ध्यायंति योगीश्वरा, वंदे तं हरिवंशहर्षहृदयं श्रीमान् हृदाभ्युद्यतं ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ शाश्वतजिनस्तुति ॥

॥ ऋपन्न चंजानन वंदन कीजें, वारिखेण

दुःख वारे जी ॥ वर्द्धमान जिनवर वली प्रणमो,
शाश्वत नाम ए चारे जी ॥ भरतादिक खेत्रें म
ली होवे, चार नाम चित्त धारे जी ॥ तेणें चारे
ए शाश्वत जिनवर, नमीयें नित्य सवारें जी ॥
॥ १ ॥ ऊर्ध्व अधो तीहुं लोके थइ, कोडी प
नरशें जाणो जी ॥ उपर कोडी बेंतालीश प्रण
मो, अडवन्न लख मन आणो जी ॥ छत्रीश स
हस एंशी ते उपर, बिंब तणो परिमाणो जी ॥
असंख्यात व्यंतर ज्योतिषीमां, प्रणमुं ते सुवि
हाणो जी ॥ २ ॥ रायपसेणी जीवाभिगमें, भग
वती सूत्रें भाखी जी ॥ जंबूद्वीपपन्नत्ती ठाणांगे,
विवरीने घणुं दाखी जी ॥ वलीय अशाश्वती
ज्ञाता कल्पमां, व्यवहार प्रमुखें आखी जी ॥ ते
जिन प्रतिमा लोपे पापी, जिहां बहु सूत्र छे साखी
जी ॥ ३ ॥ ए जिन पूजाथी आराधक, ईशान
इंद्र कहाया जी ॥ तिम सूरियाभ प्रमुख बहु सु
रवर, देवी तणा समुदाया जी ॥ नंदीसर अठा

इ महोत्सव, करे अति हर्ष नराया जी ॥ जिन उत्तम कल्याणक दिवसें, पद्मविजय नमो पाया जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धचक्र स्तुति ॥

॥ अरिहंत नमो वलि सिद्ध नमो, आचारय वाचक साहु नमो ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र नमो तप, ए सिद्धचक्र सदा प्रणमो ॥ १ ॥ अरिहंत अनंत थया थाशे वली, भाव निक्षेपें गुण गाशे ॥ पडिक्कमणां देववंदन विधिशुं, आंबिल तप गणणुं गणो विधशुं ॥ २ ॥ छरिपाली जे तप करशे, श्रीपाल तणी परें भव तरशे ॥ सिद्ध चक्रने कुण आवे तोलें, एहवा जिन आगम गुण बोले ॥ ३ ॥ साढा चारे वरसें तप पूरुं, ए कर्म विदारण तप शूरुं ॥ सिद्धचक्र मन मंदिर थापो, नय विमलेसर वर आपो ॥ ४ ॥

॥ अथ वीश स्थानकना तपनी स्तुति ॥

॥ पूछे गौतम वीरजिणंदा, समवसरण बेठा

सुखकंदा, पूजित अमर सुरिंदा ॥ केम निका चे पद जिनचंदा, किण विध तप करतां नवफं दा, टाले डुरितह दंदा ॥ तव नांखे प्रनुजी ग तनिंदा, सुण गौतम वसुनूतीनंदा, निर्मल तप अरविंदा ॥ वीश थानक तप करत महिंदा, जिम तारक समुदायें चंदा, तिम ए सवि तप इंदा ॥ १ ॥ प्रथम पदें अरिहंत नमीजें, बीजे सिद्ध पवयण पद त्रीजे, आचारज थेर ठविजें ॥ उपाध्यायने साधु ग्रही जें, नाणदंसण पद विनय वहीजें, अगीआरमे चारित्र लीजें ॥ बं नवय धारीणं गणीजें, किरियाणं तवस्स करी जें, गोयम जिणाणं लहीजें ॥ चारित्र नाण सु य तिब्रस्स कीजें, त्रीजे नव तप करत सुणीजे ॥ ए सवि जिन तप लीजें ॥ २ ॥ आदि नमो पद सघले ठवीश, बार पन्नर बार वली छत्री श, दश पणवीश सगवीश ॥ पांचने सडशठ तेर गणीश, सत्तर नव किरिया पणवीश, बार

अठावीश चउवीश ॥ सीत्तेर इगवन्न पीस्तालीश, पांच लोगस्स काउस्सग्ग रहीश, नोकरवाली वीश ॥ एक एक पदें उपवासज वीश, मास खटें एक उली करीश, इम सिद्धांत जगीश ॥ ३ ॥ शक्तें एकासणुं तिविहार, छठ अठम मास खमण उदार, पडिक्कमणां दोय वार ॥ इत्यादिक विधि गुरुगम धार, एक पद आराधने भव पार, उजमणुं वली विविध प्रकार ॥ मातंग यक्ष करे मनोहार, देवी सिधाइ शासन रखवाल, संघविघन अपहार ॥ खिमाविजय जस ऊपर प्यार, शुभ भवियण धर्मी आधार, वीर विजय जयकार ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ रोहिणी तपनी स्तुति ॥

॥ नक्षत्र रोहिणी जे दिन आवे, अहोरत पौषध करी शुभ भावें, चउविहार मन लावे ॥ वासुपूज्यनी भक्ति कीजें, गणणुं पण तस नाम जपी जें, वरस सत्तावीश लीजें ॥ थोडी

शक्ति वरस ते सात, जाव जीव अथवा विख्या
त, तप करी करो कर्मघात ॥ निजशक्ति उज
मणुं आवे, वासुपूज्यनुं बिंब नरावे, लाल म
णिमय ठावे ॥ १ ॥ इम अतीत अने वर्तमान,
अनागत वंदो जिन बहुमान, कीजें तस गुण
गान ॥तपकारकनी नक्ति आदरीयें, साधर्मिक
वली मंघनी करियें, धर्म करी नव तरीयें ॥
रोग सोग रोहिणी तपें जाय, संकट टले तस्
जस बहु थाय, तस सुर नर गुण गाय ॥ नीरा
शंस पणे तप एह, शंकारहित पणे करो तेह
॥ नवनिधि होय जिम गेह ॥ २ ॥ उपधान
थानक जिनकल्याण, सिद्धचक्र शत्रुंजय जाण,
पंचमी तप मन आण ॥ पडिमातप रोहिणी सु
खकार, कनकावली रत्नावली सार, मुक्तावली
मनोहार ॥ आठम चउदशने वर्द्धमान, इत्या
दिक तपमांहे प्रधान, रोहिणी तप बहुमान ॥
इणीपरें नांखे जिनवर वाणी, देशना मीठी अ

मिय समाणी, सूत्रें तेह गुंथाणी ॥ ३ ॥ चंमा जक्खणी यक्खकुमार, वासुपूज्य शासन सुखकार, विघ्न मिटावण हार ॥ रोहिणीतप करता जन जेह, इह नव परनव सुख लहे तेह, अनुक्रमें नवनो बेह ॥ आचारी पंमित उपकारी, सत्य वचन नांखे सुखकारी, कपूरविजय व्रतधारी ॥ खिमाविजय शिष्य जिन गुरु राय, तस शिष्य मुज गुरु उत्तम थाय, पद्मविजय गुण गाय ॥ ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सीमंधरजिनस्तवन ॥ इमर आंबा आंबाली रे ॥ ए देशी ॥

॥ पुस्कलवइ विजयें जयो रे, नयरी पुंमरी गिणी सार ॥ श्री सीमंधर साहिबा रे, रायश्रे यांस कुमार ॥ जिणंदराय ॥ धरज्यो धर्म सनेह ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मोहोटा न्हाना अंतरो रे, गिरुआ नवि दाखत ॥ शशि दरिसणसां

यर वधे रे, कैरव वन विकसंत ॥ जि० ॥ २ ॥
ग्राम कुग्राम न लेखवे रे, जग वरसंत जलधार
॥ कर दोय कुसुमें वासियें रे, गया सवि आ
धार ॥ जि० ॥ ३ ॥ राय ने रंक सरिखा गणे रे,
उद्योतें शशि सूर ॥ गंगाजल ते बिहूं तणा रे,
ताप करे सवि दूर ॥ जि० ॥ ४ ॥ सरिखा स
हुने तारवा रे, तिम तुमें गे महाराज ॥ मुजशुं
अंतर किम करो रे, बांहे ग्रह्यानी लाज ॥
॥ जि० ॥ ५ ॥ मुख देखी टीलुं करे रे, ते नवि
होय प्रमाण ॥ मुजरो माने सवि तणो रे, सा
हिब तेह सुजाण ॥ जि० ॥ ६ ॥ वृषभलंछन
माता सत्यकी रे, नंदन रुकमणी कंत ॥ वाच
कजस एम वीनवे रे, भयभंजन भगवंत ॥जि०
॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अष्टापदजीनुं स्तवन ॥ कुंअर गं
भारो नजरें ॥ देखतां जी ॥ ए देशी ॥

॥ चउ अठ दस दोय वंदीयें जी, वर्त्तमान

जगदीश रे ॥अष्टापद गिरि उपरें जी, नमता वाधे जगीश रे ॥ च० ॥ १ ॥ भरत भरतपति जिन मुखें जी, उच्चरियां व्रत बार रे ॥ दर्शन शुद्धिने कारणें जी, चोवीश प्रभुनो विहार रे ॥ च० ॥ २ ॥ उंचपणे कोश तिग कह्युं जी, यो जनं एक विस्तार रे ॥ निज निज मान भरा वीयां जी, बिंब स्वपर उपगार रे ॥ च० ॥ ३ ॥ अजितादिक चउ दाहिणें जी, पछिमे पउमाइ आठ रे ॥अनंत आदें दश उत्तरें जी, पूर्वे रि खभ वीर पाठ रे ॥ च० ॥ ४ ॥ रिखभ अजित पूर्वें रह्याजी, ए पण आगम पाठ रे ॥ आत्म शक्तें करे जातरा जी, ते भवि मुक्ति वरे हणी आठ रे ॥ च० ॥ ५ ॥ देखो अचंभो श्री सिद्धा चलें जी,हुवा असंख्य उद्धार रे॥आज दिनें पण इणें गिरे जी, झगमग चैत्य उदार रे ॥ च० ॥ ॥ ६ ॥ रहेशे उत्सरपणी लगें जी, देव महिमा गुण दाखि रे ॥ सिंहनिषद्यादिक थिरपणे जी,

वसुदेव हिंमनी साख रे ॥ च० ॥ ७ ॥ केवली जिनमुख में सुण्युं जी, एणे विधें पाठ पठाय रे ॥श्री शुभवीर वचन रसेंजी, गायो रिखभ शिव ठाय रे ॥ च० ॥ ८ ॥

॥ अथ श्री राणकपूरजीनुं स्तवन ॥

॥ श्रीराणकपुर रलीयामणुं रे लाल ॥ श्री आदीसर देव ॥ मन मोह्युं रे ॥ उत्तंग तोरण देहरुं रे ला० ॥ नीरखीजें नित्यमेव ॥म०॥१॥ चउविशा मंडप चिहुं दिशें रे ला०॥चउमुख प्रतिमा चार ॥ म० ॥ त्रिभुवनदीपक देहरे रे ला० ॥ समोवड नहीं संसार ॥ म० ॥ श्री० ॥ ॥ २ ॥देहरी चोराशी दीपती रे ला०॥मांड्यो अष्टापद मेर ॥ म० ॥ भलें भुहार्यां भोंयरां रे ला० ॥ सूतां उठी सवेर ॥ म० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ देश जाणीतुं देहरुं रे ला० ॥ मोटो देश मेवाड ॥ म० ॥ लख्क नवाणुं लगावीया रे ला० ॥ धन्न धरणें पोरवाड ॥ म० ॥ श्री० ॥ ४ ॥

खरतर वसइ खांतशुं रे लाο ॥ निरखंतां सुख थाय ॥ मο ॥ पांच प्रासाद बीजां वली रे लाο ॥ जोतां पातक जाय ॥मο॥ श्रीο ॥५॥ आज कृतारथ हुं थयो रे लाο ॥ आज थयो आणंद ॥मο॥यात्रा करी जिनवर तणी रे लाο ॥ दूरें गयुं दुख दंद ॥ मο ॥ श्रीο ॥ ६ ॥ संवत शोलने अंतरे रे लाο॥ मागशिर मास मोझार ॥ मο ॥ राणक पुरें यात्रा करी रे लाο ॥ समयसुंदर सुखकार ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री महावीर स्वामीनी जन्म कुंडलीनुं स्तवन ॥ देशी केरवानी ॥

॥ सेवधी संच उगेरियां, अलबेले सांइ, क्युंरे लगाउ अति बेरियां ॥ ए आंकणी ॥ दीये विना न चले, अरु न पिछे वले, बावत आप उछेरियां ॥ अलबेο ॥ क्युंο ॥ भाग्य अतुल बली, मागत अटकली, जन्म बलि ग्रह चारीयां ॥ अο ॥ क्युंο ॥१॥ संवत पास ईश

दो शत अडतालीश, उज्ज्वल चैतर तेरशों॥ ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ शाठ घडी न कुणी, उत्तरा फाल गुणी, मंगल वार निशावशों ॥ अ० ॥ क्युं०॥ ॥२॥ सिद्धि योग घडी, पन्नर चोरें चरी, वेला मुहूर्त्त त्रेवीशामे ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ लग्न मकर वहे, स्वामी जनम लहे, जीव सुखी सहु ते समे ॥ ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ ३ ॥ त्रिशला राणीयें जायो, देव देवीयें गायो, सुत सिद्धारथ नृपको ॥ अ० ॥ मंगल केतु लग्नें, रवि बुध चोथे नवनें, द शमे शनिंश्वर उंचको ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ ४ ॥ पंचमें जीव राहु, सातमे वेद साहु, केंद्र नवन ग्रह मंगली ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ नाग्य नवन शशी, शुक्र संतानवसी, मेघ धुआ एक वीजली ॥ ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ ५ ॥ चंद्रदशा विपाकी, मास नवन बाकी, जन्म दिशा शनि संजमी ॥ अ० ॥ गुरु महादशामें, केवल ज्ञान पामे, तामुख वांनी मेरे दिल रमी ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ ६ ॥ या

वर विगलमें, काल अनंत नमे, मेंबी निकली या साथमें ॥ अ० ॥ नारक तिरि गति, सुख न एक रति, काल निगमियो अनाथमें ॥ अ० ॥ ॥ क्युं० ॥ ७ ॥ बहोत मं नाच नचे, चिहुं गति चोक बिचे, नेकी न मेलिएं नाथ जी ॥ अ० ॥ पोतंप्रकाश दिए, आश निराश किये, अलग किया में आजथी ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ ८ ॥ मानव गण लही, तुम सन्मुख रही, बेर बेर शिव मागते ॥ अ० ॥ बात न उर कहुं, लीए बिना न रहुं, बाल हत्यो रस लागते ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ ॥ ए ॥ नाथ नजर करी, बेर न एक घडी, सदा मगन सुख लेहेरसें ॥ अ० ॥ मंगल तूर वरा, गावत अपछरा, श्री शुभवीर प्रभु मेहे रसें ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ आंबील तप श्री सिद्धचक्रजीनुं स्तवन ॥

॥ जीहो कुंअर बेठा गोंखडे ॥ ए देशी ॥

॥ जीहो प्रणमुं दिन प्रत्यें जिनपति ॥

॥ लाला ॥शिव सुखकारी अशेष ॥जीहो आ शोई चैत्री नणी॥ लाला ॥ अठाइ विशेष ॥ १ ॥ नविकजन, जिनवर जग जयकार ॥ जीहो जिहां नवपद आधार ॥ न० ॥ ए आं कणी ॥ जीहो तेह दिवस आराधवा ॥ लाला ॥ नंदीसर सुर जाय ॥ जीहो जीवानिगममांहे कह्युं ॥ ला० ॥ करे अड दिन महिमाय ॥ २ ॥ ॥ न० ॥ जीहो नवपद केरा यंत्रनी ॥ ला० ॥ पूजा कीजें रे जाप ॥ जीहो रोग शोक सवि आपदा ॥ ला० ॥ नासे पापनो व्याप ॥ ३ ॥ ॥ न० ॥जीहो अरिहंत सिद्ध आचारया॥ला० ॥ उवझाय साधु ए पंच ॥ जीहो दंसण नाण च रित्र तवो॥ ला० ॥ ए चउ गुणनो प्रपंच ॥४॥ ॥ न० ॥ जीहो ए नव पद आराधतां ॥ला०॥ चंपापति विख्यात ॥ जीहो नृप श्रीपाल सुखी यो थयो ॥ ला० ॥ ते सुणजो अवदात ॥ ५ ॥ ॥ न० ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥ कोइलो पर्वत धूंधलो रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ मालवधुर उजेणीयें रे लो, राज्य करे प्रजापाल रे ॥ सुगुण नर ॥ सुरसुंदरी मयणासुंदरी रे लो, बे पुत्री तस बाल रे ॥ सु० ॥ १ ॥ श्री सिद्धचक्र आराधीयें रे लो, जेम होय सुखनी माल रे ॥ सु० ॥ श्री० ॥ ए आंकणी ॥ पेहेली मिथ्या श्रुतभणी रे लो, बीजी जिन सिद्धांत रे ॥ सु० ॥ बुद्धि परीक्षा अवसरें रे लो, पूछी समस्या तुरंत रे ॥ सु० ॥ २ ॥ श्री० ॥ तूठो नृप वर आपवा रे लो, पेहेली करे ते प्रमाण रे ॥ सु० ॥ बीजी कर्म प्रमाणथी रे लो, कोप्यो ते तव नृप जाण रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ श्री० ॥ कुष्ठी वर परणावियो रे लो, मयणां वरे धरी नेह रे ॥ ॥ सु० ॥ रामा हजीय विचारीयें रे लो, सुंदरी विणसे तुज देह रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ श्री० ॥ सिद्धचक्र प्रभावथी रे लो, नीरोगी थयो जेह रे ॥

॥ सु० ॥ पुण्यपसायें कमला लही रे लो, वा
ध्यो घणो ससनेह रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ श्री० ॥ मा
उले वातते जवलही रे लो, वंदवा आव्यो गुरु
पास रे ॥ सु० ॥ निज घर तेडी आवियो रे
लो, आपे निज आवास रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ श्री०
॥ श्रीपाल कहे कामिनी सुणो रे लो, में जावुं
परदेश रे ॥ सु० ॥ माल मता बहु लावशुं रे
लो, पूरशुं तुम तणी खांत रे ॥ सु० ॥ ७ ॥
श्री० ॥ अवधि करी एक वरसनी रे लो, चा
ल्यो नृप परदेश रे ॥ सु० ॥ शेठ धवल सायें
चल्यो रे लो, जलपंथें सुविशेप रे ॥ सु० ॥
॥ ८ ॥ श्री० ॥ इति ॥
॥ढाल त्रीजी॥इम्हर आंबा आंबली रे॥ए देशी॥
॥ परणी बब्बर पति सुता रे, धवल मूकाव्यो
ज्यांह ॥ जिनहर बार उघाडते रे, कनककेतु
बीजी त्यांह ॥ १ ॥ चतुरनर, श्री श्रीपालचरित्र ॥
॥ ए आंकणी ॥ परणी वस्तुपालनी रे, समुद्र

तटे आवंत॥मकरकेतु नृपनीसुता रे,वीणा वादे रीझंत ॥ च० ॥ २ ॥ पांचमी त्रैलोक्य सुंदरी रे, परणी कुब्जा रूप ॥ छठी समस्या पूरती रे, पंच सखीशुं अनूप ॥ च० ॥ ३ ॥ राधा वेधी सातमी रे, आठमी विष उतार ॥ परणी आव्यो निज घरें रे, साथें बहु परिवार ॥ च० ॥ ४ ॥ प्रजापालें सांभली रे, परदल केरी वात ॥ खंधें कुंहाडो लेइ करी रे, मयणा हुइ विख्यात ॥ च० ॥ ५ चंपाराज्य लेइ करी रे, भोगवी कामित भोग ॥ धर्म आराधी अवतस्यो रे, पोहोतो नवमे सुरलोग ॥ च० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ढाल चोथी ॥ कंत तमाकु परिहरो ॥ ए देशी॥

॥ एम महिमा सिद्धचक्रनो, सुणि आराधे सुविवेक ॥ मोरे लाल ॥ १ ॥ श्री सिद्धचक्र आराधीयें ॥ ए आंकणी ॥ अडदल कमलनी थापना, मध्यें अरिहंत उदार ॥ मो० ॥ चिहुं दिशें सिद्धादिक चऊ, चत्र दिशें तु गुण धार ॥

मो० ॥ २ ॥ श्री० ॥ बे पडिक्कमणा जंत्रनी, पूजा देव वंदन त्रिकाल ॥ मो० ॥ नवमे दिन सविशेषथी, पंचामृत कीजें पखाल ॥ मो० ॥३॥ ॥ श्री० ॥ नूमिशयन ब्रह्मविध धारणा, रुंधी राखो त्रण जोग ॥ मो० ॥ गुरु वैय्यावच्च कीजीयें, धरो सद्दहणा जोग ॥ मो० ॥ ४॥ श्री०॥ गुरु पडिलाजी पारीयें, सामीवच्छल पण होय॥ मो० ॥ उजमणां पण नवनवां, फल धान्य रयणादिक होय ॥ मो ० ५ ॥ श्री ० ॥ इह जव सवि सुख संपदां, परजवें सवि सुख थाय ॥ मो० ॥ पंमित शांतिविजय तणो, कहे मानविजय उवझाय ॥ मो ० ॥ ६ ॥ श्री ० ॥ इति ॥

॥ अथ रोहिणीतपनुं स्तवन ॥

॥हांरे मारे वासुपूज्यनो नंदन, मघवा नाम जो॥ राणी तेहनी कमला, पंकजलोयणी रे लो ॥ हांरे मारे आठ पुत्रने, ऊपर पुत्री एक जो ॥ मात पिताने वाहाली, नामें रोहिणी रे लो ॥

॥ १ ॥ हांरे मारे देखी यौवन, वय निजपुत्री नृप जो ॥ स्वयंवर मंम्प मांझि, नृप तेडा विया रे लो ॥ हांरे मारे अंग वंग ने, मरुधर केरा राय जो ॥ चतुरंगी फोजाथी, चंपायें आ विया रे लो ॥ २ ॥ हांरे मारे पूरव नवना रागे, रोहिणी ताम जो ॥ नृप अशोकने कंठे, वरमा ला धरे रे लो ॥ हांरे मारे गजरथ घोडा, दान अने बहु मान जो ॥ देइ वोलावी बेटी, बहु आम्बरें रे लो ॥ ३ ॥ हांरे मारे रोहिणी राणी, नोगवतां सुख नोग जो ॥ आठ पुत्रने पुत्रीं चार, सोहामणी रे लो ॥ हांरे मारे आठ मा पुत्रनुं, लोकपाल छे नाम जो ॥ ते खोले लेइ बेठी, गोंखे नामिनी रे लो॥४॥ हांरे मारे ए हवे कोइक, नगर वणिकनो पुत्र जो ॥ आयुः क्ष येंथी बालक, मरणदशा लहे लो ॥ हांरे मारे मात पितादिक, सहु तेहनो परिवार जो ॥ रडतो पडतो गोंख तले, थइने वहे रे लो ॥ ५ ॥ हांरे

मारे ते देखी अति हरषीत, रोहिणी ताम जो॥
पिउने भाखे ए नाटक, कुण भातिनुं रे लो॥
हारे मारे दीपकहे ए, पूरव पुण्य संकेत जो ॥
जन्मथकी नवि दीठुं दुःख, कोइ जातनुं रे लो॥
॥ ६ ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ पिउ कहे जोबन मदमाती, महुने सरखी आशा॥ए बालकना दुःखथी रोवे, तुंऊनें होवे तमासा ॥ बोलो बोल विचारी राज, एम केम कीजें हांसी ॥ १ ॥ तव राणीने रीश करी खो लेथी, पुत्रने खूंची लीधो॥ रोहिणी राणी न जरें जोतां, गोंखथी नाखी दीधो ॥ बो० ॥२ ॥ ते देखी महु अंतेउरमां, सऊनें पोकार ते कीधो ॥ रोहिणी एम जाणे जे बालक, कोइकें र मवा लीधो ॥ बो० ॥ ३ ॥ नगर तणे रखवाले देवें, अधर ग्रह्यो तिहां आवी ॥ सोनाने सिं हासण थाप्यो, आनपण पहेरावी ॥ बो० ॥

॥ ४ ॥ नगरलोक सहु भाग्य वखाणे, राजा विस्मय थावे ॥दीप कहे जस पुण्य सखाइ, तिहां सहु नव निधि थावे ॥ बो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ रूडो मास वसंत ॥ ए देशी ॥

॥ एक दिन वासुपूज्य जिनवरना, अंतेवासी मुनिराज वाला ॥ रूप कुंभने सुवर्णकुंभजी, चउ ज्ञानी भव जहाज वाला ॥ १ ॥ रोहिणी तप फल जग जयवंतुं ॥ ए आंकणी ॥ पाउधार्या प्रभु नयर समीपें, हरख्यो रोहिणी कंत वाला ॥ सहु परिवारशुं पदजुग वंदे, निसुण्यो धर्म एकंत वाला ॥ रो० ॥२॥ करजोडी नृप पूछे गुरुने, रोहिणी पुण्यप्रबंध वाला ॥ शुं कीधुं प्रभु सुकृत एणें, भांखो ते सयल संबंध वाला ॥ रो० ॥ ३ ॥ गुरु कहे पूर्व भवमां कीधुं, रोहिणी तप गुणखाण वाला ॥ तेथी जन्मथकी नवि दीठुं, सुख दुःख जाण अजाण वाला ॥ रो० ॥ ४ ॥ भांखशे गुरु हवे पूर्व भवनो, रोहिणी

नो अधिकार वाला ॥ दीप कहे सुणजो एक चित्तें, कर्म प्रपंच विचार वाला ॥रो०॥५॥इति॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ गुरु कहे जंबू खेत्र भरतमां, सिद्धपुर नगर मझार रे ॥ पृथिवीपाल नरेसर राजा, सिद्धमती तस नार ॥ राजन सुणजो रे ॥ कांइ पूरव भव अधिकार, दिलमां धरजो रे ॥ १ ॥एं आंकणी ॥एक दिन आव्या चंद उद्यानें, राणी ने राजान रे ॥ खेल क्रीडा नव नव भातें, जोजो कर्म निदान ॥ रा०॥ २ ॥ ए हवे कोइएक मुनि तिहां आव्यो, गुणसागर तस नाम रे ॥ राजा ते मुनिवरने देखी, राणीने कहे ताम ॥ ॥ रा० ॥३॥ ऊठो ए मुनिने वहोरावो, जे होय सुजतो आहार रे ॥ निसुणी राणी मुनिने उपर, उपनो क्रोध अपार ॥ रा० ॥ ४ ॥ विषयथकी अंतराय थयो ते, मनमां बहु दुःख लावे रे ॥ रीशें बलती कडवुं तुंबडुं, ते मुनिने वहोरावे

॥ रा० ॥ ५ ॥मुनिने आहारयकी विष व्याप्युं, कालधर्म तिहां कीधो रे ॥ राजायें राणीने तत क्षण, देशनिकालो दीधो ॥ रा० ॥ ६ ॥ सातमे दिन मुनि हत्यापापें, गलत कोढ थयो अंगें रे ॥ काल करीने बही नरकें, उपनी पाप प्रसंगें॥ ॥ रा० ॥ ७ ॥ नारकीने तिर्यंच तणा नव, नट की काल अनंत रे॥दीप कहे हवे धर्मजोगनो, कहीशुं सरस वृत्तंत ॥ रा० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ ते राणी मुनि पापथी ॥ केशरीया लाल ॥ फरती नवचक्र फेर रे ॥ केशरीया लाल ॥ तारा नयरमां उपनी॥ के०॥ धनमित्र शेठने घेर रे ॥ के० ॥ १ ॥ जूउ जूउ कर्म विटंबना॥के०॥ धनवती कुखें ऊपनी ॥ के० ॥ डुर्गंधा तस नाम रे ॥ के० ॥ नगर वणिकना पुत्रने ॥ के० ॥ परणावी बहु मान रे ॥ के० ॥ २ ॥ जू० ॥ सुख शय्यानी ऊपरें ॥ के० ॥ आवी कंतनी पासरे ॥

॥ के० ॥ बहु डुर्गंधता ऊबली ॥ के० ॥ स्वामी पाम्यो त्रास रे ॥ के० ॥ ३ ॥ जू० ॥ मूकी पर देशें गयो ॥ के० ॥ जुर्ज जुर्ज कर्म स्वनाव रे ॥ ॥ के० ॥ एक दिन कन्यानो पिता ॥ के०॥ ज्ञा नीने पूछे नाव रे ॥ के० ॥ ४ ॥ जू० ॥ ज्ञानीएं पूर्वनव कह्यो ॥ के० ॥ नाख्यो सहु अवदात रे ॥ के० ॥ फरी पूछे गुरु रायने ॥ के० ॥ केम होवे सुख शात रे ॥ के० ॥५॥ जू० ॥ गुरु कहे रोहिणीतप करो ॥ के० ॥ सात वर्ष सात मास रे ॥ के० ॥ रोहिणी नक्षत्रने दिनें ॥ के० ॥ चो विहारो उपवास रे ॥ के० ॥६॥ जू०॥ वासुपूज्य नगवंतनी ॥ के० ॥ पूजा करो शुन्न नाव रे ॥ ॥ के० ॥ एम ए तप आराधतां ॥ के० ॥ प्रगटे शुद्ध स्वनाव रे ॥ के० ॥ ७॥ जू० ॥ करजो तप पूरण थये ॥ के०॥ उजमणुं नली नात रे ॥ के० तेहथी एक नव आंतरे ॥ के० ॥ लेशो ज्योति महंत रे ॥ के० ॥ ८ ॥ जू० ॥ इम मुनि मुखथी

सांभली ॥ के० ॥ आराधी ते सार रे ॥ के० ॥ ए ताहारी राणी थई ॥ के० ॥ रोहिणी नामें नार रे ॥ के० ॥ ए ॥जू०॥ एम निसुणी हरख्यां सहु ॥ के० ॥ रोहिणीने वली राय रे ॥ के० ॥ दीप कंदे मुनि कुंभने ॥ के० ॥ प्रणमी थानक जाय रे ॥ के० ॥ १० ॥ जू० ॥ इति

॥ ढाल ७ठी ॥

॥ एक दिन वासुपूज्यजी ए, समोसर्या जिनराज ॥ नमो जिनराजने रे ॥ रायने रोहिणी हरखीआं रे, सीधां सघलां काज ॥ न० ॥ १ ॥ बहु परिवारशुं आवीयां ए, वंदे प्रभुना पाय ॥ ॥न०॥ प्रभुमुखथी वाणी सुणी ए, आणंद अंग न माय ॥ न० ॥ २ ॥ रायने रोहिणी बेहु जणा ए, लीधो संजम खास ॥ न० ॥ धन्य धन्य संजमधर मुनि ए, सुर नर जेहना दास ॥ न० ॥३॥ तप तपी केवल लही ए, तार्यां बहु नर नार ॥

॥न०॥ शिवपद अविचल पद लहे ए, पाम्या भवनो पार ॥ न० ॥ ४ ॥ एम जे रोहिणी तप करे ए, रोहिणीनी परें तेह ॥न०॥ मंगलमाला ते लहे ए, वली अजरामर गेह ॥ न० ॥ ५ ॥ धन्य वासुपूज्यना तीर्थने ए, धनधनरोहिणी नार ॥न०॥ ए तप जे भावें करे ए, पामे ते जय जय कार ॥ न० ॥ ६ ॥ संवत अढार उगणत्रीशनो ए, उज्ज्वल भाद्रव मास ॥ न० ॥ दीपविजयें तस गाइयो ए. करी खंभात चोमास ॥ न० ॥ ॥७॥कलश ॥ वासुपूज्य जगनाथ साहेब, तास तीर्थें ए थयां ॥चार पुत्रने आठ पुत्रीथी, दंपती मुगतें गया ॥ तपगछ विजयाणंद पटधर, विजय देवेंद्र सूरीसरू ॥ तास राज्यें तवन कीधुं, सकल संघ सोहंकरुं ॥ सकल पंडितप्रवर भूषण, प्रेमरत्न गुरु ध्याइया ॥ कवि दीपविजयें पुण्य हेतें, रोहिणी गुण गाइया ॥१॥इतिस्त०॥

॥ अथ श्री विनयविजयजी कृत आदिजिन विनति ॥

॥ पामी सुगुरु पसाय रे, शत्रुंजय धणी ॥ श्रीरिसहेसर वीनवुं ए॥१॥ त्रिभुवननायक देव रें, सेवक वीनति ॥आदीश्वर अवधारीयें ए॥२॥ शरणें आव्यो स्वामीरे, हुं संसारमां ॥ विरुए वैरीयें नड्यों ए ॥३॥ तार तार मुज तात रे, वात किशी कहुं॥भव भव ए भावठ तणी ए॥४॥ जन्म मरण जंजाल रे, बाल तरुणपणुं, वली व ली जरा दहे घणुं ए ॥५॥किमेन आव्यो पार रे, सार हवे स्वामी ॥ इयें न करो एक माहरी ए ॥ ॥ ६ ॥ तास्या तुमें अनंत रे, संत सुगुण वली ॥ अपराधी पण उद्धस्या ए ॥ ७ ॥ तो एक ही नदयाल रे, बाल दयामणो ॥ हुं शा माटे वीसस्यो ए ॥ ८ ॥ जे गिरुआ गुणवंत रे, तारो तेह ने ॥ ते मांहे अचरिज किश्युं ए ॥ ए ॥ जे मुज सरिखो दीन रे. तेहने तारतां ॥ जग विस्तर

शे जश घणो ए ॥ १० ॥ आपदें पडियो आ
ज रे, राज तुमारडे ॥ चरणे हुं आव्यो वही ए
॥ ११ मुज सरिखो कोइ दीन रे, तुज सरिखो
प्रभु ॥ जोतां जग लाभे नहीं ए ॥ १२ ॥ तोये
करुणा सिंधु रे, बंधु भुवन तणा ॥ न घटे तुम
उवेखवुं ए ॥ १३ ॥ तारणहारो कोइ रे, जो
बीजो हुवे ॥ तो तुह्मने शाने कहुं ए ॥ १४ ॥
तुंहिज तारीश नेट रे, पहिलाने पछे ॥.तो ए
वडी गाढिम कीसी ए ॥ १५ ॥ आवी लाग्यो
पाय रे, ते केम छोडशो ॥ मन मनाव्या विण ह
वे ए ॥ १६ ॥ सेवक करे पोकार रे, बाहिर र
ह्या यशे ॥ ते साहिब शोभा कीसी ए ॥ १७ ॥
अतुलि बल अरिहंत रे, जगने तारवा॥ समर
थ छे स्वामी तुमों ए ॥१८ ॥ शुं आवे छे जोर
रे, मुझने तारतां ॥ के धन बेसे छे किश्युं ए ॥
॥ १ए ॥ केहिशो तुमें जिणंद रे, भक्ति नथी ते
हवी ॥ तो ते भक्ति मुझने दीयो ए ॥ २० ॥ व

ली केहेशो नगवंत रे, नहीं तुज योग्यता ॥ हमणां मुक्ति जावा तणी ए ॥ २१ ॥ योग्यता ते पण नाथ रे, तुमहीज आपशो॥ तो ते मुजने दीजियें ए ॥ २२ ॥ वली कहेशो जगदीश रे, कर्म घणां ताहरे ॥ तो तेहज टालो परां ए॥२३॥ कर्म अमारां आज रे, जगपति वारवा ॥ वली कोण बीजो आवशे ए ॥ २४ ॥ वली जाणो अरिहंत रे, एहने विनति ॥ करतां आवडती नथी ए ॥ २५ ॥ तो तेहीज माहाराज रे, मुजने शीखवो ॥ जेम ते विधिशुं वीनवुं ए ॥ २६ ॥ माय ताय विण कोण रे, प्रेमें शीखवे ॥ बालकने कहो बोलवुं ए ॥ २७ ॥ जो मुज जाणो देव रे, एह अपावन ॥ खरड्यो छे कलिकादवे ए ॥ ॥ २८ ॥ केम लेउं उत्संग रे, अंग नर्युं एहनुं ॥ विपय कपाय अशुचिशुं ए ॥ २९ ॥ तो मुज करो पवित्र रे, कहो कोण पुत्रने ॥ विण मावित्र पखालशे ए ॥ ३० ॥ कृपा करी मुज

देव रे, ज्हां लगें आणीउ ॥ नरग निगोदा दिकथकी ए ॥ ३१ ॥ आव्यो हवे हजूर रे, उ जो थइ रह्यो ॥ सामुं इये जूउ नहीं ए ॥३२॥ आडो मांमी-आज रे, बेठो बारणें ॥ मावित्र तुमें मनावशो ए ॥ ३३ ॥ तुमें छो दयासमुद्र रे. तो मुझने देखी ॥ दया नथी इये आणता. ए ॥ ३४ ॥ उवेखइयो अरिहंत रे, जो आ णी वेला ॥तो महारी शी परें थशे ए ॥३५ ॥ उत्ना छे अनेक रे, मोहादिक वैरी ॥ छल जुए छे माहरां ए ॥ ३६ ॥ तेहने वारो वेगें रे, देव दया करी ॥ वली वलीशुं वीनवुं ए ॥ ३७ ॥ मरुदेवी निजमाय रे, वेगें मोकली ॥ गज बेसा री मुक्तिमां ए ॥ ३८ ॥ जरतेसर निज नंद रे, कीधो केवली ॥ आरीसा अवलोकतां ए॥३९॥ अठाणुं निज पुत्र रे, प्रतिबोध्या प्रेमें॥ जुझ क रंतां वारीया ए ॥ ४० ॥ बाहुबलने नेट रे, ना ण केवल तमें ॥ सामी साहामुं मोकल्युं ए ॥

॥ ४१ ॥ इत्यादिक अवदात रे, सघला तुम
तणा ॥ हुं जाणुं हुं मूलगा ए ॥ ४२ ॥ माहारी
वेला आज रे, मौन करी बेठा ॥ उत्तर शे आ
पो नहीं ए ॥ ४३ ॥ वीतराग अरिहंत रे, सम
ता सागरु ॥ माहारां ताहारां शुं करो ए॥४४॥
एक वार महाराज रे, मुजने स्वमुखें ॥ बोला
वो सेवक कही ए ॥ ४५ ॥ एटले सीधां काज
रे, सघलां माहरां ॥ मनना मनोरथ सवि फ
ल्या एं ॥ ४६ ॥ खमजो मुज अपराध रे,
आसंगो करी ॥ असमंजस जे वीनव्युं ए ॥
॥ ४७ ॥ अवसर पामी आज रे, जो नवि
वीनवुं ॥ तो पछतावो मन रहे ए ॥ ४८ ॥
त्रिभुवन तारण हार रे, पुण्यें माहरे ॥ आवी
एकांतें मल्यो ए ॥ ४९ ॥ बालक बोले बोल
रे,जे अविगत पणे ॥ माय तायने ते रुचे ए ॥
॥ ५० ॥ नयणें निरख्यो नाथ रे, नाभि नरिंद
नो ॥ नंदन नंदनवन जिस्यो ए ॥ ५१ ॥ मरुदे

वी नरहंस रे. वंश इरकागनो ॥ सोहाकर शो
हामणो ए ॥ ५२ ॥ माय ताय प्रनु मित्र रे, बं
धव माहरो ॥ जीव जीवन तुं वालहो ए ॥५३॥
अवर न को. आधार रे, इणें जग तुज विना ॥
त्राण शरण तुं मुज धणी ए ॥ ५४ ॥ वलि व
ली करुं प्रणाम रे, चरणे तुम तणें ॥ परमेश्वर
सन्मुख जूउ ए ॥ ५५ ॥ नव नव तुम पाय से
व रे, सेवकने देजो ॥ हुं मागुं तुं एटलुं ए ॥
॥५६॥ श्री किर्त्तिविजय उवझाय रे. सेवक एणि
परें ॥ विनय विनय करी वीनवे ए ॥ ५७ इति
श्रीआदि जिन विनतिः ॥ श्लोक संख्या॥५८॥

॥ अथ श्रीमाहावीर स्वामीनुं पारणुं प्रारंन ॥

॥ माता त्रिशलायें पुत्र रत्न जाइउ, चोश
उ इंडनां आसन कंपे सार ॥ अवधिज्ञानें जो
इ धायो श्रीजिन वीरने. आवे क्षत्रियकुंम नय
र मुझार ॥ माता० ॥ १ ॥ वीर प्रतिबिंब मूकी
माता कने, अवसरपिणी निडा दीए सार ॥एम

मेरु शिखरें जिनने लावे जक्तिशुं, हरि पंचरू
प करी मनोहार ॥ माता० ॥ २ ॥ एम असं
ख्य कोटा कोटी मली देवता, प्रजुने उत्सव मं
माणें लइ जाय ॥ पांमुक वन शिलायें जिनने
लावे जक्तिशुं, हरि अंगें थापे इंद्र घणुं उछाय
॥ माता० ॥ ३ ॥ एक कोडी शाठ लाख कल
शें करी, वीरनो सनात्र महोत्सव करे सार ॥ अ
नुक्रमें वीर कुमरने लावे जननी मंदिरें, दासी
प्रियवंदा जाए तेणी वार ॥ माता० ॥ ४ ॥ रा
जा सिद्धारथने दीधी वधामणी, दासीने दानने
मान दिए मनोहार ॥ क्षत्रीकुंममांहे उत्सव मंमा
विउ, प्रजा लोकने हरख अपार ॥ माता० ॥
॥ ५ ॥ घर घर श्रीफल तोरण त्राटज बांधि
आं, गोरी गावे मंगल गीत रसाल ॥ राजा
सिद्धारथें जन्म महोत्सव कस्यो. माता त्रिशला
थई उजमाल ॥ माता० ॥ ६ ॥ माता त्रिशला
फूलावे पुत्र पारणे, फूले लाडकडा प्रजुजी आ

नंद नेर ॥ हरखी निरखिने इंद्राणीयां जाए वा रणें, आज आनंद श्रीवीरकुमरने घेर ॥ माता० ॥ ७ ॥ वीरना मुखडा उपर वारुं कोटी चं ड्मा, पंकज लोचन सुंदर विशाल कपोल ॥ शुक चंचू सरखी दीसे निर्मल नासिका, कोमल अधर अरुण रंग रोल ॥ माता० ॥ ८ ॥ उख धि सोवन मढी रे शोभे हाल रे, नाजुक आं भरण सघलां कंचन मोतीहार ॥ कर अंगुठो धावे वीरकुमर हर्ष करी, कांइ बोलावतां करे किलकार ॥ माता० ॥ ए ॥ वीरने निलाडे की धो ले कुंकुम चांदलो, शोभे जडित मरकत म णिमां दीसे लाल ॥ त्रिशलायें जुगतें आंजी अणियाली बेहु आंखडी, सुंदर कस्तूरीनुं टब कुं कीधुं गाल ॥ माता० ॥ १० ॥ कंचन शोले जातनां रत्ने जडीयुं पारणुं, फूलावती वेला था ए घूघरनो घमकार ॥ त्रिशला विविध वचनें हरखी गाए हालरुं, खेंचे फुमतिआली कंचन

दोरी सार ॥ माता० ॥११॥ मारो लाडकवायो सरखा संगें रमवा जशे, मनोहर सुखडली हुं आपीश एहने हाथ ॥ भोजन वेला रमझम रमझम करतो आवशे, हुंतो धाईने भीडावीश हइया साथ ॥ माता० ॥१२॥ हंस कारंम्भव कोकिल पोपट पारेवडां, मांही बप्पैयाने सारस चकोर॥ मेनां मोर मेल्यां छे रमकडां रमवा तणां, घम घम घूघरा बजावे त्रिशला किशोर ॥ माता० ॥ १३ ॥ मारो वीरकुमर निशालें भणवा जायशे, साथें सज्जन कुटुंब परिवार ॥ हाथी रथ घोडा पालायें भलुं शोभतुं, करी निशाल गरणुं अति मनोहार ॥ माता० ॥ १४ ॥ मारा वीर समाणी कन्या सारी लावशुं, मारा कुमरने परणावीश मोहोटे घेर ॥ मारो लाडकडो वरराजा घोडे बेसशे. मारो वीर करशे सदाय लीला लहेर ॥ माता० ॥ १५ ॥ माता त्रिशला गावे वीर कुमरनुं हालरुं, मारो नंदन जीवजो

कोडी वरस ॥ ए तो राजराजेसर थाशे नलो दीपलो, मारा मनना मनोरथ पूरशे जगीश ॥ माता० ॥ १६ ॥ धन्य धन्य क्षत्रीकुंम गाम मनोहरु, जिहां वीर कुमरनो जनम गवाय॥राजा सिद्धारथना कुलमांहे दिनमणी, धन्य धन्य त्रिशला राणी जेहनी माय ॥ माता० ॥ १७ ॥ एम सैयर टोली नोली गावे हालरुं, थाशे मनना मनोरथ नेहने घेर॥ अनुक्रमें महोदय पदवी रूपविजय पद पामशे, गाए अमिय विजय कहे थांशे लीला लहेर ॥ माता० ॥१८॥

॥ इति वीरकुमरनुं पालणुं समाप्त ॥

॥अथ श्री महावीर स्वामीनुं हालरिउं प्रारंन॥

॥ माता त्रिशला फूलावे पुत्र पारणे, गावे हालो हालो हालरुवानां गीत ॥ सोना रूपाने वली रत्नें जडिउं पारणुं, रेशम दोरी घूघरी वागे छुम छुम रीत॥हालो हालो हालो हालोमारा नंदने ॥ १ ॥ जिनजी पास प्रनुथी वरस अढी

शें अंतरें, होशे चोवीशमो तीर्थंकर जित पर
माण ॥ केशी स्वामी मुखथी एवी वाणी सांभ
ली, साची साची हुइ ते मारे अमृत वाण ॥
हा० ॥ २ ॥ चौदे स्वपनें होवे चक्री के जिनरा
ज, वीना बारे चक्री नहिं हवे चक्री राज, जिन
जी पास प्रभुना श्री केशी गणधार, तेहने व
चनें जाण्या चोवीशमा जिनराज, मारी कुखें
आंव्या तारण तरण झिहाज, मारी कुखें आ
व्या त्रण्य भुवन शिर ताज, मारी कुखें आव्या
संघ तीरथनी लाज, हुंतो पुण्य पनोती इंद्रा
णी थइ आज ॥ हा० ॥ ३ ॥ मुझने दोहोलो
उपन्यो जे बेसुं गज अंबाडीयें, सिंहासन पर
बेसुं चामर छत्र धराय ॥ ए सहु लक्षण मुजने
नंदन ताहारा तेजनां, ते दिन संभारुं ने आनंद
अंग न माय ॥हा०॥४॥करतल पगतल लक्षण
एक हजारने आठ छे, तेहथी निश्चय जाण्या
जिनवर श्री जगदीश ॥ नंदन जमणी जंगें ल

छन सिंह बिराजतो, में पहेले सुपने दीठो वि शाला वीश ॥ हा० ॥ ५ ॥ नंदन नवला बंधव नंदीवर्द्धनना तमे, नंदन भोजाइयोना देयर छो सुकुमाल ॥ हसशे भोजाइयो कही दीयर माहारा लाडका, हसशे रमशे ने वली चुंठी खणशे गाल, हशशे रमशे ने वली ठुंसा द शे गाल ॥ हा० ॥ ६ ॥ नंदन नवला चेडा रा जाना भाणेज छो, नंदन नवला पांचशें मामी ना भाणेज छो, नंदन मामलीआना भाणजा सुकुमाल ॥ हसशे हाथे उछाली कहीने न्हांहा ना भाणेजा, आंख्यो आंजी ने वली टबकुं क रशे गाल ॥ हा० ॥ ७ ॥ नंदन मामा मामी लावशे टोपी आंगलां, रतने जडीआं झालर मो ती कशाबी कोर ॥ नीलां पीलां ने वली रातां सर वे जातिनां, पहेरावशे मामी मारा नंद किशोर ॥ हा० ॥ ८ ॥ नंदन मामा मामी सूखडली स हु लावशे, नंदन गजुवे भरशे लाडु मोतीचूर

॥ नंदन मुखडां जोइने लेशो मामी न्नामणां; नंदन मामी केहेशो जीवो सुख नरपूर ॥ हा० ॥ ए ॥ नंदन नवला चेडा मामानी साते सती, मारी नत्रीजीने बेन तमारी नंद ॥ ते पण गुंजे नरवा लाखणसाइ लावशे, तुमने जोइ जोइ होशे अधिको परमानंद ॥ हा० ॥ १० ॥ रम वा काजें लावशे लाख टकानो घूघरो, वली शूडा मेनां पोपट ने गजराज ॥ सारस हंस को यल तीत्तरने वली मोर जी, मामी लावशे रम वां नंद तमारे काज ॥ हा० ॥ ११ ॥ छप्पन कु मरी अमरी जलकलशें नवरावीआ, नंदन त मने अमने केलीघरनी मांहे ॥ फूलनी वृष्टि की धी योजन एकने मंम्रलें, बहु चिरंजीवो आ शीष दीधि तुमने त्यांहे ॥ हा० ॥ १२ ॥ तमने मेरु गिरिपर सुरपतियें नवराविआ, निरखी निरखी हरखी सुकृत लान्न कमाय ॥ मुखडा ऊपर वा रुं कोटी कोटी चंद्रमा, वली तनपर वारुं ग्रह

गणनो समुदाय ॥ हा० ॥ १३ ॥ नंदन नवला जणवा नीशालें पण मूकशुं, गजपर अंबाडी वेसाडी मोहोटे साज ॥ पसली नरशुं श्रीफल फोफल नागरवेलशुं, सूखडली लेशुं नीशाली आने काज ॥ हा० ॥ १४ ॥ नंदन नवला मो होटा थाशोने परणावशुं, वहूवर सरखी जोडी लावशुं राजकुमार ॥ सरखा वेवाइ वेवाणुंने पधरावशुं, वरवहू पोंखी लेशुं जोइ जोइने दे दार ॥ हा० ॥ १५ ॥ पीअर सासर मारा वेहु पक्ष नंदन ऊजला, माहारी कुखें आव्या तात पनोता नंद ॥ माहारे आंगण वूठा अमृत दू धें मेहुला, माहारे आंगण फलिआ सुरतरु सु खना कंद ॥ हा० ॥ १६ ॥ इणि परें गायुं मा ता त्रिशला सुतनुं पारणुं, जे कोइ गाशे ले शे पुत्र तणा साम्राज ॥ बीलीमोरा नगरें वर णव्युं वीरनुं हालरुं, जय जय मंगल होजो दीपविजय कविराज ॥ हा० ॥ १७ ॥ इतिसं०॥

॥ अथ सीताजीनी सझाय प्रारंभ ॥

॥ जनक सुता हुं नाम धरावुं, राम छे अं तरजामी ॥ पालव अमारो मेलने पापी, कुल ने लागे छे खामी ॥ अडशो मांजेम, मांजो मां जो. मांजो ॥ अ० ॥ माहारो नाहलीउ दुहवा य ॥ अ० ॥ मने संग केनो न सुहाय ॥ अ०॥ माहारुं मन मांहेथी अकुलाय ॥ अ० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मेरु महीधर ठाम तजे जो, पछ र पंकज उगे ॥ जो जलधि मर्यादा मूके, पांग लो अंबर पूगे ॥अ० ॥ २ ॥ तो पण तुं सांभ लने रावण, निश्चय शील न खंडुं ॥ प्राण अ मारो परलोक जाये, तो पण सत्य न छंडुं ॥ अ० ॥ ३ ॥ कुण मणिधरना मणि लेवाने, है यडे घाले हाम ॥ सती संघातें स्नेह करीने, कहो कुण साधे काम ॥ अ० ॥ ४ ॥ परदारा नो संग करीने, आखो कोण उगरियो ॥ खंडुं

तो तुं जोए आलोची, सही तुज दाहाडो फ रियो ॥ अ० ॥ ॥ ५ ॥ जनकसुता हुं जग स हु जाणे, नामंमल बे नाई ॥ दशरथ नंदन शिर बे स्वामी, लखमण करशे लडाई ॥अ० ॥ ६ ॥ हुं धणीयानी पीउ गुणराती, हाथ बे.म हारे गाती ॥ रहे अलगो तुज वयणें न चलुं, कां कुलें वाय बे काती ॥ अ० ॥ ७ ॥ उदयरत न कहे धन्य ए अबला, सीता जेहनुं नाम ॥ सतीयां माहे शिरोमणि कहीयें, नित्य नित्य होजो प्रणाम ॥ अ० ॥ ८ ॥

॥ अथ वणझारानी सञाय ॥

॥ नरनव नयर सोहामाणुं ॥ वणझारा रे ॥ पामीने करजे व्यापार ॥ अहो मोरा नायकरे ॥ सत्तावन संवर तणी ॥ व० ॥ पोठी नरजे उ दार ॥ अ० ॥ १ ॥ शुन परिणाम विचित्रता ॥ ॥ व० ॥ करियाणा बहु मूल ॥ अ० ॥ मोक्ष न

गर जावा जणी॥ व० ॥ करजे चित्त अनुकूल ॥ अ० ॥२॥ क्रोध दावानल उलवे ॥व०॥ मान विषम गिरिराज ॥ अ० ॥ उलंघजे हलवें करी ॥ व० ॥ सावधान करे काज ॥ अ० ॥ ३ ॥ वंश जाल माया तणी ॥ व० ॥ नवि करजे विशराम ॥ अ० ॥ खाडी मनोरथ जट तणी ॥ व० ॥ पूरणमुं नहीं काम ॥ अ० ॥४॥ रागद्वेष दोय चोरटा ॥ व० ॥ वाटमां करशे हेरान ॥ अ० ॥ विविध वीर्य उल्लासथी ॥ व० ॥ ते हणजे शिर ताय ॥ अ० ॥ ५ ॥ इम सवि विघन विदारीने ॥ व० ॥ पहोचजे शिवपुर वास ॥ अ० ॥ खय उपशम जे जावना ॥ व० ॥ पोठी जरया गुण राश ॥ अ० ॥ ६ ॥ खायक जावें ते थशे ॥ व० ॥ लाज होशे ते अपार ॥ अ० ॥ उत्तम वणज जे एम करे ॥ व० ॥ पद्म नमे वारं वार ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति ॥ वणजारानीसझाय ॥

॥ अथ सोदागरनी सद्याय ॥

॥ लावो लावोने राज, मोंघां मुलनां मोती ॥ ए देशी ॥

॥ सुण सोदागर बे, दिलकी बात हमेरी ॥ तं सोदागर दूर विदेशी, सोदा करनकुं आया ॥ मोसम आये माल सवाया, रतनपुरीमां गया ॥ सु० ॥ १ ॥ तिनुं दलालकुं हर समजाया, जिनसें बहोत न फाया ॥ पांचुं दीवानुं पाऊं जडाया. एककुं चोकी बिठाया ॥ सु० ॥ २ ॥ नफा देख कर माल बिहरणां, चुआ कटे न युं धरनां ॥ दोनुं दगाबाजी दूर करनां, दीपकी ज्योतसें फिरनां ॥ सु० ॥३॥ औरदन वली मेहेलमें रहनां, बंदरकुं न हलानां ॥ दश सेरसें दोस्तिहि करनां, उनसें चित्त मिलानां ॥ सु० ॥४ ॥ जनहर तजनां जिनवर भजनां, सजना जिनकुं दलाइ ॥ नवसरहार गलेमें रखनां, जखनां लखकी कटाइ ॥ सु० ॥ ५ ॥ शिरपर मुगट चमर ढोलाइ,

अम घर रंग वधाइ ॥ श्रीशुनवीर विजय घर जाइ, होत सताबी सगाइ ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ आपस्वन्नावनी सद्याय ॥

॥ आप स्वन्नावमां रे, अवधु सदा मगनमें रहेनां ॥ जगत जीव है करमाधीना, अचरिज कबुअ न लीना ॥ आ० ॥ १ ॥ तुम नहीं केरा कोइ नहीं तेरा, ॥ क्या करे मेरा मेरा ॥ तेरा है सो तेरी पासे, अवर सबे अनेरा ॥ आ० ॥ ॥ २ ॥ वपु विनाशी तुं अविनाशी, अब है इनकुं विलासी ॥ वपु संघ जब दूर निकासी, तब तुम शिवका वासी ॥ आ० ॥ ३ ॥ रागने रीसा दोय खवीसा, ए तुम फुःखका दीसा ॥ जब तुम उनकुं दूर करीसा, तब तुम जगका ईसा ॥ आ० ॥ ॥ ४ ॥ परकी आसा सदा निरासा, ए है जंग जन पासा ॥ ते काटनकुं करो अन्यासा, लहो सदा सुखवासा ॥ आ० ॥ ५ ॥ कबहींक काजी कबहींक पाजी, कबहींक हुआ अपभ्राजी ॥

कवर्द्धीक जगमें कीर्त्ति गाजी, सब पुजलकी बा
जी ॥ आ०॥८॥ शुद्ध उपयोग ने समता धारी,
ज्ञान ध्यान मनोहारी ॥ कर्म कलंककुं दूर नि
वारी, जीव वरे शिव नारी ॥ आ० ॥ ७ ॥
॥ इति आपस्वभाव सझाय ॥

॥ अथ सहजानंदीनी सझाय ॥ बीजी अशरण
भावना ॥ ए देशी ॥

॥ सहजानंदी रे आतमा, सूतो कांइ निश्चिंत
रे ॥ मोह तणा रणीया भमे, जाग जाग मतिवंत
रे, लूंटे जगतना जंत रे, नाखी वांक अत्यंत रे,
नरकावास ठवंत रे, कोइ विरला उगरंत रे ॥
॥ स० ॥ १ ॥ राग द्वेष परिणति भजी, माया क
पट कराय रे ॥ काश कुसम परें जीवडो, फोगट
जनम गमाय रे, माथे भय जम राय रे, इयो
मन गर्व धराय रे, सहु एक मारग जाय रे, को
पां जग अमर कहाय रे ॥ स० ॥ २ ॥ रावण स
रिखा रे राजवी, नागा चाल्या विण धाग रे ॥

दश मायां रण रडवड्यां, चांचदीए शिर काग रे, देव गया सवि नाग रे, न रह्यो माननो भाग रे, हरि हाथें हरिनाग रे; जोजो नाइउना राग रे ॥ स० ॥ ३ ॥ केइ चाल्या केइ चालशे, केता चालणहार रे ॥ मारग वहेतो रे नित्य प्रत्यें, जोतां लक्ष हजार रे, देश विदेश सधार रे, ते नर इणें संसार रे, जातां जम दरबार रे, न जुवे वार कुवार रे ॥ स० ॥ ४ ॥ नारायण पुरी द्वारिकां, बलती मली निराश रे ॥ रोता रणमां ते एकला, नाठा देव आकाश रे, किहां तरु गया आवास रे, जल जल करी गया सास रे, बल भद्र सरोवर पास रे, सुणी पांम्व शिववास रे ॥ स० ॥ ५ ॥ राजी गाजीने बोलता, करता हुकम हेरान रे ॥ पोढ्या अग्निमां एकला, काया राख समान रे, ब्रह्मदत्त नरक प्रयाण रे, ए ऋद्धि अथिर निदान रे, जेवुं पींपल पान रे, म धरो जूठ गुमान रे ॥ स० ॥ ६ ॥ वालेसर विना एक

घडी, नवि सहातुं लगार रे॥ ते विना जनमारो वही गयो, नहीं कागल समाचार रे, नहीं कोइ कोइनो संसार रे, स्वारथीयो परिवार रे, माता मरुदेवी सार रे. पोहोतां मोक्ष मोझार रे ॥स० ॥ ७ ॥ मात पिता सुत बांधवा, अधिको राग विचार रे ॥ नारी अमारी रे चित्तमां, वंछे विषय गमार रे, जुवो सूरिकांता जे नार रे, विख देतां भरतार रे, नृप जिनधर्म आधार रे, सङ्कन नेह निवार रे ॥ स० ॥ ८ ॥ हसी हसी देता रे तालीयो, शय्या कुसुमनी सार रे ॥ ते नर अंते माटी थया, लोक चणे घर बार रे, घडता पात्र कुंभार रे, एहवुं जाणी असार रे, छोडो विषय विकार रे, धन्य तेहनो अवतार रे ॥स० ॥ ए ॥ थावच्चासुत शिव वर्या ॥ वली एलाची कुमार रे ॥ धिक् धिक् विषया रे जीवने, लइ वैराग्य रसाल रे, मेहेली मोह जंजाल रे, घर रमे केवल बाल रे, धन्य करकंडू नृपाल रे ॥

॥ स० ॥ १० ॥ श्री शुभविजय सुगुरु लही, धर्मरयण धरो टेक रे ॥ वीर वचन रस शेलडी, चाखे चतुर विवेक रे, न गमे ते नर भेक रे, धरता धर्मनी टेक रे, भवजल तरिया अनेक रे ॥ स० ॥ ११ ॥ इति ॥ सहजानंदी सज्झाय ॥

॥ अथ ॥ सांभल सयणानी सज्झाय ॥

॥ सांभल सयणा साची सुणावुं, पूरव पुण्ये तुं पाम्यो रे भाइ ॥ नरक निगोदमां भमतां न लभव, तें निःफल केम वाम्यो रे भाइ ॥ सां० ॥ १ ॥ जैनधर्म जयवंतो जगमां, धारी धर्म न साध्यो रे भाइ ॥ मेघघटा सरिखा गज साटे, गर्दभ घरमां बांध्यो रे भाइ ॥ सां० ॥ २ ॥ कल्पवृक्ष कुहाडे कापी, धंतुरो घेर धारे रे भाइ ॥ ॥ चिंतामणि चिंतित पूरण ते, काग उडाडण भारे रे भाइ ॥ सां० ॥ ३ ॥ इम जाणी जावा न वि दीजें, नर नारी नरभवनें रे भाइ ॥ तलखी शुद्ध धर्मने साधो, जे मान्यो मुनि मननें रे

भाइ ॥ सां० ॥ ४ ॥ जे विभाव परभावमां भ
जीयें, रमण स्वभावमां करीयें रे भाइ ॥ उत्त
मपदपद्मने अवलंबी, भवियण भवजल तरी
यें रे भाइ॥सां० ॥५॥इति आतम हित सझाय॥

॥ अथ रात्रिभोजननी सझाय प्रारंभ ॥

॥ पुण्य संजोगें नरभव लाधो, साधो आ
तम काज ॥ विषया रस जाणो विष सरिखां.
इम भाखे जिनराज रे प्राणी॥रात्रिभोजन वारो
॥ १ ॥ आगम वाणी साची जाणी, संमकित
गुण सही नाणी रे प्राणी ॥ रात्रि० ॥ ए आंक
णी ॥ अभक्ष्य बावीशमां रयणीभोजन, दोष
कह्या परधान ॥ तेणें कारण रातें मत जमजो॥
जो हुवे हइडे शान रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ दान
स्नान आयुधने भोजन, एटला रातें न कीजें॥
ए करवां सूरजनी सारवें, नीतिवचन समजीजें
रे॥ प्रा० ॥ ३ ॥ उत्तम पशु पंखी पण रातें,
टाले भोजन टाणो ॥ तुमें तो मानवी नाम ध

रावो, केम संतोष न आणो रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ माखी जू कीडी कोळीआवडो, भोजनमां जो आवे ॥ कोढ जळोदर वमन विकळता, एवा रोग उपावे रे ॥ प्रा० ॥५॥ भ्रमु भव जीवहत्या करतां, पातक जेह उपायुं ॥ एक तळाव फोडं तां तेटलुं, दूषण सुगुरु बतायुं रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ एकलोत्तर भव सर फोड्या सम, एक दव देतां पाप ॥ अठलोत्तर भव दव दीधा जिम, एक कुवणिज संताप रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ एक शो ने चुम्मालीश भव लगें, कुवणिजना जे दोष ॥ कूडुं एक कलंक दियंतां, तेहवो पापनो पोष रे ॥ प्रा० ॥८॥एक शो एकावन भव लगें दीधां, कूडां कलंक अपार ॥ एकवार शील खंम्या, जेवो, अनर्थनो विस्तार रे ॥ प्रा० ॥ ए ॥ एक शो नवाणुं भव लगें खंम्यां, शीयल विषय संबंध ॥ एकें रात्रिभोजनें तेहवो, कर्म निकाचित बंध रे ॥ प्रा० ॥ १० ॥ रात्रिभोजनमां दो

पं घणा छे, इयों कहीयें विस्तार ॥ केवली केह तां पार न पावे, पूरव कोडी मझार रे ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ रातें नित्य चोविहार करीने, शुभ परिणाम धरीजें ॥ मासें मासें पासखमणनो, लाभ इण विध लीजे रे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ मुनि वसतभनी एह शिखामण, जे पाले नर नारी ॥ सुर नर सुख विलसीनें होवे, मोक्ष तणा अधिकारी रे ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ इति रात्रिभोजननी सझाय ॥

॥ अथ जोबन अस्थिरनी सझाय ॥ राग प्रभाती ॥

॥ जोबनीयानी मोजां फोजां, जाय नगारां देती रे ॥ घडी घडी घडीयालां वाजे, तोही न जागे तेथी रे ॥ जो० ॥ १ ॥ जरा राक्षसी जोर करे छे, फेलावे फजेती रे ॥ आवी अवधें छशंके नहीं, लखपतिने लेती रे ॥ ॥ जो० ॥ २ ॥ मालें बेठा मोज करे छे, खांतें जोवे खेती रे ॥ जमरो भमरो ताणी लेशे, गोफण गोळा सेंती रे ॥ जो० ॥ ३ ॥ जिनराजाने

शरणें जाउ, जोराजो को न जेथी रे ॥ इनी यामां दूजो दीसे नहीं, आखर तरशो तेथी रे ॥ जो० ॥ ४ ॥ दंत पड्याने मोसो थयो, काज सर्युं नहीं केथी रे ॥ उदयरत्न कहे आपें समजो, कहीयें वातो केती रे ॥ जो० ॥ ५ ॥

॥ अथ निंदावारक सद्याय ॥

॥ निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदानां बोल्यां महा पाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करतां न गणे माय बाप रे ॥ निं० ॥ १ ॥ दूर बलंती कां देखो तुम्हें रे, पगमां बलती देखो सहु कोय रे ॥ परना मलमां धोयां लूगडां रे, कहो केम ऊजलां होय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संभालो सहुको आपणो रे, निंदानी मूको परी टेव रे ॥ थोडे घणे अवगुणें सहु भर्या रे, केहनां नलीयां चुए केहेनां नेव रे ॥ निं० ॥ ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो करजो आ

पणी रे, जेम बुटकबारो थाय रे ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण ग्रहजो सहुको तणा रे, जेहमां देखो एक विचार रे॥ कृष्णपरें सुख पामशो रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ निं० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ शीयलविषे पुरुषने शिखामणनी सझाय॥

॥ चाल ॥ सुण सुण कंता रे, शीख सोहामणी ॥ प्रीत न कीजें रे, परनारी तणी ॥ त्रुटक ॥ परनारी साथें प्रीत पिउडा, कहो किण परें कीजीयें ॥ गंध वेची आपणी, उजागरो केम लीजीयें ॥ काबडीबूटो कहे लंपट, लोकमां हे लाजीयें ॥ कुल विषय खंपण रखे लागे, सगमां केम गाजीयें ॥ १ ॥ चाल ॥ प्रीति करंतां रे, पेहेलां बीहीजीयें ॥ रखे कोइ जाणे रे, मनशुं धूजीयें ॥ त्रु० ॥ धूजीयें मन शुं झूरीयें पण, जोग मलवो छे नहीं ॥ रात दिन विलपंतां जाये, अवटाइ मरवुं सही ॥ निज नारीथी संतोष नवल्यो, परनारीथी कहो शुं हशे ॥ जो न

रे जाणे तृप्ति न वली तो, एठ चाटे शुं हशे ॥ २ ॥ मृग तृष्णाथी रे, तृष्णा नवि टले ॥ वेलु पील्यां रे, तेलन नीसरे ॥ ७० ॥ न नीसरे पाणी वलोवतां, लव लेश मांखणनो वली ॥ बूडतां बाचक जरीआं पाणी ते, तस्या वात न सांजली ॥ तेम नार रमतां पर तणी, संतोष न वल्यो एक घडी ॥ चित्त चटपटी उच्चाट लागे, नयणें नावे निजडी ॥ ३ ॥ चाल ॥ जेवो खोटो रे, रंग पतंगनो ॥ तेवो चटको रे, परस्त्रीसंग नो ॥ ७० ॥ परनारी साथें प्रेम पिंडा, रखे तुं जाणे खरो ॥ दिन चार रंग सुरंग रूडो, प छी नहीं रहे निर्धरो ॥ जे घणा साथें नेह मांमे, बांधे तेहशुं प्रीतडी ॥ एम जाणी म म कर नाहला, परनारि साथें प्रीतडी ॥ ४ ॥ चाल ॥ जे पति वाहालो रे, वंचे पापिणी ॥ परशुं प्रेमें रे, राचे सापिणी ॥७०॥ सापिणी सरखी वयण निरखी, रखे शीयलथकी चले ॥ आंखने मट

के अंग लटके, देव दानवने छले ॥ ए मांहे का
ली अति रसाली, वाणी मीठी शेलडी ॥ सां
भली रे भोला रखे भूलो, जाणजो विष वेलडी
॥ ५ ॥ चाल ॥ संग निवारो रे, पररामा तणो
॥ शोक न कीजें रे, मन मिलवा तणो ॥ ७० ॥
शोक शाने करो फोगट, देखवुं पण दो
हिलुं ॥ क्षिण मेडियें क्षिण सेरीयें, भमतां न
लागे सोहिलुं ॥ उछ्वासने निःश्वास आवे, अंग
भांजे मन भमे ॥ वली कामिनी देखी देह दा
झे, अन्न दीठुं नवि गमे ॥ ६ ॥ चाल ॥ झाये
कलाले रे, मनशुं कल मले ॥ उन्मत्त थइने
रे, अलल पलल लवे ॥ ७० ॥ लवे अलल
पलल जाणे, मोहगतिलो मन रडे ॥ महामदन
वेदन कठिन कारी, मरण वारु त्रेवडे ॥ ए दश
अवस्था काम केरी, कंत कायाने दहे ॥ एम
चित्त जाणी तजे राणी, पारकी ते सुख लहे ॥
॥ ७ ॥ चाल ॥ परनारीना रे, पराभव सांभ

लो ॥ कंता कीजें रे, भाव ते निर्मलो ॥ ७० ॥ निर्मलें भावें नाह समजो, परवधू रस परिहरो ॥ चांपीउ कीचक भीमसेनें, शिला हेठल सांभलो ॥ रण पड्यां रावण दश मस्तक, रडवड्या ग्रंथें कह्यां ॥ तेम मूंजपति दुःख पुंज पाम्यो, अपजश जगमांहे लह्यो ॥ ८ ॥ चाल ॥ शीअल सलूणा रे, माणस सोहीयें ॥ विण आभरणें रे, जग मन मोहीयें ॥७०॥ मोहीयें सुर नर करे सेवा, विष अमिय थइ संचरे ॥ केसरी सिंह शीयाल थाये, अनल तिम शीतल करे ॥ साप थाए फूलमाला, लछी घर पाणी भरे ॥ परनारी परिहरी, शीयल मन धरी, मुक्ति वधू हेला वरे ॥ ९ ॥ चाल ॥ ते माटे हुं रे, वालम वीनवुं ॥ पाए लागीनें रे, मधुर वयणे स्तवुं ॥ ७० ॥ वयण माहारुं मानीयें, परनारी थी रहो वेगला ॥ अपवाद माथे चढे मोटा, नरकें थइयें दोहिला ॥ धन्य धन्य ते नर नारि

जे दृढ, शीयल पाले कुल तिलो, ते पामशे य
श जगत मांहि. कुमुद चंद सम उजलो ॥१०॥

अथ शीयलविषे नारीने शिखामणनी सद्याय

॥चाल॥ एक अनोपम,शिखामण खरी ॥ स
मजी लेजो रे, सघली सुंदरी ॥ ए०॥ सुंदरी.स
हेजें हृदय हेजें, पर सेजें नवि बेसीयें ॥ चित्तथ.
की चूकी लाज मूकी, पर मंदिर नवि पेसीयें ॥
बहु घेर हींमी नार निर्लज, शास्त्रें पण तजवी
कही ॥ जेम प्रेत दृष्टें पड्युं भोजन,जमवुं ते जुग
तुं नहीं ॥ १ ॥ चाल ॥ परशुं प्रेमें रे, हसीय न
बोलीयें॥ दांत देखाडी रे,गुह्य न खोलीयें ॥ए०॥
गुह्य घरनुं परनी आगें, कहोने केम प्रकाशी
यें ॥ वली वात जे विपरीत भासे, तेहथी दूरें
नाशीयें ॥ असुर सवारा अने अगोचर, एक
लां नवि जाइयें ॥ सहसातकारें काम करतां, स
हेजें शील गमावीयें ॥ २ ॥ चाल ॥ नट विट
नरशुं रे, नयण न जोडीयें ॥ मारग जातां रे,

आघुं तेढीयें ॥ ७० ॥ आघुं ते तेढी वात कर तां, घणुंज रूडां शोजीयें ॥ सासू अने माना जण्या विण, पलक पास न थोजीयें ॥ सुख दुः ख सरज्युं पामीयें पण, कुलाचार न मूकीयें ॥ परवश वसतां प्राण तजतां, शीयलथी नवि चूकीयें ॥ ३ ॥ चाल ॥ व्यसनी साथें रे, वात न कीजीयें ॥ हाथो हाथे रे, ताली न लीजीयें ॥ ७० ॥ ताली न लीजें न जर न दीजें, चंचल चाल न चालीयें ॥ एक विषय बुद्धें वस्तु केहनी, हाथे पण नवि फालीयें ॥ कोटी कंदर्प रूप सुं दर, पुरुष पेखी न मोहियें ॥ तृणखलां तोले गणी तेहने, फरिय सामुं न जोइयें ॥ ४ ॥ चा ल ॥ पुरुष पीयारो रे, वलि न वखाणीयें ॥ वृ द्ध ते पिता रे, सरखो जाणीयें ॥ ७० ॥ जाणी यें पीयु विण पुरुष सघला, सहोदर समो वडे ॥ पतिव्रतानो धर्म जोतां, नावे कोइ तडोवडे ॥ कुरूप कुष्ठी कूबडो ने, दुष्ट दुर्बल निर्गुणो ॥ न

रतार पामी स्वामिनी, ते इंद्रथी अधिको गुणो ॥ ५ ॥ चाल ॥ अमर कुमारें रे, तजी सुर सुंदरी ॥ पवनंजये रे, अंजना परिहरी ॥ ज० ॥ परिहरी सीता रामें वनमां, नलें दमयंती वली ॥ ॥ महा सती माथे कष्ट पड्या पण, शीयलथी ते नवि चली ॥ कसोटीनी परें कसीअ. जोतां, कंतशुं विहडे नहीं ॥ तन मन्न वचनें शीयल राखे, सती ते जाणो सही ॥ ६ ॥ चाल ॥ रूप देखाडी रे, पुरुष न पाडीयें ॥ व्याकुल थइने रे, मन न बगाडीयें ॥ ज० ॥ मन न बगाडीयें पर पुरुषनुं, जोग जोतां नवि मले ॥ कलंक माथे चढे कूडां, सगां सहु दूरें टले ॥ अणसरज्यो उच्चाट थाये, प्राण तिहां लागी रहे ॥ इह लोक पामे आपदा, परलोक पीडा बहु सहे ॥ ७ ॥ चाल ॥ रामने रूपें रे, शूर्पनखा मोही ॥ काज न सीधुं रे, अने इजत खोइ ॥ ज० ॥ इजत खोइ देख अभया, शेठ सुदर्शन नवि चल्यो ॥ न

रतार आगल पडी नोंठी, अपवाद सघले न ह्व्यो ॥ कामनी देखी कामिनी बुद्धें,वंकचूल वा ह्यो घणुं ॥ पण शीयलथी चूकी नहीं, दृष्टांत एम केतां नणुं ॥ ८ ॥ चाल ॥ शीयल प्रनावें रे, जुवो शोले सती ॥ त्रिनुवनमांहे रे, जेह थइ हती ॥ ७० ॥ सती थइने शीयल राख्युं, कल्पना कीधी नहीं ॥ नाम तेहनां जगत जाणे, विश्वमां नगी रही ॥ विविध रत्नें जडित नूषण, रूपसुंदरि किन्नरी ॥ एक शीयल विण शोने नहीं, ते सत्य गणजो सुंदरी ॥ ए ॥ चाल ॥ शीयल प्रनावें रे, सहु सेवा करे ॥ नववाडें रे, जेह निर्मल धरे ॥ ७० ॥ धरे निर्मल शीयल नज्जल, तास कीर्त्ति ऊलहले ॥ मनकामना स वि सिद्धि पामे, अष्ट नय दूरें टले ॥ धन्य ध न्य ते जाणो धरा, जे शीयल चोखुं आदरे, आनंदना ते नंघ पामे, नदय महा जस विस्तरे ॥१०॥ इति नारीने शिखामणनी सद्माय॥६॥

॥ अथ धोबीडानी सज्झाय ॥

॥ धोबीडा तुं धोजे मननुं धोतीयुं रे, रखे राखतो मेल लगार रे ॥ एणे रें मेलें जग मेलो कर्यो रे, विण धोयुं न राखे लगार रे ॥ धो० ॥ ॥ १ ॥ जिनशासन सरोवर सोहामणुं रे, समकित तणी रूडी पाल रे ॥ दानादिक चार ंबारणां रे, मांही नव तत्त्व कमल विशाल रे ॥ धो० ॥ २ ॥ तिहां झीले मुनिवर हंसला रे, पीये छे तप जप नीर रे ॥ शम दम आदें जे शील रे, तिहां खाले आपणुं चीर रे ॥ धो० ॥ ॥ ३ ॥ तपवजे तप तडके करी रे, जालवजे नव तत्त्व वाड रे ॥ छंटा उमाडे पाप अढारना रे, एम उजलुं होशे ततकाल रे ॥ धो० ॥४॥ आलोयण साबूडो सूधो करे रे, रखे आवे माया शेवाल रे ॥ निश्चें पवित्रपणुं राखजे रे, पछें आपणी नीमी संभाल रे ॥ धो० ॥ ५ ॥ रखे मूकतो मन मोकलुं रे, चल मेलीने संकेल रे ॥

समयसुंदरनी शीखडी रे, सुखडी अमृत वेल रे ॥ धो० ॥ ६॥ इति धोबीडानी सज्झाय ॥

॥ अथ भरतचक्रीनी सज्झाय ॥

॥ मनहीमें वैरागी भरतजी, मनहीमें वैरागी.॥ सहस बत्रीश मुकुट बंध राजा, सेवा करे वडभागी ॥ चोशठ सहस अंतेउरी जाके, तोहि न हुवा अनुरागी ॥ भ० ॥ १ ॥ लाख चोराशी तुरंगम जाके, छन्नुं कोड हे पागी ॥ लाख चोराशी गज रथ सोहियें, सुरता धर्मशुं लागी ॥ भ० ॥ २ ॥ चार करोड मण अन्नज उपडे, लूण दश लाख मण लागे ॥ तीन कोड गोकुल दूजे, एक कोड हल सागी ॥ भ० ॥३॥ सहस बत्रीश देश वडभागी, भये सरवके त्यागी ॥ छन्नुं कोड गामके अधिपति, तोहे न हुआ सरागी ॥ भ० ॥ ४ ॥ नव निधि रतन चोगडा बाजे, मन चिंता सब भांगी ॥ कनक कीरत मुनिवर वंदत हे, देजो मुक्तिमें मागी ॥भ०॥

॥ अथ बाहुबलजीनी सझाय ॥

॥ बहेनी बोले हो बाहुबल सांभलो जी ॥ रूडा रूडा रंगनिधान ॥ गयवर चढिया हो, केव ल केम हुवे जी ॥ जाण्युं जाण्युं पुरुष प्रधान ॥ ब० ॥ १ ॥ तुज सम उपशम जगमां कुण गणे जी, अकल निरंजन देव ॥ भाइ भरतेसर वा हाला वीनवे जी, तुझ करे सुर नर सेव ॥ ब०॥ ॥२॥ भरवरसालो हो, वनमां वेठीउं जी ॥ जि हां घणां पाणीनां पूर ॥ झरमर वरसे हो, मेहु लो घणुं जी, प्रगट्या पुण्य अंकूर ॥ ब० ॥३॥ चहु दिसी वींट्यो हो, वेलडीएं घणुं जी, जेम वादल गयो सूर ॥ श्री आदिनाथें हो, अम ने मोकल्यां जी ॥ तुम प्रतिबोधन नूर ॥ ब० ॥ ॥ ४ ॥ वर संवेगरसें हो, मुनि भर्या जी ॥ पा म्युं पाम्युं केवल नाण ॥ माणकमुनि जस ना में हो, हरख्यो घणुं जी ॥ दिन दिन चढतो बे वान ॥ ब० ॥ ५ ॥ इति सझाय ॥

॥ अथ ढंढण ऋषिजीनी सद्याय ॥

॥ ढंढण ऋषिजीने वंदणा ॥ हुं वारी लाल ॥
उत्कृष्टो अणगार रे ॥ हुं वारी लाल ॥ अभिग्र
ह लीधो आकरो ॥ हुं वारी० ॥ लब्धें लेशुं
आहार रे ॥ हुं वारी लाल ॥ ढं० ॥ १ ॥ दिन
प्रति जावे गोचरी ॥ हुं० ॥ न मले शुध आहा
र रे ॥ हुं० ॥ न लीए मूल असूझतो ॥ हुं० ॥
पींजंर हुवो गात रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ २ ॥ हरि पू
छे श्री नेमने ॥ हुं० ॥ मुनिवर सहस अढार रे
॥ हुं० ॥ उत्कृष्टो कोण एहमें ॥ हुं० ॥ मुजने क
हो कृपाल रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ३ ॥ ढंढण अधि
को दाखीउ ॥ हुं० ॥ श्रीमुख नेम जिणंद रे ॥
हुं० ॥ कृष्ण उमाह्यो वांदवा ॥ हुं० ॥ धन्य जा
दवकुल चंद रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ४ ॥ गलीआरें
मुनिवर मल्या ॥ हुं० ॥ वांदे कृष्ण नरेश रे ॥ हुं०
॥ किणही मिथ्यात्वी देखीने ॥ हुं० ॥ आव्यो
भाव विशेष रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ५ ॥ आवो अम

घर साधुजी ॥ढुं०॥ ल्यो मोदक बे शुद्ध रे॥ढुं०॥ रिखीजी लइ आवीया॥ ढुं० ॥ प्रजुजी पास विशुद्ध रे ॥ ढुं०॥ ढं०॥ ६॥ मुज लब्धें मोदक मि ल्या॥ढुं०॥ मुजने कहो कृपाल रे॥ढुं०॥ लब्धि नहीं वत्स ताहरी ॥ ढुं० ॥ श्रीपति लब्धि नि हाल रे ॥ ढुं० ॥ ढं० ॥ ७ ॥ तो मुजने लेवो नहीं ॥ ढुं० ॥ चाल्यो परठण काज रे ॥ढुं०॥ ईं ट निंजाडे जाइने ॥ ढुं० ॥ चूरे कर्म समाज रे ॥ ॥ ढुं० ॥ ढं० ॥ ७ ॥ आवी सूधी जावना ॥ ढुं० ॥ पाम्यो केवल नाण रे ॥ ढुं० ॥ ढंढण ऋषि मुगतें गया ॥ ढुं० ॥ कहे जिनहर्ष सुजाण रे ॥ ढुं० ॥ ढं० ॥ ए ॥ इति ढंढण ऋषी सद्याय ॥

॥ अथ अइमंताजीनी सद्याय ॥

॥ श्री अइमंता मुनिवरजूके, करणीकी बलि हारी वे ॥ खट वर्षनके संजम लीनो, वीरवचन चित्त धारी वे ॥श्री०॥ १॥ विजय नृपति श्री देवी नंदन, पोलासपुर अवतारी वे ॥ अंग अग्यार

पढे गुण आदर, त्रिविध त्रिविध अविकारी वे ॥श्री०॥२॥तपगुण रयण संवत्सर आदिक,करकें काय उद्धारी वे ॥ प्रभु आदेशें विपुलाचल परि, करी अणसण अति भारी वे ॥ श्री० ॥३॥ केवल पाय मुक्ति गये मुनिवर, कर्म कलंक निवारी वे ॥ अढार अडताले तिहिं गिरि उपर, कीनी थापना सारी वे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ वाचक अमृत धर्म सुगुरुके, सुपसायें सुविचारी वे ॥ शिष्य क्षमाकल्याण हरख धर, गुण गावे अति जयकारी वे ॥ श्री०॥ ५ ॥ इति सद्याय॥

॥ अथ करकंडू प्रत्येक बुधजीनी सद्याय ॥

॥ चंपा नगरी अति भली ॥ हुं वारी लाल ॥ दधिवाहन भूपाल रे ॥ हुं वारी लाल ॥ पद्मावती कूखें उपनो ॥ हुं० ॥ कर्मे कीधो चंडाल रे ॥ हुं० ॥ १ ॥ करकंडूने करुं वंदणा ॥ हुं० ॥ पहिलो प्रत्येक बुध रे ॥ हुं० ॥ गिरुवाना गुण गावतां ॥ हुं० ॥ संमकित थाये शुद्ध रे ॥ हुं०

॥ २ ॥ लाधी वांशनी लाकडी ॥ हुं० ॥ थयो कंचनपुर राय रे ॥ हुं० ॥ बापसुं संग्राम मांडी ने ॥ हुं० ॥ साधवी लीउ समजाय रे ॥ हुं०॥३॥ वृषभ रूप देखी करी ॥ हुं० ॥ प्रतिबोध पाम्यो नरेश रे ॥ हुं० ॥ उत्तम संजम आदस्यो ॥ हुं० देवता दीधो वेश रे ॥ हुं० ॥ ४ ॥ कर्म खपाय मुगतें गया ॥ हुं० ॥ करकंडू रुषि राय रे ॥ हुं० ॥ समयसुंदर कहे साधुने ॥ हुं० ॥ प्रणम्यां पातक जाय रे ॥ हुं० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ मनोरमा सतीनी सद्याय ॥

॥ मोहनगारी मनोरमा, शेठ सुदर्शन नारी रे ॥ शील प्रनावें शासनसुरी, थइ जस सान्निध्यकारी रे ॥ मो० ॥ १ ॥ दधिवाहन नृपनी प्रिया, अनया दीए कलंक रे ॥ कोप्यो चंपापति कहे, शूली रोपण वंक रे ॥ मो० ॥ २ ॥ ते निसुणीने मनोरमा, करे काउस्सग्ग धरी ध्यान रे ॥ दंपती शील जो निर्मलुं, तो वधो

शासन माम रे ॥ मो० ॥ ३ ॥ शूली सिंहासन थयुं, शासन देवी हजूर रे ॥ संजम ग्रही थयां केवली, दंपती दोय सनूर रे ॥ मो० ॥ ४ ॥ ज्ञानविमल गुण शीलथी, शासन शोभ चढावे रे ॥सुर नर सवि तस किंकरा,शिवसुंदरी ते पावे रे ॥ मो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ क्रोधनी सज्झाय ॥

॥ कडुवां फल छे क्रोधनां, ज्ञानी एम बोले ॥ रीशतणो रस जाणीयें,हालाहल तोलें ॥क० ॥ १ ॥ क्रोधें क्रोड पूरव तणुं, संजम फल जाय ॥ क्रोध सहित तप जे करे, ते तो लेखें न थाय ॥ क० ॥ २ ॥ साधु घणो तपीयो हुतो, धरतो मन वैराग ॥ शिष्यना क्रोधथकी थयो, चंमकोशीयो नाग ॥ क० ॥ ३ ॥ आग उठे जें घरथकी, ते पहेलुं घर बाले ॥ जलनो जोग जो नवि मले, तो पासेंनुं परजाले ॥ क० ॥ ॥ ४ ॥ क्रोधतणी गति एहवी, कहे केवलनाणी

॥ दाण करे जे हेतनी, जालवजो एम जाणी ॥ ॥ क० ॥ ५ ॥ उदयरतन कहे क्रोधने, काढजो गले साही ॥ काया करजो निरमली, उपशम रस नाही ॥ क०॥ ६ ॥ इति क्रोधनी सज्झाय ॥

॥ अथ माननी सज्झाय ॥

॥ रे जीव मान न कीजीयें, माने विनय न आवे रे ॥ विनय विना विद्या नहीं, तो किम समकित पावे रे ॥ रे० ॥ १ ॥ समकित विण चारित्र नहीं, चारित्र विण नहीं मुक्ति रे ॥ मुक्तिनां सुख छे शाश्वतां, ते केम लहियें जुक्ति रे ॥ रे० ॥ ॥ २ ॥ विनय वडो संसारमां, गुणमां अधिकारी रे ॥ मानें गुण जाये गली, प्राणी जो जो विचारी रे ॥ रे० ॥ ३ ॥ मान कर्युं जो रावणें, ते तो रामें मार्यो रे ॥ दुर्योधन गरवें करी, अंतें सवि हार्यो रे ॥ रे० ॥ ४ ॥ शूकां लाकडां सारिखो, दुःखदायी ए खोटो रे ॥ उदयरत्न कहे मानने, देजो देशवटो रे ॥ रे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ मायानी सद्याय ॥

॥ समकितनुं मूल जाणीयें जी, सत्य वचन साक्षात ॥ साचामां समकित वसे जी, मायामां मिथ्यात्व रें ॥ प्राणी म करीश माया लगार ॥ ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मुख मीठो जूठो मनें जी, कूड कपट नो रे कोट ॥ जीन्नें तो जी जी करे जी, चित्तमांहे ताके चोट रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ आप गरजें आघो पडे जी, पण न धरे विश्वास ॥ मनशुं राखे आंतरो जी, ए मायानो पास रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ जेहशुं बांधे प्रीतडी जी, तेहशुं रहे प्रतिकूल ॥ मेल न छंडे मन तणो जी, ए माया नुं मूल रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ तप कीधुं माया करी जी, मित्रशुं राख्यो रे नेद ॥ मल्ली जिनेश्वर जाणजो जी, तो पाम्या स्त्री वेद रे ॥ प्रा० ॥ ॥ ५ ॥ उदयरत्न कहे सांन्नलो जी, मेलो मायानी बुद्ध ॥ मुक्ति पुरी जावा तणो जी, ए मारग छे शुद्ध रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ लोजनी सज्झाय ॥

॥ तुमें लक्षण जो जो लोजनां रे, लोजें ज
न पामे शोजना रे ॥ लोजें माह्या मन मोव्या
केर रे, लोज़ें डुर्घट पंथें संचरे रे ॥ तु० ॥ १ ॥
तजे लोज तेहनां लेजं नामणां रे, वली पाये
नमीने करुं खामणां रे ॥ लोजें मरजादा न र
हे केहनी रे, तुमें संगत मेलो तेहनी रे ॥ तु०
॥ २ ॥ लोजें घर मेहेली रणमां मरे रे, लोजें
ऊंच ते नीचुं आचरे रे ॥ लोजें पाप जणी पग
लां जरे रे, लोजें अकारज करतां न उसरे रे ॥
तु० ॥ ३ ॥ लोजें मनडुं न रहे निर्मलुं रे, लो
जें सगपण नासे वेगलुं रे ॥ लोजें न रहे प्रीति
ने पावडुं रे, लोजें धन मेले बहु एकडुं रे ॥तु०
॥ ४ ॥ लोजें पुत्र प्रत्यें पिता हणे रे, लोजें ह
त्या पातक नवि गणे रे ॥ ते तो दाम तणे लो
जें करी रे, उपर माणधर थाये ते मरी रे ॥ तु०
॥ ५ ॥ जोतां लोजनो थोज दिसे नहीं रे, एवुं

सूत्र सिद्धांतें कह्युं सही रे ॥ लोनें चक्री शुंभु म नामें जुन रे, ते तो समुद्र मांहे मूबी मुवो रे ॥ तु० ॥ ६ ॥ एम जाणीने लोनने छंमजो रे, एक धर्मशुं ममता मंमजो रे ॥ कवि उदयरत्न नांखे मुद्दा रे, वंदूं लोन तजे तेहने सदा रे॥तु०॥७॥इति

॥ अथ श्री श्रावक करणीनी सद्याय ॥

॥ चोपाई ॥ श्रावक तुं उठे परनात, चार घडी ले पाछली रात ॥ मनमां समरे श्री नवकार, जेम पामे नव सायर पार ॥ १ ॥ कवण देव कवण गुरु धर्म, कवण अमारुं छे कुलकर्म ॥ कवण अमारो छे व्यवसाय, एवुं चिंतवजे मन मांय ॥ २ ॥ सामायिक लेजे मन शुद्ध, धर्मनी हैडे धरजे बुद्ध ॥ पडिक्कमणुं करे रयणी तणुं, पातक आलोये आपणुं ॥ ३ ॥ कायाशक्तें कर पच्चक्काण, सूधी पाले जिननी आण ॥ नणजे गणजे स्तवन सद्याय, जिण हुंति निस्तारो थाय ॥ ४ ॥ चितारे नित्य चनदे नीम, पाले द

या जीवे नां सीम ॥ देहरे जाइ जुहारे देव, द्रव्यज्नावथ्री करजे सेव ॥ ५ ॥ पोशालें गुरु वंदजे जाय, सुणे वखाण सदा चित्त लाय ॥ निर्दूपण सुजंतो आहार, साधुने देजे सुविचार ॥ ॥ ६ ॥ सामिवत्सल करजे घणुं, सगपण मोटो हुं स्वामितणुं ॥ डुःखीया हीणा दीनने देख, करजे तास दया सुविशेप ॥ ७ ॥ घर अनुसारें देजे दान, मोहोटाशुं म करे अजिमान ॥ गुरुने मुखे लेजे आखडी, धर्म न मूकीश एके घडी ॥ ॥ ८ ॥ वारु शुद्ध करे व्यापार, उंग अधिका नो परिहार ॥ म जरे केनी कूडी साख, कूडा जनशुं कथन म जांख ॥ ए ॥ अनंतकाय कही बत्रीश, अजक्ष्य बाविशे विश्वावीश ॥ ते जक्षण नवि कीजें किमे, काचां कूणां फल मत जिमे ॥ १० ॥ रात्रिजोजनना बहु दोप, जाणीने करजे संतोप ॥ साजी साबू लोहने गली, मधु धावडी मत वेचो वली ॥ ११ ॥ वली म करावे

रंगण पास, दूषण घणां कह्यां छे तास ॥ पाणी
गलजे बे बे वार, अणगल पीतां दोष अपार
॥ १२ ॥ जीवाणीनां करे यत्न, पातक छंमी क
रजे पुण्य ॥ बांणां इंधण चूलो जोय, वावरजे
जिम पाप न होय ॥ १३ ॥ घृतनी परें वावरजे
नीर, अणगल नीर म धोइश चीर ॥ ब्रह्मव्रत
सूधुं पालजे, अतिचार सघला टालजे ॥ १४ ॥
कह्यां पन्नरे कर्मादान, पापतणी परहरजे खाण
॥ शिश म लेजे अनरथ दंम, मिथ्या मेल म
जरजे पिंम ॥ १५ ॥ समकित शुद्ध हैडे राखजे,
बोल विचारीने जांखजे ॥ पांच तिथि म करो
आरंज, पालो शीयल तजो मन दंज ॥ १६ ॥
तेल तक्र घृत दूधने दहिं, उघाडां मत मेलो स
ही ॥ उत्तम ठामें खरचो वित्त, पर उपगार करो
शुजचित्त ॥ १७॥ दिवस चरिम करजे चोविहा
र, चारे आहार तणो परिहार ॥ दिवस तणां
आलोए पाप, जिम जांजे सघला संताप ॥१८॥

संध्यायें आवश्यक साचवे, जिनवर चरण शरण नवनवे ॥ चारे शरण करी दृढ होय, सागारी अणसण ले सोय ॥ १९ ॥ करे मनोरथ मन एहवा, तीरथ शत्रुंजे जायवा ॥ समेतशिखर आबू गिरनार, नेटीश हुं धन्य धन्य अवतार ॥ २० ॥ श्रावकनी करणी छे एह, एहथी थाय भवनो छेह ॥ आठे कर्म पडे पातलां, पाप तणा छूटे आमला ॥ २१ ॥ वारु लहियें अमर विमान, अनुक्रमें पामे शिवपुरथान ॥ कहे जिनहर्ष घणे ससनेह, करणी दुःखहरणी छे एह ॥ २२ ॥ इति श्रीश्रावकनी करणीनी सद्याय ॥

॥ अथ शांतिजिननी आरती ॥

॥ जय जय आरती शांति तमारी, तोरा चरणकमलकी में जाउं बलिहारी ॥ जय० ॥ १ ॥ विश्वसेन अचिराजिके नंदा, शांतिनाथ मुख पूनमचंदा ॥ जय० ॥ २ ॥ चालीश धनुष्य सोवनमय कायां, मृगलंछन प्रभुचरण सुहाया ॥ ज

य० ॥ ३ ॥ चक्रवर्त्ती प्रभु पांचमा शोहे, शोलं मा जिनवर जग सहु मोहे ॥ जय० ४ ॥ मंगल आरती तोरें कीजें; जन्म जन्मनो लाहो लीजें ॥ जय० ॥ ५ ॥ कर जोडी सेवक गुण गावे, सो नर नारी अमर पद पावे ॥ जय० ॥ ६ ॥ इति॥

॥ अथ श्री आदिजिन आरती ॥

॥ अपछरा करती आरती जिन आगें ॥ हांरे जिन आगें रे जिन आगें ॥ हांरे एतो अविचल सुखडां मागे ॥ हांरे नाभी नंदन पास ॥ अपछरा करती आरती जिन आगें ॥ १ ॥ ता थेइ नाटक नाचती पाय ठमके ॥ हांरे दोय चरणे झांझर झमके ॥ हांरे सोवन घूघरी घमके ॥ हांरे लेती फूदडी बाल ॥ अ० ॥ २ ॥ ताल मृदंगने वांशली डफ वेणा ॥ हांरे रूडा गावंती स्वर झीणा ॥ हांरे मधुर सुरासुर नयणां ॥ हांरे जोती मुखडुं निहाल ॥ अ० ॥ ३ ॥ धन्य म रुदेवी मातने प्रभु जाया ॥ हांरे तोरी कंचन व

रणी काया ॥ हारे मेंतो पूरव पुण्यें पाया ॥ हा
रे देख्यो तोरो देदार ॥ अ० ॥ ४ ॥ प्राणजीवन
परमेश्वर प्रनु प्यारो ॥ हारे प्रनु सेवक हुं हुं
तारो ॥ हांरे नवो नावनां दुःखडां वांरो ॥ हां
रे तुमें दीन दयाल ॥ अ० ॥ ५ ॥ सेवक जाणी
आपणो चित्त धरजो ॥ हांरे मोरी आपदा स
घली हरजो ॥ हांरे मुनि माणक सुखीउ करजो
॥ हांरे जाणी पोतानो बाल ॥ अ० ॥६॥ इति ॥

॥ अथ जिन नव अंग पूजाना दोहा लिख्यने॥

॥ जल नरि संपुट पत्रमां, युगलिक नर पू
जंत ॥ रुषन्न चरण अंगुठडो, दायक नवजल
अंत ॥ १ ॥ जानु बलें काउस्सग्ग रह्या, विच
स्या देश विदेश ॥ खडां खडां केवल लह्युं, पू
जो जानु नरेश ॥ २ ॥ लोकांतिक वचनें करी,
वरश्या वरशी दान ॥ करकांमे प्रनु पूजना, पू
जो नवि बहुमान ॥ ३ ॥ मान गयुं दोय अंस
थी, देखी वीर्य अनंत ॥ नुजाबलें नवजल त

ख्या, पूजो खंध महंत ॥ ४ ॥ सिद्ध शिला गुणं ऊजली, लोकांतें जगवंत ॥ वसिया तेणें कार ण जवि, शिरशीखा पूजंत ॥ ५ ॥ तीर्थंकर प द पुण्यथी, तिहुअण जन सेवंत ॥ त्रिजुवन ति लक समा प्रजु, जाल तिलक जयवंत ॥ ६ ॥ शोल पहोर प्रजु देशना, कंठविवर वर्तुल ॥ मधुरध्वनि सुर नर सुणे, तेणें गले तिलक अ मूल ॥ ७ ॥ हृदय कमल उपशाम बलें, बाल्या रागने रोष ॥ हीम दहे वन खंमने, हृदय तिल क संतोप ॥ ८ ॥ रत्नत्रयी गुण उजली, सकल सुगुण विशराम ॥ नाजि कमलनी पूजना, क रतां अविचल धाम ॥ ए ॥ उपदेशक नव तत्त्व ना, तेणे नव अंग जिणंद ॥ पूजो बहुविध रा गथी, कहे शुज वीर मुणिंद ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पार्श्वनाथनी आरती ॥

॥ आरती कीजें पास कुंवरकी, जन्म मरण जय हर जिनवरकी ॥ नयरी वणारसी जन्म क

हावे, वामा मात प्रभु हुलरावे ॥ आ० ॥ १ ॥ यौवन वन फल भोगि जणावे, नारी प्रभावती सती परणावे ॥ काय निरोग भोग विलसावे, पुरिसादाणी बिरुद धरावे ॥ आ० ॥ २ ॥ ज्ञान विलोकी कमठ हरावे, गहन दहनथी फणी नि कसावे ॥ सेवक मुख नवकार सुणावे, धरणराय पदवी निपजावे ॥ आ०॥३॥ क्रोधी कमठ हठ त प लय लावे, जिन दर्शनमें सुरगति पावे ॥ भोग संयोग वियोग बनावे, संयम श्री आतम प रणावे ॥ आ० ॥४॥ ध्यान लेहरियां काउस्सग्ग भावे, स्वामिकुं वड लय तव गावे ॥ मेघमालि जलधर वरसावे, जब नासा भर भर जल लावे. ॥ आ० ॥ ५ ॥ तव धरणींद्रासन कंपावे, पद्मा वति साथें त्यां आवे ॥ नाथ उरध सिर फणी कुं धरावे, जई अपराधी देव भरावे ॥ आ० ॥ ६ ॥ सांई शरण लहि समकित पावे, फणिप ति नाटक बिधि विरचावे ॥ प्रभु चरणे नमी गे

ह सधावे, जगदीश्वर घनघाति हरावे ॥ आ० ॥ ७ ॥ साकारें केवल ज्ञग पावे, धर्म कही जिननाम खपावे ॥ भूतल विचरी मोक्ष सिधावे, अगुरु लघुं गुण प्रभु निपजावे ॥ आ० ॥ ८ ॥ आरतिगतकी आरति गावे, श्रोता वक्ता रति नतरावे ॥ मनमोहन प्रभु पास कहावे, श्रीगुभवीर ते शीश नमावे ॥ आ० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ मंगल चार ॥

॥ चारो मंगल चार, आज महारे चारो मंगल चार ॥ देख्यो दरस सरस जिनजीको, शोभा सुंदर सार ॥ आज० ॥ १ ॥ छिनुं छिनुं छिनुं मनमोहन चरचो, घसी केसर घनसार ॥ आ० ॥ २ ॥ विविध जातिके पुष्प मगावो, मोघर लाल गुलाल ॥ आ० ॥ ३ ॥ धूप उखेवोने करो आरति, मुख बोलो जयकार ॥ आ० ॥ ४ ॥ हर्ष धरी आदीसर पूजो, चोमुख प्रतिमा चारु ॥ ॥ आ० ॥ ५ ॥ हैये धरी भाव भावना भावो,

जिम पामो नवपार ॥ आ० ॥६॥ सकलचंद से
वक जिनजीको, आनंदघन उपगार ॥आ०॥७॥

॥ अथ श्री समेतशिखर गिरिनुं स्तवन ॥

क्रीडा करी घेर आविउ ॥ ए देशी ॥

॥ समेत शिखर जिन वंदियें, महोटुं तीर
थ एह रे ॥ पार पमाडे नव तणो, तीरथ कहि·
यें तेह रे ॥ स० ॥ १ ॥ अजितथी सुमति .जि
णंद लगें, सहस मुनि परिवार रे ॥ पद्मप्रनु
शिव सुख वख्या, त्रणशें अड अणगार रे ॥
स० ॥ २ ॥ पांचशें मुनिपरिवारशुं, श्री सुपास
जिणंद रे ॥ चंदप्रनु श्रेयांस लगें, साथें सहस
मुणिंद रे ॥ स० ॥ ३ ॥ ब हजार मुनिराजशुं;
विमल जिनेश्वर सिद्धा रे ॥ सात सहसशुं चउ
दमा, निज कारज वर कीधां रे ॥ स० ॥ ४ ॥
एकशो आठशुं धर्मजी, नवशेंशुं शांतिनाथ
रे ॥ कुंथु अर एक सहसशुं, साचो शिवपुर
साथ रे ॥ स० ॥ ५ ॥ मल्लिनाथ शत पांचशुं,

मुनि नमि हजार रे ॥ तेत्रीश मुनियुत पास जी, वरिया शिव सुख सार रे ॥ स० ॥ ६ ॥ सत्तावीश सहस त्रणशें, उपर ओगणपंचाश रे ॥ जिन परिकर बीजा केइ, पाम्या शिवपुर वास रे ॥ स० ॥ ७ ॥ ए वीशे जिन इण गिरि, सिद्धा अणसण लेइ रे ॥ पद्मविजय कहे प्रणमीनें, पास शामलनुं चेइ रे ॥ स० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ समेत शिखरजीनुं स्तवन ॥

॥ जइ पूजो लाल, समेत शिखरगिरि उपर पासजी शामला ॥ जिन जक्ते लाल, करतां जिनपद पावे टले जव आमला ॥ ए आंकणी ॥ उरी पाली दर्शन करियें, जव जव संचित पातक हरियें, निज आतम पुण्यरसें जरियें ॥ जइ० ॥ १ ॥ ए गिरिवर नित्य सेवा कीजें, जिम शिव सुखडां करमां लीजें, चिदानंद सुधारस नित्य पीजें ॥ जइ० ॥ २ ॥ जिहां शिवर मणी वरवा आव्यां, अजितादिक वीशे जिन

राया, बहु मुनिवर युत शिव वधु पाया ॥ जइ०
॥ ३ ॥ तेणें ए उत्तम गिरि जाणो, करो सेवा
आतम करी साणो, ए फरी फरी नहीं आवे
टाणो ॥ जइ० ॥४ ॥ तुमें धन कण कंचननी मा
या, करतां अशुचि कीनी काया, किम तरशो
विण ए गिरिराया ॥ जइ० ॥ ५ ॥ इम शुभम
ति वचन सुणी ताजां, ए भजो जगगुरु आत
म राजा, गिरि फरसे धरी मन शुचि माजा ॥
जइ० ॥ ६॥ संवत सर रिषि गज चंद समे, फा
गुणशुदि त्रीज बुधवार गमे, गिरि दर्शन कर
तां चित्त रमे ॥ जइ० ॥ ७ ॥ प्रभु पद पद्म तणी
सेवा, करतां नित्य लहियें शिव मेवा, कहे रूप
विजय मुज ते देवा ॥ जइ० ॥८ ॥ इति ॥

॥अथ श्री गिरनार भूषण नेमनाथजीनुं स्तवन

॥ गोवाळरडां चारवां, आहिरनो अवतार ॥
रूडुं गोकुलीयुं ॥ ए देशी ॥

॥ राजुल उभी मालीये, जंपे जोडी हाथ ॥

साहेब शामलीया ॥ कामणगारा कंथजी, उ
रा आवो नाथ ॥ सा० ॥ १ ॥ मुख मटकालुं ता
हरूं, अणिआलां लोचंन्न ॥ सा० ॥ मोहनगा
री मूरतें, मोह्युं माहरूं मन्न ॥ सा०॥ २ ॥ वा
हाला किम रह्या वेगला, तोरण उन्ना आय ॥
सा० ॥ पूरव पुण्यें में लह्यो, एवो आज बनाव
॥ सा० ॥ ३॥ एहवे सहु पशुयें मली,कीधो स
बलो शोर ॥सा०॥ गेडावी पाग वल्या, राजुल
चित्तडुं चोर ॥ सा० ॥ ४ ॥ सहसावनमांहे जइ,
सहस पुरुष संघात ॥ सा० ॥ सर्व विरति ना
री वरी, आपण सरखी जात ॥ सा० ॥ ५ ॥ पं
चावनमें दाहाडले,पाम्या केवल नाण ॥सा०॥
लोकालोक प्रकाश तुं, जाणे·उग्यो न्नाण ॥
सा० ॥ ६ ॥ राजुल आवी रंगशुं, लागी प्रन्नु
ने पाय ॥ सा० ॥ मुजने मूकी एकली, केम शि
वमंदिर जाय ॥ सा० ॥ ७ ॥ वीतराग न्नावें वं
द्या, संजम लेइ जिनहाथ ॥ सा० ॥ शिवमंदि

र नेलां थयां, अविचल बेहुनो साथ ॥ सा०
॥ ८ ॥ वाचक रामविजय कहे, सुण स्वामी अ
रदास ॥ सा० ॥ राजुल जेम तारी तुमें, तेम
तारो हुं दास ॥ सा० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आबुजीनुं स्तवन ॥ चित्त चेतोरे ॥
॥ ए देशी ॥

॥ आदि जिणेसर पूजतां, दुःख मेटो रे ॥
आबु गढ दृढ चित्त ॥ नवि जइ नेटो रे ॥ देल
वाडे देहरां नमी ॥ दु० ॥ चार परिमित नित्य ॥
न० ॥ १ ॥ वीश गज बल पदमावती ॥ दु० ॥
चक्केसरी द्रव्य आण ॥ न० ॥ शंख दिए अंबी
सुरि ॥ दु० ॥ पंच कोश वहे बाण ॥ न० ॥
॥ २ ॥ बार पादसा जींतीने ॥ दु० ॥ विमल मं
त्री आल्हाद ॥ न० ॥ द्रव्य नरी धरती कीयो
॥ दु० ॥ ऋषभ देव प्रासाद ॥ न० ॥ ३ ॥ बिहुं
तर अधिका आठशें ॥ दु० ॥ बिंब प्रमाण क
हाय ॥ न० ॥ पन्नरशें कारीगेरं ॥ दु० ॥ वर्ष

त्रिकें ते थाय ॥ ज० ॥ ४ ॥ जव्य अनुपम ख
रचियुं ॥ डु० ॥ लाख त्रेपनं बार कोड ॥ ज० ॥
संवत दश अठ्याशीयें ॥ डु० ॥ प्रतिष्ठा करी
मन होड ॥ ज० ॥ ५ ॥ देराणी जेठाणीना गों
खडा ॥ डु० ॥ लाख अढार प्रमाण ॥ ज० ॥
वस्तुपाल तेजपालनी ॥ डु० ॥ ए दोइ कांता
जाण ॥ ज० ॥ ६ ॥ मूल नायक नेमीसरु ॥डु०
चारशें अडशठि बिंब ॥ज० ॥ रूपज्ज धातुमयी
देहरे ॥ डु०॥ एकशो पीस्तालीश बिंब ॥ज०॥
॥७॥ चौमुख चैत्य जूहारियें ॥डु०॥ काउस्सग्गी
या गुणवंत ॥ज०॥ बाणुं मित तेहमां कहुं ॥डु०॥
अगन्यासी अरिहंत ॥ज०॥८ ॥ अचल गढें प्र
जुजी घणा ॥डु०॥ जात्रा करो हुशियार ॥ज०॥
कोडितपें फल जे लहे ॥ डु० ॥ ते प्रजु जक्तिं वि
चार ॥ज०॥ ए॥ सालंबन निरालंबनें ॥ डु० ॥
प्रजु ध्यानें जव पार ॥ज०॥ मंगललीला पामियें
॥ डु०॥ वीरवि जयं जयकार ॥ ज०॥१०॥इति॥

॥ अथ श्री अर्बुदगिरिनुं स्तवन ॥

॥ चालो चालोने राज, गिरिधर रमवा जइ येँ ॥ ए देशी ॥

॥ आवो आवोने राज, श्री अर्बुद गिरि जइयें ॥ श्री जिनवरनी नक्ति करीने, आतम निर्मल थइयें ॥ आ० ॥ ए आंकणी ॥ विमल वसहीना प्रथम जिणेसर, मुख निरखे सुख पइयें ॥ चंपक केतकी प्रमुख कुसुमवर, कंठें टोमरू ठवीयें ॥ आ० ॥ १ ॥ जमणे पासें लूणग वसही, श्री नेमीसर नमीयें ॥ राजिमती वर नयणें निरखी, दुःख दोहग सवि गमीयें ॥ आ० ॥ २ ॥ सिद्धाचल श्री रूषन्न जिनेश्वर, रैवतनेम समरीयें ॥ अर्बुद गिरिनी यात्रा करतां, चिहुं तिर्थ चित्त धरीयें ॥ आ० ॥ ३ ॥ मंरूप मंरूप विविध कोरणी, निरखी हियडे ठरीयें ॥ श्रीजिनवरनां बिंब निहाली, नर नव सफलो करीयें ॥ आ० ॥४॥ अविचल गढ आदीश्वर प्रणमी,

अशुभ कर्म सवि हरीयें ॥ पास शांति निरखी जब नयणें, मन मोह्युं डुंगरीये ॥ आ० ॥ ५ ॥ पाजें चढतां गजम वाधे, जेम घोडे पाखरीए ॥ सकल जिनेसर पूजी केसर; पाप पङल सवि हरीयें ॥ आ० ॥ ६॥ एक ध्यानें प्रभुने ध्यातां, मन मांहि नवि डरीयें ॥ ज्ञानविमल कहे प्रभु सुपसायें, सकल संघ सुख करीयें ॥ आ०॥७॥

॥ अथ श्री संभवनाथजीनुं स्तवन ॥

॥ साहिब सांभलो रे, संभव अरज हमारी ॥ भवोभव हुं भम्यो रे, न लहि सेवा तुमारी ॥ नरय निगोदमां रे, तिहां हुं बहु भव भमीउ ॥ तुम विना दुःख सह्यां रे, अहोनिश क्रोधें धमधमियो ॥ सा० ॥ १ ॥ इंद्रिय वश पड्यो रें, पाल्यां व्रत नवि सुसें ॥ त्रस पण नवि गण्या रे, हणीया थावर हुंशे ॥ व्रत चित्त नवि धर्यां रे, बीजुं साचुं न बोल्युं ॥ पापनी गोठडी रे, तिहा में हइडलुं खोल्युं ॥ सा० ॥२॥ चोरी

में करी रे, चउ विह अदत्त न टाल्युं ॥ श्रीजि
न आणाशुं रे, में नवि संजम पाल्युं ॥ मधुकर
तणी परें रे, शुद्ध न आहार गवेख्यो ॥ रस
ना लालचें रे, नीरस पिंड उवेख्यो ॥ सा० ॥
॥ ३ ॥ नर नव दोहिलो रे, पामि मोह वश
पडियो ॥ परस्त्री देखीने रे, मुझ मन तिहां ज
ई अडिउ ॥ काम न को सस्यां रे, पापें पिंड में
नरिउ ॥ शुद्ध बुद्ध नवि रही रे, तेणें नवि आतम
तरीयो ॥ सा० ॥ ४ ॥ लक्ष्मीनी लालचें रे, में
बहु दीनता दाखी ॥ तो पण नवि मली रे, म
ली तो नवि रही राखी ॥ जे जन अभिलखे रे,
ते तो तेहथी नासे ॥ तृण सम जे गणे रे, ते
हनी नित्य रहे पासे ॥ सा०॥५॥ धन धन ते न
रा रे, एहनो मोह विछोडी ॥ विषय निवारीने
रे, जेहने धर्ममां जोडी ॥ अनक्ष्य ते में नख्यां
रे, रात्रिनोजन कीधां ॥ व्रत ज नवि पालियां
रे, जेहवां मूलथी लीधां ॥ सा० ॥ ६ ॥ अनंत

नव हुं नम्यो रे, नमतां साहिब मलियो ॥ तुं म विना कोण दिये रे, बोध रयण मुज बलियो ॥ संनव आपजो रे, चरण कमल तुम सेवा ॥ नय एम वीनवे रे, सुणजो देवाधिदेवा ॥सा०॥७॥

॥ अथ श्री शंखेश्वरजीनुं स्तवन ॥

॥ सहजानंदी शीतल सुख नोगी तो, हरि दुःख हरियें सतावरी ॥ केशार चंदन घोली पूजो रे कुसुमें ॥ अमृतवेलिना वैरीनी बेटी तो, कंत हार तेहनो अरि ॥ के० ॥ १ ॥ तेहना स्वामिनी कांतानुं नाम तो, एक वरणें लक्षण नरी ॥ के० ॥ ते धुर थापीने आगल ठवियें तो, ऋष्माण चक्क खंधारी ॥ के० ॥ २ ॥ फरसनो वरण ते नयन प्रमाणे तो, मात्रा सुंदर शिर धरी ॥ के० ॥ वीसराज सुत दाहक नामें तो, तिगवरणादि दूरें करी ॥ के० ॥३ ॥ एकवीशमे फरसे धरी करण तो, अर्थानिध ते संम हरी ॥ के० ॥ अंतस्थें बीजो स्वरः टाली तो,

शिवगामी गति आचरी ॥ के० ॥ ४ ॥ वीश फरस वली संयम माने तो, आदिकरण धरी दिल धरी ॥ के० ॥ एणें नामें जिनवर नित्य ध्याउं तो, जिनहरें जिनकुं परिहरी ॥ के० ॥५॥ त्र्यंबकें दाह्यो वृष जन बोले तो, वात ए दिलें में न ऊतरी ॥ के० ॥ अज ईश्वर पण सीतानी आगें तो, जास विवश नटता धरी ॥ के० ॥६॥ ते जिन तस्कर तूं जिन राजा तो, हरि प्रण मे तुज पाउं परी ॥ के० ॥ बाल पणे उपगारें ह रिपति, सेवन ळल लंछन हरि ॥ के० ॥ ७ ॥ प्र नु प्रत्ययक जशालीहोत रहियें तो, नव नव मां नहीं शाली कली ॥ के० ॥ मन मंदिर मह राज पधारे तो, हरि उदयें न विन्नावरी ॥ के० ॥ ८ ॥ सारंगमां संपा जीउं ऊरकत, ध्यान अ नुनव लेहरी ॥ के० ॥ श्री शुनवीर विजय शि वहूने तो, घर तेडंतां दोय घरी ॥ के० ॥ ए ॥

॥ अथ श्री शंखेश्वरजीनुं स्तवन ॥

॥ अंतरजामी सुण अलवेसर, महिमा त्रि
जग तुमारो ॥ सांजलीने आव्यो हुं तीरें, जनम
मरण ङुःख वारो ॥ १ ॥ सेवक अरज करे बे रा
ज, अमने शिवसुख आपो ॥ ए आंकणी ॥ स
हुकोनां मनवंबित पूरो, चिंता सहुनी चूरो ॥ ए
हवुं बिरुद बे राज तुमारुं, केम राखो गे दूरो ॥
से० ॥ २ ॥ सेवकने वलवलतो देखी, मनमां म
हेर न धरशो ॥ करुणासागर केम कहेवाशो,
जो उपगार न करशो ॥ से० ॥ ३ ॥ लटपटनुं
हवे काम नहीं बे, प्रत्यक्ष दरिसण दीजें ॥ धुं
आडे धीजुं नहीं साहिब, पेट पड्यां पतीजें ॥
से० ॥ ४ ॥ श्री शंखेश्वर मंमण साहिब, विन
तडी अवधारो ॥ कहे जिनहर्ष मया करी मुजने,
नवसायरथी तारो ॥ से० ॥ ५ ॥ इति० ॥.

॥ अथ श्री पार्श्वनाथजीनुं स्तवन ॥

॥सजंनी मोरी पास जिणेसर पूजो रे ॥स०॥

जगमां देव न दूजो रे ॥ स० ॥ सारंग पुर श्र
णगार रे ॥ स० ॥ पूजा दोय प्रकार रे ॥ १ ॥
स० ॥ जिनपडिमा जयकार रे ॥ स० ॥ वारी
जाउं वार हजार रे ॥ ए आंकणी ॥ स० ॥ गण
धर सूत्रें घरवाणी रे ॥ स० ॥ सिद्धनी उपम
आणी रे ॥ स० ॥ समकितनी वृध्धिकारी रे
॥ स० ॥ ते केम जाशो निवारी रे ॥ स० ॥ २ ॥ स० ॥
नगवइ अंगें धारो रे ॥ स० ॥ चारण मुनि अधि
कारो रे ॥ स० ॥ जिनपडिमा जिनसरखी रे ॥ स० ॥
सूत्र उववाई निरखी रे ॥ स० ॥ ३ ॥ स० ॥ रायपसे
णी नांखी रे ॥ स० ॥ जीवाभिगमें दाखी रे ॥ स० ॥
व्यवहारें पण आखी रे ॥ स० ॥ शुद्धि पडिमा सा
खी रे ॥ स० ॥ ४ ॥ स० ॥ जंबूपन्नत्ति ठाणांग
रे ॥ स० ॥ बोले दशमुं अंग रे ॥ स० ॥ मोहा
निशीथें विचारो रे ॥ स० ॥ पूजानो अधि
कारो रे ॥ स० ॥ ५ ॥ स० ॥ सातमे अंगें वि
ख्यात रे ॥ स० ॥ आणंद श्रावक वात रे ॥ स० ॥

अनगढी पडिमा वारी रे ॥ स० ॥ सूधा सम
कित धारी रे ॥ स० ॥ ६ ॥ स० ॥ ज्ञाता पाठ
देखावे रे ॥ स० ॥ कुमति भरम न जावे रे ॥
स० ॥ एम अनेक सूत्र साख रे ॥ स० ॥ कहो
हवे केहनो वांक रे ॥ स० ॥ ७ ॥ स० ॥ अर्चा
अरोचक थाशे रे ॥ स० ॥ नव दंमकमां जाशे
रे ॥ स० ॥ जीव करम वश जाणो रे ॥ स० ॥
कुणं द्रुमक कुण राणो रे ॥ स० ॥ ८ ॥ स० ॥
जिनवर सेवा सारो रे ॥ स० ॥ विषय करो
परिहारो रे ॥ स० ॥ सेवा अबंधक भाव रे ॥
स० ॥ भवजल तरवा नाव रे ॥ स० ॥ ए ॥स०
॥ मणि उद्योत प्रभु साचो रे ॥ स० ॥ जेहवो
हीरो जाचो रे ॥ स० ॥ शंका मन नवि लावो
रे ॥ स० ॥ शुं झाझुं केहेवडावो रे ॥स०॥१०॥

॥ अथ शोल सतीनी सझाय प्रारंभ ॥

॥ चोपाई ॥ सरसती माता प्रणमुं मुदा, तुं
तूठी आपे संपदा ॥ शोल सतीनां लीजें नाम,

जेम मनवांछित सिझे काम ॥ १ ॥ ब्राह्मी सुंदरी सुलसा सती, जपतां पातक न रहे रती ॥ कौशल्या कुंती सति सार, प्रभावती नामें जयकार ॥ २ ॥ भगवती शीलवती भय हरे, सुखसंपति पद्मावती करे ॥ द्रौपदी पांडव घरणी जेह, शियल अखंड वखाण्युं तेह ॥ ३ ॥ चूला दमयंती दुःख हरे, शिवा देवी नित्य सान्निध्य करे ॥ चंदन बाला चढती कला, वीरपात्र दीधा बाकुला ॥ ४ ॥ राजिमती नवि परण्या नेम, तोहे राख्यो अविहड प्रेम ॥ सीतातणुं शीयल जग जयो, अग्नि टलीने पाणी थयो ॥ ५ ॥ धन्य धन्य सती सुभद्रा धीर, काचे तातणे चालणी नीर ॥ चंपापोल उघाडी चंग, मृगावती प्रणमुं मनरंग ॥ ६ ॥ एह छठी सती जपियें शोल, जिम लहियें ऋद्धि घृत गोल ॥ श्रीविनयविजय वाचक सुपसाय, रूपविजय भावें गुण गाय ॥ ७ ॥इति शोल सतीनी सझाय संपूर्ण॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीचोवीश जिननां एकशोने वीश
कल्याणकनी तिथि प्रारंभ ॥

॥ तिहां प्रत्येक तीर्थंकरनां पांच पांच कल्याणक छे तिहां एकेका कल्याणकने दिवसें गणणुं गणाय छे तें.आवी रीतेंः—के जे दिवसें श्रीतीर्थंकर परगतिथी चवीने माताना उदरने विषे आवे छे ते दिवसें च्यवन कल्याणक कहेवाय छे तेवारें "परमेष्टिनेनमः" एवो जाप जपाय छे तथा जे दिवसें श्री तीर्थंकरनुं जन्म थाय छे ते दिवसें जन्मकल्याणक कहेवाय छे तेवारे "अर्हतेनमः" एवो जाप जपाय छे तथा जे दिवसें श्रीतीर्थंकर दीक्षा लइ मुनिपणुं धारण करे छे, ते दिवसें दीक्षा कल्याणक कहेवाय छे तेवारे "नाथायनमः" एवो जाप जपाय छे तथा जे दिवसें श्री तीर्थंकर भगवानने केवल ज्ञान उत्पन्न थाय छे तेदिवसें संपूर्ण ज्ञान कल्याणक कहे वाय छे तेवारें "सर्वज्ञायनमः" ए जाप जपाय छे. तथा जे दिवसें श्रीतीर्थंकर भगवानने मोक्षनी प्राप्ति थाय छे ते दिवसें निर्वाण कल्याणक कहेवाय छे तेवारें "पारंगताय नमः" ए जाप जपाय छे. ए रीतें पांच कल्याणक एके

का तीर्थंकरनां गणतां चोवीश जिननां एकशो ने वीश कल्याणक थाय छे. तेनां दिवसोनुं यंत्र नीचे छाप्युं छे.

तेनी समज आ प्रमाणे छे के, प्रथमनां कोठामां जे त्रण बावीश इत्यादिक आंकडा लख्या छे ते जिहां त्रणनो आंक होय तिहां त्रीजा तीर्थंकर श्रीसंभव नाथ समजवा, अने जिहां बावीशनो आंक होय, तिहां बावीशमां तीर्थंकर श्रीनेमिनाथ समजवा, ए रीतें जिहां जे आंक होय तिहां तेटलामा तीर्थंकरनुं नाम समजी लेवुं. तेवार पछी प्रत्येक महीनाना शुक्ल अथवा कृष्ण पक्षमांहेलां जे जे पक्षमां श्रीतीर्थंकर परमात्माना जन्मादि कल्याणक थयां छे, ते पक्ष जणाव्या छे, तेवार पछी पांच, बार इत्यादिक जे आंक लखेला छे ते वद पांचम तथा बारस इत्यादिक तिथि समजवी, तेवार पछी केवलज्ञान तथा च्यवन इत्यादिक जे लखेलां छे, ते सर्व प्रभुना कल्याणक समजवां तथा उपर जे कार्त्तिक वदि शुदि पक्ष एम करीने तेनी पासें जे सातडानो आंक लखेलो छे, ते कार्त्तिक महीनामां सर्वमली सात कल्याणक थया छे एरीतें बारेमहीना आंगल जे आंक लख्या छे, ते सर्व आंक ते ते महीनाना कल्याणकनी संख्याना समजवा.

॥कार्त्तिकवदिशुदिपक्ष॥७॥
३ वदि ५ केवलज्ञान० ॥
२२ वदि १२ च्यवन० ॥
६ वदि १२ जनम्या.
६ वदि १३ दीक्षा लीधी.
२४ वदि ३० मोक्ष पाम्या.
९ शुदि ३ केवलज्ञान०
१८ शुदि १२ केवलज्ञान०

॥मागशिरवदि शुदि ॥१३॥
९ वदि ५ जनम्या.
९ वदि ६ दीक्षा लीधी.
२४ वदि १० दीक्षा लीधी.
६ वदि ११ मोक्ष पाम्या.
१८ शुदि १० जनम्या.
१८ शुदि १० मोक्षपाम्या.
१८ शुदि ११ दीक्षा लीधी.
१९ शुदि ११ जनम्या.
१९ शुदि ११ दीक्षा लीधी.
१९ शुदि ११ केवलज्ञान०
२१ शुदि ११ केवलज्ञान०
३ शुदि १४ जनम्या.
३ शुदि १५ दीक्षा लीधी.

॥पौषवदिशुदिपक्ष ॥१०॥
२३ वदि १० जनम्या.
२३ वदि ११ दीक्षा लीधी.
८ वदि १२ जनम्या.
८ वदि १३ दीक्षा लीधी.
१० वदि १४ केवलज्ञान०
१३ शुदि ६ केवलज्ञान०
१६ शुदि ९ केवलज्ञान०
२ शुदि ११ केवलज्ञान०
४ शुदि १४ केवलज्ञान०
१५ शुदि १५ केवलज्ञान०

॥महावदिशुदिपक्ष ॥१४॥
६ वदि ६ च्यवन० ॥
१० वदि १२ जनम्या.
१० वदि १२ दीक्षा लीधी.
१ वदि १३ मोक्ष पाम्या.
११ वदि ३० केवलज्ञान०
४ शुदि २ जनम्या.

१२ शुदि २ केवलज्ञान०
१५ शुदि ३ जनम्या.
१३ शुदि ३ जनम्या.
१३ शुदि ४ दीक्षा लीधी.
२ शुदि ८ जनम्यां.
२ शुदि ९ दीक्षा लीधी.
४ शुदि १२ दीक्षा लीधी.
१५ शुदि १३ दीक्षा लीधी.
फागुणवदिशुदिपक्ष॥ १५॥
७ वदि ६ केवलज्ञान०
७ वदि ७ मोक्ष पाम्या.
८ वदि ७ केवलज्ञान०
९ वदि ९ च्यवन० ॥
१ वदि ११ केवलज्ञान०
२० वदि १२ केवलज्ञान०
११ वदि १२ जनम्या.
११ वदि १३ दीक्षा लीधी.
१२ वदि १४ जनम्या.
१२ वदि ३० दीक्षा लीधी.
१८ शुदि २ च्यवन ॥

१९ शुदि ४ च्यवन० ॥
३ शुदि ८ च्यवन० ॥
२० शुदि १२ दीक्षा लीधी.
१९ शुदि १२ मोक्ष पाम्या.
॥चैत्रवदिशुदिपक्ष॥ १३ ॥
२३ वदि ४ च्यवन०॥
२३ वदि ४ केवलज्ञान०
८ वदि ५ च्यवन० ॥
१ वदि ८ जनम्या.
१ वदि ८ दीक्षा लीधी.
१७ शुदि ३ केवलज्ञान०
१४ शुदि ५ मोक्ष पाम्या.
२ शुदि ५ मोक्ष पाम्या.
३ शुदि ५ मोक्ष पाम्या.
५ शुदि ९ मोक्ष पाम्या.
५ शुदि ११ केवलज्ञान०
२४ शुदि १३ जनम्या.
६ शुदि १५ केवलज्ञान०
वैशाखवदिशुदिपक्ष॥ १७॥
१७ वदि १ मोक्ष पाम्या.

१० वदि २ मोक्षपाम्या.
१७ वदि ५ दीक्षा लीधी.
१० वदि ६ च्यवन० ॥.
२१ वदि १० मोक्ष पाम्या.
१४ वदि १३ जनम्या.
१४ वदि १४ दीक्षा लीधी.
१४ वदि १४ केवलज्ञान०
१७ वदि १४ जनम्या.
४ शुदि ४ च्यवन० ॥
१५ शुदि ७ च्यवन० ॥
४ शुदि ८ मोक्षपाम्या.
५ शुदि ८ जनम्या.
५ शुदि ९ दीक्षा लीधी.
२४ शुदि १० केवलज्ञान.
१३ शुदि १२ च्यवन० ॥
२ शुदि १३ च्यवन० ॥
॥ ज्येष्ठवदिशुदिपक्ष॥१०॥
११ वदि ६ च्यवन० ॥
२० वदि ८ जनम्या.
२० वदि ९ मोक्ष पाम्या.

१६ वदि १३ जनम्या.
१७ वदि १३ मोक्ष पाम्या.
१६ वदि १४ दीक्षा लीधी.
१५ शुदि ५ मोक्ष पाम्या.
१२ शुदि ९ च्यवन० ॥
७ शुदि १२ जनम्या.
७ शुदि १२ दीक्षा लीधी.
॥आषाढवदिशुदिपक्ष॥६॥
१ वदि ४ च्यवन० ॥
१३ वदि ७ मोक्षपाम्या.
२१ वदि ९ दीक्षा लीधी.
२४ शुदि ६ च्यवन० ॥
२२ शुदि ८ मोक्ष पाम्या.
१२ शुदि १४ मोक्ष पाम्या.
॥श्रावणवदिशुदिपक्ष॥९॥
११ वदि ३ मोक्षपाम्या.
१४ वदि ७ च्यवन० ॥
२१ वदि ८ जनम्या.
१७ वदि ९ च्यवन० ॥
५ शुदि २ च्यवन० ॥

२२ शुदि ५ जनम्या.	८ वदि ७ मोक्ष पाम्या.
२२ शुदि ६ दीक्षा लीधी.	७ वदि ८ च्यवन० ॥
२३ शुदि ८ मोक्ष पाम्या.	९ शुदि ९ मोक्ष पाम्या.
२० शुदि १५ च्यवन० ॥	॥ आशोवदिशुदिपक्ष ॥ ९॥
॥जाद्रवावदिशुदिपक्ष॥ ४॥	२२ वदि ३० केवलज्ञान०
१६ वदि ७ च्यवन० ॥	२१ शुदि १५ च्यवन० ॥

॥ अथ पद्मावतीनी जीवराशि चार प्रत्येक बुद्धना रासमांथी ढाल त्रीजी ॥ जननी मन आशा घणी ॥ ए ढाल ॥ राग वेराडी ॥

॥ हवे राणी पदमावती, जीवराशि खमा वे ॥ जाणपणुं जग ते जलुं, इण वेला आवे ॥ १ ॥ ते मुज मिछामि डुक्कडं, अरिहंतनी सा ख ॥ जे में जीव विराधिया, चउराशि लाख ॥ ते मुज० ॥ २ ॥ सात लाख पृथिवी तणा, सा ते अपकाय ॥ सात लाख तेउकायनां, साते वली वाय ॥ ते मुज० ॥ ३ ॥ दश प्रत्येक वन

स्पति, चौदह साधार ॥ बि ति चउरिंद्रिय जीवना, बे बे लाख विचार ॥ ते मुज० ॥ ४ ॥ देवता तिर्यंच नारकी, चार चार प्रकाशी ॥ चउदह लाख मनुष्यना, ए लाख चोराशी ॥ ते मुज० ॥ ५ ॥ इण नव परनवें सेवियां, जें पाप अढार ॥ त्रिविध त्रिविध करी परिहरुं, डुर्गति दातारं ॥ ते मुज० ॥ ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोल्यां मृषा वाद ॥ दोष अदत्तादानना, मैथुन उन्माद ॥ ते मुज० ॥ ७ ॥ परिग्रह मेल्यो कारिमों, कीधो क्रोध विशेष ॥ मान माया लोन में किया, वली राग ने द्वेष ॥ ते मुज० ॥ ८ ॥ कलह करी जीव दूहव्या, दीधां कूडां कलंक ॥ निंदा कीधी पारकी, रति अरति निःशंक ॥ ते मुज० ॥ ए ॥ चाडी कीधी चोतरे, कीधो थापण मोसो ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, नलो आण्यों नरोंसो ॥ ते मुज० ॥ १० ॥ खाटकीने नवें में किया, जीव नानांविध घात ॥ चंडीमार नवें

चरकलां, मार्यां दिन रात ॥ ते मुज० ॥ ११ ॥ माछीने नवें माछलां, झाल्यां जलवास ॥ धीवर नील कोली नवें, मृग पाड्या पास ॥ ते मुज० ॥ १२ ॥ काजी मुल्लाने नवें, पढी मंत्र कठोर ॥ जीव अनेक जब्बे किया, कीधां पाप अघोर ॥ ते मुज० ॥ १३ ॥ कोटवालने नवे में किया, अकरा कर दंम ॥ बंदीवान मराविया, कोरडा छडी दंम ॥ ते मुज० ॥ १४ ॥ परमाधामीने नवें, दीधां नारकी दुःख ॥ छेदन नेदन वेदना, ताडना अति तिख्ख ॥ ते मुज० ॥ १५ ॥ कुंनारने नवें जे किया, नीमाह पचाव्या ॥ तेली नवें तिल पीलिया, पापें पेट नराव्यां ॥ ते मुज० ॥ १६ ॥ हालीने नवें हल खेडियां, फाड्यां पृथिवी पेट ॥ सूड निदान कीयां घणां, दीधां बलद चंपेट ॥ ते मुज० ॥ १७ ॥ मालीने नवें रोपियां, नाना विध वृक्ष ॥ मूल पत्र फल फूलनां, लागां पाप ते लक्ष ॥ ते मुज०

॥ १८ ॥ अधोवाईयाने भवें, भख्या अधिका भार ॥ पोठी उंट कीडा पड्या, दया न रही ल गार ॥ ते.मुज० ॥ १९ ॥ छीपाने भवें छेतरी, कीधा रंगण पास ॥ अगनिं आरंभ किया घ णा, धातुर्वाद अभ्यास ॥ ते मुज० ॥ २० ॥ शू रपणे रण जूझतां, माख्यां माणस वृंद ॥ मदिरा मांस माखण भख्यां, खाधां मूल ने कंद ॥ ते मुज० ॥ २१ ॥ खाण खणावी धातुनी, पाणी उल्लेच्यां ॥ आरंभ कीधा अति घणा, पोतें पा पज संच्या ॥ ते मुज० ॥ २२ ॥ अंगारकर्म कि यां वली, धरमें दव दीधा ॥ सुंस कख्या वीतरा गना, कूडा कोसज पीधा ॥ ते मुज० ॥२३॥ बिल्लि भवें उंदर लीया, गिरोली हत्यारी ॥ मूढ गमार तणे भवें, में जू लीख मारी॥ ते मुज०॥२४॥ भा डभुंजा तणे भवें, एकेंद्रिय जीव ॥ ज्वार चणा गहुं शेकिया, पाडंता रीव ॥ ते मुज ०॥२५॥खांडण पीसण गारना, आरंभ अनेक॥रांधण इंधण अ

ग्निनां, कियां पाप उद्रेक ॥ ते मुज० ॥ २६॥विक था चार कीधी वली, सेव्या पांच प्रमाद ॥ इष्ट वियोग पाड्या किया, रुदन विषवाद ॥ ते मु ज० ॥ २७॥ साधु अने श्रावक तणां, व्रत लेइ भांग्यां ॥ मूल अने उत्तर तणां, मुऊ दूषण लाग्यां ॥ ते मुज० ॥ २८ ॥ साप वींछी सिंह चित रा, शकराने समली ॥ हिंसक जीवतणे भवें, हिंसा कीधी सबली ॥ ते मुज० ॥ २९ ॥ सुआ वडी दूषण घणां, वली गर्भ गलाव्या ॥ जीवा णी ढोव्यां घणां, शील व्रत भंजाव्यां ॥ ते मुज० ॥ ३० ॥ भव अनंत भमतां थकां, कीधा कुटुंब संबंध ॥ त्रिविध त्रिविध करी वोसिरुं, तिणशुं प्र तिबंध ॥ ते मुज० ॥ ३१ ॥ भव अनंत भमतां थकां, कीधा परिग्रह संबंध ॥ त्रिविध त्रिविध करी वोसिरुं, तिणशुं प्रतिबंध ॥ ते मुज०॥३२॥ एणि परें इण भवें परभवें, कीधां पाप अखत्र ॥ त्रिविध त्रिविध करी वोसिरुं, करुं जनम पवि

त्र ॥ ते मुज० ॥ ३३ ॥ राग वैराडी जे सुणे, ए त्रीजी ढाल ॥ समय सुंदर कहे पापथी, छूटे ततकाल ॥ ते मुज० ॥ ३४ ॥

॥ अथ गणधर स्तवन प्रारंभः ॥ चोपाइनी देशी ॥

॥ एकादश गणधरनां नाम, प्रह उठीनें करुं प्रणाम. ॥ इंद्रभूति पहेलो ते जाण, अग्निभूति बीजो गुणखाण ॥ १ ॥ वायुभूति त्रीजो जग सार, गण धर चोथो व्यक्त उदार ॥ शासनपति सुधर्मा सार, मंडित नामें छठो धार ॥ २ ॥ मौर्यपुत्र ते सातमो जेह, अकंपित अष्टम गुणगेह ॥ मुनिवरमांहे जे पर धान; अचल भ्रात नवमो ए नाम ॥ ३ ॥ नामथ की होय कोडी कल्याण, दशमो मेतारज अविरल वाण ॥ एकादशमो प्रभास कहेवाय, सुखसंपत्ति जस नामें थाय ॥ ४ ॥ गाया वीर तणा गणधार, गुणम णि रयण तणा भंडार ॥ उत्तमविजय गुरुनो शिष्य. रत्नविजय वंदे निशदिस ॥ ५ ॥

॥ अथ गौतमप्रभातिस्तवनं ॥

॥ राग प्रभाती ॥ मात पृथ्वीसुत, प्रात ऊठी नमो, गणधर गौतम नाम गेलें ॥ प्रहसमे प्रेमशुं

जेह ध्यातां सदा, चढती कला होय वंशवेले ॥ मा० ॥ १ ॥ वसुनूति नंदन विश्वजन वंदन, डुरित निकंदन नाम जेहनुं ॥ अनेद बुद्धि करी नविजन जे नजे, पूर्ण पोतें सही नाग्य तेहनुं ॥ मा० ॥ २ ॥ सुरमणि जेह चिंतामणि सुरतरु, कामित पूरण कामधेनु ॥ ॥ तेह गौतमनुं ध्यान हृदयें धरो, जेहथकी अधिक नहीं माहात्म्य केनुं ॥ मा० ॥ ३ ॥ प्रणव आदें धरी माया बीजें करी, स्वमुखें गौतमनाम ध्याये ॥ कोडि मनकामना सफल वेगें फले, विघन वैरी सवे दूर जाये ॥ मा० ॥ ४ ॥ ज्ञान बल तेजने सकल सुखसंपदा, गौतमनामथी सिद्धि पामे ॥ अखंम प्रचंम प्रताप होय अवनिमां, सुर नर जेहनें शीश नामे ॥ मा० ॥ ५ ॥ डुष्ट दूरें टले स्वजन मेलो मले, आधि उपाधिनें व्याधि नासे ॥ नूतनां प्रेतनां जोर नांजे वली, गौतमनाम जपतां उल्लासें ॥ मा० ॥ ६ ॥ तीर्थ अष्टापदें आप लब्धें लइ, पन्नरसें त्रणने दीख दीधी ॥ अठम पारणे ताप सकारणें, खीरलब्धें करी अखुट कीधी ॥ मा० ॥ ॥ ७ ॥ वरस पञ्चास लगें गृहवासें वस्या, वरस वली त्रीश करी वीरसेवा ॥ बार वरसां लगें केवल

नोगव्युं, नक्ति जेह्नी करे नित्य देवा ॥ मा० ॥ ८ ॥ मह्यिल गोतम गोत्रमह्मा निधि, गुणनिधि रुद्धिने सिद्धि दाई ॥ उदय जस नांमथी अधिक लीला लहे, सुजस सौन्नांग्य दोलत सवाई ॥ मा० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ निश्चय व्यवह्रार गर्नित श्री शांतिजिन स्तवन ॥

॥ शांति जिणेसर केसर, अर्चित जग धणी रे ॥ ॥ अ० ॥ सेवा कीजें साह्बि, नित नित तुम तणी रे ॥ नि० ॥ तुऊ विण दूजो देव, न कोइ दयालुउ रे ॥ न० ॥ मन मोह्न नवि बोह्न, तुंह्री मायालुउ रे ॥ तुं० ॥ १ ॥ डुरित अपासन शासन, तुं जगपा वनो रे ॥ तुं० ॥ सुकृत उह्लासन कर्म, निकासन नावनो रे ॥ नि० ॥ सिंहासन पदमासन, बेगे जे चवे रे ॥ बे० ॥ जग नासन पर शासन, वासन खेपवे रे ॥ वा० ॥ २ ॥ वाणी गंग तरंग, सुरंग ते उह्लले रे ॥ सु० ॥ नय गम नंग प्रमाण, प्रवाह्र घणा नले रे ॥ प्र० ॥ निश्चय नय व्यवह्रार, तिह्रां नमरी नमे रे ॥ ति० ॥ बुद्धि नाव जस चाले, तेह्ने सहु नमे रे ॥ ते० ॥ ३ ॥ निश्चयने व्यवह्रार, तणी चर्चा घणी रे ॥ त० ॥ जाणे पण जन ताणे, दिलरुचि आपणी रे ॥ दि० ॥ स्यादवाद घरमांह्री, घडया दोय घोड

ला रे ॥ घृ० ॥ देखे पक्ष उवेखे, ते जग थोडला रे ॥ ते० ॥ ४ ॥ मांहोमांहे ते बेहु जेम, नय चरचा करे रे ॥ न० ॥ नरत क्षेत्रना नाविक, श्रावक मन धरे रे ॥ श्रा० ॥ तेम हुं कांइक ढाल, रसालें दाखवुं रे ॥ र० ॥ पण तुझ वचन प्रमाण, तिहां मुझ नांखवुं रे ॥ ति० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥ हो मतवाले साजनां ॥ ए देशी ॥

॥ निश्चय नयवादी कहे, एक नाव प्रमाण छे साचो रे ॥ वार अनंती जे लही, ते किरियामां मत राचो रे ॥ चतुर सनेही सांजलो ॥ १ ॥ नरत नृप नावें तस्यो, वली परिणामें मरुदेवा रे ॥ ग्रैवेयक उपर नहीं, फले इव्य क्रियानी सेवा रे ॥ च० ॥ २ ॥ नय व्यवहार कहो तुमें, केम नावक्रिया विण लेहेशो रे ॥ रत्न शोध शतपुट परें, किरिया ते साची केहेशो रे ॥ च० ॥ ३ ॥ एक सहेजें एक यत्नथी, जेम फल केरो परिपाको रे ॥ तेम किरिया परिणामनो, जगनिन्न निन्न छे वाको रे ॥ च० ॥ ४ ॥ सहेजें फल अमें पामशुं, एम गलीया बलद जे थाए रे ॥ सहेजें तृपता ते होशे, कां अन्न कवल करी खाए रे ॥ च० ॥ ५ ॥ विण व्यवहारें नाव जे, तेतो

कुण तोलो कुण मासो रे ॥ तेहथी हांसी उपजे, वली देखे लोक तमासो रे ॥ च० ॥ ६ ॥ गुरुकुल वासी गुणनीलो, व्यवहारें थिर परिणामो रे ॥ त्रिविध अवंचक जोगथी, होए सुजस महोदय कामो रे ॥ च० ॥ ७ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ मोतीडानी देशी ॥

॥ निश्चय कहे कुण गुरु कुण चेला, खेले आप हीं आप अकेला ॥ मोहना रंगीला हमारा, सोह ना सुख संगी ॥ जास प्रकाशें जग सवि नासें, नव निधि अष्ट माहासिद्धि पासें ॥ मो० ॥ १ ॥ कर्म विभाव शक्तिशुं जोडे, ते स्वभाव शक्ति नवि तोडे ॥ भांगो भरम मरम सवि जाण्यो, पूर्ण ज्ञान निजरूप पिछाण्यो ॥ मो० ॥ २ ॥ कर्त्ता हुइ हाथी परें जूझे, साखी निज गुणमांहे सभूझे ॥ करता ते किरिया दुःख वेदे, साखी भवतरु कंद उछेदे ॥ मो० ॥ ३ ॥ ज्ञानीने करणी सवि थाकी, हुइ रह्यो भरम करम स्थिति पाकी ॥ माला अण देखे जे भमतो, ते देखे, होए निजगुण रमतो ॥ मो० ॥ ४ ॥ भाव अशुद्ध जे पुग्गल केरा, ते तो जाण्या सबहीं अनेरा ॥ मोक्षरूप अमें निजगुण वरिया, ते अथें करशो कुण किरिया

॥ मो० ॥ ५ ॥ हवे व्यवहार कहे सुणो प्यारा, ए मीठा तुमं बोल छु भारा ॥ जणतां ने अण करतां जासो, घर्वन वीर्य करी आप विमासो ॥ मो० ॥ ६ ॥ जे अभिमान रहित ते साखी, भक्ति क्रियामां ते छे आखी ॥ किरिया जे शुभ जोगें मांहे, खेदादिकं दूषण सवि छांडे ॥ मो० ॥ ७ ॥ भूख न भांजे जौं जन दीठे, विण खांडे तुष व्रीही न नीठे ॥ मांज्या विण जेम पात्र न आवुं, किरिया विण तेम साधन पावुं ॥ मो० ॥ ८ ॥ मोक्षरूप आतम निरधारी, नवि थाका जिनवर गणधारी ॥ ज्ञान किरियां जे अनुक्रमें सेवे, सुजस रंग तेहने प्रभु देवे ॥ मो० ॥ ९ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ बेडले भार घणो छे राज ॥ ए देशी ॥

॥ निश्चय कहे विण भाव प्रमाणें, किरिया काम न आवें ॥ आव्यो भावतो किरिया थाकी, धायां जम ण न भावे ॥ मानो बोल हमारो राज, ताणो ताण न कीजें ॥ १ ॥ श्रमण हुइ गणधर प्रव्रज्या, भलें ते भाव प्रमाणें ॥ लिंग प्रयोजन जन मन रंजन, उत्तराध्ययनें वखाणे ॥ मा० ॥ २ ॥ निजपरिणामज भाव प्रमाण्यो, वली उघनिर्युक्तें ॥ आतम सामायिक भगवईमां, भांख्युं ते जुउ जुगतें ॥ मा० ॥ ३ ॥

नय व्यवहार कहे सवि श्रुतमां, ज्ञाव कह्यो ते सा चो ॥ पण क्रियाथी ते होय जाचो; क्रिया विण ते होय काचो ॥ मा० ॥ ४ ॥ ज्ञाव नवो किरियाथी आवे, आव्यो. ते वली वाधे ॥ नवि पडियें चढियें गुण श्रेणें, तेणें मुनि क्रिया साधे ॥ मा० ॥ ५ ॥ निश्चयथी निश्चय नवि जाण्यो, जेणें किरिया नवि पाली ॥ वचन मात्र निश्चयशुं विचारे, उंघवचन जुउ जाली ॥ मा० ॥ ६ ॥ जिम जिम ज्ञाव क्रियामां जलशे, साकर जेम पयमांहे ॥ तिम तिम स्वाद होशे अधि केरा, सुजस विलास उन्नाहें ॥ मा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ बटाउनी देशी ॥

॥ निश्चय नयवादी कहे रे, षट दर्शनमांहि सार ॥ समता साधन मोक्षनुं, एहवो कीधो निरधार रे, मनमांही धरीजें प्याररे, अमें कहुं बुं तुम उपगार रे ॥ १ ॥ बलिहारी गुण गोठनी मेरे लाल ॥ पन्नर ने द जे सिद्धना रे, ज्ञावलिंग तिहां एक ॥ द्रव्यलिंग जजना कही, शिव साधन समता ठेक रे, तेहमां ठे सबल विवेक रे, तिहां लागी मुज मन टेक रे, नामा ठे अवर अनेक रे ॥ २ ॥ ब० ॥ जिहां मारग नांजे सवे रे, धारणने असराल ॥ जोग नाली समता तिहां, फांफो दाखे

ततकाल रे ॥ होए जोग अजोग विचाल रे, लघु पण अङ्कुर संभाल रे ॥ पोहोंचे शिवपुर देइ फाल रे ॥ ३ ॥ ब० ॥ थिविरकल्प जिनकल्पनी रे, किरिया छे बहु रूप ॥ सामाचारी जूजूइ रे, कोइ न मले एक सरूप रे, तिहां हठ छे अंधो कूप रे, तिहां पास धरे मोह भूप रे, ते तो विरुद्ध विषम विरूप रे ॥ ४ ॥ ब० ॥ नयव्यवहार कहे हवे रे, शुं बोल्या ए मित्त ॥ समता तुमने वालही, अमने पण तिहां दृढ चित्त रे ॥ अमें संभारुं नित्त नित्त रे, किरिया पण तास निमित्त रे, एम वधशे बेहुने हित्त रे ॥ ५॥ब० ॥ पन्नर भेद जे सिद्धना रे, राजपंथ तिहां जेह ॥ ते मारग अनुसारिणी, किरिया तेहशुं धरो नेह रे ॥ इण मांही न राखो छेह रे, आलस छांडो निज देह रे, आलसुने घणा संदेह रे ॥ ६ ॥ ब० ॥ थापे भाव ज जे कही रे, भरतादिक दृष्टंत ॥ आवश्यक मांहे कह्या, ते तो पासत्था एकंत रे ॥ तेतो प्रवचन लोपे तंत रे, तस मुख नवि देखे संत रे, एम भांखे श्री भगवंत रे ॥ ७ ॥ब०॥ किरिया जे बहु विध कही रे, तेहज कर्म प्रतिकार ॥ रोग घणा औषध घणां, कोइने कोयथी उपगार रे ॥ जिनवैद्य कहे निरधार रे,

तेणे कह्युं ते कीजें सार रे, एम नांखे अंग आचार रे ॥ ८ ॥ ब० ॥ राजपंथ नांगे नहीं रे, नांगे ते नाहाना सेर ॥ ए पण मनमां धारजो, ए एक गांगो सो पेर रे ॥ शुं फूली थाउं बो नेर रे, जो मलियें बेहु एक वेर रे, तो नांजे न्रांति उकेर रे ॥ ९ ॥ ब० ॥ ॥ सूत्र परंपरशुं मले रे, सामाचारी शुद्ध ॥ विनयादिक मुड़ाविधें, ते बहुविध पण अविरुद्ध रे ॥ मुंके ते होये जो मुग्ध रे, नवि मुंके ते प्रतिबुद्ध रे, वली सुजस अलुब्ध अकुद्ध रे ॥ १० ॥ ब० ॥

॥ ढाल ७ठी ॥ राग धन्याश्री ॥ गिरुआरे गुण तुम तणा ॥ ए देशी ॥

॥ वाद वदंतां आविया, तुज समवसरण जब दीतुं रे ॥ ते बेहुनो जगडो टल्यो, तुज दर्शन लागुं मीतुं रे ॥ १ ॥ बलिहारी प्रज्जु तुम तणी ॥ ए आंकणी ॥ स्यादवाद आगल करी, तुमें बेहुने मेल कराव्यो रे ॥ अंतरंग रंगें मल्या, डुर्जननो दाव न फाव्यो रे ॥ २ ॥ ब० ॥ परघर नंजक खल घणा, ते चिर मांहे खांचा घाले रे ॥ पण तुम सरिखा प्रज्जु जेहने, तेहशुं तेणे कांहि न चाले रे ॥ ३ ॥ ब० ॥ जेम ए बेहुनी प्रीतडी, तुमें करी आपी थिरनावें रे ॥ तेम

मुझ अनुभव मित्तशुं, करी आपो मेल स्वभावें रे ॥ ४ ॥ व० ॥ तुझ शासन जाण्या पछी, तेहशुं मुझ प्रीति छे जाझी रे ॥ पण ते कहे ममता तजो, तेणें नवि आवे छे बाजी रे ॥ ५ ॥ व० ॥ काल अनादि संबंधिनी, ममता ते केड न मूके रे ॥ रीसाये अनुभव तदा, पण चित्तथी हित नवि चूके रे ॥ ६ ॥ व० ॥ एहवा मित्रशुं रूसणुं, ए तो मुझ मनें लागे मातुं रे ॥ तिम कीजें ममता परी, जिम छांडुं चित्तें करी कातुं रे ॥ ७ ॥ व० ॥ चरण धर्म नृप कुम वशें, तस कन्या समता रूडी रे ॥ अचिरा सुत ते मेलवो, जेम ममता जाये कूडी रे ॥ ८ ॥ व० ॥ साहिबें मानी वीनति, मिल्यो अनुभव मुझ अंतरंगें रे ॥ उच्छवरंग वधामणां, हुआ सुजस महोदय संगें रे ॥ ९ ॥ व० ॥ कलश ॥ इम सयल सुखकर दुरित भय हर, शांति जिनवर में स्तव्यो ॥ युग भुवन संजम मान वरषें, १७३२ चित्त हर्षें वीनव्यो ॥ श्रीविजयप्रभसूरि राजराजें, सुकृत काजें नय कही ॥ श्री नयविजय बुध शिष्य वाचक, जसविजय जयसिरि लही ॥ १० ॥

॥ इति श्रीनिश्चय व्यवहार गर्भित शांतिजिनस्तवनम् ॥